श्री

धवला-टीका-समन्वितः

षट्खंडागमः

बन्ध-स्वामित्व-विचय

खंड ३

पुस्तक ८

सम्पादक
हीरालाल जैन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीभगवत्-पुष्पदन्त-भूतबलि-प्रणीतः

षट्खंडागमः

श्रीवीरसेनाचार्य-विरचित-धवला-टीका-समन्वितः ।

तस्य तृतीय-खंडः

बन्ध-स्वामित्व-विचयः

हिन्दीभाषानुवाद-तुलनात्मकटिप्पण-प्रस्तावनानेकपरिशिष्टैः सम्पादितः

सम्पादकः

नागपुरस्थ-नागपुरमहाविद्यालय-संस्कृताध्यापकः एम्. ए., एल्. एल्. बी., डी. लिट्. इत्युपाधिधारी

हीरालालो जैनः

सहसम्पादकः

बालचन्द्रः सिद्धान्तशास्त्री

आ. श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर
श्रीमहावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा, गांधीनगर, पि. ३८२००९

संशोधने सहायकौ

न्या. का., सा. सू., पं. देवकीनन्दनः सिद्धान्तशास्त्री

डा. नेमिनाथ-तनय-आदिनाथः उपाध्यायः, एम्. ए., डी. लिट्.

प्रकाशकः

श्रीमन्त शेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र

जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालयः

अमरावती (बरार)

वि. सं. २००४) वीर-निर्वाण-संवत् २४७३ (ई. स. १९४७

मूल्यं रूप्यक-दशकम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक—
श्रीमन्त शेठ सितावराय लक्ष्मीचन्द्र,
जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालय
अमरावती (बरार)

★

मुद्रक—
टी. एम्. पाटील
मैनेजर
सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, अमरावती.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

THE ṢAṬKHAṆḌĀGAMA

OF

PUṢPADANTA AND BHŪTABALI

WITH

THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

VOL. VIII

BANDHA-SWĀMITVA-VICAYA

Edited

with introduction, translation, indexes and notes

BY

Dr. HIRALAL JAIN, M. A., LL. B., D. Litt.,

C. P. Educational Service, Nagpnr-Mahavidyalaya, Nagpur.

ASSISTED BY

Pandit Balchandra Siddhānta Ṣhāstrī.

with the cooperation of

Pandit DEVAKINANDAN Siddhānta Shāstri

Dr. A. N. UPADHYE M. A., D. LITT.

Published by

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,

Jaina Sāhitya Uddhārakā Fund Kāryālaya,

AMRAOTI (Berar).

1947.

Price rupees ten only.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Published by—
Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,
Jaina Sahitya Uddharaka Fund Kāryālaya.
AMRAOTI [Berar].

Printed by—
T. M. Patil, *Manager,*
Saraswati Printing Press,
AMRAOTI (Berar).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय-सूची

		पृष्ठ
१	प्राक्कथन	१
	१	
	प्रस्तावना	
	Introduction	
१	विषय-परिचय	१
२	बन्ध-स्वामित्व-विचयकी विषय-सूची	९
३	शुद्धि-पत्र	१७
	२	
	मूल, अनुवाद और टिप्पण बन्ध-स्वामित्व-विचय	१-३९८
१	ओघकी अपेक्षा बन्धस्वामित्व	१
२	आदेशकी ,, ,,	९३
	३	
	परिशिष्ट	
१	बन्ध-स्वामित्व-विचय-सूत्रपाठ	१
२	अवतरण-गाथा-सूची	२१
३	न्यायोक्तियां	,,
४	ग्रन्थोल्लेख	२२
५	पारिभाषिक शब्द-सूची	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राक्-कथन

षट्खण्डागम सातवें भाग खुद्दाबन्धके प्रकाशित होनेके दो वर्ष पश्चात् यह आठवां भाग **बन्धस्वामित्व-विचय** पाठकोंके हाथ पहुंच रहा है। इस भागके साथ षट्खण्डागमके प्रथम तीन खण्ड पूर्णतः विद्वत्संसारके सन्मुख उपस्थित हो गये। कागज, मुद्रण व व्यवस्थादि सम्बन्धी अनेक कठिनाइयों व असुविधाओंके होते हुए भी यह कार्य गतिशील बना ही रहा है, इसका श्रेय ग्रन्थमालाके संस्थापक श्रीमन्त सेठजी व अन्य अधिकारी, मेरे सहयोगी पं. बालचन्द्रजी शास्त्री तथा सरस्वती प्रेसके मैनेजर श्रीयुत टी. एम्. पाटीलको है जो इस कार्यको विशेष रुचि और अपनत्वके साथ निबाहते जा रहे हैं। इन सबका मैं हृदयसे अनुगृहीत हूं। उन्हींके सहयोगके बलपर आगेका कार्य भी समुचित रूपसे चलता रहेगा, ऐसी आशा है। नवें भागका मुद्रण प्रारम्भ हो गया है।

नागपुर महाविद्यालय, नागपुर
७–९–१९४७

हीरालाल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तावना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

INTRODUCTION.

The present volume contains the complete third part (Khanda) of the **Saṭkhaṇḍāgama.** It is called **Bandha-sāmitta-vicaya** which means ' Quest of those who bind the Karmas '. Out of the 148 varieties of Karmas, it is only 120 that are capable of being produced directly by the soul. The author of the Sūtras has mentioned, in the form of questions and answers, the spiritual stages (**Guṇasthānas**) and the detailed conditions of life and existence (**Mārgaṇāsthānas**) in which specified Karmas may be forged, Fortytwo Sūtras are devoted to the Guṇasthāna treatment, and the rest 282 to the Mārgaṇā-sthāna. The commentator has enlarged the scope of the treatment of the subject by raising twentythree questions and answering them in relation to all the Karmas. In this way, good many details about the Karma Siddhānta have been exposed, and the whole work is very important for a thorough study of Jaina Philosophy.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय-परिचय

इस खण्डका नाम **बन्धस्वामित्व-विचय** है, जिसका अर्थ है बन्धके स्वामित्वका विचय अर्थात् विचारणा, मीमांसा या परीक्षा। तदनुसार यहां यह विवेचन किया गया है कि कौनसा कर्मबन्ध किस किस गुणस्थानमें व मार्गणास्थानमें सम्भव है। इस खण्डकी उत्पत्ति इस प्रकार बतलाई गई है —

कृति आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंमें छठवें अनुयोगद्वारका नाम बन्धन है। बन्धनके चार भेद हैं—बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान। बन्धविधान चार प्रकारका है—प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश। इनमें प्रकृतिबन्ध दो प्रकारका है — मूल प्रकृतिबन्ध और उत्तर प्रकृतिबन्ध। सत्प्ररूपणा पृष्ठ १२७ के अनुसार उत्तर प्रकृतिबन्ध भी दो प्रकारका है, एकैकोत्तरप्रकृतिबन्ध और अव्वोगाढ़उत्तरप्रकृतिबन्ध। एकैकोत्तरप्रकृतिबन्धके समुत्कीर्तनादि चौबीस अनुयोगद्वार हैं जिनमें बारहवां अनुयोगद्वार **बन्धस्वामित्व-विचय** है।

इस खण्डमें ३२४ सूत्र हैं। प्रथम ४२ सूत्रोंमें ओघ अर्थात् केवल गुणस्थानानुसार प्ररूपण है, और शेष सूत्रोंमें आदेश अर्थात् मार्गणानुसार गुणस्थानोंका प्ररूपण किया गया है। सूत्रोंमें प्रश्नोत्तर क्रमसे केवल यह बतलाया गया है कि कौन कौन प्रकृतियां किन किन गुणस्थानोंमें बन्धको प्राप्त होती हैं। किन्तु धवलाकारने सूत्रोंको देशामर्शक मानकर बन्धव्युच्छेद आदि सम्बन्धी तेवीस प्रश्न और उठाये हैं और उनका समाधान करके बन्धोदयव्युच्छेद, स्वोदय-परोदय, सान्तर-निरन्तर, सप्रत्यय-अप्रत्यय, गति-संयोग व गति-स्वामित्व, बन्धाध्वान, बन्ध-व्युच्छित्तिस्थान, सादि-अनादि व ध्रुव-अध्रुव बन्धोंकी व्यवस्थाका स्पष्टीकरण कर दिया है, जिससे विषय सर्वांगपूर्ण प्ररूपित हो गया है। इस प्ररूपणाकी कुछ विशेष व्यवस्थायें इस प्रकार हैं—

सान्तरबन्धी—एक समय बंधकर द्वितीय समयमें जिनका बन्ध विश्रान्त हो जाता है वे सान्तरबन्धी प्रकृतियां हैं। वे ३४ हैं— असातावेदनीय, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, अरति, शोक, नरकगति, एकेन्द्रियादि ४ जाति, समचतुरस्रसंस्थानको छोड़ शेष ५ संस्थान, वज्रर्षभनाराच-संहननको छोड़ शेष ५ संहनन, नरकगत्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयशकीर्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निरन्तरबन्धी — जो प्रकृतियां जघन्यसे भी अन्तर्मुहूर्त काल तक निरन्तर रूपसे बंधती हैं वे निरन्तरबन्धी हैं। वे ५४ हैं— ध्रुवबन्धी ४७ (देखिये पृ. २), आयु ४, तीर्थंकर, आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांग।

सान्तर-निरन्तरबन्धी— जो जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः एक समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्तके आगे भी बंधती रहती हैं वे सान्तर-निरन्तरबन्धी प्रकृतियां हैं। वे ३२ हैं— सातावेदनीय, पुरुषवेद, हास्य, रति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, देवगत्यानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, नीचगोत्र और ऊंचगोत्र।

गतिसंयुक्त— प्रश्नके उत्तरमें यह बतलाया गया है कि विवक्षित प्रकृतिके बन्धके साथ चार गतियोंमें कौनसी गतियोंका बन्ध होता है। जैसे— मिथ्यादृष्टि जीव ५ ज्ञानावरणको चारों गतियोंके साथ, उच्चगोत्रको मनुष्य व देवगतिके साथ, तथा यशकीर्तिको नरकगतिके विना शेष ३ गतियोंसे संयुक्त बांधता है।

गतिस्वामित्वमें विवक्षित प्रकृतियोंको बांधनेवाले कौन कौनसी गतियोंके जीव हैं, यह प्ररूपित किया गया है। जैसे— ५ ज्ञानावरणको मिथ्यादृष्टिसे असंयत गुणस्थान तक चारों गतियोंके, संयतासंयत तिर्यंच व मनुष्य गतिके, तथा प्रमत्तादि उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्यगतिके ही जीव बांधते हैं।

अध्वानमें विवक्षित प्रकृतिका बन्ध किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक होता है, यह प्रगट किया गया है। जैसे— ५ ज्ञानावरणका बन्ध मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान तक होता है।

सादि बन्ध — विवक्षित प्रकृतिके बन्धका एक वार व्युच्छेद हो जानेपर जो उपशमश्रेणीसे भ्रष्ट हुए जीवके पुनः उसका बन्ध प्रारम्भ हो जाता है वह सादि बन्ध है। जैसे — उपशान्तकषाय गुणस्थानसे भ्रष्ट होकर सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके ५ ज्ञानावरणका बन्ध।

अनादि बन्ध— विवक्षित कर्मके बन्धके व्युच्छित्तिस्थानको नहीं प्राप्त हुए जीवके जो उसका बन्ध होता है वह अनादि बन्ध कहा जाता है। जैसे— अपने बन्धव्युच्छित्तिस्थान रूप सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानके अन्तिम समयसे नीचे सर्वत्र ५ ज्ञानावरणका बन्ध।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ध्रुव बन्ध—अभव्य जीवोंके जो ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध होता है वह अनादि-अनन्त होनेसे ध्रुव बन्ध कहलाता है।

ध्रुवबन्धी प्रकृतियां ४७ हैं— ५ ज्ञानावरण, ९ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, १६ कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और ५ अन्तराय।

अध्रुव बन्ध— भव्य जीवोंके जो कर्मबन्ध होता है वह विनश्वर होनेसे अध्रुव बन्ध है।

अध्रुवबन्धी प्रकृतियां—ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंसे शेष ७३ प्रकृतियां अध्रुवबन्धी हैं।

इनमें ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव चारों प्रकार तथा शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध ही होता है।

उक्त व्यवस्थायें यथासम्भव आगेकी तालिकाओंमें स्पष्ट की गई हैं—

बन्धोदय-तालिका

संख्या	प्रकृति	स्वोदयबन्धी आदि	सान्तरबन्धी आदि	बन्ध किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक	उदय किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक	पृष्ठ
१–५	ज्ञानावरण ५	स्वो- बन्धी	निरन्तरबन्धी	१-१०	१–१२	७
६–९	चक्षुदर्शनावरणादि ४	,,	,,	,,	,,	,,
१०-११	निद्रा, प्रचला	स्व-परो.	,,	१–८	,,	३५
१२-१४	निद्रानिद्रादि ३	,,	,,	१–२	१–६	३०
१५	सातावेदनीय	,,	सा. निर.	१–१३	१–१४	३८
१६	असातावेदनीय	,,	सान्तरबन्धी	१–६	,,	४०
१७	मिथ्यात्व	स्वो.	नि.	१	१	४२
१८-२१	अनन्तानुबन्धी ४	स्व-परो.	,,	१–२	१–२	३०
२२-२५	अप्रत्याख्यानावरण ४	,,	,,	१–४	१–४	४६
२६-२९	प्रत्याख्यानावरण ४	,,	,,	१–५	१–५	५०
३०-३२	संज्वलनक्रोधादि ३	,,	,,	१–९	१–९	५२, ५५
३३	संज्वलनलोभ	,,	,,	,,	१–१०	५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संख्या	प्रकृति	स्वोदयबन्धी आदि	सान्तरबन्धी आदि	बन्ध किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक	उदय किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक	पृष्ठ
३४-३५	हास्य, रति	स्व-परो.	सा. निर.	१–८	१–८	९५
३६-३७	अरति, शोक	,,	सा.	१–६	,,	४०
३८-३९	भय, जुगुप्सा	,,	नि.	१–८	,,	५९
४०	नपुंसकवेद	,,	सा.	१	१–९	४२
४१	स्त्रीवेद	,,	,,	१–२	,,	३०
४२	पुरुषवेद	,,	सा. नि.	१–९	,,	५२
४३	नारकायु	परो.	नि.	१	१–४	४२
४४	तिर्यगायु	स्व-परो.	,,	१–२	१–५	३०
४५	मनुष्यायु	,,	,,	१, २, ४	१–१४	६१
४६	देवायु	परो.	,,	१–७ (३को छोड़)	१–४	६४
४७	नरकगति	,,	सा.	१	,,	४२
४८	तिर्यग्गति	स्व-परो.	सा. नि.	१–२	१–५	३०
४९	मनुष्यगति	,,	,,	१–४	१–१४	४६
५०	देवगति	परो.	,,	१–८	१–४	६६
५१-५४	एकेन्द्रियादि ४ जाति	स्व-परो.	सा.	१	१	४२
५५	पंचेन्द्रिय जाति	,,	सा. नि.	१–८	१–१४	६६
५६	औदारिकशरीर	,,	,,	१–४	१–१३	४६
५७	वैक्रियिकशरीर	परो.	,,	१–८	१–४	६६
५८	आहारकशरीर	,,	नि.	७–८	६	७१
५९	तैजसशरीर	स्वो.	,,	१–८	१–१३	६६
६०	कार्मणशरीर	,,	,,	,,	,,	,,
६१	औदारिकअंगोपांग	स्व-परो.	सा. नि.	१–४	,,	४६
६२	वैक्रियिकअंगोपांग	परो.	,,	१–८	१–४	६६
६३	आहारकअंगोपांग	,,	नि.	७–८	६	७१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६४	निर्माण	स्वो.	नि.	१–८	१–१३	६६
६५	समचतुरस्रसंस्थान	स्व-परो.	सा. नि.	,,	,,	,,
६६	न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थान	,,	सा.	१–२	,,	३०
६७	स्वातिसंस्थान	,,	,,	,,	,,	,,
६८	कुब्जकसंस्थान	स्व-परो.	सा.	१–२	१–१३	३०
६९	वामनसंस्थान	,,	,,	,,	,,	,,
७०	हुण्डकसंस्थान	,,	,,	१	,,	४२
७१	वज्रवृषभनाराचसंहनन	,,	सा. नि.	१–४	,,	४६
७२	वज्रनाराचसंहनन	,,	सा.	१–२	१–११	३०
७३	नाराचसंहनन	,,	,,	,,	,,	,,
७४	अर्धनाराचसंहनन	,,	,,	,,	१–७	,,
७५	कीलितसंहनन	,,	,,	,,	,,	,,
७६	असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन	,,	,,	१	,,	४२
७७	स्पर्श	स्वो.	नि.	१–८	१–१३	६६
७८	रस	,,	,,	,,	,,	,,
७९	गन्ध	,,	,,	,,	,,	,,
८०	वर्ण	,,	,,	,,	,,	,,
८१	नरकगत्यानुपूर्वी	परो.	सा.	१	१, २, ४	४२
८२	तिर्यग्गत्यानुपूर्वी	स्व-परो.	सा. नि.	१–२	,,	३०
८३	मनुष्यगत्यानुपूर्वी	,,	,,	१–४	,,	४६
८४	देवगत्यानुपूर्वी	परो.	,,	१–८	,,	६६
८५	अगुरुलघु	स्वो.	नि.	,,	१–१३	,,
८६	उपघात	स्व-परो.	,,	,,	,,	,,
८७	परघात	,,	सा. नि.	,,	,,	,,
८८	आताप	,,	सा.	१	१	४२
८९	उद्योत	,,	,,	१–२	१–५	३०
९०	उच्छ्वास	,,	सा. नि.	१–८	१–१३	६६
९१	प्रशस्तविहायोगति	,,	,,	,,	,,	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संख्या	प्रकृति	स्वोदयबन्धी आदि	सान्तरबन्धी आदि	बन्ध किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक	उदय किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक	पृष्ठ
९२	अप्रशस्तविहायोगति	स्व-परो.	सा.	१–२	१–१३	३०
९३	प्रत्येकशरीर	,,	सा. नि.	१–८	,,	६६
९४	साधारणशरीर	,,	सा.	१	१	४२
९५	त्रस	,,	सा. नि.	१–८	१–१४	६६
९६	स्थावर	,,	सा.	१	१	४२
९७	सुभग	,,	सा. नि.	१–८	१–१४	६६
९८	दुर्भग	,,	सा.	१–२	१–४	३०
९९	सुस्वर	,,	सा. नि.	१–८	१–१३	६६
१००	दुस्वर	,,	सा.	१–२	,,	३०
१०१	शुभ	स्वो.	सा. नि.	१–८	,,	६६
१०२	अशुभ	,,	सा.	१–६	,,	४०
१०३	बादर	स्व-परो.	सा. नि.	१–८	१–१४	६६
१०४	सूक्ष्म	,,	सा.	१	१	४२
१०५	पर्याप्त	,,	सा. नि.	१–८	१–१४	६६
१०६	अपर्याप्त	,,	सा.	१	१	४२
१०७	स्थिर	स्वो.	सा. नि.	१–८	१–१३	६६
१०८	अस्थिर	,,	सा.	१–६	,,	४०
१०९	आदेय	स्व-परो.	सा. नि.	१–८	१–१४	६६
११०	अनादेय	,,	सा.	१–२	१–४	३०
१११	यशकीर्ति	,,	सा. नि.	१–१०	१–१४	७
११२	अयशकीर्ति	,,	सा.	१–६	१–४	४०
११३	तीर्थंकर	परो.	नि.	४–८	१३–१४	७३
११४	उच्चगोत्र	स्व-परो.	सा. नि.	१–१०	१–१४	७
११५	नीचगोत्र	,,	,,	१–२	१–५	३०
११६-२०	अन्तराय ५	स्वो.	नि.	१–१०	१–१२	७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत्यय-तालिका (पृ. १९–२४)

गुणस्थान	मिथ्यात्व ५	अविरति १२	कषाय २५	योग १५	समस्त ५७
मिथ्यात्व	५	१२	२५	१३ आहारद्विकसे रहित	५५
सासादन	....	,,	,,	,,	५०
मिश्र	....	,,	२१ अनन्तानुबन्धिचतुष्कसे रहित	१० आ. द्विक, औ. मि., वै. मि. व कार्मणसे रहित	४३
असंयत	....	,,	,,	१३ आहारद्विकसे रहित	४६
देशसंयत	....	११ त्रसअसंयम रहित	१७ अप्रत्याख्यानचतुष्कसे रहित	९ आ. द्विक, औ. मि., वै. द्वि. व कार्मणसे रहित	३७
प्रमत्त	....	....	१३ प्रत्याख्यानचतुष्कसे रहित	११ आहारद्विकसे सहित उपर्युक्त	२४
अप्रमत्त	....	....	,,	९ आहारद्विकसे रहित उपर्युक्त	२२
अपूर्वकरण	....	....	,,	,,	,,
अनिवृत्तिकरण भा. १	....	....	७ नोकषाय ६ से हीन	,,	१६
भा. २	....	....	६ नपुंसकवेदसे हीन	,,	१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	मिथ्यात्व ५	अविरति १२	कषाय २५	योग १५	समस्त ५७
अनिवृत्तिकरण भा. ३	....	....	५ स्त्रीवेदसे हीन	९ आ. द्विक, औ. मि., वै. द्वि. व कार्मणसे रहित	१४
भा. ४	...	....	४ पुरुषवेदसे हीन	,,	१३
भा. ५	....	....	३ संज्वलनक्रोधसे हीन	,,	१२
भा. ६	...	....	२ संज्वलनमानसे हीन	,,	११
भा. ७	....	....	१ संज्वलनमायासे हीन	,,	१०
सूक्ष्मसाम्पराय	....	....	,,	,,	,,
उपशान्तकषाय	....	....	....	,,	९
क्षीणमोह	....	....	....	,,	,,
सयोगकेवली	....	....	....	७ सत्य व अनुभय मन और वचन, औ. द्विक., कार्मण	७
अयोगकेवली	....	....	....	....	....

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय-सूची

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ
१	धवलाकारका मंगलाचरण	१
२	बन्ध-स्वामित्व-विचयका दो प्रकारसे निर्देश	,,
३	बन्ध-स्वामित्व-विचयका अवतार	२
४	बन्ध व मोक्षका स्वरूप	३
५	बन्ध-स्वामित्व-विचयका निरुक्त्यर्थ	,,
६	ओघसे बन्ध-स्वामित्व-विचयके चौदह जीवसमासोंका निर्देश	४
७	चौदह गुणस्थानोंमें प्रकृतिबन्ध व्युच्छेदकी प्रतिज्ञा	५
८	व्युच्छेदके भेद और उनका निरुक्त्यर्थ	,,
	ओघकी अपेक्षा बन्धस्वामित्व	७-९२
९	पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धकोंकी प्ररूपणामें तेईस प्रश्नोंका उद्भावन	७
१०	प्रकृतियोंकी उदयव्युच्छित्ति	९
११	प्रकृतियोंके बन्धोदयकी पूर्वापरता	११
१२	पांच ज्ञानावरणीयादिकोंके बंधके स्वामी व उसके व्युच्छेदस्थानकी प्ररूपणा करते हुए उन तेईस प्रश्नोंका उत्तर	१२
१३	सान्तर, निरन्तर और सान्तर-निरन्तर रूपसे बंधनेवाली प्रकृतियोंका निर्देश	१६
१४	ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका निर्देश	१७
१५	निरन्तरबन्ध और ध्रुवबन्धमें विशेषता	,,
१६	मूल और उत्तर प्रत्ययोंकी विस्तृत प्ररूपणा	१९
१७	गतिसंयोगादिविषयक प्रश्नोंका उत्तर	२८
१८	निद्रानिद्रादिक पच्चीस प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	३०
१९	निद्रा और प्रचला प्रकृतिके बंधस्वामित्व आदिका विचार	३१
२०	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	३८
२१	असातावेदनीय आदि छह प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	४०
२२	मिथ्यात्व आदि सोलह प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	४२
२३	अप्रत्याख्यानावरणीय आदि नौ प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	४६
२४	प्रत्याख्यानावरणचतुष्कके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५०
२५	पुरुषवेद और संज्वलनक्रोधके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५२
२६	संज्वलन मान और मायाके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रम नं. विषय	पृष्ठ
२७ संज्वलन लोभके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५८
२८ हास्य, रति, भय और जुगुप्साके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५९
२९ मनुष्यायुके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	६१
३० देवायुके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	६४
३१ देवगति आदि सत्ताईस प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	६६
३२ आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांगके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	७१
३३ तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	७३
३४ तीर्थंकर प्रकृतिके विशेष कारणोंकी आशंका	७६
३५ तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धके सोलह कारणोंकी प्ररूपणा	७८
३६ तीर्थंकर प्रकृतिके उदयका माहात्म्य	९१
आदेशकी अपेक्षा बन्धस्वामित्व	९३-३९८
गतिमार्गणा	
३७ नरकगतिमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	९३
३८ निद्रानिद्रादिके बन्धस्वामित्वका विचार	९८
३९ मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१०१
४० मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१०२

क्रम नं. विषय	पृष्ठ
४१ तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्वका विचार	१०३
४२ प्रथम तीन पृथिवियोंमें बन्धस्वामित्वका विचार	१०४
४३ चतुर्थ, पंचम और छठी पृथिवीमें बन्धस्वामित्व आदिका विचार	१०५
४४ सातवीं पृथिवीमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
४५ सातवीं पृथिवीमें निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१०९
४६ सातवीं पृथिवीमें मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१११
तिर्यग्गतिमें—	
४७ तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तियच योनिमतियोंमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	११२
४८ निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	११९
४९ मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१२३
५० अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कके बंधस्वामित्वका विचार	१२५
५१ देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१२६
५२ पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१२७
मनुष्यगतिमें—	
५३ मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियोंमें ओघके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रम नं. विषय	पृष्ठ
५४ मनुष्य अपर्याप्तोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१३४
देवगतिमें —	
५५ देवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	१३७
५६ निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१४१
५७ मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१४३
५८ मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१४४
५९ तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	१४५
६० भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें कुछ विशेषताके साथ सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्व आदिकी प्ररूपणा	१४६
६१ सौधर्म और ईशान कल्पवासी देवोंमें सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१४७
६२ सनत्कुमारसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें प्रथम पृथिवीस्थ नारकियोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१४८
६३ आनत कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तक पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१४९
६४ निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१५२
६५ मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१५३
६६ मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१५४
६७ तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्वका विचार	”
६८ अनुदिशोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तक पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१५५
इन्द्रियमार्गणा	
६९ एकेन्द्रिय, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त अपर्याप्त, विकलत्रय पर्याप्त अपर्याप्त, तथा पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१५८
७० पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वके विचारमें बन्धक आदि विषयक तेईस प्रश्नोंके एक-द्विसंयोगादि भंगोंकी प्ररूपणा	१७०
७१ उक्त जीवोंमें निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१७४
७२ निद्रा और प्रचलाके बन्धस्वामित्वका विचार	१७७
७३ सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	”
७४ असातावेदनीय आदि छह प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्वका विचार	१७८
७५ मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१८०
७६ अप्रत्याख्यानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रम नं. विषय	पृष्ठ
७७ प्रत्याख्यानावरणचतुष्कके बन्धस्वामित्वका विचार	१८४
७८ पुरुषवेद और संज्वलनक्रोधके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
७९ संज्वलन मान और मायाके बन्धस्वामित्वका विचार	१८५
८० संज्वलन लोभके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
८१ हास्य, रति, भय और जुगुप्साके बन्धस्वामित्वका विचार	१८६
८२ मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
८३ देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१८७
८४ देवगति आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
८५ आहारकशरीर और आहारक अंगोपांगके बन्धस्वामित्वका विचार	१९१
८६ तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
कायमार्गणा	
८७ पृथिवीकायिक, जलकायिक, वनस्पतिकायिक, निगोद जीव बादर सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त तथा बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त अपर्याप्तोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१९२
८८ तेजकायिक व वायुकायिक बादर सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्तोंमें कुछ विशेषताके साथ पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१९९
योगमार्गणा	
८९ पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी और काययोगी जीवोंमें सब प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्वकी ओघके समान प्ररूपणा	२०१
९० उक्त जीवोंमें सातावेदनीय विषयक बन्धस्वामित्वकी कुछ विशेषता	२०२
९१ औदारिककाययोगियोंमें मनुष्यगतिके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	२०३
९२ उक्त जीवोंमें सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वकी मनोयोगियोंके समान प्ररूपणा	२०५
९३ औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
९४ निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२०९
९५ सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२१२
९६ मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२१३
९७ देवचतुष्कके बन्धस्वामित्वका विचार	२१४
९८ वैक्रियिककाययोगियोंमें देवगतिके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	२१५
९९ वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें देवगतिके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	२२२
१०० उक्त जीवोंमें तिर्यगायु और मनुष्यायुके बन्धाभावकी विशेषता	२२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ
१०१	आहारक व आहारकमिश्र काययोगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२२९
१०२	कार्मणकाययोगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२३२
१०३	निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२३७
१०४	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२३८
१०५	मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२३९
१०६	देवगति आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२४१
	वेदमार्गणा	
१०७	स्त्री, पुरुष और नपुंसकवेदियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२४२
१०८	निद्रानिद्रा आदि द्विस्थानिक प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्वकी ओघके समान प्ररूपणा	२४५
१०९	निद्रा और प्रचलाकी ओघके समान प्ररूपणा	२४८
११०	असातावेदनीयकी ओघके समान प्ररूपणा	२४९
१११	मिथ्यात्व आदिक एकस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	,,
११२	अप्रत्याख्यानावरणीयकी ओघके समान प्ररूपणा	२५१
११३	प्रत्याख्यानावरणीयकी ओघके समान प्ररूपणा	२५४
११४	हास्य व रतिसे लेकर तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा	२५४
११५	अपगतवेदियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२६४
११६	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२६५
११७	संज्वलनक्रोधके बन्धस्वामित्वका विचार	२६६
११८	संज्वलन मान और मायाके बन्धस्वामित्वका विचार	२६७
११९	संज्वलनलोभके बन्धस्वामित्वका विचार	२६८
	कषायमार्गणा	
१२०	क्रोधकषायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२६९
१२१	द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	२७२
१२२	निद्रासे लेकर प्रत्याख्यानावरणचतुष्क तक ओघके समान प्ररूपणा	२७४
१२३	पुरुषवेदादिकी ओघके समान प्ररूपणा	२७५
१२४	हास्य व रतिसे लेकर तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा	,,
१२५	मानकषायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
१२६	द्विस्थानिक आदि प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	२७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ
१२७	हास्य रति आदिकी ओघके समान प्ररूपणा	२७७
१२८	मायाकषायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
१२९	द्विस्थानिक आदिकी ओघके समान प्ररूपणा	,,
१३०	हास्य-रति आदिकी ओघके समान प्ररूपणा	२७८
१३१	लोभकषायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
१३२	शेष प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	,,
१३३	अकषायी जीवोंमें सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
	ज्ञानमार्गणा	
१३४	मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी और विभंगज्ञानियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२७९
१३५	एकस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	२८५
१३६	आभिनिबोधिक, श्रुत और अवधिज्ञानी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२८६
१३७	निद्रा व प्रचलाकी ओघके समान प्ररूपणा	२८७
१३८	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२८८
१३९	शेष प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	२८९
१४०	मनःपर्ययज्ञानियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२९५
१४१	निद्रा और प्रचलाके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
१४२	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२९६
१४३	शेष प्रकृतियोंकी कुछ विशेषताके साथ ओघके समान प्ररूपणा	,,
१४४	केवलज्ञानियोंमें सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२९७
	संयममार्गणा	
१४५	संयत जीवोंमें मनःपर्ययज्ञानियोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	२९८
१४६	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वमें कुछ विशेषता	,,
१४७	सामायिक-छेदोपस्थापनशुद्धि-संयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
१४८	शेष प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्वकी मनःपर्ययज्ञानियोंके समान प्ररूपणा	३००
१४९	परिहारशुद्धिसंयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३०३
१५०	असातावेदनीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३०५
१५१	देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार	३०६
१५२	आहारशरीर और आहारशरीरांगोपांगके बन्धस्वामित्वका विचार	३०७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ
१५३	सूक्ष्मसाम्परायिक संयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३०८
१५४	यथाख्यातविहारशुद्धिसंयतोंमें सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	३०९
१५५	संयतासंयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३१०
१५६	असंयत जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३१२
१५७	द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	३१७
१५८	एकस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	,,
१५९	मनुष्यायु और देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
१६०	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्वका विचार	३१८
	दर्शनमार्गणा	
१६१	चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी जीवोंमें ओघके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	,,
१६२	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वमें कुछ विशेषता	३१९
१६३	अवधिदर्शनी जीवोंमें अवधिज्ञानियों और केवलदर्शनी जीवोंमें केवलज्ञानियोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	,,
	लेश्यामार्गणा	
१६४	कृष्ण, नील और कापोत लेश्यावालोंमें असंयतोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	३२०
१६५	तेज और पद्मलेश्यावालोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३३३
१६६	द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	३३७
१६७	असातावेदनीयकी ओघके समान प्ररूपणा	३३९
१६८	मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३४०
१६९	अप्रत्याख्यानावरणीयकी ओघके समान प्ररूपणा	३४१
१७०	प्रत्याख्यानावरणकी ओघके समान प्ररूपणा	३४३
१७१	मनुष्यायुकी ओघके समान प्ररूपणा	,,
१७२	देवायुकी ओघके समान प्ररूपणा	३४४
१७३	आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांगके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
१७४	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्वका विचार	३४५
१७५	पद्मलेश्यावालोंमें मिथ्यात्वदण्डककी नारकियोंके समान प्ररूपणा	३४६
१७६	शुक्ललेश्यावालोंमें तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा	,,
१७७	उक्त जीवोंमें सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वकी मनोयोगियोंके समान प्ररूपणा	३५६
१७८	द्विस्थानिक और एकस्थानिक प्रकृतियोंकी नवग्रैवेयकविमानवासी देवोंके समान प्ररूपणा	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ
	भव्यमार्गणा	
१७९	भव्य जीवोंमें ओघके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	३५८
१८०	अभव्य जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३५९
	सम्यक्त्वमार्गणा	
१८१	सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें आभिनिबोधिकज्ञानियोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	३६३
१८२	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वमें कुछ विशेषता	३६४
१८३	वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
१८४	असातावेदनीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३६७
१८५	अप्रत्याख्यानवरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३६९
१८६	प्रत्याख्यानावरणचतुष्कके बन्धस्वामित्वका विचार	३७०
१८७	देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार	३७१
१८८	आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांगके बन्धस्वामित्वका विचार	३७२
१८९	उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
१९०	निद्रा और प्रचलाके बन्धस्वामित्वका विचार	३७४
१९१	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	३७५
१९२	असातावेदनीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३७६
१९३	अप्रत्याख्यानावरणीयकी अवधिज्ञानियोंके समान प्ररूपणा	,,
१९४	उक्त जीवोंमें आयुके बन्धका अभाव	३७७
१९५	प्रत्याख्यानावरणचतुष्कके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
१९६	पुरुषवेद और संज्वलनक्रोधके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
१९७	संज्वलन मान और मायाके बन्धस्वामित्वका विचार	३७८
१९८	संज्वलनलोभके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
१९९	हास्य, रति, भय और जुगुप्साके बन्धस्वामित्वका विचार	३७९
२००	देवगति आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
२०१	आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांगके बन्धस्वामित्वका विचार	३८०
२०२	सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी मतिज्ञानियोंके समान प्ररूपणा	,,
२०३	सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंकी असंयतोंके समान प्ररूपणा	३८३
२०४	मिथ्यादृष्टियोंकी अभव्य जीवोंके समान प्ररूपणा	३८६
२०५	संज्ञी जीवोंमें ओघके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ
२०६	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वकी चक्षुदर्शनी जीवोंके समान प्ररूपणा	३८७
२०७	असंज्ञी जीवोंमें अभव्योंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	,,
२०८	आहारक जीवोंमें ओघके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	३९०
२०९	अनाहारक जीवोंमें कार्मण काययोगियोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	३९१

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
८	१८	किस गुणस्थान तक	किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक
९	४	उववसो	उवपसो
१३	७	वोच्छिंजंदि	वोच्छिज्जदि
१५	६	बज्झति	बज्झंति
,,	११	बंधमाणाणि ।	बंधमाणाणि
,,	१२	बंधति	बंधंति
,,	२५-२६	दश प्रकृतियां तथा दर्शनावरणकी ···· स्वोदयसे ही बंधती हैं,	दश प्रकृतियों तथा दर्शनावरणकी चार ही प्रकृतियोंको बांधनेवाले सब गुणस्थान स्वोदयसे ही बांधते हैं,
१६	६	पुच्छणं पडिवण्णं ।	पुच्छाणं पडिवण्णं वुच्चदे ।
,,	२२	ये तीन प्रश्न प्राप्त होते हैं ।	इन तीन प्रश्नोंका उत्तर कहते हैं ।
१८	८	इथि	इत्थि
,,	२३	अशुभ, पांच	अशुभ पांच
,,	२४	विहायोगति स्थावर	विहायोगति तथा स्थावर
२४	८	दु बावीसा	दुबावीसा
२५	२०	हैं	हैं
३२	७	उदयवोच्छेदो	उदयवोच्छेदादो
३५	५	कदि गदिया	कदिगदिया
३८	३	वुधदे	वुच्चदे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
४३	११	**णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वि**	**णिरयगई-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विं**
,,	२६	नारकायु और	नारकायु, नरकगति और
४९	७	**धुवबंधो।**	**धुवबंधो**
,,	१७-२१	सर्व काल····क्यों नहीं पाया जाता ?	**शंका**—सर्व काल········औदारिकशरीरका ध्रुव बन्ध और अनादिक बन्ध भी क्यों नहीं पाया जाता ?
,,	२३	अनादि रूपसे ध्रुव बन्धका	अनादि एवं ध्रुव बन्धका
५०	४	**बंधा ॥ २० ॥**	**बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥२०॥**
,,	१५	बन्धक हैं ॥ २० ॥	बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २० ॥
५२	५	**दुविहाभावादो**	**धुवियाभावादो**[२]
,,	१८	दो प्रकारके बन्धका	ध्रुव बन्धका
,,	२५	× × ×	२ प्रतिषु दुविहाभावादो इति पाठः।
५४	६	**गयपच्चओ**	**सगपच्चओ**[१]
,,	२०	गतप्रत्यय है, अर्थात् उसका प्रत्यय ऊपर बतला ही चुके हैं,	स्वनिमित्तक है,
,,	२३	अनुभागोदयसे अथवा अनन्तगुण-हानिसे हीन	अनुभागोदयकी अपेक्षा अनन्तगुणे हीन
,,	३०	× × ×	१ प्रतिषु 'गयपच्चओ' इति पाठः।
५५	२०	क्योंकि, वहां	क्योंकि, [मिथ्यात्व और सासादन गुणस्थानमें]
७८	१४	अन्तर्दीपक	अन्तदीपक
९१	१०	**लोकस्स**	**लोगस्स**
,,	,,	**अच्चणिज्जा वंदणिज्जा**	**अच्चणिज्जा पूजणिज्जा वंदणिज्जा**
,,	१५	अर्चनीय, वंदनीय,	अर्चनीय, पूजनीय, वंदनीय,
९२	१९	पांच मुष्टियों अर्थात् अंगोंसे	पांच मुष्टियों अर्थात् पांच अंगों द्वारा भूमिस्पर्शसे
९९	४	**बंधो**	**बंधो**
१०४	२२	द्वितीय दण्डकमें (?)	द्वितीय दण्डक अर्थात् निद्रानिद्रा आदि द्विस्थानिक प्रकृतियोंमें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
१०६	३	**जसकित्ति-णिमिण**	**जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण**
,,	१६	यशकीर्ति, निर्माण	यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण
११३	११	**अत्थगदीए**	**अत्थ गदीए**
,,	२५	अर्थगतिसे	इस गतिमें
१२१	९	**उप्पण्णाणं सणक्कुमारादि**[१]	**उप्पण्णाणं, ओरालियसरीरअंगोवंगस्स सणक्कुमारादि**[१]
१२१	२४	जीवोंके, और सनत्कुमारादि	जीवोंके उपर्युक्त प्रकृतियोंका, तथा औदारिकशरीरांगोपांगका सनत्कुमारादि
,,	,,	भी इनका निरन्तर	भी निरन्तर
१२२	७	**मणुस्साउ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीओ**	**मणुस्साउ- [मणुसगइ-] मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीओ**
,,	८	**तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीओ**	**तिरिक्खाउ- [तिरिक्खगइ-] तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीओ**
,,	२१	मनुष्यायु एवं	मनुष्यायु, [मनुष्यगति] एवं
,,	२२	तिर्यगायु, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी	तिर्यगायु, [तिर्यग्गति], तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी
१२७	७	**पज्जत्त-पत्तेय**	**पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय**
,,	१९	पर्याप्त, प्रत्येक	पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक
१३०	३	**धुवबंधित्तादो । × × ×**	**धुवबंधित्तादो । अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।**
,,	१५	ध्रुवबन्धी हैं । × × ×	ध्रुवबन्धी हैं । शेष प्रकृतियोंका सादि और अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।
१३४	११	**णवदंसणा-सोलसकसाय-**	**णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-**
१३६	९	**[तिर्यग्गइ-तिर्यग्गइपाओगाणुपुव्वी-]**	**[तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-]**
१४९	८	**णिमिण-पंचंतराइयाणं**	**णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं**
,,	२०	निर्माण और	निर्माण, उच्चगोत्र और
१६०	१०	**साादासाद**	**सादासाद**
१७३	१२	**पविक्ख**	**पडिवक्ख**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
१७४	१	सांतर-णिरंतरो ।	सांतर-णिरंतरो,
१९४	५	आदेज्ज-जसकित्ति	आदेज्ज- [अणादेज्ज-] जसकित्ति
,,	१७	आदेय, यशकीर्ति	आदेय, [अनादेय], यशकीर्ति
१९७	३	अत्थगईए	अत्थ गईए
,,	१७	अर्थापत्तिसे	इस पर्यायमें
१९९	५	पज्जत्तापज्जाणं	पज्जत्तापज्जत्ताणं
२३४	८	मिच्छइट्ठीसु	मिच्छाइट्ठीसु
२७८	११	॥ १०५ ॥	॥ २०५ ॥
३१०	२	रदि-सोग	रदि-अरदि-सोग
,,	१५	रति, शोक	रति, अरति, शोक
३१६	२४	नरकगगति	नरकगति
३५८	४	वेच्छिज्जदि	वोच्छिज्जदि
३६७	१०	जसकिंत्तिणामाणं	अजसकित्तिणामाणं
,,	२७	अयशकिर्त्ति	अयशकीर्ति
३८०	१	असंजसम्मादिट्ठिप्पहुडि	असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि
,,	१२	मदिणाणिभंगो	मदिअण्णाणिभंगो[१]
,,	२३	मतिज्ञानियोंके	मतिअज्ञानियोंके
,,	२४	× × ×	१ प्रतिषु मदिणाणिभंगो इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ

सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो

तस्स तदियखंडो

बंधसामित्तविचओ

साहूवज्झाइरिए अरहंते वंदिऊण[1] सिद्धे वि ।
जे पंच लोगवाले[2] वोच्छं बंधस्स सामित्तं ॥

जो सो बंधसामित्तविचओ णाम तस्स इमो दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य ॥ १ ॥

किमट्ठमिदं सुत्तं वुच्चदे ? संबंधाभिहेय[3]-पओजणपदुप्पायणट्ठं । जो सो बंधसामित्तविचओ

साधु, उपाध्याय, आचार्य, अरहंत और सिद्ध, ये जो पंच लोकपाल अर्थात् लोकोत्तम परमेष्ठी हैं उनको नमस्कार करके बंधके स्वामित्वको कहते हैं ।

जो बंधस्वामित्वविचय है उसका यह निर्देश ओघ और आदेशकी अपेक्षासे दो प्रकार है ॥ १ ॥

शंका—यह सूत्र क्यों कहा जाता है ?

समाधान—सम्बन्ध, अभिधेय और प्रयोजनके बतलानेके लिये उक्त सूत्र कहा गया है ।

' जो वह बंधस्वामित्वविचय है ' इससे सम्बन्ध कहा गया है । वह इस प्रकार

---

१ प्रतिषु ' वट्टिऊण ' इति पाठः । २ अ-आप्रत्योः ' लोकचाले ' इति पाठः ।
३ प्रतिषु ' संबंधाभिहिय- ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णामेत्ति एदेण संबंधो कहिदो । तं जहा– कदि-वेदणादिचदुवीसअणिओगद्दारेसु तत्थ बंधण-मिदि छट्ठमणिओगद्दारं । तं चउव्विहं बंधो बंधगा बंधणिज्जं बंधविहाणमिदि । तत्थ बंधो णाम जीवस्स कम्माणं च संबंधं णयमस्सिदूण परूवेदि । बंधगो त्ति अहियारो एक्कारसअणिओगद्दारेहि बंधगे परूवेदि । बंधणिज्जं णाम अहियारो तेवीसवग्गणाहि बंधजोग्गमबंधजोग्गं च पोग्गलदव्वं परूवेदि । जं तं बंधविहाणं तं चउव्विहं पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसबंधो चेदि । तत्थ पयडिबंधो दुविहो मूलपयडिबंधो उत्तरपयडिबंधो चेदि । जो सो मूलपयडिबंधो सो दुविहो एगेगमूलपयडिबंधो अव्वोगाढमूलपयडिबंधो चेदि । जो सो अव्वोगाढमूलपयडिबंधो सो दुविहो भुजगारबंधो पयडिट्ठाणबंधो चेदि । तत्थ उत्तरपयडिबंधस्स समुक्कित्तणाओ चदुवीसअणिओग-द्दाराणि भवंति । तेसु चदुवीसअणिओगद्दारेसु बंधसामित्तं णाम अणिओगद्दारं । तस्सेव बंध-सामित्तविचओ त्ति सण्णा । जो सो बंधसामित्तविचओ बंधण-बंधविहाणप्पसिद्धो [सो] पवाहसरूवेण अणाइणिहणो । जो सो त्ति वयणेण जेण सो संभालिदो तेण एसो णिद्देसो संबंधपरूवओ । एसो चेव अभिहेय[1]परूवओ वि । तं जहा– जीव-कम्माणं मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगेहि एयत्तपरिणामो बंधो । उत्तं च—

है— कृति, वेदना आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंमें बन्धन नामक जो छठा अनुयोगद्वार है वह चार प्रकार है— बंध, बंधक, बन्धनीय और बन्धविधान। उनमें बन्ध नामक अधिकार जीव और कर्मोंके सम्बन्धका नयकी अपेक्षा करके निरूपण करता है। बन्धक अधिकार ग्यारह अनुयोगद्वारोंसे बन्धकोंका निरूपण करता है। बन्धनीय नामक अधिकार तेईस वर्गणाओंसे बन्धयोग्य और अबन्धयोग्य पुद्गल द्रव्यका प्ररूपण करता है। जो बन्ध-विधान है वह चार प्रकार है— प्रकृतिबंध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्ध। उनमें प्रकृतिबन्ध दो प्रकार है— मूलप्रकृतिबन्ध और उत्तरप्रकृतिबंध। जो मूलप्रकृतिबन्ध है वह दो प्रकार है— एक-एकमूलप्रकृतिबन्ध और अव्वोगाढमूलप्रकृतिबन्ध। जो अव्वोगाढमूलप्रकृतिबन्ध है वह दो प्रकार है— भुजगारबंध और प्रकृतिस्थानबन्ध। इनमें उत्तरप्रकृतिबन्धके समुत्कीर्तन करनेवाले चौबीस अनुयोगद्वार हैं। उन चौबीस अनुयोगद्वारोंमें बन्धस्वामित्व नामक अनुयोगद्वार है। उसका ही नाम बन्धस्वामित्वविचय है। जो बन्धस्वामित्वविचय बन्धन अनुयोगद्वारके अन्तर्गत बन्धविधान अधिकारके भीतर प्रसिद्ध है वह प्रवाहरूपसे अनादिनिधन है। ' जो सो ' इस वचनसे चूंकि उसका स्मरण कराया गया है इसीलिये यह निर्देश सम्बन्धका निरूपक है, और यही अभिधेयका भी निरूपक है। वह इस प्रकार है— जीव और कर्मोंका मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योगोंसे जो एकत्व परिणाम होता है उसे बन्ध कहते हैं। कहा भी है—

१ प्रतिषु ' अभिहिय ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधेण य संजोगो पोग्गलदव्वेण होइ जीवस्स ।
बंधो पुण विण्णेओ बंधविओओ पमोक्खो[1] दु ॥ १ ॥

एदस्स बंधस्स सामित्तं बंधसामित्तं, तस्स विचओ [बंधसामित्तविचओ, विचओ] विचारणा मीमांसा परिक्खा इदि एयट्ठो । तस्स बंधसामित्तविचयस्स इमो दुविहो णिद्देसो त्ति जेणेदं सुत्तं देसामासियं तेणेत्थ पओजणं पि परूवेदव्वं । किमट्ठमेत्थ बंधस्स सामित्तं उच्चदे ? संत-दव्व-खेत्त-फोसण-कालंतर-भावप्पाबहुव-गइरागइबंधगत्तेण अवगयाणं चोद्दसगुणट्ठाणाणं अणवगदे बंधविसेसे बंधगत्तं बंधकारणगइरागईओ च सम्मं ण णव्वंति त्ति काऊण चोद्दस-गुणट्ठाणाणि अहिकिच्च अप्पाउआणमणुगहट्ठं बंधविसेसो उच्चदे । तस्स णिद्देसो दुविहो ओघादेसभेएण । तिविहो किण्ण होदि ? ण, वयणपओगो हि णाम परट्ठो । ण च परो वि दुणयवदिरित्तो अत्थि जेण तिविहा एयविहा वा परूवणा होज्ज त्ति । ओघणिद्देसो दव्व-ट्ठियणयाणुग्गहकरो, इयरो वि पज्जवट्ठियणयस्स ।

जीवका पुद्गल द्रव्यसे जो बन्ध सहित संयोग होता है उसे बन्ध और बन्धके वियोगको मोक्ष जानना चाहिये ॥ १ ॥

इस बन्धका जो स्वामित्व है वह बन्धस्वामित्व है । उसका जो विचय है वह बन्धस्वामित्वविचय है । विचय, विचारणा, मीमांसा और परीक्षा, ये समानार्थक शब्द हैं । 'उस बन्धस्वामित्वविचयका यह दो प्रकारका निर्देश है ' चूंकि यह सूत्र देशामर्शक है इस लिये यहां प्रयोजन भी कहना चाहिये ।

शंका—यहां बन्धके स्वामित्वको किस लिये कहा जाता है ?

समाधान—सत्त्व, द्रव्य, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव, अल्पबहुत्व और गत्यागति बन्धक रूपसे जाने गये चौदह गुणस्थानोंके बन्धविशेषके अज्ञात होनेपर बन्धकत्व व बन्धनिमित्तक गति-आगतिका भले प्रकार ज्ञान नहीं हो सकता, ऐसा जानकर चौदह गुणस्थानोंका अधिकार करके अल्पायु शिष्योंके अनुग्रहके लिये बन्धविशेष कहा जाता है । उसका निर्देश ओघ और आदेशके भेदसे दो प्रकार है ।

शंका—वह निर्देश तीन प्रकारका क्यों नहीं होता ?

समाधान—नहीं होता, क्योंकि वचनका प्रयोग परके लिये होता है, और पर भी दो नयोंको छोड़कर है नहीं जिससे तीन प्रकार या एक प्रकार प्ररूपणा होसके ।

ओघनिर्देश द्रव्यार्थिक नयवालोंका और इतर अर्थात् आदेशनिर्देश पर्यायार्थिक नयवालोंका अनुग्रहकर्ता है ।

---

१ प्रतिषु ' पमोक्खा ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओघेण बंधसामित्तविचयस्स चोद्दसजीवसमासाणि णादव्वाणि भवंति ॥ २ ॥

' जहा उद्देसो तहा णिद्देसो ' त्ति जाणावणट्ठमोघेणेत्ति उत्तं । बंधसामित्तविचयस्सेत्ति संबंधे छट्ठी दट्ठव्वा । अधवा, बंधसामित्तविचए इदि विसयलक्खणसत्तमीए छट्ठीणिद्देसो कायव्वो । पुव्वमवगया चेव चोद्दसजीवसमासा, पुणो ते एत्थ किमट्ठं परूविज्जंते ? ण एस दोसो, विस्सरणालुअसिस्ससंभालणट्ठत्तादो ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा अणियट्टिबादरसांपराइयपइट्ठउवसमा खवा सुहुमसांपराइयपइट्ठ-उवसमा खवा उवसंतकसायवीयरागछदुमत्था खीणकसायवीयरायछदु-मत्था सजोगिकेवली अजोगिकेवली ॥ ३ ॥

ओघकी अपेक्षा बन्धस्वामित्वविचयके चौदह जीवसमास जानने योग्य हैं ॥ २ ॥

' जैसा उद्देश वैसा निर्देश होता है ' इसके ज्ञापनार्थ ' ओघसे ' ऐसा कहा है । ' बन्धस्वामित्वविचयके ' यह सम्बन्धमें षष्ठी विभक्ति जानना चाहिये । अथवा ' बन्ध-*स्वामित्वविचयमें ' इस प्रकार विषयाधिकरण लक्षण सप्तमी विभक्तिके स्थानमें षष्ठी* विभक्तिका निर्देश करना चाहिये ।

शंका—चौदह जीवसमास पूर्वमें जाने ही जा चुके हैं, फिर उनकी यहां प्ररूपणा किसलिये की जाती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यह कथन विस्मरणशील शिष्योंके स्मरण करानेके लिये है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक व क्षपक, अनिवृत्तिबादरसाम्परायिक-प्रविष्ट उपशमक व क्षपक, सूक्ष्मसाम्परायिकप्रविष्ट उवशमक व क्षपक, उपशान्तकषाय वीत-रागछद्मस्थ, क्षीणकषाय वीतरागछद्मस्थ, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली, ये चौदह जीव-समास हैं ॥ ३ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एदस्स सुत्तस्स अत्थो जहा जीवट्ठाणे वित्थरेण परूविदो तहा एत्थ परूवेदव्वो, विसेसाभावादो । एवं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं सरूवं संभालिय बंधसामित्तपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

एदेसिं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं पयडिबंधवोच्छेदो कादव्वो भवदि ॥ ४ ॥

जदि जीवसमासाणं पयडिबंधवोच्छेदो चेव उच्चदि तो एदस्स गंथस्स बंधसामित्तविचयसण्णा कधं घडदे ? ण एस दोसो, एदम्मि गुणट्ठाणे एदासिं पयडीणं बंधवोच्छेदो होदि त्ति कहिदे हेट्ठिल्लगुणट्ठाणाणि तासिं पयडीणं बंधसामियाणि त्ति सिद्धीदो । किं च वोच्छेदो दुविहो उप्पादाणुच्छेदो अणुप्पादाणुच्छेदो चेदि । उत्पादः सत्त्वं, अनुच्छेदो विनाशः अभावः नीरूपिता[1] इति यावत् । उत्पाद एव अनुच्छेदः उत्पादानुच्छेदः, भाव एव अभाव इति यावत् । एसो दव्वट्ठियणयव्ववहारो । ण च एसो एयंतेण चप्पलओ, उत्तरकाले अप्पिदपज्जायस्स

इस सूत्रका अर्थ जैसे जीवस्थानमें विस्तारसे कहा गया है वैसे ही यहां भी कहना चाहिये, क्योंकि, जीवस्थानसे यहां कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार चौदह जीवसमासोंके स्वरूपका स्मरण कराकर बन्धस्वामित्वके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

इन चौदह जीवसमासोंके प्रकृतिबन्धव्युच्छेदका कथन करने योग्य है ॥ ४ ॥

शंका—यदि यहां जीवसमासोंका प्रकृतिबन्धव्युच्छेद ही कहा जाता है तो फिर इस ग्रन्थका 'बन्धस्वामित्व' यह नाम कैसे घटित होगा ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इस गुणस्थानमें इतनी प्रकृतियोंका बन्धव्युच्छेद होता है, ऐसा कहनेपर उससे नीचेके गुणस्थान उन प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी हैं, यह स्वयमेव सिद्ध हो जाता है । दूसरी बात यह है कि व्युच्छेद दो प्रकारका है— उत्पादानुच्छेद और अनुत्पादानुच्छेद । उत्पादका अर्थ सत्त्व और अनुच्छेदका अर्थ विनाश, अभाव अथवा नीरूपिपना है । 'उत्पाद ही अनुच्छेद उत्पादानुच्छेद' (इस प्रकार यहां कर्मधारय समास है) । उक्त कथनका अभिप्राय भावको ही अभाव बतलाना है । यह द्रव्यार्थिक नयके आश्रित व्यवहार है । और यह एकान्त रूपसे अर्थात् सर्वथा मिथ्या भी नहीं है, क्योंकि, उत्तरकालमें विवक्षित पर्यायके विनाशसे विशिष्ट द्रव्य पूर्व

---

१ प्रतिषु 'निरूपिता' इति पाठः ।

Jain Education International		For Private & Personal Use Only		www.jainelibrary.org

विणासेण विसिट्ठदव्वस्स पुव्विल्लकाले वि उवलंभादो। दव्वट्ठियणयम्मि संताणं पज्जायाणं कधमभावो ? को भणदि तेसिं तत्थाभावो[1] त्ति, किंतु ते तत्थ अप्पहाणा अविवक्खिया अणप्पिया इदि तेसिं दव्वत्तमेव ण तत्थ पज्जायत्तं। कधमत्थियवसेण अदव्वाणं पज्जयाणं दव्वत्तं ? ण, दव्वदो एयंतेण तेसिं पुधभूदाणमणुवलंभादो, दव्वसहावाणं चेवुवलंभा। जदि एवं तो भावस्स दुचरिमादिसु समएसु चरिमसमए इव अभाववहारो किण्ण कीरदे ? ण एस दोसो, दुचरिमादीणं चरिमसमयस्सेव अभावेण सह पच्चासत्तीए अभावादो। दव्वट्ठियस्स कधमभावव्ववहारो ? ण एस दोसो, 'यदस्ति न तद् द्वयमतिलंध्य वर्तत' इति दो वि णए अविलंबिऊण ट्ठिदणेगमणयस्स भावाभावव्ववहारविरोहाभावादो। अनुत्पादः असत्वं, अनुच्छेदो

कालमें भी पाया जाता है।

शंका—द्रव्यार्थिक नयमें विद्यमान पर्यायोंका अभाव कैसे होता है ?

समाधान—यह कौन कहता है कि उनका वहां अभाव होता है, किन्तु वे वहां अप्रधान, अविवक्षित अथवा अनर्पित हैं, इसलिये उनके द्रव्यपना ही है, पर्यायपना वहां नहीं है।

शंका—द्रव्यार्थिक नयके वशसे द्रव्यसे भिन्न पर्यायोंके द्रव्यत्व कैसे सम्भव है ?

समाधान—यह शंका ठीक नहीं, क्योंकि, पर्यायें द्रव्यसे सर्वथा भिन्न नहीं पायी जातीं, किन्तु द्रव्यस्वरूप ही वे उपलब्ध होती हैं।

शंका—यदि ऐसा है तो फिर पदार्थके अन्तिम समयके समान द्विचरमादि समयोंमें भी अभावका व्यवहार क्यों नहीं किया जाता ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्विचरमादिक समयोंके अन्तिम समयके समान अभावके साथ प्रत्यासत्ति नहीं है।

शंका—द्रव्यार्थिककी अपेक्षा पर्यायोंमें अभावका व्यवहार कैसे होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, 'जो है वह दोनोंका अतिक्रमण कर नहीं रहता' इस लिये दोनों नयोंका आश्रयकर स्थित नैगमनयके भाव व अभाव रूप व्यवहारमें कोई विरोध नहीं है।

अनुत्पादका अर्थ असत्व और अनुच्छेदका अर्थ विनाश है। अनुत्पाद ही अनुच्छेद

१ प्रतिषु 'तथाभावो' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विनाशः, अनुत्पाद एव अनुच्छेदः (अनुत्पादानुच्छेदः) असतः अभाव इति यावत्, सतः असत्वविरोधात् । एसो पज्जवट्ठियणयव्ववहारो । एत्थ पुण उप्पादाणुच्छेदमस्सिदूण जेण सुत्तकारेण अभावव्ववहारो कदो तेण भावो चेव पयडिबंधस्स परूविदो । तेणेदस्स गंथस्स बंधसामित्तविचयसण्णा घडदि त्ति ।

पंचण्णं णाणावरणीयाणं चदुण्हं दंसणावरणीयाणं जसकित्ति-उच्चागोद-पंचण्हमंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥५॥

बंधो बंधगो त्ति भणिदं होदि । पयडिसमुक्कित्तणाए णाणावरणादीणं सरूवं परूविद-मिदि णेह परूविज्जदे, पउणरुत्तियादो । को बंधो को अबंधओ त्ति णिद्देसादो एदं पुच्छा-सुत्तमासंकियसुत्तं वा । किं मिच्छाइट्ठी बंधओ किं सासणसम्माइट्ठी किं सम्मामिच्छाइट्ठी किं असंजदसम्माइट्ठी एवं गंतूण किं अजोगी किं सिद्धो बंधओ त्ति तेणेवं पुच्छा कायव्वा । एदं देसामासियसुत्तं । किं बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि किमुदओ पुव्वं वोच्छिज्जदि किं दो वि समं वोच्छिज्जंति, किं सोदएण एदासिं बंधो किं परोदएण किं स-परोदएण, किं सांतरो बंधो किं

अर्थात् असत्का अभाव होता है, क्योंकि सत्के असत्वका विरोध है । यह पर्यायार्थिक नयके आश्रित व्यवहार है । यहांपर चूंकि सूत्रकारने उत्पादानुच्छेदका आश्रय करके ही अभावका व्यवहार किया है, इसलिये प्रकृतिबन्धका सद्भाव ही निरूपित किया गया है । इस प्रकार इस ग्रन्थका ‘ बन्धस्वामित्वविचय ’ नाम संगत ही है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक है और कौन अबन्धक है ? ॥ ५ ॥

‘ बन्ध ’ शब्दसे यहां बन्धकका अभिप्राय प्रकट किया गया है । चूंकि प्रकृतिसमुत्कीर्तन चूलिकामें ज्ञानावरणादिकोंका स्वरूप कहा जा चुका है, अत एव अब उनका स्वरूप यहां नहीं कहा जाता, क्योंकि ऐसा करनेसे पुनरुक्ति दोष आवेगा । ‘ कौन बन्धक और कौन अबन्धक ’ इस निर्देशसे यह पृच्छासूत्र अथवा आशंकासूत्र है, ऐसा समझना चाहिये । इसीलिये क्या मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक है, क्या सम्यग्मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक है, इस प्रकार जाकर क्या अयोगी बन्धक है, क्या सिद्ध जीव बन्धक है, ऐसा यहां प्रश्न करना चाहिये । यह देशामर्शक सूत्र है । इसलिये यहां क्या बन्धकी पूर्वमें व्युच्छित्ति होती है (१) क्या उदयकी पूर्वमें व्युच्छित्ति है (२) या दोनोंकी साथ ही व्युच्छित्ति होती है (३) क्या अपने उदयके साथ इनका बन्ध होता है (४) क्या पर प्रकृतियोंके उदयके साथ इनका बन्ध होता है (५) या अपने व पर दोनोंके उदयसे इनका बन्ध होता है (६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिरंतरो बंधो किं सांतरणिरंतरो, किं सपच्चओ किमपच्चओ, किं गइसंजुत्तो किमगइसंजुत्तो, कदिगदिया सामिणो असामिणो, किं वा बंधद्धाणं, किं चरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि किं पढम-समए किमपढमअचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि, किं सादिगो बंधो किं अणादिओ, किं धुवो किमद्धुवो त्ति, तेणेदाओ तेवीसपुच्छाओ पुव्विल्लपुच्छाए अंतब्भूदाओ त्ति दठ्ठव्वाओ (एत्थुववुज्जंतीओ आरिसगाहाओ—

बंधो बंधविही पुण सामित्तद्धाण पच्चयविही य ।
एदे पंचणिओगा मग्गणठाणेसु मग्गेज्जा[1] ॥ २ ॥
बंधोदय पुव्वं वा समं व णियएण कस्स व परेण ।
अण्णदरस्सुदएण व सांतरणिरंतरं का च ॥ ३ ॥
पच्चय-सामित्तविही संजुत्तद्धाणएण तह चेय ।
सामित्तं णेयव्वं पयडीणं ठाणमासेज्ज ॥ ४ ॥
बंधोदय पुव्वं वा समं व स-परोदए तदुभएण ।
सांतर णिरंतरं वा चरिमेदर सादिआदीया ॥ ५ ॥)

क्या सान्तर बन्ध होता है (७) क्या निरन्तर बन्ध होता है (८) या सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है (९) क्या सनिमित्तक बन्ध होता है (१०) या अनिमित्तक (११) क्या गतिसंयुक्त बन्ध होता है (१२) या गतिसंयोगसे रहित (१३) कितनी गतिवाले जीव स्वामी हैं (१४) और कितनी गतिवाले स्वामी नहीं है (१५) बन्धाध्वान कितना है अर्थात् बन्धकी सीमा किस गुणस्थान तक है (१६) क्या अन्तिम समयमें बन्धकी व्युच्छित्ति होती है (१७) क्या प्रथम समयमें बन्धकी व्युच्छित्ति होती है (१८) या बीचके समयमें (१९) बन्ध क्या सादि है (२०) या क्या अनादि (२१) क्या ध्रुव बन्ध होता है (२२) या अध्रुव (२३) ये तेईस प्रश्न पूर्वोक्त प्रश्नके अन्तर्गत हैं, ऐसा जानना चाहिये। यहां उपयुक्त आर्ष गाथायें—

बन्ध, बन्धविधि, बन्धस्वामित्व, अध्वान अर्थात् बन्धसीमा और प्रत्ययविधि, ये पांच नियोग मार्गणास्थानोंमें खोजने योग्य हैं ॥ २ ॥

बन्ध पूर्वमें है, उदय पूर्वमें हैं, या दोनों साथ हैं, किस कर्मका बन्ध निजके उदयके साथ होता है, किसका परके साथ, और किसका अन्यतरके उदयके साथ, कौन प्रकृति सान्तरबन्धवाली है, और कौन निरन्तरबन्धवाली, प्रत्ययविधि, स्वामित्वविधि तथा गति-संयुक्त बन्धाध्वानके साथ प्रकृतियोंके स्थानका आश्रयकर स्वामित्व जानना चाहिये ॥३-४॥

बन्ध पूर्वमें, उदय पूर्वमें या दोनों साथ होते हैं, वह बन्ध स्वोदयसे परोदयसे या दोनोंके उदयसे होता है, उक्त बन्ध सान्तर है या निरन्तर, वह अन्तिम समयमें होता है या इतर समयमें, तथा वह सादि है या अनादि है ॥ ५ ॥

---

१ प्रतिषु 'मग्गेज्जो' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एत्थ एदासु पुच्छासु विसमपुच्छाणमत्थो वुच्चदे । तं जहा– बंधवोच्छेदो एत्थेव सुत्तसिद्धो त्ति तं मोत्तूण पयडीणमुदयवोच्छेदं ताव वत्तइस्सामो । मिच्छत्त-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं दसण्हं पयडीणं मिच्छाइट्ठिस्स चरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदो । एसो महाकम्मपयडिपाहुडउवएसो । चुण्णिसुत्तकत्ताराणमुवएसेण[1] पंचण्णं पयडीणमुदयवोच्छेदो, चदुजादि-थावराणं सासणसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदब्भुवगमादो । अणंताणुबंधिकोह-माण-माया-लोहाणं सासणसम्माइट्ठिचरिमसमए उदयवोच्छेदो । सम्मा-मिच्छत्तस्स सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि उदयवोच्छेदो[2] । अपच्चक्खाणावरणकोह-माण-माया-लोह-णिरयाउ-देवाउ-णिरयगइ-देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-चत्तारिआणुपुव्वि-दुभग-अणादेज्ज-अजसकित्तीणं सत्तारसण्णमेदासिं पयडीणं असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदो[3] । पच्चक्खाणा-वरणकोह-माण-माया-लोह-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-उज्जोव-णीचागोदाणमट्ठण्णं पयडीणं संजदा-संजदम्मि उदयवोच्छेदो । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-आहारसरीरदुगाणं पंचण्णं पयडीणं

इन प्रश्नोंमें विषम प्रश्नोंका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है— चूंकि बन्ध-व्युच्छेद यहां ही सूत्रसे सिद्ध है अत एव उसको छोड़कर प्रकृतियोंके उदयव्युच्छेदको कहते हैं। मिथ्यात्व, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इन दश प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद मिथ्यादृष्टि गुण-स्थानके अन्तिम समयमें होता है। यह महाकर्मप्रकृतिप्राभृतका उपदेश है। चूर्णिसूत्रोंके कर्ता यतिवृषभाचार्यके उपदेशसे मिथ्यात्व गुणस्थानके अन्तिम समयमें पांच प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद होता है, क्योंकि, चार जाति और स्थावर प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें माना गया है। अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया और लोभका उदयव्युच्छेद सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानके अन्तिम समयमें होता है। सम्यग्मिथ्यात्वका उदयव्युच्छेद सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें होता है। अप्रत्याख्याना-वरण क्रोध, मान, माया, लोभ, नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, चार आनुपूर्वी, दुर्भग, अनादेय और अयशकीर्ति, इन सत्तरह प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें होता है। प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, उद्योत और नीच गोत्र, इन आठ प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद संयतासंयतगुणस्थानमें होता है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, आहारशरीर और आहारशरीरांगोपांग, इन पांच प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद प्रमत्तसंयत

---

१ प्रतिषु ' णमिऊणकत्ताराण- ' इति पाठः ।

२ मिच्छे मिच्छादावं सुहुमतियं सासणे अणेइंदी । थावरवियलं मिस्से मिस्सं च य उदयवोच्छिण्णा ॥ गो. क. २६५.

३ अयदे विदियकसाया वेगुव्वियछक्क णिरय-देवाऊ । मणुय-तिरियाणुपुव्वी दुब्भगणादेज्ज अज्जसयं ॥ गो. क. २६६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पमत्तसंजदम्मि उदयवोच्छेदो[1]। अद्धणारायण-खीलिय-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडण-वेदगसम्मत्ताणं चदुण्हं पयडीणं अप्पमत्तसंजदम्मि उदयवोच्छेदो। हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं छण्णं पयडीणमपुव्वकरणम्मि उदयवोच्छेदो। इत्थि-णवुंसय-पुरिसवेद-कोह-माण-मायासंजलणाणं छण्णं पयडीणमणियट्टिम्हि उदयवोच्छेदो। लोभसंजलणस्स एक्कस्स चेव सुहुमसांपराइयचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदो। वज्जणारायण-णारायणसरीरसंघडणाणं दोण्णं पयडीणं उवसंतकसायम्मि उदयवोच्छेदो[2]। णिद्दा-पयलाणं दोण्हं पि खीणकसायदुचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं चोद्दसण्णं पयडीणं खीणकसायचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदो[3]। ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइर-णारायणसरीरसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघादुस्सास-दोविहायगदि-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुस्सर-दुस्सर-णिमिणाणमेगुणतीसपयडीणं सजोगिकेवलिम्हि उदय-

---

गुणस्थानमें होता है। अर्धनाराच, कीलित, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन और वेदकसम्यक्त्व इन चार प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें होता है। हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्सा, इन छह प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद अपूर्वकरण गुणस्थानमें होता है। स्त्री, नपुंसक और पुरुषवेद, संज्वलन क्रोध, मान और माया, इन छह प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें होता है। केवल एक संज्वलन लोभका उदय-व्युच्छेद सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें होता है। वज्रनाराच और नाराच शरीरसंहनन, इन दो प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद उपशान्तकषाय गुणस्थानमें होता है। निद्रा और प्रचला दोनों प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद क्षीणकषाय गुणस्थानके द्विचरम समयमें होता है। पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय, इन चौदह प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद क्षीणकषाय गुणस्थानके अन्तिम समयमें होता है। औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभनाराच-संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुकलघुक, उपघात, परघात, उच्छ्वास, दो विहायोगतियां, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुस्वर, दुस्वर और निर्माण, इन उनतीस प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद सयोगिकेवली गुणस्थानमें होता है। दो वेदनीय, मनुष्यायु,

---

१ देसे तदियकसाया तिरियाउज्जोव-णीच-तिरियगदी। छट्ठे आहारदुगं थीणतियं उदयवोच्छिण्णा॥ गो. क. २६७.

२ अपमत्ते सम्मत्तं अंतिमतियसंहदी यऽपुव्वम्हि। छच्चेव णोकसाया अणियट्टीभागभागेसु॥ वेदतिय कोह-माणं मायासंजलणमेव सुहुमंते। सुहुमो लोहो संते वज्जणाराय-णारायं॥ गो. क. २६८–२६९

३ खीणकसायदुचरिमे णिद्दा पयला य उदयवोच्छिण्णा। णाणंतरायदसयं दंसणचत्तारि चरिमम्हि॥ गो. क. २७०.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

वोच्छेदो[1] । दोवेदणीय-मणुस्साउ-मणुस्सगइ-पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-तित्थयर-उच्चागोदाणं तेरसण्हं पयडीणमजोगिकेवलिम्हि उदयवोच्छेदो[2] ।(एत्थ उवसंहारगाहा—

दस चदुरिगि सत्तारस अट्ठ य तह पंच चेव चउरो य ।
छच्छक्क एग दुग दुग चोद्दस उगुतीस तेरसुदयविही[3] ॥ ६ ॥

एवमुदयवोच्छेदं परूविय कासिं पयडीणं बंधो उदए फिट्टे वि होदि, कासिं पयडीणं बंधे फिट्टे वि उदओ होदि, कासिं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति त्ति वुच्चदे । तं जहा— देवाउ-देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-आहारदुग-अजसकित्तीण-मट्ठण्णं पयडीणं पढमसुदओ वोच्छिज्जदि पच्छा बंधो (एत्थ उवसंहारगाहा—

देवाउ-देवचउक्काहारदुअं च अजसमट्ठण्हं ।
पढमसुदओ विणस्सदि पच्छा बंधो मुणयेव्वो ॥ ७ ॥)

मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थंकर और उच्चगोत्र, इन तेरह प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद अयोगिकेवली गुणस्थानमें होता है । यहां उपसंहारगाथा—

दश, चार, एक, सत्तरह, आठ, पांच, चार, छह, छह, एक, दो, दो, चौदह, उनतीस और तेरह, (इस प्रकार क्रमशः मिथ्यादृष्टि आदि चौदह गुणस्थानोंमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृतियोंकी संख्या है) ॥ ६ ॥

इस प्रकार उदयव्युच्छेदको कहकर अब किन प्रकृतियोंका बन्ध उदयके नष्ट होनेपर भी होता है, किन प्रकृतियोंका उदय बन्धके नष्ट होनेपर भी होता है, और किन प्रकृतियोंका बन्ध व उदय दोनों साथ ही व्युच्छिन्न होते हैं, इस बातको कहते हैं । वह इस प्रकार है— देवायु, देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकआंगोपांग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आहारकशरीर, आहारकआंगोपांग और अयशकीर्ति, इन आठ प्रकृतियोंका प्रथम उदयका विच्छेद होता है, पश्चात् बन्धका । यहां उपसंहारगाथा—

देवायु, देवचतुष्क अर्थात् देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिक-आंगोपांग, तथा आहारकशरीर, आहारक आंगोपांग एवं अयशकीर्ति, इन आठ प्रकृतियोंका पहिले उदय नष्ट होता है, पश्चात् बन्ध, ऐसा जानना चाहिये ॥ ७ ॥

---

१ तदियेक्कवज्ज-णिमिणं थिर-सुह-सर-गदि-उराल-तेजदुगं । संठाणं वण्णागुरुचउक्क-पत्तेय जोगिम्हि ॥ गो. क. २७१.

२ तदियेक्कं मणुवगदी पंचिंदिय-सुभग-तस-तिगादेज्जं । जस-तित्थं मणुवाऊ उच्चं च अजोगिचरिमम्हि ॥ गो. क. २७२. ३ गो. क. २६३.

४ देवचउक्काहारदुगज्जसदेवाउगाण सो पच्छा । गो. क. ४००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छत्त-अणंताणुबंधिचउक्क-अपच्चक्खाणावरणचउक्क-पच्चक्खाणावरणचउक्क-तिण्णि-संजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछ-एइंदिय[1]-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-मणुसगइ-पाओग्गाणुपुव्वि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं एक्कत्तीसपयडीणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति[2]। एत्थ उवसंहारगाहाओ—

मिच्छत्त-भय-दुगुंछा-हस्स-रई-पुरिस-थावरादावा ।
सुहुमं जाइचउक्कं साहारणयं अपज्जत्तं ॥ ८ ॥
पण्णरस कसाया विणु लोहेणेक्केण आणुपुव्वी य ।
मणुसाणं एदासिं समगं बंधोदवुच्छेदो ॥ ९ ॥

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-दोवेयणीय-लोहसंजलण-इत्थि-णवुंसयवेद-अरइ-सोग-णिरयाउ-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-णिरयगइ-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-पंचिंदियजाइ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंडघण-वण्णचउक्क-णिरयगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुअलहुअचउक्क-उज्जोव-दोविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज जसगित्ति-णिमिण-तित्थयर-णीचुच्चगोद-पंच-

---

मिथ्यात्व, चार अनन्तानुबन्धी, चार अप्रत्याख्यानावरण, चार प्रत्याख्यानावरण, तीन संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रियजाति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इन इकतीस प्रकृतियोंका बन्ध व उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं। यहां उपसंहारगाथायें—

मिथ्यात्व, भय, जुगुप्सा, हास्य, रति, पुरुषवेद, स्थावर, आताप, सूक्ष्म, एकेन्द्रिय आदि चार जाति, साधारण, अपर्याप्त, संज्वलनलोभके विना पन्द्रह कषाय और मनुष्यगत्यानुपूर्वी, इन प्रकृतियोंका बन्धव्युच्छेद और उदयव्युच्छेद साथ ही होता है ॥८-९॥

पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, दो वेदनीय, संज्वलनलोभ, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, अरति, शोक, नारकायु, तिर्यगायु, मनुष्यायु, नरकगति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, वर्णादिक चार, नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु आदिक चार, उद्योत, दो विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थंकर, नीचगोत्र, उच्चगोत्र

---

१ अप्रतौ ' दुगुंछाणमेगिंदिय- ' इति पाठः ।

२ मिच्छत्तादावाणं णराणु-थावरचउक्काणं । पण्णरकसाय-भयदुग-हस्सदु-चउजाइ-पुरिसवेदाणं । सममेक्कत्तीसाणं सेसिगसीदाण पुव्वं तु ॥ गो. क. ४००-४०१.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

तराइयाणमेगासीदिपयडीणं पढमं बंधो वोच्छिज्जदि, पच्छा उदओ (एत्थ उवसंहारगाहा—

पुव्वुत्तवसेसाओ एगासीदी हवंति पयडीओ ।
ताणं बंधुच्छेदो पुव्वं पच्छोदउच्छेदो ॥ १० ॥)

सेसाणं जहावसरमत्थं भणिस्सामो ।

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु उवसमा खवा बंधा । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदद्धाए[1] चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिजदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा— 'मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइय-खवगा' त्ति एदेण वयणेण अद्धाणं जाणाविदं । 'एदे बंधा, अवसेसा अबंधा त्ति' एदेण बंधस्स सामित्तं जाणाविदं । 'सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छि-ज्जदि' त्ति एदेण वि 'किं चरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि त्ति' पुच्छाए पढम-[अपढम-] अचरिमपडिसेहमुहेण पडिउत्तरो दिण्णो । अवसेसाणं पुच्छाणं ण परिच्छेओ कदो । तेणेदं

....

और पांच अन्तराय, इन इक्यासी प्रकृतियोंका पहिले बन्ध नष्ट होता है, पश्चात् उदय । यहां उपसंहारगाथा—

पूर्वोक्त प्रकृतियोंसे शेष जो इक्यासी प्रकृतियां रहती हैं उनका बन्धव्युच्छेद पहिले और उदयव्युच्छेद पश्चात् होता है ॥ १० ॥

शेष प्रश्नोंका अर्थ यथावसर कहेंगे—

मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत उपशामक व क्षपक तक उपर्युक्त ज्ञानावरणादि प्रकृतियोंके बन्धक हैं । सूक्ष्मसाम्परायिककालके अन्तिम समयमें जाकर बन्ध व्युछिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ६ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है— 'मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्प-रायिक क्षपक तक' इस वचनसे बन्धाध्वान ज्ञापित किया है । 'ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं' इससे बन्धका स्वामित्व ज्ञापित किया है । 'सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतकालके अन्तिम समयमें जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है' इससे भी 'क्या चरम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता ?' इस प्रश्नका प्रथम और [अप्रथम-] अचरम समयके प्रतिषेधमुखसे प्रत्युत्तर दिया गया है । शेष प्रश्नोंका निर्णय यहां सूत्रमें नहीं किया गया । इसीलिये यह देशामर्शक

....

१ प्रतिषु 'संजदाए' इति पाठः ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

देसामासियसुत्तं, तम्हा एत्थ लीणत्थाणं परूवणं कस्सामो । तं जहा— किं बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि, किमुदओ पुव्वं वोच्छिज्जदि, किं दो वि समं वोच्छिज्जंति, एदासिं तिण्णं पुच्छाणं वुत्तरो वुच्चदे । एदासिं सोलसण्णं पयडीणं बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि सुहुमसांपराइयचरिमसमए, उदओ पच्छा वोच्छिज्जदि; पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं खीणकसाय-चरिमसमए, जसकित्ति उच्चागोदाणमजोगिचरिमसमए उदयवोच्छेददंसणादो । किं सोदएण, किं परोदएण, किं सोदयपरोदएण एदासिं बंधो त्ति पुच्छमस्सिदूण वुच्चदे । एत्थ ताव एदेण संबंधेण सोदएण परोदएण सोदय-परोदएण बज्झमाणपयडिपरूवणं कस्सामो । तं जहा— णिरयाउ-देवाउ-णिरयगइ-देवगइ-वेउव्वियसरीर-आहारसरीर-वेउव्विय-आहारसरीरंगोवंग-णिरयगइ-देवगइ-पाओग्गाणुपुव्वि-तित्थयरमिदि एदाओ एक्कारसपयडीओ परोदएण बज्झंति (एत्थ उव-संहारगाहा—

तित्थयर-णिरय-देवाउअ-वेउव्वियछक्क दो वि आहारा ।
एक्कारसपयडीणं बंधो हु परोदए वुत्तो ॥ ११ ॥)

पंचणाणावरणीय- [चउदंसणावरणीय-] मिच्छत्त-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्कं अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयमिदि एदाओ सत्तवीसपयडीओ सोदएण

सूत्र है और देशामर्शक होनेसे यहां लीन अर्थात् अन्तर्निहित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— क्या बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, क्या उदय पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, या क्या दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं? इन तीन प्रश्नोंका उत्तर कहते हैं— इन सोलह प्रकृतियोंका बन्ध उदयव्युच्छित्तिसे पहिले सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें व्युच्छिन्न होता है, तत्पश्चात् उदयकी व्युच्छित्ति होती है; क्योंकि पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय, इन चौदह प्रकृतियोंका क्षीणकषाय गुणस्थानके अन्तिम समयमें, तथा यशकीर्ति व उच्चगोत्र इन दो प्रकृतियोंका अयोगिकेवलीके अन्तिम समयमें उदयव्युच्छेद देखा जाता है। 'क्या स्वोदयसे, क्या परोदयसे, या क्या स्वोदय-परोदयसे इनका बन्ध होता है?' इस प्रश्नका आश्रयकर उत्तर कहते हैं। अब यहां पहिले इस सम्बन्धसे स्वोदय, परोदय और स्वोदय-परोदयसे बंधनेवाली प्रकृतियोंका निरूपण करते हैं। वह इस प्रकार है— नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति, वैक्रियिकशरीर, आहारक-शरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, आहारकशरीरांगोपांग, नरकगत्यानुपूर्वी, देवगत्यानुपूर्वी और तीर्थंकर, ये ग्यारह प्रकृतियां परोदयसे बंधती हैं। यहां उपसंहारगाथा—

तीर्थंकर, नारकायु, देवायु, वैक्रियिकशरीरादि छह और दोनों आहारक, इन ग्यारह प्रकृतियोंका बन्ध परोदयसे कहा गया है ॥ ११ ॥

पांच ज्ञानावरणीय, [चार दर्शनावरणीय], मिथ्यात्व, तैजस और कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुकलघुक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय, ये

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बज्झंति । पंचदंसणावरणीय-दोवेदणीय-सोलसकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालियसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वि-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदाव-उज्जोव-दोविहायगदि-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साधारणसरीर-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णीचुच्चागोदमिदि एदाओ वासीदिपयडीओ सोदय-परोदएण बज्झंति[1]। एत्थ उवसंहारगाहाओ —

णाणंतराय-दंसण-थिरादिचउ-तेजकम्मदेहाइं ।
णिमिणं अगुरुवलहुअं वण्णचउक्कं च मिच्छत्तं ॥ १२ ॥

सत्तावीसेदाओ बज्झंति हु सोदएण पयडीओ ।
सोदय-परोदएण वि बज्झंतवसेसियाओ दु ॥ १३ ॥

एत्थ णाणावरणंतराइयदसपयडीओ दंसणावरणस्स चत्तारि पयडीओ चेव बंधमाणाणि । सव्वगुणट्ठाणाणि सोदएण चेव बंधति, मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाया त्ति एदासिं णिरंतरोदयादो सोदएण बज्झमाणपयडीणमब्भंतरे पादादो वा । जसकित्तिं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि

सत्ताईस प्रकृतियां स्वोदयसे बंधती हैं । पांच दर्शनावरणीय, दो वेदनीय सोलह कषाय, नौ नोकषाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिकशरीर, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण शरीर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, नीचगोत्र और उच्चगोत्र, ये व्यासी प्रकृतियां स्वोदय-परोदय दोनों प्रकारसे बंधती हैं । यहां उपसंहारगाथायें—

पांच ज्ञानावरण, पांच अन्तराय, दर्शनावरण चार, स्थिर आदिक चार, तैजस और कार्मण शरीर, निर्माण, अगुरुकलघुक, वर्णादिक चार और मिथ्यात्व, ये सत्ताईस प्रकृतियां तो स्वोदयसे बंधती हैं और शेष प्रकृतियां स्वोदय-परोदयसे बंधती हैं ॥ १२-१३ ॥

यहां ज्ञानावरण व अन्तरायकी दश प्रकृतियां तथा दर्शनावरणकी चार ही प्रकृतियां बंधनेवाली हैं । ये अपने बन्ध योग्य सब गुणस्थानोंमें स्वोदयसे ही बंधती हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक इनका निरन्तर उदय रहता है, अथवा इनका पतन स्वोदयसे बंधनेवाली प्रकृतियोंके भीतर है । यशकीर्ति प्रकृतिको मिथ्यादृष्टिसे

---

१ सुर-णिरयाऊ तित्थं वेगुव्वियछक्कहारमिदि जेसिं । परउदयेण य बंधो मिच्छं सुहुमस्स घादीओ ॥ तेजदुगं वण्णचऊ थिर-सुहजुगलगुरु-णिमिण-धुवउदया । सोदयबंधा सेसा वासीदा उभयबंधाओ ॥ गो. क. ४०२-४०३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति सोदएण वि परोदएण वि बंधति, एदेसु दोण्णं एक्कदरस्सुदयत्तादो। उवरिमा सोदएण चेव बंधंति, संजदासंजदप्पहुडिउवरिमेसु गुणट्ठाणेसु अजसकित्ति-उदयाभावादो। उच्चागोदं मिच्छाइट्ठि प्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति एदे सोदएण परोदएण वि बज्झंति, एत्थ दोण्णं गोदाणमुदयसंभावादो। उवरिमा पुण सोदएण चेव बंधंति, तत्थ णीचागोदस्सुदयाभावादो। तम्हा जसकित्ति-उच्चागोदाणि सोदय-परोदयबंधा इदि सिद्धं।

एदासिं बंधो किं सांतरो किं णिरंतरो किं सांतर-णिरंतरो त्ति एदासिं पुच्छणं पडिवण्णं। एत्थ एदेण अत्थसंबंधेण ताव सांतर-णिरंतर-सांतरणिरंतरेण बज्झमाणपयडीओ जाणावेमो। तं जहा[1]— पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-आउचउक्क-आहार-तेजा-कम्मइयसरीर-आहारसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-णिमिण-तित्थयर-पंचंतराइयमिदि एदाओ चउवण्णं पयडीओ णिरंतरं बज्झंति। तत्थ उवसंहारगाहा—

सत्तेताल धुवाओ तित्थयराहार-आउचत्तारि।
चउवण्णं पयडीओ बज्झंति णिरंतरं सव्वा[2] ॥ १४ ॥

लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक स्वोदयसे भी बांधते हैं और परोदयसे भी बांधते हैं, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेंसे किसी एकका उदय रहता है। असंयतसम्यग्दृष्टिसे ऊपरके गुणस्थानवर्ती जीव स्वोदयसे ही बांधते हैं, क्योंकि, संयतासंयतसे लेकर उपरिम गुणस्थानोंमें अयशकीर्तिका उदय नहीं रहता। उच्चगोत्रको मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत तकके जीव स्वोदयसे और परोदयसे भी बांधते हैं, क्योंकि, यहां दोनों गोत्रोंका उदय सम्भव है। परन्तु इससे ऊपरके जीव स्वोदयसे ही बांधते हैं, क्योंकि, वहां नीचगोत्रका उदय नहीं रहता। इस कारण यशकीर्ति और उच्चगोत्र प्रकृतियां स्वोदय-परोदयसे बंधनेवाली हैं, यह सिद्ध होता है।

अब 'उक्त सोलह प्रकृतियोंका बन्ध क्या सान्तर है, क्या निरन्तर है, और क्या सान्तर-निरन्तर है?' ये तीन प्रश्न प्राप्त होते हैं। यहां इस अर्थसम्बन्धसे पहिले सान्तर, निरन्तर और सान्तर-निरन्तर रूपसे बंधनेवाली प्रकृतियोंका बोध कराते हैं। वह इस प्रकार है—पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा आयु चार, आहारकशरीर, तैजसशरीर, कार्मणशरीर, आहारकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुकलघुक, उपघात, निर्माण, तीर्थंकर और पांच अन्तराय, ये चौवन प्रकृतियां निरंतर बंधती हैं। यहां उपसंहारगाथा—

सैंतालीस ध्रुवप्रकृतियां, तीर्थंकर, आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग और चार आयु, ये सब चौवन प्रकृतियां निरंतर बंधती हैं ॥ १४ ॥

---

१ प्रतिषु 'तं जहा' इति पाठः। २ सत्तेताल धुवा वि य तित्थाहाराउगा णिरंतरगा। गो. क. ४०४.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

काओ धुवबंधियपयडीओ ? एदाओ चेव आउचउक्क-तित्थयराहारदुयविरहिदाओ। एदासिं परूवणगाहाओ—

णाणंतरायदसयं दंसण णव मिच्छ सोलस कसाया ।
भयकम्म दुगुंच्छा वि य तेजा कम्मं च वण्णचदू ॥ १५ ॥
अगुरुअलहु-उवघादं णिमिणं णामं च होंति सगदालं ।
बंधो चउव्वियप्पो धुवबंधीणं पयडिबंधो[1] ॥ १६ ॥

णिरंतरबंधस्स धुवबंधस्स को विसेसो? जिस्से पयडीए पच्चओ जत्थ[2] कत्थ वि जीवे अणादि-धुवभावेण लब्भइ सा धुवबंधपयडी । जिस्से पयडीए पच्चओ[3] णियमेण सादि-अद्धुओ अंतोमुहुत्तादिकालावट्ठाई सा णिरंतरबंधपयडी। जिस्से जिस्से पयडीए अद्धाक्खएण बंधवोच्छेदो संभवइ सा सांतरबंधपयडी। असादावेदणीय-इत्थि-णवुंसयवेद-अरइ-सोग-णिरयगइ-जाइचउक्क-हेट्ठिमपंचसंठाण-पंचसंघडण-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वि-आदावुज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-थावर-

---

शंका—ध्रुवबन्धी प्रकृतियां कौनसी हैं ?

समाधान—चार आयु, तीर्थंकर और दो आहारसे रहित ये उपर्युक्त प्रकृतियां ही ध्रुवप्रकृतियां हैं। इन प्रकृतियोंकी निरूपक गाथायें—

ज्ञानावरण और अंतरायकी दश, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भयकर्म जुगुप्सा, तैजस और कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुकलघु, उपघात और निर्माण नामकर्म, ये सैंतालीस ध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं। इनका प्रकृतिबन्ध सादि, अनादि, ध्रुव एवं अध्रुव रूपसे चार प्रकारका होता है ॥ १५–१६ ॥

शंका—निरंतरबंध और ध्रुवबंधमें क्या भेद है ?

समाधान—जिस प्रकृतिका प्रत्यय जिस किसी भी जीवमें अनादि एवं ध्रुव भावसे पाया जाता है वह ध्रुवबंधप्रकृति है, और जिस प्रकृतिका प्रत्यय नियमसे सादि एवं अध्रुव तथा अन्तर्मुहूर्त आदि काल तक अवस्थित रहनेवाला है वह निरन्तरबन्धप्रकृति है।

जिस जिस प्रकृतिका कालक्षयसे बन्धव्युच्छेद सम्भव है वह सान्तरबन्धप्रकृति है। असातावेदनीय, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, अरति, शोक, नरकगति, जाति चार, अधस्तन पांच संस्थान, पांच संहनन, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, अप्रशस्तविहायो-

---

१ घादिति-मिच्छ-कसाया भय-तेजगुरुदुग-णिमिण-वण्णचओ। सत्तेतालधुवाणं चदुधा सेसाणयं तु दुधा ॥ गो. क. १२४.

२ प्रतिषु 'पओज्जत्थ' इति पाठः। ३ प्रतिषु 'पंचओ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुहुम-अपज्जत्त-साहारण-अथिर-असुह-दुभग-दुस्सर-अणाएज्ज-अजसकित्ती एदाओ चोत्तीसपय-डीओ सांतरं बज्झंति[1]। अवसेसाओ बत्तीस पयडीओ सांतर-णिरंतरं बज्झंति। तासिं णामणिद्देसो कीरदे। तं जहा— सादावेदणीय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-देवगइ-पंचिंदिय-जादि-ओरालिय-वेउव्वियसरीर-समचउरससंठाण-ओरालिय-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसह-वइरणारायणसरीरसंघडण-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-परघादुस्सास-पसत्थ-विहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज[2]-जसकित्ति-णीचुच्चागोद-मिदि सांतर-णिरंतरेण बज्झमाणपयडीओ[3]। एत्थ उवसंहारगाहाओ—

इत्थि-णउंसयवेदा जाइचउक्कं असाद-णिरयदुगं।
आदाउज्जोवारइ-सोगासुह-पंचसंठाणा ॥ १७ ॥

पंचासुहसंघडणा विहायगइ अप्पसत्थिया अण्णे।
थावर-सुहुमासुहदस चोत्तीसिह सांतरा बंधा ॥ १८ ॥

गति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयशकीर्ति, ये चौंतीस प्रकृतियां सान्तर रूपसे बंधती हैं। शेष बत्तीस प्रकृतियां सान्तर-निरन्तर रूपसे बंधती हैं। उनका नामनिर्देश किया जाता है। वह इस प्रकार है— सातावेदनीय, पुरुषवेद, हास्य, रति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिक-शरीरांगोपांग, वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगति-प्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, नीचगोत्र और उच्चगोत्र, ये सान्तर-निरन्तर रूपसे बंधनेवाली प्रकृतियां हैं। यहां उपसंहारगाथायें—

स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, जाति चार, असातावेदनीय, नरकगति, नरकगतिप्रायोग्यानु-पूर्वी, आताप, उद्योत, अरति, शोक, अशुभ, पांच संस्थान, पांच अशुभ संहनन, अप्रशस्त विहायोगति स्थावर, सूक्ष्म एवं अशुभ आदि अन्य दश, इस प्रकार ये चौंतीस प्रकृतियां यहां सान्तर बन्धवाली हैं ॥ १७-१८ ॥

---

१ णिरयदुग-जाइचउक्कं संहदि-संठाणपणपणगं ॥ दुग्गमणादावदुगं थावरदसगं असादसंदित्थी। अरदी-सोगं चेदे सांतरगा होंति चोत्तीसा ॥ गो. क. ४०४-४०५

२ प्रतिषु ' सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज- ' इति पाठः।

३ सुर-णर-तिरियोरालिय-वेगुव्वियदुग-पसत्थगदि-वज्जं। परघाददु-समचउरं पंचिंदिय तसदसं सादं ॥ हस्स-रदि-पुरिस-गोददु सप्पडिवक्खम्मि सांतरा होंति। णट्ठे पुण पडिवक्खे णिरंतरा होंति बत्तीसा ॥ गो. क. ४०६-४०७.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

सांतरणिरंतरेण य बत्तीसवसेसियाओ पयडीओ ।
बज्झंति पच्चयाणं दुपयाराणं वसगयाओ ॥ १९ ॥

एत्थ पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयपयडीओ णिरंतरं बज्झंति, धुवबंधित्तादो । जसकित्ती सांतर-णिरंतरं बज्झदि[1] । कुदो ? मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तो त्ति सांतर-णिरंतरं बज्झइ, पडिवक्खअजसकित्तीए बंधसंभवादो । उवरि णिरंतरं बज्झइ जसकित्ती, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । तेण जसकित्ती बंधेण सांतर-णिरंतरा । उच्चागोदं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणो सांतरं बंधंति, पडिवक्खपयडीए तत्थ बंधसंभवादो । उवरिमा पुण णिरंतरं बंधंति, पडिवक्खपयडीए तत्थ बंधाभावादो । भोगभूमीसु पुण सव्वगुणट्ठाणजीवा उच्चागोदं नेव णिरंतरं बंधंति, तत्थ पज्जत्तकाले देवगइं मोत्तूण अण्णगईणं बंधाभावादो । तेण उच्चागोदं पि बंधेण सांतर-णिरंतरं ।

एदासिं पयडीणं किं सपच्चओ बंधो किमपच्चओ त्ति पुच्छिदे उच्चदे— सपच्चगो बंधो, ण णिक्कारणो । एत्थ ताव पच्चयपरूवणा कीरदे । तं जहा— मिच्छत्तासंजम-कसाय-

---

शेष बत्तीस प्रकृतियां मूल व उत्तर भेद रूप दो प्रकार प्रत्ययोंके वशीभूत होकर सान्तर-निरन्तर रूपसे बंधती हैं ॥ १९ ॥

यहां पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियां निरन्तर बंधती हैं, क्योंकि, ये प्रकृतियां ध्रुवबन्धी हैं । यशकीर्तिको जीव सान्तर-निरन्तर रूपसे बांधते हैं । इसका कारण यह है कि मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्त गुणस्थान तक यह प्रकृति सान्तर-निरन्तर बंधती है, क्योंकि, यहां इसकी प्रतिपक्षी अयशकीर्तिका बन्ध सम्भव है । प्रमत्त गुणस्थानसे ऊपर यशकीर्ति प्रकृति निरन्तर बंधती है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । इसीलिये यशकीर्ति बन्धसे सान्तर-निरन्तर है । उच्चगोत्रको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव सान्तर बांधते हैं, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतिका बन्ध सम्भव है । परन्तु उपरितन गुणस्थानवर्ती जीव उसे निरन्तर बांधते हैं, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिका बन्ध नहीं रहता । तथा भोगभूमियोंमें सर्व गुणस्थानवर्ती जीव केवल उच्चगोत्रको ही निरन्तर बांधते हैं, क्योंकि, वहां पर्याप्तकालमें देवगतिको छोड़कर अन्य गतियोंका बन्ध नहीं होता । इसलिये उच्चगोत्र भी बन्धसे सान्तर-निरन्तर है ।

' इन प्रकृतियोंका क्या सप्रत्यय अर्थात् सकारण बंध होता है या क्या अप्रत्यय अर्थात् अकारण बन्ध होता है ? ' इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं— इन प्रकृतियोंका बन्ध सकारण होता है, अकारण नहीं । यहां पहिले प्रत्ययोंकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस

---

१ अप्रतौ ' मज्झंति ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोगा इदि एदे चत्तारि मूलपच्चया । संपदि उत्तरपच्चयपरूवणं कस्सामो मिच्छाइट्ठिआदि-गुणट्ठाणेसु ढोएदूणं– मिच्छत्तं पंचविहं एयंतण्णाण-विवरीय-वेणइय-संसइयमिच्छत्तमिदि । तत्थ अत्थि चेव, णत्थि चेव; एगमेव, अणेगमेव; सावयवं चेव, णिरवयवं चेव; णिच्चमेव, अणिच्च-मेव; इच्चाइओ एयंताहिणिवेसो एयंतमिच्छत्तं[2] । विचारिज्जमाणे जीवाजीवादिपयत्था ण संति णिच्चाणिच्चवियप्पेहि, तदो सव्वमण्णाणमेव, णाणं णत्थि त्ति अहिणिवेसो अण्णाणमिच्छत्तं[3] । हिंसालियवयण-चोज्ज-मेहुण-परिग्गह-राग-दोस-मोहण्णाणेहि चेव णिव्वुई होइ त्ति अहिणिवेसो विवरीयमिच्छत्तं[4] । अइहिय-पारत्तियसुहाइं सव्वाइं पि विणयादो चेव, ण णाण-दंसण-तवोव-वासकिलेसेहिंतो त्ति अहिणिवेसो वेणइयमिच्छत्तं[5] । सव्वत्थ संदेहो चेव णिच्छओ णत्थि त्ति

प्रकार है— मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योग, ये चार मूल प्रत्यय हैं। अब उत्तर प्रत्ययोंका निरूपण मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थानोंमें लाकर करते हैं— एकान्त, अज्ञान, विपरीत, वैनयिक और सांशयिक मिथ्यात्वके भेदसे मिथ्यात्व पांच प्रकार है। इनमें सत् ही है, असत् ही है; एक ही है, अनेक ही है; सावयव ही है, निरवयव ही है; नित्य ही है, अनित्य ही है; इत्यादिक एकान्त अभिनिवेशको एकान्तमिथ्यात्व कहते हैं। नित्यानित्य विकल्पोंसे विचार करनेपर जीवाजीवादि पदार्थ नहीं हैं, अत एव सब अज्ञान ही है, ज्ञान नहीं है, ऐसे अभिनिवेशको अज्ञानमिथ्यात्व कहते हैं। हिंसा, अलीक वचन, चौर्य, मैथुन, परिग्रह, राग, द्वेष, मोह और अज्ञान, इनसे ही मुक्ति होती है, ऐसा अभिनिवेश विपरीत-मिथ्यात्व कहलाता है। ऐहिक एवं पारलौकिक सुख सभी विनयसे ही प्राप्त होते हैं, न कि ज्ञान, दर्शन, तप और उपवास जनित क्लेशोंसे; ऐसे अभिनिवेशका नाम वैनयिक मिथ्यात्व है। सर्वत्र संदेह ही है, निश्चय नहीं है, ऐसे अभिनिवेशको संशयमिथ्यात्व कहते

१ अप्रतौ 'दोएदूण' इति पाठः ।

२ तत्र इदमेव इत्थमेवेति धर्मिधर्मयोरभिनिवेश एकान्तः । स. सि. ८, १, त. रा. ८, १, २८. यत्राभिसन्निवेशः स्यादत्यन्तं धर्मिधर्मयोः । इदमेवेत्थमेवेति तदैकान्तिकमुच्यते ॥ त. सा. ५, १.

३ हिताहितपरीक्षाविरहोऽज्ञानिकत्वम् । स. सि. ८, १ त. रा. ८, १, २८. हिताहितविवेकस्य यत्रात्यन्तम-दर्शनम् । यथा पशुवधो धर्मस्तदाज्ञानिकमुच्यते ॥ त. सा. ५, ७.

४ पुरुष एवेदं सर्वमिति वा, नित्यमेवेति [वा अनित्यमेवेति वा], सग्रन्थो निर्ग्रन्थः, केवली कवलाहारी, स्त्री सिद्ध्यतीत्येवमादिः विपर्ययः । स. सि. ८, १. पुरुष एवेदं सर्वमिति वा नित्य एव वा अनित्य एवेति, सग्रन्थो निर्ग्रन्थः, केवली कवलाहारी, स्त्री सिद्ध्यतीत्येवमादिर्विपर्ययः । त. रा. १, ८, २८. सग्रन्थोऽपि च निर्ग्रन्थो ग्रासाहारी च केवली रुचिरेवंविधा यत्र विपरीतं हि तत्स्मृतम् ॥ त. सा. ५, ६.

५ सर्वदेवतानां सर्वसमयानां च समदर्शनं वैनयिकम् । स. सि. ८, १., त. रा. ८, १, २८. सर्वेषामपि देवानां समयानां तथैव च । यत्र स्यात् समदर्शित्वं ज्ञेयं वैनयिकं हि तत् ॥ त. सा. ५, ८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिणिवेसो संसयमिच्छत्तं[1]। एवमेदे मिच्छत्तपच्चया पंच |५|।

असंजमपच्चओ दुविहो इंदियासंजम-पाणासंजमभेएण। तत्थ इंदियासंजमो छव्विहो परिस-रस-रूव-गंध-सद्द-णोइंदियासंजमभेएण। पाणासंजमो वि छव्विहो पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-वणप्फदि-तसासंजमभेएण। असंजमसव्वसमासो बारस |१२|। कसायपच्चओ पंचवीसविहो सोलसकसाय-णवणोकसायभेएण। कसायपच्चयसमासो एसो |२५|। जोगपच्चओ तिविहो मण-वचि-कायजोगभेएण। सच्च-मोस-सच्चमोस-असच्चमोसभेएण चउव्विहो मणजोगो। वचिजोगो वि चउव्विहो सच्च-मोस-सच्चमोस-असच्चमोसभेएण[2]। कायजोगो सत्तविहो ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-आहार-आहारमिस्स-कम्मइयकाय-जोगभेएण। एदेसिं सव्वसमासो पण्णारस |१५|। सव्वपच्चयसमासो सत्तावण्ण

हैं। इस प्रकार ये मिथ्यात्व प्रत्यय पांच (५) हैं।

असंयम प्रत्यय इन्द्रियासंयम और प्राण्यसंयमके भेदसे दो प्रकार है। उनमें इन्द्रियासंयम स्पर्श, रस, रूप, गन्ध, शब्द और नोइन्द्रिय जनित असंयमके भेदसे छह प्रकार है। प्राण्यसंयम भी पृथिवी, अप्, तेज, वायु, वनस्पति और त्रस जीवोंकी विराधनासे उत्पन्न असंयमके भेदसे छह प्रकार है। सब असंयम मिलकर बारह (१२) होते हैं।

कषायप्रत्यय सोलह कषाय और नौ नोकषायके भेदसे पच्चीस प्रकार है। यह कषाय प्रत्ययोंका योग पच्चीस (२५) हुआ।

योगप्रत्यय मन, वचन और काय योगके भेदसे तीन प्रकार है। मनोयोग चार प्रकार है— सत्यमनोयोग, मृषामनोयोग, सत्य-मृषामनोयोग और असत्य-मृषामनोयोग। वचनयोग भी सत्यवचनयोग, मृषावचनयोग, सत्य-मृषावचनयोग और असत्य-मृषा-वचनयोग भेदसे चार प्रकार है। काययोग औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिक-मिश्र, आहारक, आहारकमिश्र, और कार्मण काययोगके भेदसे सात प्रकार है। इनका सर्वयोग पन्द्रह (१५) होता है। सब प्रत्ययोंका योग सत्तावन (५७) हुआ।

---

१ सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि किं मोक्षमार्गः स्याद्वा नवेत्यन्यतरपक्षापरिग्रहः संशयः। स. सि. ८, १. सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः किं स्याद्वा न वेति मतिद्वैतं संशयः। त. रा. ८, १, २८. किं वा भवेन्न वा जैनो धर्मोऽहिंसादिलक्षणः। इति यत्र मतिद्वैधं भवेत् सांशयिकं हि तत्। त. सा. ५, ५.

२ अप्रतौ 'सच्चमोस असच्चमोस ससच्चमोस सदसच्चमोसभेएण चउव्विहो मणजोगो। वचिजोगो विं चउव्विहो सच्चमोस सच्चमोस ससच्चमोस सदसच्चमोसभेएण'; कप्रतौ 'सच्चमोस असच्चमोस सच्चमोस सच्च-मोस असच्चमोस असच्चमोसभेएण चउव्विहो वि मण-वचिजोगो' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५७]। एत्थ आहारदुगमवणिदे मिच्छाइट्ठिपडिबद्धपच्चया पंचवंचास होंति [५५]। एदेहि पच्चएहि मिच्छाइट्ठी सुत्तुत्तसोलसपयडीओ बंधदि । एत्थ पंचमिच्छत्तपच्चयेसु अवणिदेसु पंचासपच्चया होंति [५०]। एदेहि पच्चएहि सासणसम्माइट्ठी सुत्तुत्तसोलसपयडीओ बंधदि । पंचासपच्चएसु ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-अणंताणुबंधिचउक्केसु अवणिदेसु तेदालं पच्चया होंति [४३]। एदेहि पच्चएहि सम्मामिच्छाइट्ठी सोलसपयडीओ बंधदि। तेदालपच्चएसु ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चएसु पक्खित्तेसु छादालं पच्चया [४६]। एदेहिं पच्चएहि असंजदसम्माइट्ठी अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि । एदेसु असंजदसम्माइट्ठिपच्चएसु अपच्चक्खाणचउक्क-ओरालियमिस्स-वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-तसासंजमेसु अवणिदेसु सत्तत्तीसपच्चया होंति [३७]। एदेहि पच्चएहि संजदासंजदो अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि । एदेसु संजदासंजदस्स सत्तत्तीसपच्चएसु पच्चक्खाणचउक्क एक्कारस-असंजमपच्चएसु अवणिदेसु अवसेसा बावीस, तत्थ आहारदुगे पक्खित्ते चउवीस पच्चया होंति [२४]। एदेहि पच्चएहि पमत्तसंजदो अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि । एदेसु चउवीस-पच्चएसु आहारदुगमवणिदे बावीस पच्चया होंति [२२]। एदेहि पच्चएहि अप्पमत्तसंजदा

इनमेंसे आहारक और आहारकमिश्रको अलग करदेनेपर मिथ्यादृष्टिसे सम्बद्ध प्रत्यय पचवन (५५) होते हैं। इन प्रत्ययोंसे मिथ्यादृष्टि सूत्रोक्त सोलह प्रकृतियोंको बांधता है। इनमेंसे पांच मिथ्यात्वप्रत्ययोंको अलग करदेनेपर पचास (५०) प्रत्यय होते हैं। इन प्रत्ययोंसे सासादनसम्यग्दृष्टि सूत्रोक्त सोलह प्रकृतियोंको बांधता है। इन पचास प्रत्ययोंमेंसे औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, कार्मण और चार अनन्तानुबन्धी प्रत्ययोंको अलग करदेनेपर तेतालीस प्रत्यय होते हैं (४३)। इन प्रत्ययोंसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि सोलह प्रकृतियोंको बांधता है। तेतालीस प्रत्ययोंमें औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको मिलादेनेपर छयालीस प्रत्यय होते हैं (४६)। इन प्रत्ययोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बांधता है। इन असंयतसम्यग्दृष्टिके प्रत्ययोंमेंसे चार अप्रत्याख्यानावरण, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, कार्मण और त्रसासंयम, इन नौ प्रत्ययोंको कम करदेनेपर सैंतीस प्रत्यय होते हैं (३७)। इन प्रत्ययोंसे संयतासंयत विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बांधता है। इन संयतासंयतके सैंतीस प्रत्ययोंमेंसे चार प्रत्याख्यान और ग्यारह असंयम प्रत्ययोंको कम करदेनेपर शेष बाईस रहते हैं, उनमें आहारक और आहारकमिश्रको मिला देनेपर चौबीस प्रत्यय होते हैं (२४)। इन प्रत्ययोंसे प्रमत्तसंयत विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बांधता है। इन चौबीस प्रत्ययोंमेंसे आहारकद्विकको कम करदेनेपर बाईस प्रत्यय होते हैं (२२)। इन प्रत्ययोंसे अप्रमत्तसंयत और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा[1] खवा च अप्पिदसोलसपयडीओ बंधंति । एदेसु चेव छण्णोकसाएसु अवणिदेसु सोलस होंति | १६ | । एदेहि पच्चएहि पढमअणियट्टी सोलस पयडीओ बंधदि । एत्थ णवुंसयवेदे अवणिदे पण्णारस होंति | १५ | । एदेहि पच्चएहि बिदियअणियट्टी अप्पिदपयडीओ बंधदि । एदेसु इत्थिवेदे अवणिदे चोद्दस होंति | १४ | । एदेहि पच्चएहि तदियअणियट्टी अप्पिदपयडीओ बंधदि । एत्थ पुरिसवेदे अवणिदे तेरह होंति | १३ | । एदेहि पच्चएहि चउत्थअणियट्टी अप्पिदपयडीओ बंधदि । पुणो एत्थ कोधसंजलणे अवणिदे बारस होंति | १२ | । एदेहि बारसपच्चएहि पंचमअणियट्टी अप्पिदपयडीओ बंधदि । पुणो एत्थ माण-संजलणे अवणिदे एक्कारस होंति | ११ | । एदेहि पच्चएहि छट्ठअणियट्टी अप्पिदपयडीओ बंधदि । एदेहिंतो मायासंजलणे अवणिदे दस होंति | १० | । एदेहि पच्चएहि सत्तमअणियट्टी अप्पिदपयडीओ बंधदि । एदेहि चेव दसहि पचएहि सुहुमसांपराइयो[2] वि अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि । दससु लोभसंजलणे अवणिदे णव होंति | ९ | । एदे उवसंतकसाय-खीणकसाएहि बज्झमाणपयडीणं पच्चया । एदेहिंतो मज्झिमदो-दोमणवचिजोगे अवणिय ओरालियमिस्स-

अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशामक एवं क्षपक जीव विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बांधते हैं। इन्हीं प्रत्ययोंमेंसे छह नोकषायोंको अलग करदेनेपर सोलह होते हैं (१६)। इन प्रत्ययोंसे प्रथम अनिवृत्तिकरण सोलह प्रकृतियोंको बांधता है। इनमेंसे नपुंसकवेदको अलग कर-देनेपर पन्द्रह होते हैं (१५)। इन प्रत्ययोंसे द्वितीय अनिवृत्तिकरण विवक्षित प्रकृतियोंको बांधता है। इनमेंसे स्त्रीवेदको कम करदेनेपर चौदह होते हैं (१४)। इन प्रत्ययोंसे तृतीय अनिवृत्तिकरण विवक्षित प्रकृतियोंको बांधता है। इनमेंसे पुरुषवेदको अलग करदेनेपर तेरह होते हैं (१३)। इन प्रत्ययोंसे चतुर्थ अनिवृत्तिकरण विवक्षित प्रकृतियोंको बांधता है। पुनः इनमेंसे क्रोधसंज्वलनको अलग करदेनेपर बारह होते हैं (१२)। इन बारह प्रत्ययोंसे पंचम अनिवृत्तिकरण विवक्षित प्रकृतियोंको बांधता है। पुनः इनमेंसे मानसंज्व-लको कम करदेनेपर ग्यारह होते है (११)। इन प्रत्ययोंसे छठा अनिवृत्तिकरण विवक्षित प्रकृतियोंको बांधता है। इनमेंसे मायासंज्वलनको अलग करदेनेपर दश होते हैं (१०)। इन प्रत्ययोंसे सप्तम अनिवृत्तिकरण विवक्षित प्रकृतियोंको बांधता है। इन्हीं दश प्रत्ययोंसे सूक्ष्मसाम्परायिक भी विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बांधता है। इन दश प्रत्ययोंमेंसे लोभसंज्वलनको अलग करदेनेपर नौ प्रत्यय होते हैं (९)। ये नौ उपशान्तकषाय और क्षीणकषाय जीवोंके द्वारा बांधी जानेवाली प्रकृतियोंके प्रत्यय हैं। इनमेंसे मध्यम

१ अप्रतौ ' अपुव्वकरणपइट्ठस्सुवसमा ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' -सांपराइया ' इति पाठः ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

कम्मइयकायजोगेसु पक्खित्तेसु सत्त होंति । ७ । एदेहि सत्तहि पच्चएहि सजोगिजिणो बंधदि । एत्थ उवसंहारगाहाओ —

चदुपच्चइगो बंधो पढमे उवरिमतिए तिपच्चइओ[1] ।
मिस्सगबिदिओ उवरिमदुगं च सेसेगदेसम्हि[2] ॥ २० ॥

उवरिल्लपंचए पुण दुपच्चओ जोगपच्चओ तिण्णं ।
सामण्णपच्चया खलु अट्ठण्णं होंति कम्माणं[3] ॥ २१ ॥

पणवण्णा इर वण्णा तिदाल छादाल सत्ततीसा य ।
चदुवीस दु बावीसा सोलस एगूण जाव णव सत्त[4] ॥ २२ ॥

संपधि एगसमइयउत्तरुत्तरपच्चए[5] चोद्दसजीवसमासेसु भणिस्सामो । तं जहा —

दो दो अर्थात् मृषा और सत्यमृषा मन और वचन योगोंको अलग करके औदारिकमिश्र व कार्मण काययोगको मिला देनेपर सात होते हैं (७) । इन सात प्रत्ययोंसे सयोगी जिन [एक सातावेदनीयको] बांधते हैं । यहां उपसंहारगाथायें —

प्रथम गुणस्थानमें चारों प्रत्ययोंसे बन्ध होता है । इससे ऊपर तीन गुणस्थानोंमें मिथ्यात्वको छोड़कर शेष तीन प्रत्ययसंयुक्त बन्ध होता है । देशसंयत गुणस्थानमें मिश्ररूप अर्थात् विरताविरतरूप द्वितीय प्रत्यय और कषाय व योग ये शेष दोनों उपरिम प्रत्यय रहते हैं । इसके ऊपर पांच गुणस्थानोंमें कषाय और योग इन दो प्रत्ययोंके निमित्तसे बन्ध होता है । पुनः उपशान्तमोहादि तीन गुणस्थानोंमें केवल योगनिमित्तक बन्ध होता है । इस प्रकार गुणस्थान क्रमसे आठ कर्मोंके ये सामान्य प्रत्यय हैं ॥ २०-२१ ॥

पचवन[1], पचास[2], तेतालीस[3], छयालीस[4], सैंतीस[5], चौबीस[6], दो वार बाईस[7,8], सोलह[9] और इसके आगे नौ तक एक एक कम अर्थात् पन्द्रह, चौदह, तेरह, बारह, ग्यारह, दश, दश[10], नौ[11], नौ[12] और सात[13], इस प्रकार क्रमसे मिथ्यात्वादि अपूर्वकरण तक आठ गुणस्थानोंमें, अनिवृत्तिकरणके सात भागोंमें तथा सूक्ष्मसाम्परायादि सयोगकेवली तक शेष गुणस्थानोंमें बन्धप्रत्ययोंकी संख्या है ॥ २२ ॥

अब एक समयमें होनेवाले उत्तरोत्तर प्रत्ययोंको चौदह जीवसमासोंमें कहते हैं ।

---

१ अप्रतौ ' उवरिमतिएवपच्चइओ ', काप्रतौ ' उवरिमतिए चेव पच्चइओ ' इति पाठः ।

२ अप्रतौ ' सेसेगदेसेहिं ', काप्रतौ ' देसेक्कदेसेहिं ' इति पाठः । चदुपच्चइगो बंधो पढमे णंतरतिगे तिपच्चइगो । मिस्सगबिदियं उवरिमदुगं च देसक्कदेसम्मि ॥ गो. क. ७८७.

३ गो. क. ७८८.

४ पणवण्णा पण्णासा तिदाल छादाल सत्ततीसा य । चदुवीसा बावीसा बावीसमपुव्वकरणो त्ति ॥ थूले सोलसपहुदी एगूणं जाव होदि दस ठाणं । सुहुमादिसु दस णवयं जोगिम्हि सत्तेव ॥ गो. क. ७८९-७९०.

५ अप्रतौ ' -पच्चएहि ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ ताव मिच्छाइट्ठिस्स जहण्णेण दस पच्चया। पंचसु मिच्छत्तेसु एक्को। एक्केण इंदिएण एक्कं कायं जहण्णेण विराहेदि [त्ति] दोण्णि असंजमपच्चया। अणंताणुबंधिचउक्कं विसंजोजिय मिच्छत्तं गयस्स आवलियमेत्तकालमणंताणुबंधिचउक्कस्सुदयाभावादो बारससु कसाएसु तिण्णि कसायपच्चया। तिसु वेदेसु एक्को। हस्स-रदि-अरदि-सोगदोसु जुगलेसु एक्कदरं जुगलं। दससु जोगेसु एक्को जोगो। एवमेदे सव्वे वि जहण्णेण दस पच्चया | १० |। पंचसु मिच्छत्तेसु एक्को। एक्केण इंदिएण छक्काए विराहेदि त्ति सत्त असंजमपच्चया। सोलसेसु कसाएसु चत्तारि कसायपच्चया | ४ |। तिसु वेदेसु एक्को। हस्स-रदि-अरदि-सोगदोजुगलेसु एक्कं जुगलं। भय-दुगुंछाओ दोण्णि। तेरसेसु जोगपच्चएसु एक्को। एवमेदे सव्वे वि अट्ठारस होंति | १८ |। एवमेदेहि दस-अट्ठारसजहण्णुक्कस्सपच्चएहि मिच्छाइट्ठी अप्पिदसोलसपयडीओ बंधइ।

एक्केणिंदिएण एक्कं कायं विराहेदि त्ति दोअसंजमपच्चया। सोलसेसु कसाएसु चत्तारि कसायपच्चया। तिसु वेदेसु एक्को वेदपच्चओ। हस्स-रदि-अरदि-सोगदोजुगलेसु एक्कदरं जुगलं। तेरससु जोगेसु एक्को। एवं जहण्णेण सासणस्स दस पच्चया होंति | १० |। उक्कस्सेण सत्तरस पच्चया होंति, मिच्छत्तस्सुदयाभावादो | १७ |। एवमेदेहि जहण्णुक्कस्स-

---

वह इस प्रकार है– उनमें मिथ्यादृष्टिके जघन्यसे दश प्रत्यय होते हैं। पांच मिथ्यात्वोंमेंसे एक; मिथ्यादृष्टि एक इन्द्रियसे एक कायकी जघन्यसे विराधना करता है, इस प्रकार दो असंयम प्रत्यय; अनन्तानुबन्धिचतुष्टयका विसंयोजन करके मिथ्यात्वको प्राप्त हुए जीवके आवलीमात्र काल तक अनन्तानुबन्धिचतुष्टयका उदय न रहनेसे बारह कषायोंमें तीन कषाय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हास्य-रति और अरति-शोक इन दो युगलोंमेंसे एक युगल, तथा दश योगोंमें एक योग, इस प्रकार ये सब ही जघन्यसे दश प्रत्यय होते हैं (१०)। पांच मिथ्यात्वोंमें एक, एक इन्द्रियसे छह कायोंकी विराधना करता है, अतः सात असंयम प्रत्यय, सोलह कषायोंमें चार कषाय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हास्य रति और अरति-शोक इन दो युगलोंमें एक युगल, भय व जुगुप्सा दो, तेरह योग प्रत्ययोंमेंसे एक, इस प्रकार ये सभी अठारह होते हैं (१८)। इस प्रकार इन जघन्य दश और उत्कृष्ट अठारह प्रत्ययोंसे मिथ्यादृष्टि जीव विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बांधता है।

एक इन्द्रियसे एक कायकी विराधना करता है इस प्रकार दो असंयम प्रत्यय, सोलह कषायोंमें चार कषाय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक वेद प्रत्यय, हास्य-रति और अरति-शोक इन दो युगलोंमें एक युगल, तेरह योगोंमें एक योग, इस प्रकार सासादनसम्यग्दृष्टिके जघन्यसे दश (१०) और उत्कर्षसे सत्तरह प्रत्यय होते हैं; क्योंकि, उसके मिथ्यात्वका उदय नहीं रहता (१७)। इस प्रकार क्रमसे इन जघन्य और उत्कृष्ट दश व सत्तरह प्रत्ययोंसे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दस-सत्तारसपच्चएहि सासणसम्मादिट्ठी अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि ।

एक्केणिंदिएण एक्कं कायं विराहेदि त्ति दो असंजमपच्चया । अणंताणुबन्धि-चदुक्कवदिरित्तबारसकसाएसु तिण्णि कसायपच्चया । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स रदि-अरदि-सोगदोजुगलेसु एक्कं । दससु जोगेसु एक्को । एवमेदे सव्वे वि णव होंति । ९ । । एक्केणिंदिएण छक्काए विराहेदि त्ति सत्त असंजमपच्चया । अणंताणुबंधिविरहिदबारसकसाएसु तिण्णि कसायपच्चया । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स-रदि-अरदि-सोगदोजुगलेसु एक्कयरं जुगलं । दो भय-दुगुंछाओ । दससु जोगेसु एक्को । एवमेदे सोलस पच्चया । १६ । । एदेहि जहण्णुक्कस्सणव सोलसपच्चएहि सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी च अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि ।

एक्केणिंदिएण एक्कं कायं विराहेदि त्ति दो असंजमपच्चया । अणंताणुबंधि-अपचक्खाणचउक्कविरहिदअट्ठकसाएसु दो कसायपच्चया । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स-रदि-अरदि-सोगदोजुगलेसु एक्कं । णवजोगेसु एक्को । एवमेदे अट्ठ । ८ । । एक्केणिंदिएण पंचकाए विराहेदि त्ति छअसंजमपच्चया । दो कसायपच्चया । एक्को वेदपचओ । हस्स-रदि-अरदि-सोग-

---

सासादनसम्यग्दृष्टि विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बांधता है ।

एक इन्द्रियसे एक कायकी विराधना करता है इस प्रकार दो असंयम प्रत्यय, अनन्तानुबन्धिचतुष्टयको छोड़कर शेष बारह कषायोंमें तीन कषाय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हास्य-रति और अरति-शोक इन दो युगलोंमेंसे एक, दश योगोंमेंसे एक, इस प्रकार ये सभी नौ प्रत्यय होते हैं (९) । एक इन्द्रियसे छह कायोंकी विराधना करता है इस प्रकार सात असंयम प्रत्यय, अनन्तानुबन्धीसे रहित बारह कषायोंमें तीन कषाय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हास्य-रति और अरति-शोक इन दो युगलोंमें एक युगल, भय और जुगुप्सा ये दो, दश योगोंमें एक, इस प्रकार ये सोलह प्रत्यय होते हैं (१६) । इन जघन्य और उत्कृष्ट नौ और सोलह प्रत्ययोंसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीव विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बांधता है ।

एक इन्द्रियसे एक कायकी विराधना करता है इस प्रकार दो असंयम प्रत्यय, अनन्तानुबन्धिचतुष्टय और अप्रत्याख्यानावरणचतुष्टयसे रहित आठ कषायोंमें दो कषाय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हास्य-रति और अरति-शोक इन दो युगलोंमें एक, नौ योगोंमें एक, इस प्रकार ये आठ प्रत्यय होते हैं (८) । एक इन्द्रियसे पांच कायोंकी विराधना करता है इस प्रकार छह असंयम प्रत्यय, दो कषाय प्रत्यय, एक वेद प्रत्यय, हास्य-रति और अरति-शोक इन दो युगलोंमेंसे एक, भय और जुगुप्सा, तथा नौ योगोंमेंसे एक, इस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोण्हं जुगलाणमेक्कदरं । भय-दुगुंछाओ । णवजोगेसु एक्को । एवमेदे चोद्दस । १४ । । एदेहि जहण्णुक्कस्सअट्ठ-चोद्दसपच्चएहि संजदासंजदो अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि ।

चदुसंजलणेसु एक्को कसायपच्चओ । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स-रदि-अरदि-सोग-दोण्हं जुगलाणमेक्कदरं । णवसु जोगेसु एक्को । एवमेदे पंच जहण्णेण पच्चया । ५ । । एक्को कसायपच्चओ । एक्को वेदपच्चओ । हस्स रदि-अरदि-सोगदोण्णं जुगलाणमेक्कदरं । भयदुगुंछाओ । णवसु जोगेसु एक्को । एवमेदे सत्तुक्कस्सपच्चया । ७ । । एवमेदेहि जहण्णुक्कस्सपंच-सत्त-पच्चएहि पमत्तसंजदो अप्पमत्तसंजदो अपुव्वकरणो च अप्पिदपयडीओ बंधदि ।

एक्को संजलणकसाओ । एक्को जोगो । एवमेदे जहण्णेण दो पच्चया । २ । । उक्कस्सेण तिण्णि वेदेण सह । ३ । । एदेहि जहण्णुक्कस्सदो-तिण्णिपच्चएहि अणियट्टी अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि ।

लोभकसाओ एक्को । [एक्को] जोगपच्चओ । एवमेदेहि जहण्णेण उक्कस्सेण वि दोहि पच्चएहि सुहुमसांपराइओ अप्पिदपयडीओ बंधदि । उवरि उवसंतकसाओ खीणकसाओ सजोगी च एक्केण चेव जोगेण बंधंति । एत्थ उवसंहारगाहा—

....

प्रकार ये चौदह प्रत्यय हैं । इन जघन्य और उत्कृष्ट आठ व चौदह प्रत्ययोंसे संयतासंयत जीव विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बांधता है ।

चार संज्वलनोंमेंसे एक कषाय प्रत्यय, तीन वेदोंमेंसे एक, हास्य-रति और अरति-शोक इन दो युगलोंमेंसे एक, तथा नौ योगोंमेंसे एक, इस प्रकार जघन्यसे ये पांच प्रत्यय हैं (५) । एक कषाय प्रत्यय, एक वेद प्रत्यय, हास्य-रति और अरति-शोक इन दो युगलोंमेंसे एक युगल, भय और जुगुप्सा, तथा नौ योगोंमेंसे एक, इस प्रकार ये सात उत्कृष्ट प्रत्यय हैं (७)। इस प्रकार इन जघन्य और उत्कृष्ट पांच व सात प्रत्ययोंसे प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत और अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीव विवक्षित प्रकृतियोंको बांधता है ।

एक संज्जलनकषाय और एक योग इस प्रकार ये जघन्यसे दो प्रत्यय (२), तथा उत्कर्षसे वेदके साथ तीन (३), इस प्रकार इन जघन्य और उत्कृष्ट दो व तीन प्रत्ययोंसे अनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्ती जीव विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बांधता है । लोभकषाय एक और एक योग प्रत्यय, इस प्रकार इन जघन्य व उत्कर्षसे भी दो प्रत्ययोंसे सूक्ष्मसाम्प-रायिक जीव विवक्षित प्रकृतियोंको बांधता है । इससे ऊपर उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय और सयोगिकेवली केवल एक योगसे ही बन्धक हैं । यहां उपसंहारगाथा—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दस अट्ठारस दसयं सत्तरह णव सोलसं च दोण्णं तु ।
अट्ठ य चोद्दस पणयं सत्त तिए दु ति दु एयमेयं च[1] ॥ २३ ॥

किंगइसंजुत्तो ? एदिस्से पुच्छाए चोद्दसजीवसमासपडिबद्धो उत्तरो वुच्चदे । तं जहा— मिच्छाइट्ठी चदुगदिसंजुत्तं बंधदि । णवरि उच्चागोदं णिरय-तिरिक्खगइं मोत्तूण दुगदिसंजुत्तं बंधदि । जसकित्तिं णिरयगदिं मोत्तूण तिगदिसंजुत्तं बंधदि । सासणो चोद्दस-पयडीओ णिरयगइं मोत्तूण तिगदिसंजुत्तं बंधदि । उच्चागोदं णिरय-तिरिक्खगईओ मोत्तूण दुगदिसंजुत्तं बंधदि । जसकित्तिं पुण णिरयगइं मोत्तूण तिगइसंजुत्तं बंधदि । सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी[2] च सोलसपयडीओ णिरयगइ-तिरिक्खगईओ मोत्तूण दुगइसंजुत्तं बंधदि । संजदासंजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण ट्ठिदा त्ति अप्पिदसोलसपयडीओ देवगदिसंजुत्तं बंधंति । उवरिमा अगदिसंजुत्तं बंधंति ।

कदिगदीया सामिणो ? एदिस्से पुच्छाए परिहारो वुच्चदे— मिच्छादिट्ठी चदुगदिया

मिथ्यात्व गुणस्थानमें दश व अठारह, सासादनमें दश व सत्तरह, दो गुणस्थानोंमें अर्थात् मिश्र और अविरतसम्यग्दृष्टिमें नौ व सोलह, संयतासंयतमें आठ और चौदह, प्रमत्तसंयतादिक तीनमें पांच व सात, अनिवृत्तिकरणमें दो व तीन, सूक्ष्म-साम्परायमें दो, तथा उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय एवं सयोगिकेवली गुणस्थानोंमें एकमात्र, इस प्रकार एक जीवके एक समयमें जघन्य व उत्कृष्ट बन्धप्रत्यय पाये जाते हैं ॥ २३ ॥

'कौनसी गतिसे संयुक्त बन्धक है ?' इस प्रश्नका चौदह जीवसमासोंसे सम्बद्ध उत्तर कहते हैं । वह इस प्रकार है— मिथ्यादृष्टि जीव चारों गतियोंसे संयुक्त उक्त प्रकृतियोंका बन्धक है । विशेष इतना है कि उच्चगोत्रको नरकगति और तिर्यग्गतिको छोड़कर शेष दो गतियोंसे संयुक्त बांधता है । यशकीर्तिको नरकगतिको छोड़कर तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है । सासादन गुणस्थानमें चौदह प्रकृतियोंको नरकगतिको छोड़ तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है, उच्चगोत्रको नरक व तिर्यग्गतिको छोड़ शेष दो गतियोंसे संयुक्त बांधता है । किन्तु यशकीर्तिको नरकगतिको छोड़ शेष तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीव सोलह प्रकृतियोंको नरकगति व तिर्यग्गतिको छोड़ दो गतिसंयुक्त बांधते हैं । संयतासंयतसे लेकर अपूर्वकरण-कालके संख्यात बहुभाग जाकर स्थित जीव विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको देवगतिसंयुक्त बांधते हैं । इससे ऊपरके जीव अगतिसंयुक्त बांधते हैं ।

'उक्त प्रकृतियोंके कितने गतिवाले जीव स्वामी होते हैं ?' इस प्रश्नका परिहार कहते हैं— मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंके जीव स्वामी हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्या-

---

१ गो. क. ७९२. २ प्रतिषु 'असंजदसम्माइट्ठिणो' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामिणो । सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठिणो वि चदुगदिया सामिणो । दुगदिसंजदासंजदा सामिणो । उवरिमा मणुसगदिया चेव । अद्धाणं सुत्तसिद्धं । पढम-अपढमचरिम-चरिमसमयबंधवोच्छेदपुच्छाविसयपरूवणा वि सुत्तसिद्धा चेव ।[1]

किं सादिओ किमणादिओ किं धुवो किमद्धुवो बंधो त्ति एदिस्से पुच्छाए वुच्चदे— चोद्दसपयडीणं बंधो मिच्छाइट्ठिस्स सादिओ, उवसमसेडिम्हि बंधवोच्छेदं कादूण हेट्ठा ओदरिय बंधस्सादिं करिय पडिवण्णमिच्छत्ताणं सादियबंधोवलंभादो । अणादिगो, उवसम-सेडिमणारूढमिच्छादिट्ठिजीवाणं बंधस्स आदीए अभावादो । धुवो बंधो, अभवियमिच्छादिट्ठीणं बंधस्स वोच्छेदाभावादो । अद्धुवो, उवसम-खवगसेडिं चडणपाओग्गमिच्छाइट्ठिबंधस्स धुवत्ता-भावादो । जसकित्ति-उच्चागोदाणं पि एवं चेव । णवरि अणादि-धुवबंधा णत्थि, अजसकित्ति-णीचागोदाणं पडिवक्खाणं संभवादो । सव्वगुणट्ठाणेसु सेसेसु चोद्दसधुवपयडीओ सादि-अणादि-अद्धुवमिदि तिहि वियप्पेहि बज्झंति । धुवभंगो णत्थि, तेसिं भवियाणं णियमेण बंधवोच्छेद-

....

दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि भी चारों गतियोंके जीव स्वामी हैं । दो गतियोंके संयतासंयत जीव स्वामी हैं । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्यगतिके ही जीव स्वामी हैं । बन्धाध्वान सूत्रसे सिद्ध है । प्रथम, अप्रथम-अचरम और चरम समयमें होनेवाले बन्धव्युच्छेद-सम्बन्धी प्रश्नविषयक प्ररूपणा भी सूत्रसिद्ध ही है ।

अब 'क्या सादिक बन्ध होता है, क्या अनादिक बन्ध होता, क्या ध्रुव बन्ध होता है, या क्या अध्रुव बन्ध होता है?' इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं— चौदह प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टिके सादिक होता है, क्योंकि, उपशमश्रेणीमें बन्धव्युच्छेद करके पुनः नीचे उतरकर बन्धका प्रारम्भ करके मिथ्यात्वको प्राप्त हुए जीवोंके सादिक बन्ध पाया जाता है । अनादिक बन्ध होता है, क्योंकि, उपशमश्रेणीपर नहीं चढ़े हुए मिथ्यादृष्टि जीवोंके बन्धके आदिका अभाव है । ध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, अभव्य मिथ्यादृष्टि जीवोंके बन्धका कभी व्युच्छेद नहीं होता । अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, उपशम और क्षपक श्रेणीपर चढ़नेके योग्य मिथ्यदृष्टि जीवोंका बन्ध ध्रुव नहीं होता । यशकीर्ति और उच्चगोत्र प्रकृतियोंका भी मिथ्यादृष्टिके इसी प्रकार ही बन्ध होता है । विशेष इतना है कि इन दोनों प्रकृतियोंका उसके अनादि और ध्रुव बन्ध नहीं होता, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्षभूत अयशकीर्ति और नीच गोत्रका बन्ध सम्भव है । शेष सब गुणस्थानोंमें चौदह ध्रुवप्रकृतियां सादि, अनादि और अध्रुव इन तीन विकल्पोंसे बंधती हैं । वहां ध्रुव भंग नहीं है, क्योंकि, उन भव्य जीवोंके

....

१ प्रतिषु 'पढम-अपढम-चरिम-अचरिम-' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संभवादो । जसकित्ति-उच्चागोदाणं पुण बंधो सव्वगुणट्ठाणेसु सादि-अद्धुवो चेव ।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोह-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ७ ॥

एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं च । तेण किं मिच्छाइट्ठी बंधओ किं सासणसम्माइट्ठी बंधओ किं सम्मामिच्छाइट्ठी बंधओ एवं गंतूण किमजोगी किं सिद्धो बंधओ, किमेदेसिं कम्माणं बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि, किमुदओ, किं दो वि समं वोच्छिज्जंति, एदाओ किं सोदएण बज्झंति किं परोदएण, किं सोदय-परोदएण, किं सांतरं बज्झंति, किं णिरंतरं बज्झंति, किं सांतर-णिरंतरं बज्झंति, किं पच्चएहि बज्झंति, किं पच्चएहि विणा बज्झंति, किं गइसंजुत्तं बज्झंति, किमगइ-*संजुत्तं बज्झंति, कदिगदिया एदेसिं बंधसामिणो होंति, कदिगदिया ण होंति, किं वा बंधद्धाणं,* किं चरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि, किं पढमसमए, किमपढम-अचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि,

---

नियमसे बन्धव्युच्छेद सम्भव है । परन्तु यशकीर्ति और उच्चगोत्र प्रकृतियोंका बन्ध सर्व गुणस्थानोंमें सादि और अध्रुव ही होता है ।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, स्त्रीवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इन प्रकृतियोंका कौन बन्धक है और कौन अबन्धक ? ॥ ७ ॥

यह पृच्छसूत्र भी देशामर्शक है । अतएव क्या मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक है, क्या सम्यग्मिथ्यादृष्टि बन्धक है, इस प्रकार जाकर क्या अयोगी बन्धक हैं, क्या सिद्ध बन्धक हैं; क्या इन कर्मोंका बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, क्या उदय पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, क्या दोनों साथ ही व्युच्छिन्न होते हैं; ये प्रकृतियां क्या स्वोदयसे बंधती हैं, क्या परोदयसे बंधती हैं, क्या स्वोदय-परोदयसे बंधती हैं; क्या सान्तर बंधती हैं, क्या निरन्तर बंधती हैं, क्या सान्तर-निरन्तर बंधती हैं; क्या प्रत्ययोंसे बंधती हैं, क्या विना प्रत्ययोंके बंधती हैं; क्या गतिसंयुक्त बंधती हैं, क्या अगतिसंयुक्त बंधती है; इन कर्मोंके बन्धके स्वामी किन गतियोंवाले होते हैं व किन गतियोंवाले नहीं होते; बन्धाध्वान कितना है; क्या चरम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्या प्रथम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्या अप्रथम-अचरम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किमेदासिं सादिओ बंधो, किमणादिओ, किं धुवो, किमद्धुवो बंधो त्ति एदाओ पुच्छाओ एत्थ कादव्वाओ। एदासिं पुच्छाणमुत्तरपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ८ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, सामित्तद्धाणपरूवणदारेण पुच्छासुत्तुद्दिट्ठसव्वत्थपरूवणादो। सामित्तमद्धाणं च सुत्तादो चेव णव्वदि त्ति ण तेसिमत्थो वुच्चदे। किमेदासिं बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदे, किमुदओ पुव्वं वोच्छिज्जदे, एदस्सत्थो वुच्चदे— थीणगिद्धितियस्स पुव्वं बंधो वोच्छिण्णो, पच्छा उदयस्स वोच्छेदो, सासणसम्मादिट्ठिचरिमसमए बंधे फिट्टे संते पच्छा उवरि गंतूण पमत्तसंजदम्मि उदयवोच्छेदोवलंभादो। अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं फिट्टंति, सासणसम्माइट्ठिचरिमसमए एदेसिं बंधोदयाणं जुगवं वोच्छेददंसणादो। इत्थिवेदस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, सासणम्मि बंधे वोच्छिण्णे पच्छा उवरि गंतूण अणियट्टिम्हि उदयवोच्छेदादो। एवं तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-

....

क्या इन प्रकृतियोंका सादिक बन्ध है, क्या अनादिक बन्ध है, क्या ध्रुव बन्ध है, या क्या अध्रुव बन्ध है, इस प्रकार ये प्रश्न यहां करना चाहिये। इन प्रश्नोंका उत्तर कहनेके लिये अगला सूत्र कहते हैं—

उपर्युक्त प्रकृतियोंके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ ८ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि, बन्धके स्वामित्व और अध्वानकी प्ररूपणा द्वारा वह पृच्छासूत्रमें उद्दिष्ट सब अर्थोंका निरूपण करता है। बन्धस्वामित्व और अध्वान चूंकि सूत्रसे ही जाना जाता है अतः इन दोनोंका अर्थ यहां नहीं कहा जाता। 'क्या इनका बन्ध पहिले व्युच्छिन्न होता है या उदय पहिले व्युच्छिन्न होता है?' इसका अर्थ कहते हैं— स्त्यानगृद्धि आदि तीन प्रकृतियोंका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, तत्पश्चात् उदयका व्युच्छेद होता है, क्योंकि सासादनसम्यग्दृष्टिके चरम समयमें बन्धके नष्ट होनेपर पश्चात् ऊपर जाकर प्रमत्तसंयतमें इनके उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। अनन्तानुबन्धिचतुष्टयका बन्ध और उदय दोनों साथ नष्ट होते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टिके चरम समयमें इनके बन्ध और उदयका एक साथ व्युच्छेद देखा जाता है। स्त्रीवेदका पूर्वमें बन्ध पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनगुणस्थानमें बन्धके व्युच्छिन्न होनेपर तत्पश्चात् ऊपर जाकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें उदयका व्युच्छेद होता है। इसी प्रकार तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत और नीचगोत्र प्रकृति-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णीचागोदाणि, सासणम्मि बंधवोच्छेदे जादे पच्छा उवरिं गंतूण संजदासंजदम्मि उदयवोच्छेदादो, तिरिक्खाणुपुव्वीए असंजदसम्माइट्ठिम्हि उदयवोच्छेदुवलंभादो। एवं मज्झिमचदुसंठाणाणि, सासणम्मि बंधे थक्के संते उवरि गंतूण सजोगिम्हि उदयवोच्छेदादो। एवं चेव मज्झिमचदुसंघडणाणि, सासणम्मि बंधे थक्के संते उवरि अपमत्त-उवसंतकसाएसु कमेण दोण्णं दोण्णमुदयक्खयदंसणादो। एवं अप्पसत्थविहायगदीए, सासणम्मि बंधे थक्के संते उवरि सजोगिम्हि उदयवोच्छेदादो। एवं दुभग-अणादेज्जाणं वत्तव्वं, सासणम्मि बंधे थक्के उवरि असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदो। एवं दुस्सरस्स वि वत्तव्वं, सासणम्मि बंधे थक्के सजोगिकेवलिम्हि उदयवोच्छेदादो।

किं सोदएण किं परोदएण किमुभएण बज्झंति त्ति पुच्छाए उत्तरो वुच्चदे। तं जहा— थीणगिद्धित्तियमित्थिवेदं तिरिक्खाउअं तिरिक्खगइ चदुसंठाणाणि चदुसंघडणाणि तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वि उज्जोवं अप्पसत्थविहायगदिमणंताणुबंधिचदुक्कं दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि च मिच्छादिट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणो सोदएण वि परोदएण वि बंधंति, विरोहा-

....

योंका पूर्वमें बन्धव्युच्छिन्न होता है, तत्पश्चात् उदयका व्युच्छेद होता है, क्योंकि सासादनगुणस्थानमें बन्धका व्युच्छेद हो जानेपर पश्चात् ऊपर जाकर संयतासंयत गुणस्थानमें उदयका व्युच्छेद होता है, तथा तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीके उदयका व्युच्छेद असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें पाया जाता है। इसी प्रकार मध्यम चार संस्थानोंका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, तत्पश्चात् उदयका व्युच्छेद होता है, क्योंकि सासादन गुणस्थानमें बन्ध के रुक जानेपर ऊपर जाकर सयोगकेवली गुणस्थानमें उदयका व्युच्छेद होता है। इसी प्रकार ही मध्यम चार संहनन हैं, क्योंकि, सासादनगुणस्थानमें इनके बन्धके रुक जानेपर ऊपर अप्रमत्तसंयत और उपशान्तकषाय गुणस्थानोंमें क्रमसे दो दो संहननोंका उदयक्षय देखा जाता है। इसी प्रकार अप्रशस्तविहायोगतिका भी कथन करना चाहिये, क्योंकि, सासादनगुणस्थानमें बन्धके रुक जानेपर ऊपर सयोगकेवलीमें उदयका व्युच्छेद होता है। इसी प्रकार दुर्भग और अनादेयका कथन करना चाहिये, क्योंकि, सासादनमें बन्धके रुक जानेपर ऊपर असंयतसम्यग्दृष्टिमें उदयका व्युच्छेद होता है। इसी प्रकार दुस्वरका भी कहना चाहिये, क्योंकि, सासादनमें बन्धके रुक जानेपर सयोगकेवलीमें उदयका व्युच्छेद होता है।

'उपर्युक्त प्रकृतियां क्या स्वोदयसे क्या परोदयसे या क्या स्व-परोदय उभयरूपसे बंधती हैं?' इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं। वह इस प्रकार है—स्त्यानगृद्धित्रय, स्त्रीवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इन प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि स्वोदयसे भी और परोदयसे भी बांधते हैं, क्योंकि,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावादो ।

किं सांतरं किं णिरंतरं किं सांतर णिरंतरं बज्झंति त्ति एदस्सत्थो वुच्चदे — थीणगिद्धितियमणंताणुबंधिचउक्कं च णिरंतरं बज्झइ, धुवबंधित्तादो। इत्थिवेदो मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि सांतरं बज्झइ, बंधगद्धाए खीणाए णियमेण पडिवक्खपयडीणं बंधसंभवादो। तिरिक्खाउअं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि णिरंतरं बज्झइ, अद्धाक्खएण बंधस्स थक्कणाभावादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीओ सांतर-णिरंतरं बज्झंति ।

होदु सांतरबंधो, पडिवक्खपयडीणं बंधुवलंभादो; ण णिरंतरबंधो, तस्स कारणाणुवलंभादो त्ति वुत्ते वुच्चदे — ण एस दोसो, तेउक्काइय-वाउक्काइयमिच्छाइट्ठीणं सत्तमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठीणं च भवपडिबद्धसंकिलेसेण णिरंतरबंधोवलंभादो । सासणसम्माइट्ठिणो दोण्णं पयडीणमेदासिं कधं णिरंतरबंधया ? ण, सत्तमपुढविसासणाणं तिरिक्खगइं मोत्तूणण्णगईणं बंधाभावादो ?

इसमें कोई विरोध नहीं है ।

'उक्त प्रकृतियां क्या सान्तर, क्या निरन्तर, या क्या सान्तर-निरन्तर बंधती हैं?' इसका अर्थ कहते हैं—स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्क निरन्तर बंधती हैं, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं । स्त्रीवेदको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि सान्तर बांधते हैं, क्योंकि, बन्धककालके क्षीण होनेपर नियमसे प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव है । तिर्यगायुको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि निरन्तर बांधते हैं, क्योंकि, कालके क्षयसे बन्धके रुकनेका अभाव है । तिर्यग्गति और तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीको सान्तर-निरन्तर बांधते हैं ।

शंका— प्रतिपक्षभूत प्रकृतियोंके बन्धकी उपलब्धि होनेसे सान्तर बन्ध भले ही हो, किन्तु निरन्तर बन्ध नहीं हो सकता, क्योंकि उसके कारणोंका अभाव है ?

समाधान—इस शंकाका उत्तर कहते हैं कि यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, तेजकायिक और वायुकायिक मिथ्यादृष्टियों तथा सप्तम पृथिवीके नारकी मिथ्यादृष्टियोंके भवसे सम्बद्ध संक्लेशके कारण उक्त दोनों प्रकृतियोंका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

शंका—सासादनसम्यग्दृष्टि इन दोनों प्रकृतियोंके निरन्तर बन्धक कैसे हैं ?

समाधान—यह शंका ठीक नहीं, क्योंकि, सप्तम पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके तिर्यग्गतिको छोड़कर अन्य गतियोंका बन्ध ही नहीं होता ।

---

१ अ-आप्रत्योः 'तिरिय-' इति पाठः ।

२ अ-आप्रत्योः 'बंधय-' काप्रतौ 'बंधिय-' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चदुसंठाण-चदुसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगदि-दूभग-दुस्सर-अणादेज्जाणमित्थि-वेदभंगो, सांतरबंधित्तं पडि भेदाभावादो। णीचागोदस्स तिरिक्खगदिभंगो, तेउ-वाउक्काइएसु सत्तमपुढविणेरइएसु च णीचागोदस्स णिरंतरं बंधुवलंभादो।

किं पच्चएहि बज्झंति किं तेहि विणा, एदस्सत्थो वुच्चदे— मिच्छादिट्ठी मिच्छत्ता-संजम-कसाय-जोगसण्णिदचदुहि मूलपच्चएहि पणवण्णुत्तरपच्चएहि दस-अट्ठारसएगसमय-संभविजहण्णुक्कस्सपच्चएहि य एदाओ पयडीओ बंधदि। सासणसम्माइट्ठी मिच्छत्तं मोत्तूण तीहि मूलपच्चएहि पंचासुत्तरपच्चएहि एगसमयसंभविददस-सत्तारसजहण्णुक्कस्सपच्चएहि य एदाओ पयडीओ बंधदि। णवरि तिरिक्खाउअस्स वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चएहि विणा तेवण्ण ओरालियमिस्सेण च विणा सत्तेताल पच्चया मिच्छाइट्ठि-सासणाणं[1] होंति।

गइसंजुत्तपुच्छाए अत्थो वुच्चदे। तं जहा — थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कं च मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं बंधइ। इत्थिवेदं मिच्छाइट्ठी सासणो च णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं बंधइ। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ तिरिक्ख-

....

चार संस्थान, चार संहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर और अनादेय प्रकृतियां स्त्रीवेदके समान हैं, क्योंकि, सान्तरबन्धित्वके प्रति इन प्रकृतियोंमें स्त्रीवेदसे कोई भेद नहीं है। नीचगोत्र तिर्यग्गतिके समान है, क्योंकि, तेजकायिक और वायुकायिक तथा सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें नीचगोत्रका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

अब 'सूत्रोक्त प्रकृतियां क्या प्रत्ययोंसे बंधती हैं या क्या उनके बिना ?' इसका अर्थ कहते हैं—मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योग संज्ञावाले चार मूल प्रत्ययोंसे, पचवन उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समयमें सम्भव होनेवाले दश और अठारह जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे इन प्रकृतियोंको बांधते हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि मिथ्यात्वको छोड़कर शेष तीन मूल प्रत्ययोंसे, पचास उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समयमें सम्भव दश और सत्तरह जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे इन प्रकृतियोंको बांधते हैं। विशेष यह कि तिर्यगायुके वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोगके बिना मिथ्यादृष्टिके तिरेपन, तथा वैक्रियिक-मिश्र, कार्मण और औदारिकमिश्रके बिना सासादनसम्यग्दृष्टिके सैंतालीस प्रत्यय होते हैं।

गतिसंयुक्त प्रश्नका उत्तर कहते हैं। वह इस प्रकार है—स्त्यानगृद्धि आदि तीन तथा अनन्तानुबन्धिचतुष्कको मिथ्यादृष्टि जीव चारों गतियोंसे संयुक्त और सासादन-सम्यग्दृष्टि नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है। स्त्रीवेदको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है। तिर्यगायु, तिर्यग्गति,

---

१ अप्रतौ 'पच्चयमिदि सासणाणं' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोवे मिच्छाइट्ठी सासणो च तिरिक्खगइसंजुत्तं बंधंति । चउसंठाण-चउसंघडणाणि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति । अप्पसत्थ-विहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि मिच्छाइट्ठी देवगईए विणा तिगइसंजुत्तं, सासणो देव-णिरयगईहि विणा दुगदिसंजुत्तं बंधदि ।

कदि गदिया सामिणो त्ति वुत्ते थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कादिपयडीणं बंधस्स चउग्गइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी । बंधद्धाणं सासणचरिमसमए बंधवोच्छेदो च सुत्तणिद्दिट्ठो त्ति ण पुणो वुच्चदे ।

किमेदासिं पयडीणं सादिओ बंधओ त्ति पुच्छासंबद्धो अत्थो वुच्चदे । तं जहा — थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि सादिओ अणादिओ धुवो अद्धुवो च । सासणम्मि अणाइधुवेण विणा दुवियप्पो । सेसाणं पयडीणं बंधो मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सादिगो अद्धुवो च ।

णिद्दा-पयलाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ९ ॥

एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेणेत्थ पुव्विल्लपुच्छाओ सव्वाओ पुच्छिदव्वाओ ।

तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं । चार संस्थान और चार संहननोंको मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रको मिथ्यादृष्टि देवगतिके बिना तीन गतियोंसे संयुक्त, और सासादनसम्यग्दृष्टि देव व नरक गतिके बिना दो गतियोंसे संयुक्त बांधता है ।

कितने गतिवाले जीव स्वामी होते हैं, ऐसा कहनेपर उत्तर कहते हैं—स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्क आदि प्रकृतियोंके बन्धके चारों गतियोंवाले मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । बन्धाध्वान और सासादनके चरम समयमें होनेवाला बन्धव्युच्छेद सूत्रसे निर्दिष्ट है, अतः उसे फिरसे नहीं कहते ।

'क्या इन प्रकृतियोंका सादिक बन्ध है ?' इस प्रश्नसे सम्बद्ध अर्थको कहते हैं । वह इस प्रकार है— स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सादिक, अनादिक, ध्रुव और अध्रुव रूप होता है । सासादन गुणस्थानमें अनादि और ध्रुवके विना दो प्रकारका होता है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादन दोनों गुणस्थानोंमे सादिक व अध्रुव होता है ।

निद्रा और प्रचला प्रकृतियोंका कौन बन्धक है और कौन अबन्धक ? ॥ ९ ॥

यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, अतएव यहां सब पूर्वोक्त प्रश्न पूछना चाहिये ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

पुच्छिदसिस्सस्स संदेहविणासणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि -

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्ठसुद्धिसंजदेसु उवसमा खवा बंधा । अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि ! एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १० ॥

एदं पि देसामासियसुत्तं, बंधद्धाणं बंधसामि-असामिणो च अपुव्वकरणद्धाए अपढम-अचरिमसमए बंधवोच्छेदं च भणिदूण सेसत्थे सूचिय अवट्ठाणादो । अपुव्वकरणद्धाए पढम-सत्तमभागे णिद्दा पयलाणं बंधो थक्कदि त्ति एत्थ वत्तव्वं । कधमेदं णव्वदे ? परमगुरूवएसादो ।

किमेदेसिं कम्माणं बंधो पुव्वं पच्छा सममुदएण वोच्छिज्जदि त्ति पुच्छाए णिच्छओ कीरदे । एदेसिं बंधो पुव्वं विणस्सदि[1], पच्छा उदयस्स वोच्छेदो; अपुव्वकरणद्धाए पढमसत्तम-भागे बंधे थक्के संते उवरि गंतूण खीणकसायस्स दुचरिमसमयम्हि उदयवोच्छेदादो ।

किं सोदएण परोदएण सोदय-परोदएण बज्झंति त्ति पुच्छाए वुच्चदे— एदाओ दो वि पयडीओ सोदय-परोदएण बज्झंति, णाणंतरायपंचकस्सेव एदासिं धुवोदयत्ताभावादो । किं

शंकायुक्त शिष्यके सन्देहको दूर करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्टशुद्धिसंयतोंमें उपशमक और क्षपक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरणकालके संख्यातवें भाग जाकर बन्धव्युच्छेद होता है । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ १० ॥

यह भी देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि वह बन्धाध्वान, बन्धस्वामी-अस्वामी तथा अपूर्वकरणकालके अप्रथम-अचरम समयमें होनेवाले बन्धव्युच्छेदको कहकर शेष अर्थोंको सूचित कर अवस्थित है। अपूर्वकरणकालके प्रथम सप्तम भागमें निद्रा और प्रचला प्रकृतियोंका बन्ध रुक जाता है, ऐसा यहां कहना चाहिये ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है ।

'क्या इन दोनों कर्मोंका बन्ध उदयसे पूर्व, पश्चात् अथवा साथमें व्युच्छिन्न होता है ?' इस प्रश्नका निर्णय करते हैं—इनका बन्ध पूर्वमें नष्ट होता है, तत्पश्चात् उदयका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, अपूर्वकरणकालके प्रथम सप्तम भागमें बन्धके रुक जानेपर ऊपर जाकर क्षीणकषाय गुणस्थानके द्विचरम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है ।

'दोनों कर्म प्रकृतियां क्या स्वोदय, क्या परोदय या क्या स्वोदय-परोदयसे बंधती हैं ?' इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं— ये दोनों ही प्रकृतियां स्वोदय-परोदयसे बंधती हैं, क्योंकि, पांच ज्ञानावरण और पांच अन्तरायके समान इन दोनों प्रकृतियोंके ध्रुवोदयका अभाव है ।

१ प्रतिषु 'पुव्वं व णस्सदि' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सांतरं णिरंतरं सांतर-णिरंतरं बज्झंति ? एदाओ णिरंतरं बज्झंति, सत्तेतालधुवपयडीसु पादादो । किं पच्चएहि बंधदि त्ति पुच्छाए वुच्चदे— मिच्छाइट्ठी चदुहि मूलपच्चएहि पणवण्णणाणा-समयुत्तरपच्चएहि दस-अट्ठारसएगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चएहि, सासणो मिच्छत्तेण विणा तिहि मूलपच्चएहि पंचासुत्तरपच्चएहि दस सत्तारसएगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चएहि, सम्मामिच्छाइट्ठी तिहि मूलपच्चएहि तेदालुत्तरपच्चएहि एगसमयणव-सोलसजहण्णुक्कस्सपच्चएहि, असंजदसम्माइट्ठी तिहि मूलपच्चएहि छादालुत्तरपच्चएहि एगसमयणव-सोलसजहण्णुक्कस्सपच्चएहि, संजदासंजदो मिस्सा-संजमेण सहिदकसाय-जोगदोमूलपच्चएहि सत्ततीसुत्तरपच्चएहि एगसमइयअट्ठ-चोद्दसजहण्णु-क्कस्सपच्चएहि, पमत्तसंजदो दोहि[1] मूलपच्चएहि चदुवीसुत्तरपच्चएहि एगसमयपंच-सत्तजहण्णुक्कस्स-पच्चएहि, अप्पमत्तसंजदो अपुव्वकरणो च दोहि मूलपच्चएहि बावीसुत्तरपच्चएहि एगसमयपंच-सत्तजहण्णुक्कस्सपच्चएहि बंधति ।

शंका—उक्त दोनों प्रकृतियां क्या सान्तर, निरन्तर या सान्तर-निरन्तर बंधती हैं?

समाधान—ये दोनों प्रकृतियां निरन्तर बंधती हैं, क्योंकि, ये सैंतालीस ध्रुव प्रकृतियोंके अन्तर्गत हैं ।

'ये प्रकृतियां किन किन प्रत्ययोंसे बंधती हैं ?' इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं— मिथ्यादृष्टि जीव चार मूल प्रत्ययोंसे, पचवन नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा दश और अठारह एक समय सम्बन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे निद्रा एवं प्रचला प्रकृतियोंको बांधते हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि मिथ्यात्वके विना तीन मूल प्रत्ययोंसे, पचास उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा दश और सत्तरह एक समय सम्बन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टि तीन मूल प्रत्ययोंसे, तेतालीस उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्बन्धी नौ व सोलह जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि तीन मूल प्रत्ययोंसे, छयालीस उत्तर प्रययोंसे, तथा एक समय सम्बन्धी नौ और सोलह जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं । संयतासंयत मिश्र असंयम (संयमासंयम) के साथ कषाय एवं योग रूप दो मूल प्रत्ययोंसे, सैंतीस उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्बन्धी आठ व चौदह जघन्य और उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं । प्रमत्तसंयत दो मूल प्रत्ययोंसे, चौबीस उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्बन्धी पांच और सात जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं । अप्रमत्तसंयत और अपूर्वकरणगुणस्थानवर्ती जीव दो मूल प्रत्ययोंसे, बाईस उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्बन्धी पांच और सात जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं ।

१ प्रतिषु 'पमत्तसंजदो हि' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गइसंजुत्तबंधपुच्छाए यत्थो-- मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी देव-मणुस्सगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तं णिद्दा-पयलाओ दो वि बंधंति। कदिगादिया सामी, एदिस्से पुच्छाए वुच्चदे- मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी चउगइया, दुगदिसंजदासंजदा, उवरिमा मणुस्सगईया सामी। अद्धाणं सुगमं। वोच्छिण्णपदेसो वि सुगमो। किं सादिओ त्ति पुच्छाए वुच्चदे- मिच्छाइट्ठिम्हि णिद्दा-पयलाणं बंधो सादिओ अणादिओ धुवो अद्धुवो त्ति चदुवियप्पो। सासणादिगुणट्ठाणेसु तिवियप्पो, धुवत्ताभावादो। सेसं सुगमं।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ११ ॥

बंधो बंधयो त्ति घेत्तव्वो। एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, सामिपुच्छं णिद्दिसिदूण सेस-पुच्छाविसयणिद्देसाकरणादो। तेणेत्थ सव्वपुच्छाओ णिद्दिसिदव्वाओ। पुच्छिदसिस्ससंसयफुसणट्ठ-मुत्तरसुत्तं भणदि---

---

गतिसंयुक्त बन्धसम्बन्धी प्रश्नका अर्थ कहते हैं--- मिथ्यादृष्टि जीव चारों गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त निद्रा व प्रचला दोनों प्रकृतियोंको बांधते हैं।

'कितने गतियोंवाले जीव उक्त दोनों प्रकृतियोंके स्वामी हैं ?' इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं--- मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि चारों गतियोंवाले; दो गतियोंवाले संयतासंयत, तथा उपरिम जीव मनुष्यगतिवाले स्वामी होते हैं। बन्धाध्वान सुगम है। चरम समयादिरूप बन्ध-व्युच्छिन्नप्रदेश भी सुगम है। 'उक्त प्रकृतियोंका बन्ध क्या सादि है ?' इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं---मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें निद्रा और प्रचला प्रकृतियोंका बन्ध सादिक, अनादिक, ध्रुव और अध्रुव इस प्रकार चारों तरहका होता है। सासादनादि गुणस्थानोंमें ध्रुव बन्धके न होनेसे शेष तीन प्रकारका बन्ध होता है। शेष सूत्रार्थ सुगम है।

सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ११ ॥

'बन्ध' शब्दसे बन्धकरूप अर्थ ग्रहण करना चाहिये। यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, क्योंकि, वह स्वामिविषयक पृच्छाका निर्देश करके शेष पृच्छाविषयक निर्देश नहीं करता। इसलिये यहां सब पृच्छाओंका निर्देश करना चाहिये। शंकायुक्त शिष्यके संशयको दूर करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं---

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति बंधा । सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२ ॥

एदं पि सुत्तं देसामासियं, सामित्तमद्धाणं बंधविणासट्ठाणं च भणिदूणण्णेसिमत्थाणमणिद्देसादो । तेणिदरेसिं परूवणा कीरदे । तं जहा— एदस्स बंधो पुव्वमुदओ पच्छा वोच्छिज्जदि, सजोगिचरिमसमये बंधे वोच्छिण्णे संते पच्छा अजोगिचरमसमए उदयवोच्छेदादो । सादावेदणीयं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति सोदएण परोदएण वि बज्झदि, सादासादोदयाणं परावत्तिदंसणादो, स-परोदएहि बंधविरोहाभावादो च । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तो त्ति सांतरो बंधो, तत्थ पडिवक्खपयडीए बंधसंभवादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । जम्हि जम्हि गुणट्ठाणे जत्तिया जत्तिया मूलपच्चया णाणासमयउत्तरपच्चया एगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया च वुत्ता ताणि गुणट्ठाणाणि तेत्तिएहि पच्चएहि सादावेदणीयं बंधंति ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगिकेवली तक सातावेदनीयके बन्धक हैं । सयोगिकेवलिकालके अन्तिम समयको प्राप्त होकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ १२ ॥

यह भी सूत्र देशामर्शक है, क्योंकि, वह स्वामित्व, बन्धाध्वान और बन्धविनाशस्थानको कहकर अन्य अर्थोंका निर्देश नहीं करता । इस कारण अन्य अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— सातावेदनीयका बन्ध पूर्वमें और उदय पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें बन्धके व्युच्छिन्न होनेपर पीछे अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है । सातावेदनीय मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगिकेवली तक स्वोदयसे और परोदयसे भी बंधता है, क्योंकि, यहां साता और असाताके उदयमें परिवर्तन देखा जाता है, तथा स्व-परोदयसे बन्ध होनेमें कोई विरोध भी नहीं है । मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्त गुणस्थान तक सातावेदनीयका बन्ध सान्तर है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृति (असाता) का बन्ध सम्भव है । प्रमत्त गुणस्थानसे ऊपर निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । जिस जिस गुणस्थानमें जितने जितने मूल प्रत्यय, नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्यय और एक समय सम्बन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्यय कहे गये हैं, वे गुणस्थान उतने प्रत्ययोंसे सातावेदनीयको बांधते हैं ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

मिच्छाइट्ठी णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं । अप्पसत्थाए तिरिक्खगईए सह कधं सादबंधो ? ण, णिरयगई व अच्चंतियअप्पसत्थत्ताभावादो[1] । एवं सासणो वि । सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दुगइसंजुत्तं बंधंति णिरय-तिरिक्खगईए विणा । उवरिमा देवगइसंजुत्तं । अपुव्वकरणस्स चरिमसत्तमभागप्पहुडि उवरि अगदिसंजुत्तं बंधंति । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिणो चदुगदिया, दुगदिसंजदासंजदा सामिणो, सेसा मणुसगदीए चेव । बंधद्धाणं बंधवोच्छेदट्ठाणं च सुगमं सुत्तुत्तादो । सव्वेसु गुणट्ठाणेसु सादावेदणीयस्स बंधो सादि-अद्धुवो, सादासादाणं परावत्तणसरूवेण बंधादो ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्तिणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १३ ॥

एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेणेत्थ सव्वपुच्छाओ कायव्वाओ । अधवा, आसंकिय-

---

मिथ्यादृष्टि जीव नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त सातावेदनीयको बांधते हैं ।

शंका—अप्रशस्त तिर्यग्गतिके साथ कैसे सातावेदनीयका बन्ध होना सम्भव है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि तिर्यग्गति नरकगतिके समान अत्यन्त अप्रशस्त नहीं है ।

इसी प्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि भी तीन गतियोंसे संयुक्त सातावेदनीयको बांधते हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि नरक और तिर्यगतिके विना दो गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं । उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं । अपूर्वकरणके अन्तिम सप्तम भागसे लेकर ऊपरके जीव अगतिसंयुक्त बांधते हैं । मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि एवं असंयतसम्यग्दृष्टि चारों गतियोंवाले तथा दो गतियोंवाले संयतासंयत स्वामी हैं । शेष जीव मनुष्यगतिके ही स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छेदस्थान सूत्रोक्त होनेसे सुगम हैं । सब गुणस्थानोंमें साता और असाताका परिवर्तित बन्ध होनेसे सातावेदनीयका बन्ध सादि और अध्रुव है ।

असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १३ ॥

यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, इसलिये यहां सब प्रश्नोंको करना चाहिये । अथवा

---

१ अ-काप्रत्योः ' अप्पसत्थाभावादो ', आप्रतौ ' अप्पसत्थाभावेण ', मप्रतौ ' अप्पसत्थत्थाभावादो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुत्तमेदमिदि दट्ठव्वं । तण्णिण्णयजणणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि —

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १४ ॥

एदं देसामासियं सुत्तं, पुच्छिदत्थाणमेगदेसं छिविदूण अवट्ठाणादो । तेणेदेण सूइदत्थाणं अत्थपरूवणा कीरदे । असादावेदणीयस्स पुव्वं बंधो उदओ पच्छा वोच्छिण्णो, पमत्तसंजदम्मि बंधवोच्छेदे संते पच्छा अजोगिचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदादो । एवमरदि-सोगाणं, पमत्तसंजदम्मि बंधे णट्ठे संते अपुव्वचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदादो । अथिर-असुहाणं पि एवं चेव वत्तव्वं, पमत्तम्मि बंधे विणट्ठे सजोगिचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदादो । अजसगित्तीए पुव्वमुदओ वोच्छिज्जदि पच्छा बंधो, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदए णट्ठे पच्छा पमत्तसंजदम्मि बंधवोच्छेदादो ।

असादावेदणीय-अरदि-सोगा सोदय-परोदएहि बज्झंति, उदयस्स धुवत्ताभावादो ।

यह आशंका सूत्र है ऐसा समझना चाहिये । उसके निश्चयोत्पादनार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ १४ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि, वह पूछे हुए अर्थोंके एक देशको छूकर अवस्थित है । इस कारण इसके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा की जाती है । असातावेदनीयका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्तगुणस्थानमें बन्धव्युच्छेद होजानेपर पीछे अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है । इसी प्रकार अरति और शोकका बन्ध पूर्वमें और उदय पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्तसंयतमें बन्धके नष्ट होजानेपर पीछे अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है । अस्थिर और अशुभ प्रकृतियोंका भी इसी प्रकार ही बन्धोदयव्युच्छेद कहना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्तसंयतमें बन्धके नष्ट होनेपर सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है । अयशकीर्तिका पूर्वमें उदय व्युच्छिन्न होता है, पश्चात् बन्ध, क्योंकि असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उदयके नष्ट होजानेपर पीछे प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें बन्धका व्युच्छेद होता है ।

असातावेदनीय, अरति और शोक प्रकृतियां स्वोदय-परोदयसे बंधती हैं, क्योंकि,

---

१ अ-आप्रत्योः 'णियजणणट्ठ-' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवमजसकित्ती वि, उदयस्स अद्धुवत्तणेण भेदाभावादो । णवरि संजदासंजदप्पहुडि उवरि परोदएणेव बंधो, तत्थ जसकित्तिं मोत्तूण अवराए उदयाभावादो । अथिर-असुहाण सोदएणेव बंधो, धुवोदयत्तादो । एदासिं छण्णं पयडीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि छसु वि गुणट्ठाणेसु सांतरो बंधो । कुदो ? एदासिं पडिवक्खपयडीणमेत्थ बंधवोच्छेदाभावादो । णाणावरणादिसोलसपयडीणं जे पच्चया परूविदा एदेसु छसु गुणट्ठाणेसु तेहि चेव पच्चएहि एदाओ छप्पयडीओ बज्झंति । असाद-अरदि-सोगे मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो णिरयगइं मोत्तूण तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तं बंधंति । एवं अथिर-असुभ-अजसकित्तीणं,भेदाभावादो । चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी । दुगइसंजदासंजदा सामी । पमत्तसंजदा मणुसा चेव । बंधद्धाणं बंधवोच्छेदट्ठाणं च सुगमं । एदाओ छ वि पयडीओ बंधेण सादि-अद्धुवाओ ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडण-णिरयगइ-

इनका उदय ध्रुव नहीं है । इसी प्रकार अयशकीर्ति भी स्वोदय-परोदयसे बंधती है, क्योंकि, उदयकी अध्रुवताकी अपेक्षा इसके उक्त तीनों प्रकृतियोंसे कोई भेद नहीं है । विशेष इतना है कि संयतासंयतसे लेकर आगे इसका बन्ध परोदयसे ही होता है, क्योंकि, वहां यशकीर्तिको छोड़कर अयशकीर्तिका उदय नहीं रहता । अस्थिर और अशुभ प्रकृतियोंका बन्ध स्वोदयसे ही होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । इन छहों प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि आदि छहों गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है । इसका कारण यह है कि यहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धव्युच्छेदका अभाव है । ज्ञानावरणादि सोलह प्रकृतियोंके जो प्रत्यय इन छह गुणस्थानोंमें कहे गये हैं उन्हीं प्रत्ययोंसे ही ये छह प्रकृतियां बंधती हैं । असातावेदनीय, अरति और शोक प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि जीव चारों गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि नरकगतिको छोड़कर तीन गतियोंसे संयुक्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देव-मनुष्य गतियोंसे संयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं । इसी प्रकार अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति प्रकृतियोंका भी गतिसंयुक्त बन्ध जानना चाहिये, क्योंकि, उनसे इनके कोई भेद नहीं है । चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं । प्रमत्तसंयत मनुष्य ही स्वामी होते हैं । बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छेदस्थान सुगम हैं । ये छहों प्रकृतियां बन्धसे सादि एवं अध्रुव हैं ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, नारकायु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, स्थावर,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाओग्गाणुपुव्वि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १५ ॥

एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेणेत्थ सव्वपुच्छाओ कायव्वाओ। पुच्छिदसिस्सस्स संसयविणासणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

मिच्छाइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १६ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, सामित्तद्धाणाणं दोण्णं चेव परूवणादो। तेणेदेण सूइदत्थाणं परूवणं कीरदे— मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, मिच्छाइट्ठिचरिमसमए बंधोदयवोच्छेद-दंसणादो। एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारण-सरीराणं मिच्छत्तभंगो, मिच्छाइट्ठिम्हि बंधोदयवोच्छेदं पडि एदासिं मिच्छत्तेण सह भेदाभावादो। णवुंसयवेदस्स पुव्वं बंधवोच्छेदो पच्छा उदयस्स[1], मिच्छाइट्ठिम्हि बंधे णट्ठे संते पच्छा अणियट्टिम्हि उदयवोच्छेदादो। एवं णिरयाउ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं वत्तव्वं, मिच्छाइट्ठिम्हि

सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मका कौन बन्धक है और कौन अबन्धक है ? ॥ १५ ॥

यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, इसलिये यहां पूर्वोक्त सब प्रश्नोंको करना चाहिये। पूछनेवाले शिष्यका संशय नष्ट करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिथ्यादृष्टि जीव बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ १६ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि, वह बन्धस्वामित्व और बन्धाध्वान इन दोनोंका ही प्ररूपण करता है। इस कारण इससे सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं— मिथ्यात्व प्रकृतिका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके अन्तिम समयमें इसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणसरीर प्रकृतियोंका बन्धोदयव्युच्छेद मिथ्यात्व प्रकृतिके ही समान है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें होनेवाले बन्धोदयव्युच्छेदके प्रति इनका मिथ्यात्वके साथ कोई भेद नहीं है। नपुंसकवेदका पूर्वमें बन्धव्युच्छेद और पश्चात् उदयका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें बन्धके नष्ट होजानेपर पीछे अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें उदयका व्युच्छेद होता है। इसी प्रकार नारकायु और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका बन्धोदयव्युच्छेद कहना चाहिये, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें बन्धके नष्ट होजानेपर पीछे असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें

---

१ अ-आप्रत्योः 'पच्छादयस्स' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधे णट्ठे संते पच्छा असंजदसम्माइट्ठिम्हि उदयवोच्छेदादो। एवं हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्ट-सरीरसंघडणाणं पि वत्तव्वं, मिच्छाइट्ठिम्हि बंधे फिट्टे संते पच्छा जहाकमेण सजोगिकेवलि-अप्पमत्तसंजदेसु उदयवोच्छेदादो।

मिच्छत्तस्स सोदएणेव बंधो। णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाओ परोदएणेव बज्झंति, सोदएण सगबंधस्स विरोहादो। णवुंसयवेद-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडण-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणि सोदय-परोदएहि बज्झंति, उभयथा वि विरोहाभावादो।

मिच्छत्तं णिरयाउअं च णिरंतरबंधिणो, धुवबंधित्तादो अद्धाक्खएण बंधविणासाभावादो। अवसेससव्वपयडीओ सांतरं बज्झंति, तासिं[1] पडिवक्खपयडिबंधसंभवादो।

चदुहि मूलपच्चएहि पंचवंचासणाणासमयउत्तरपच्चएहि दस-अट्ठारसएगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चएहि य मिच्छाइट्ठी एदाओ पयडीओ बंधइ। णवरि वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चएहि विणा एगवंचासपच्चएहि णिरयाउअं बंधइ त्ति वत्तव्वं। एवं

इनके उदयका व्युच्छेद होता है। इसी प्रकार हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासंहननका भी कहना चाहिये, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें बन्धके नष्ट होजानेपर पीछे यथाक्रमसे सयोगकेवली और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें इनके उदयका व्युच्छेद होता है।

मिथ्यात्वका स्वोदयसे ही बन्ध होता है। नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्म परोदयसे ही बंधते हैं, क्योंकि, स्वोदयसे इनके अपने बन्धका विरोध है। नपुंसकवेद, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर स्वोदय-परोदयसे बंधते हैं, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनका बन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं है।

मिथ्यात्व और नारकायु प्रकृतियां निरन्तर बंधनेवाली हैं, क्योंकि ध्रुवबन्धी होनेसे कालक्षयसे इनके बन्धविनाशका अभाव है। शेष सब प्रकृतियां सान्तर बंधती हैं, क्योंकि, उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धकी सम्भावना है।

चार मूल प्रत्ययोंसे, पचवन नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा दश व अठारह एक समय सम्बन्धी जघन्य एवं उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे मिथ्यादृष्टि इन प्रकृतियोंको बांधता है। विशेष इतना है कि वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मण काययोग प्रत्ययोंके विना वह इक्यावन प्रत्ययोंसे नारकायुको बांधता है, ऐसा कहना चाहिये। इसी

१ प्रतिषु 'ताहिं' इति पाठः।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

[णिरयगइ-] णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-सुहुम-साहारण अपज्जत्ताणं वेउव्वियदुगेण विणा तेवण्णा पच्चया ।

मिच्छत्तं चउगइसंजुत्तं, णवुंसयवेदं देवगईए[1] विणा तिगइसंजुत्तं, णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाओ णिरयगइसंजुत्तं, हुंडसंठाणं देवगइं मोत्तूण तिगइसंजुत्तं, असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडण-अपज्जत्तणामाओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, सेसाओ तिरिक्खगइ-संजुत्तं बंधंति ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणाणं चउगइमिच्छाइट्ठी सामी । एइंदिय-आदाव-थावरणामाणं बंधस्स णिरयगइं मोत्तूण तिगइमिच्छाइट्ठी सामी । सेसाणं पयडीणं तिरिक्ख-मणुसगइमिच्छाइट्ठी सामी । बंधद्धाणं बंधवोच्छेदट्ठाणं[2] च सुगमं । मिच्छत्तस्स बंधो सादि-अणादि-धुव-अद्धुवभेएण चउव्विहो । सेसाणं बंधो सादि-अद्धुवो ।

प्रकार [नरकगति और] नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके भी इक्यावन प्रत्यय हैं । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, सूक्ष्म, साधारण और अपर्याप्त प्रकृतियोंके वैक्रियिकद्विकके विना तिरेपन प्रत्यय हैं ।

मिथ्यात्वको चार गतियोंसे संयुक्त, नपुंसकवेदको देवगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त; नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मको नरकगतिसे संयुक्त; हुण्डसंस्थानको देवगतिको छोड़ तीन गतियोंसे संयुक्त, असंप्राप्तसृपाटिकाशरीरसंहनन और अपर्याप्त नामकर्मको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा शेष प्रकृतियोंको तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासरीरसंहनन प्रकृतियोंके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं । एकेन्द्रिय, आताप और स्थावर नामकर्मके बन्धके नरकगतिको छोड़ शेष तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके तिर्यग्गति व मनुष्यगतिके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छेदस्थान सुगम हैं । मिथ्यात्वका बंध सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव भेदसे चार प्रकार है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि और अध्रुव होता है ।

---

१ अप्रतौ ' णवुंसयवेदं व देवगईए ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' बंधवोच्छिण्णाणं ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपच्चक्खाणावरणीयकोध-माण-माया-लोभ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १८ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, सामित्तद्धाणाणं[1] चेव परूवणादो । तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे । तं जहा— अपच्चक्खाणावरणचउक्कस्स मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, एक्कम्हि असंजदसम्माइट्ठिम्हि दोण्णं विणासुवलंभादो[2] । मणुसगईए पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि[3] बंधे णट्ठे पच्छा अजोगिचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदादो । एवमोरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसंघडणाणं । णवरि सजोगिचरिमसमए उदयवोच्छेदो ।

अप्रत्याख्यानावरणीय क्रोध, मान, माया, लोभ, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभवज्रनाराचसंहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक बंधक हैं । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ १८ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि, वह केवल बन्धस्वामित्व और बन्धाध्वानका ही निरूपण करता है । इसी कारण इस सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—अप्रत्याख्यानावरणचतुष्क और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, एक असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें दोनोंके विनाश पाये जाते हैं । मनुष्यगतिका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें बन्धके नष्ट होनेपर पीछे अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है । इसी प्रकार औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग और वज्रर्षभवज्रनाराचसंहननका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है । विशेष इतना है कि सयोगीके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है ।

१ प्रतिषु 'सामित्तद्धाणिणं' इति पाठः । २ प्रतिषु 'विणासाणुवलंभादो' इति पाठः । ३ प्रतिषु '-सम्मादिट्ठीहि' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपच्चक्खाणावरणचउक्कादीणं सव्वेसिं सोदय-परोदएहि बंधो, विरोहाभावादो। णवरि सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं परोदओ बंधो। अपच्चक्खाणावरणचउक्कबंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विबंधो मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीणं सांतर-णिरंतरो, आणदादिदेवेसु णिरंतरबंधं लद्धूण अण्णत्थ सांतरबंधुवलंभादो। सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीसु णिरंतरो, देव-णेरइयं-अप्पिददोगुणट्ठाणेसु अण्णगइ-आणुपुव्वीणं बंधाभावादो। एवमोरालियसरीर-ओरालियसरीर-अंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं वत्तव्वं। कुदो? ओरालियसरीरस्स सव्वदेव-णेरइएसु तेउ-वाउकाइएसु च णिरंतरं बंधुवलंभादो, अण्णत्थ सांतरबंधदंसणादो; ओरालियसरीरअंगोवंगस्स सव्वणेरइएसु सणक्कुमारादिदेवेसु च णिरंतरं बंधं लद्धूण ईसाणादिहेट्ठिमदेवाणं मिच्छाइट्ठि-सासणेसु तिरिक्ख-मणुस्सेसु च सांतरबंधुवलंभादो, वज्जरिसहसंघडणस्स देव-णेरइयसम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरं बंधं लद्धूण अण्णत्थ सांतरबंधुवलंभादो।

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्क आदिक सबका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा होनेमें कोई विरोध नहीं है। विशेष यह है कि सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक एवं वज्रर्षभसंहननका परोदय बन्ध होता है।

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका बन्ध निरन्तर है, क्योंकि, ये चारों प्रकृतियां ध्रुवबन्धी हैं। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टिके सान्तर-निरन्तर है, क्योंकि, आनतादि देवोंमें निरन्तर बन्धको प्राप्तकर अन्यत्र सान्तर बन्ध पाया जाता है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, देवों व नारकियोंके इन विवक्षित दो गुणस्थानोंमें अन्य गति व आनुपूर्वीके बन्धका अभाव है। इसी प्रकार औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग और वज्रर्षभसंहननके भी कहना चाहिये। इसका कारण यह कि औदारिकशरीरका सर्व देव नारकी तथा तेजकायिक व वायुकायिक जीवोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है, अन्यत्र यही बन्ध सान्तर देखा जाता है; औदारिकशरीरांगोपांगका सब नारकियोंमें और सानत्कुमार एवं माहेन्द्र कल्पके देवोंमें भी निरन्तर बन्ध पाकर ईशानादिक अधस्तन देवोंके मिथ्यादृष्टि व सासादन गुणस्थानोंमें तथा तिर्यंच और मनुष्योंमें सान्तर बन्ध पाया जाता है; वज्रर्षभसंहननका देव और नारकी सम्यग्मिथ्यादृष्टि व असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध पाकर अन्यत्र सान्तर बन्ध पाया जाता है।

१ अ-आप्रत्योः 'देव-णेरइअप्पिद-' काप्रतौ 'देव-णेरइयप्पिद-' इति पाठः।

अपच्चक्खाणावरणचउक्कं चउगुणट्ठाणजीवा णाणावरणपच्चएहि चेव बंधंति। एवं मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं पि चदुसु गुणट्ठाणेसु पच्चया परूवेदव्वा। णवरि सम्मामिच्छाइट्ठिस्स बादालपच्चया वत्तव्वा, ओरालियकायजोगपच्चयाभावादो। असंजद-सम्माइट्ठिस्स चोदालपच्चया, ओरालियकायजोग-ओरालियमिस्सकायजोगपच्चयाणमभावादो। एवमोरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं पि पच्चयपरूवणा मणुसगईए व[1] कायव्वा।

अपच्चक्खाणचउक्कं मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो णिरयगईए विणा तिगइ-संजुत्तं, सेसा दो वि देव-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीओ सव्व-गुणट्ठाणजीवा मणुसगइसंजुत्तं बंधंति। ओरालियसरीर-ओरालियअंगोवंगाइं मिच्छाइट्ठि सासण-सम्मादिट्ठिणो तिरिक्ख-मणुसगइसंसुत्तं, सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तं बंधंति। एवं वज्जरिसहवइरणारायणसंघडणस्स वि वत्तव्वं, भेदाभावादो।

अपच्चक्खाणचउक्कबंधस्स चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असं-जदसम्मादिट्ठी सामी। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-ओरालियसरीर-ओरालियअंगोवंग-

---

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कको चार गुणस्थानोंके जीव ज्ञानावरणप्रत्ययोंसे ही बांधते हैं। इसी प्रकार मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके भी प्रत्ययोंकी चारों गुणस्थानोंमें प्ररूपणा करना चाहिये। विशेषता यह है कि सम्यग्मिथ्यादृष्टिके ब्यालीस प्रत्यय कहना चाहिये, क्योंकि, उसके औदारिककाययोग प्रत्ययका अभाव है। असंयत-सम्यग्दृष्टिके चवालीस प्रत्यय कहना चाहिये, क्योंकि, उसके औदारिककाययोग और औदारिकमिश्रकाययोग प्रत्ययोंका अभाव है। इसी प्रकार औदारिकशरीर, औदारिक-शरीरांगोपांग और वज्रर्षभसंहननके भी प्रत्ययोंकी प्ररूपणा मनुष्यगति नामकर्मके समान करना चाहिये।

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कको मिथ्यादृष्टि चार गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त, और शेष दोनों गुणस्थानवर्ती जीव देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बांधते हैं। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको सर्व गुणस्थानोंके जीव मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। औदारिकशरीर और औदारिकअंगोपांगको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति एवं मनुष्यगति संयुक्त बांधते हैं; सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। इसी प्रकार वज्रर्षभवज्रनाराच-संहननका भी गतिसंयोग कहना चाहिये, क्योंकि, उक्त प्रकृतियोंसे इसके कोई भेद नहीं है।

अप्रत्याख्यानवरणचतुष्कके बन्धके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर, औदारिकअंगोपांग और वज्रर्षभवज्रनाराचसंहनन प्रकृतियोंके चारों

---

१ प्रतिषु 'वं' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणाणं चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठी सामी। दुगइसम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठी सामी। बंधद्धाणं बंधणट्ठपदेसो वि सुगमो।

अपच्चक्खाणचउक्कबंधो मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो, धुवबंधित्तादो। सेसेसु गुणट्ठाणेसु तिविहो, धुवत्ताभावादो। मणुसगइ-ओरालियसरीर ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं बंधो सव्वगुणट्ठाणेसु सादि-अद्धुवो, पडिवक्खपयडिबंधसंभवादो। ओरालियसरीरस्स णिच्चणिगोदेसु सव्वकालं वेउव्विय-आहारसरीरबंधविरहिदेसु धुवबंधो। अणादियबंधो च किण्ण लब्भदे? ण, पडिवक्खपयडिबंधसत्तिसब्भावं पडुच्च अणादि-धुवभावापरूवणादो[1], चउगइणिगोदे मोत्तूण णिच्चणिगोदेहि एत्थ अहियाराभावादो वा। बंधवत्तिं पडुच्च पुण बंधस्स अणादियधुवत्तं ण विरुज्झदे।

गतियोंके मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। दो गतियोंके सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धनष्टप्रदेश अर्थात् जिस स्थान तक बन्ध होता है तथा जहां बन्धकी व्युच्छित्ति होती है वह जानना भी सुगम है।

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका है, क्योंकि, ये चारों प्रकृतियां ध्रुवबन्धी हैं। शेष गुणस्थानोंमें इनका बन्ध तीन प्रकारका है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्ध नहीं होता। मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभवज्रनाराचसंहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका बन्ध सब गुणस्थानोंमें सादि व अध्रुव है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव है। सर्वकाल वैक्रियिक और आहारक शरीरोंके बन्धसे रहित नित्यनिगोदी जीवोंमें औदारिकशरीरका ध्रुव बन्ध होता है।

शंका—नित्यनिगोदी जीवोंमें औदारिकशरीरका अनादि बन्ध भी क्यों नहीं पाया जाता?

समाधान—नहीं पाया जाता, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतियोंकी बन्धशक्तिके सद्भावकी अपेक्षा करके अनादि रूपसे ध्रुव बन्धका प्ररूपण नहीं किया गया। अथवा चतुर्गतिनिगोदोंको अर्थात् चारों गतियोंमें होकर पुनः निगोदमें आये हुए जीवोंको छोड़कर नित्यनिगोदोंका यहां अधिकार नहीं है। परन्तु बन्धकी अभिव्यक्तिकी अपेक्षा करके बन्धके अनादि और ध्रुव होनेमें कोई विरोध नहीं है।

---

१ प्रतिषु '-भावपरूवणादो' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चक्खाणावरणीयकोध-माण-माया-लोभाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १९ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा बंधा ॥ २० ॥

एदं देसामासियसुत्तं, सामित्तद्धाणाणमेव परूवणादो । तेणेत्थ अवुत्तत्थाणं[1] परूवणा कीरदे । तं जहा— एदासिं पयडीणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, संजदासंजदम्मि बंधस्सेव उदयवोच्छेददंसणादो । एदासिं चउण्णं पि बंधो सोदय-परोदएहि, कोधादीणं बंधकाले तस्सेव उदए वि होदव्वमिदि णियमाभावादो । एदासिं चदुण्णं पि णिरंतरो बंधो, सत्तेत्तालीसधुवबंधपयडीसु पादादो । मिच्छादिट्ठिआदिपंचगुणट्ठाणेसु जे पच्चया परूविदा मूलुत्तरभेएण तेहि पच्चएहि एदाओ बज्झंति त्ति तेसु तेसु गुणट्ठाणेसु ते ते चेव पच्चया वत्तव्वा, बंधस्स पच्चयसमूहकज्जत्तादो । अधवा, एदासिं पयडीणं बंधस्स पच्चक्खाणपयडीए[2] उदयसामण्णं

प्रत्याख्यानावरणीय क्रोध, मान, माया और लोभका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत तक बन्धक हैं ॥ २० ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि, वह बन्धस्वामित्व और बन्धाध्वानका ही निरूपण करता है । इस कारण यहां अनुक्त अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—इन चारों प्रकृतियोंका बन्ध और उदय दोनों साथ ही व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, संयतासंयत गुणस्थानमें बन्धके समान इनके उदयका भी व्युच्छेद देखा जाता है । इन चारों ही प्रकृतियोंका बन्ध स्वोदय-परोदयसे होता है, क्योंकि, क्रोधादिकोंके बन्धकालमें उसका ही उदय भी होना चाहिये ऐसा कोई नियम नहीं है । इन चारोंका ही निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये चारों प्रकृतियां सैंतालीस ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंमें आती हैं ।

मिथ्यादृष्टि आदि पांच गुणस्थानोंमें जो मूल व उत्तर प्रत्यय कहे गये हैं उन प्रत्ययोंसे ये प्रकृतियां बंधती हैं, अत एव उन उन गुणस्थानोंमें उन्हीं उन्हीं प्रत्ययोंको कहना चाहिये, क्योंकि, बन्ध प्रत्ययसमूहका कार्य है । अथवा, इन प्रकृतियोंके बन्धका प्रत्यय प्रत्याख्यान प्रकृतिका उदयसामान्य है ।

१ प्रतिषु ' अवुत्तद्धाणं ' इति पाठः ।　　२ प्रतिषु ' पच्चयाण पयडीए ' इति पाठः ।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

पच्चओ। सेसकसायाणमुदओ जोगो च पच्चओ ण होदि, एत्तो उवरि तेसु संतेसु वि एदासिं बंधाभावादो। ण मिच्छत्ताणंताणुबंधि-अपच्चक्खाणावरणाणमुदओ वि एदासिं बंधस्स पच्चओ, तेण विणा वि बंधुवलंभादो। जस्सण्णय-वदिरेगेहि जस्सण्णयवदिरेगा होंति [तं] तस्स कज्जमियरं च कारणं। ण चेदं पच्चक्खाणोदयं मुच्चा अण्णत्थत्थि[1] तम्हा पच्चक्खाणोदओ चेव पच्चओ त्ति सिद्धं। मिच्छाइट्ठिम्हि णट्ठबंधसोलसपयडीणं बंधस्स मिच्छत्तोदओ चेव पच्चओ, तेण विणा तासिं बंधाणुवलंभादो। सासणम्मि णट्ठबंधपणुवीसपयडीणं अणंताणुबंधीणमुदओ चेव पच्चओ, तेण विणा तासिं बंधाणुवलंभादो। असंजदसम्मादिट्ठिम्हि णट्ठबंधणवपयडीणं बंधस्स अपच्चक्खाणोदओ कारणं, तेण विणा तासिं बंधाणुवलंभादो। पमत्तसंजदम्मि णट्ठबंध-छप्पयडीणं बंधस्स पमादो पच्चओ, तेण विणा तदणुवलंभादो। एवमण्णत्थ वि जाणिय वत्तव्वं।

एदाओ पयडीओ मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो णिरयगईए[2] विणा तिगइसंजुत्तं,

शेष कषायोंका उदय और योग प्रत्यय नहीं है, क्योंकि, पांचवें गुणस्थानके ऊपर उनके रहनेपर भी इनका बन्ध नहीं होता। मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धी और अप्रत्याख्यानावरण प्रकृतियोंका उदय भी इन प्रकृतियोंके बन्धका प्रत्यय नहीं है, क्योंकि, उनके उदयके विना भी इनका बन्ध पाया जाता है। जिसके अन्वय और व्यतिरेकके साथ जिसका अन्वय और व्यतिरेक होता है वह उसका कार्य और दूसरा कारण होता है। और यह बात प्रत्याख्यानावरणके उदयको छोड़कर अन्यत्र है नहीं, इसलिये प्रत्याख्यानावरणका उदय ही अपने बन्धका प्रत्यय है, यह बात सिद्ध हुई। मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें व्युच्छिन्न सोलह प्रकृतियोंके बन्धका प्रत्यय मिथ्यात्वका उदय ही है, क्योंकि, उसके विना उन सोलह प्रकृतियोंका बन्ध पाया नहीं जाता। सासादनगुणस्थानमें व्युच्छिन्न पच्चीस प्रकृतियोंके बन्धका अनन्तानुबन्धिचतुष्कका उदय ही प्रत्यय है, क्योंकि, उसके विना इन पच्चीस प्रकृतियोंका बन्ध पाया नहीं जाता। असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें व्युच्छिन्न नौ प्रकृतियोंके बन्धका अप्रत्याख्यानावरणका उदय कारण है, क्योंकि, उसके विना उनका बन्ध पाया नहीं जाता। प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें व्युच्छिन्न छह प्रकृतियोंके बन्धका प्रत्यय प्रमाद है, क्योंकि, उसके विना उनका बन्ध पाया नहीं जाता। इसी प्रकार अन्यत्र भी जानकर कहना चाहिये।

इन प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि नरक-

१ प्रतिषु 'अण्णत्थ त्ति' इति पाठः। २ अप्रतौ 'णिरयगई' आ-काप्रत्योः 'णिरयगइ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी देवगइ-मणुसगइसंजुत्तं, संजदासंजदा देवगइसंजुत्तं[1] बंधंति। एदासिं चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो बंधस्स सामी। संजदासंजदा दुगइया[2] सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। एदासिं बंधो मिच्छाइदिम्हि चउव्विहो, सत्तेदालीसधुवबंधपयडीसु पादादो। उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु तिविहो, दुविहाभावादो।

पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २१ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपइट्ठउवसमा खवा बंधा। अणियट्टिबादरद्धाए सेसे संखेज्जाभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २२ ॥

'मिच्छादिट्ठिप्पहुडि उवसमा खवा बंधा' एदेण सुत्तावयवेण गुणट्ठाणगयबंध-

---

गतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवगति एवं मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा संयतासंयत देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं। चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि इन प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी हैं। दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान स्थान सुगम हैं। मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें इनका चारों प्रकारका बन्ध है, क्योंकि, ये सैंतालीस ध्रुवबन्धप्रकृतियोंमें आती हैं। उपरिम गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध है, क्योंकि, वहां दो प्रकारके बन्धका अभाव है।

पुरुषवेद और संज्वलनक्रोधका कौन बन्धक और कौन अबन्धक ? ॥ २१ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरणबादरसाम्परायिकप्रविष्ट उपशमक एवं क्षपक तक बन्धक हैं। अनिवृत्तिबादरकालके शेषमें संख्यात बहुभाग जाकर बन्धव्युच्छेद होता है। ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ २२ ॥

'मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक और क्षपक बन्धक हैं' इस

---

१ अप्रतौ 'देवं' आप्रतौ 'देवगइ' काप्रतौ 'देवगई' इति पाठः।

२ प्रतिषु '-गइय-' इति पाठः।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

सामित्तं बंधद्धाणं च परूविदं । 'अणियट्टिबादरद्धाए सेसे संखेज्जाभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि' त्ति एदेण बंधविणट्ठट्ठाणं परूविदं । तं जहा— सेसे अंतरकरणे कदे जा सेसा अणियट्टिअद्धा तम्मि सेसे संखेज्जखंडे कदे तत्थ बहुखंडाणि गंतूणेगखंडावसेसे पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं बंधो वोच्छिण्णो त्ति उत्तं होदि । एदे तिण्णि चेव अत्था एदेण परूविदा त्ति देसामासिय-सुत्तमेदं । तेणेदस्सियरत्थाणं परूवणा कीरदे—

पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं उदए संतक्खएणुवसमेण वा णट्ठे बंधाणुवलंभादो । संसारावत्थाए सोदएण विणा वि बंधो उवलब्भदि त्ति ण सोदयाविणाभावी एदासिं बंधो त्ति वुत्ते होदु तत्थ तधा, इच्छिज्जमाणत्तादो । एत्थ पुण पडिवक्खपयडिबंधेण विणा बंधविणट्ठट्ठाणे चेव उदयविणासादो एगम्हि काले दोण्णं विणासो ण विरुज्झदे त्ति । एदासिं दोण्णं पयडीणं सोदयपरोदएहि बंधो, सोदएण विणा वि बंधोवलंभादो । कोधसंजलणस्स बंधो णिरंतरो, सत्तेत्तालीसधुवबंधपयडीणं मज्झे

सूत्रावयवसे गुणस्थानगत बन्धस्वामित्व और बन्धाध्वानका निरूपण किया है । 'अनिवृत्ति बादरकालके शेषमें संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है' इससे बन्धव्युच्छेद-स्थानका निरूपण किया है । वह इस प्रकार है— शेष अर्थात् अन्तरकरण करनेपर जो अवशेष अनिवृत्तिकाल रहता है उस शेष कालके संख्यात खण्ड करनेपर उनमें बहुत खण्ड जाकर एक खण्ड अवशिष्ट रहनेपर पुरुषवेद और संज्वलनक्रोधका बन्ध व्युच्छिन्न होता है, यह उसका अभिप्राय है । ये तीन ही अर्थ इस सूत्र द्वारा कहे गये हैं, अत एव यह देशामर्शक सूत्र है । इसी कारण इसके अन्य अर्थोंकी प्ररूपणा की जाती है—

पुरुषवेद और संज्वलनक्रोध इनके बन्ध व उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, पुरुषवेद और संज्वलनक्रोधके उदयके सत्त्वक्षयसे या उपशमसे नष्ट होनेपर उन दोनोंका बन्ध नहीं पाया जाता ।

शंका—संसारावस्थामें स्वोदयके विना भी बन्ध पाया जाता है, अत एव इनका बन्ध स्वोदयका अविनाभावी नहीं है ?

समाधान—ऐसी शंका करनेपर उत्तर देते हैं कि संसारावस्थामें वैसा भले ही हो, क्योंकि, वहां ऐसा इष्ट है । परन्तु यहांपर प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धके विना बन्ध-व्युच्छेदस्थानमें ही उदयका व्युच्छेद होनेसे एक कालमें दोनोंका व्युच्छेद विरुद्ध नहीं है ।

इन दोनों प्रकृतियोंका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयके विना भी उनका बन्ध पाया जाता है । संज्वलनक्रोधका बन्ध निरन्तर है, क्योंकि, वह सैंतालीस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णादादो । पुरिसवेदबंधो सांतरो । कुदो ? मिच्छाइट्ठि-सासणेसु पडिवक्खपयडीणं बंधुवलंभादो । णिरंतरो वि, पम्म-सुक्कलेस्सियतिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सम्मामिच्छाइट्ठिआदिउवरिमगुणट्ठाणेसु च णिरंतरबंधुवलंभादो ।

एदासिं पच्चयपरूवणे कीरमाणे पुध पुध जे पच्चया मूलुत्तरणाणेगसमयभेयभिण्णा गुणट्ठाणाणं परूविदा ताणि गुणट्ठाणाणि तेहि पच्चएहि एदाओ पयडीओ बंधंति त्ति पुधपरूवणा णत्थि, भेदाणुवलंभादो । अधवा पुरिसवेदो गयपच्चओ, अवगदवेदेसु तब्बंधाणुवलंभादो । कोधसंजलणो संजलणकसायस्स तिव्वाणुभागोदयपच्चओ, उवसमसेडिम्हि कोधचरिमाणुभागोदयादो अणंतगुणहीणेण ऊणाणुभागोदएण कोधसंजलणस्स बंधाणुवलंभादो । मिच्छाइट्ठी सासणो च णिरयगईए विणा पुरिसवेदं तिगइसंजुत्तं बंधइ । णिरयगईए सह पुरिसवेदो किण्ण बज्झदे ? ण, अच्चंताभावेण पडिसिद्धत्तादो । सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी च दुगइसंजुत्तं, तेसिं णिरय-तिरिक्खगईणं बंधाभावादो । संजदासंजदप्पहुडि उवरिमा

ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंके मध्यमें आया है । पुरुषवेदका बन्ध सान्तर है । इसका कारण यह कि मिथ्यादृष्टि और सासादन गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । वही बन्ध निरन्तर भी है, क्योंकि, पद्म एवं शुक्ल लेश्यावाले तिर्यंच व मनुष्य मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि उपरिम गुणस्थानोंमें भी निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इन दोनों प्रकृतियोंके प्रत्ययोंका प्ररूपण करनेपर मूल, उत्तर तथा नाना व एक समय सम्बन्धी प्रत्ययोंके भेदसे भिन्न पृथक् पृथक् जो प्रत्यय जिन गुणस्थानोंके कहे गये हैं वे गुणस्थान उन प्रत्ययोंसे इन प्रकृतियोंको बांधते हैं, अतः इनकी पृथक् प्रत्ययप्ररूपणा नहीं है, क्योंकि, उनसे यहां कोई भेद नहीं पाया जाता । अथवा पुरुषवेद गतप्रत्यय है, अर्थात् उसका प्रत्यय ऊपर बता ही चुके हैं, क्योंकि, अपगतवेदियोंमें उसका बन्ध नहीं पाया जाता । संज्वलनक्रोधका बन्ध संज्वलनकषायके तीव्र अनुभागोदयनिमित्तक है, क्योंकि, उपशमश्रेणीमें क्रोधके अन्तिम अनुभागोदयसे अथवा अनन्तगुणहानिसे हीन अनुभागोदयसे संज्वलनक्रोधका बन्ध नहीं पाया जाता ।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि नरकगतिके विना पुरुषवेदको तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं ।

शंका—नरकगतिके साथ पुरुषवेद क्यों नहीं बंधता ?

समाधान—नहीं बांधता, क्योंकि, वह अत्यन्ताभाव रूपसे प्रतिषिद्ध है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उनके नरकगति और तिर्यग्गतिके बन्धका अभाव है । संयतासंयतसे लेकर उपरिम जीव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवगइसंजुत्तं, सेसगईणं तत्थ बंधाभावादो । अपुव्वकरणसत्तमसत्तभागप्पहुडि उवरिमा अगादिसंजुत्तं बंधंति, तत्थ गइकम्मस्स बंधाभावादो । एवं कोधसंजलणस्स वि वत्तव्वं । णवरि मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं बंधइ, तत्थ णिरयगईए सह बंधविरोहाभावादो । पुरिसवेदबंधस्स चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी । दुगइसंजदासंजदा सामी, देव-णिरयगईसु तदभावादो । उवरिमा मणुसगईए सामी, अण्णत्थ पमत्तादीणमभावादो । पुरिसवेदबंधो सव्वगुणट्ठाणेसु सादिओ अद्धुवो, पडिवक्खपयडीणं बंधुवलंभादो । णियमेण सम्मामिच्छाइट्ठिप्पहुडि उवरिमेसु बंधविणासदंसणादो । कोधसंजलणस्स मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो । उवरिमेसु तिविहो, धुवत्ताभावादो ।

माण-मायसंजलणाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २३ ॥

सुगममेदं ।

देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, वहां शेष गतियोंका बन्ध नहीं होता । अपूर्वकरणके सातवें सप्तम भागसे लेकर उपरिम जीव अगतिसंयुक्त पुरुषवेदको बांधते हैं, क्योंकि, वहां गतिकर्मका बन्ध नहीं होता । इसी प्रकार संज्वलनक्रोधके भी कहना चाहिये । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि उसे चार गतियोंसे संयुक्त बांधता है, क्योंकि, वहां नरकगतिके साथ उसके बन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

पुरुषवेदके बन्धके चारों गतियोंवाले मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । दो गतियोंवाले संयतासंयत स्वामी हैं, क्योंकि, देव व नरक गतिमें संयतासंयतोंका अभाव है । ऊपरके जीव मनुष्यगतिके ही स्वामी हैं, क्योंकि, दूसरी गतियोंमें प्रमत्तसंयतादिकोंका अभाव है । पुरुषवेदका बन्ध सब गुणस्थानोंमें सादिक व अध्रुव है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है, नियमसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिसे लेकर उपरिम गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्धविनाश देखा जाता है । संज्वलनक्रोधका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी है । उपरिम गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है ।

संज्वलन मान और मायाका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठउवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए सेसे सेसे संखेज्जाभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २४ ॥

'मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठउवसमा खवा बंधा' एदेण सुत्तावयवेण बंधद्धाणं गइगएण विणा गुणट्ठाणगयबंधसामित्तं च वुत्तं । 'अणियट्टिबादरद्धाए सेसे सेसे संखेज्जाभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि' एदेण सुत्तावयवेण बंधविणट्ठट्ठाणं परूविदं । कोधसंजलणे विणट्ठे जो अवसेसो अणियट्टिअद्धाए संखेज्जदिभागो तम्हि संखेज्जे खंडे कदे तत्थ बहुभागे गंतूण एयभागावसेसे माणसंजलणस्स बंधवोच्छेदो । पुणो तम्हि एगखंडे संखेज्जखंडे कदे तत्थ बहुखंडे गंतूण एगखंडावसेसे मायासंजलणबंधवोच्छेदो त्ति । कधमेदं णव्वदे ? 'सेसे सेसे संखेज्जे भागे गंतूणेत्ति' विच्छाणिद्देसादो । कसायपाहुडसुत्तेणेदं सुत्तं विरुज्झदि त्ति वुत्ते सच्चं विरुज्झइ, किंतु एयंतग्गहो एत्थ ण कायव्वो, इदमेव तं चेव

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरणबादरसाम्परायिकप्रविष्ट उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अनिवृत्तिबादरकालके शेष शेपमें संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ २४ ॥

'मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरणबादरसाम्परायिकप्रविष्ट उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं' इस सूत्रावयवसे बन्धाध्वान और गतिगत बन्धस्वामित्वके विना गुणस्थानगत बन्धस्वामित्व भी कहा गया है । 'अनिवृत्तिबादरकालके शेष शेषमें संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है' इस सूत्रावयव द्वारा बन्धविनष्टस्थानकी प्ररूपणा की गई है । संज्वलनक्रोधके विनष्ट होनेपर जो शेष अनिवृत्तिबादरकालका संख्यातवां भाग रहता है उसके संख्यात खण्ड करनेपर उनमें बहुभागोंको विताकर एक भाग शेष रहनेपर संज्वलनमानका बन्धव्युच्छेद होता है । पुनः एक खण्डके संख्यात खण्ड करनेपर उनमें बहुत खण्डोंको विताकर एक खण्ड शेष रहनेपर संज्वलनमायाका बन्धव्युच्छेद होता है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'शेष शेषमें संख्यात बहुभाग जाकर' इस वीप्सा अर्थात् दो बार निर्देशसे उक्त प्रकार दोनों प्रकृतियोंका व्युच्छेदकाल जाना जाता है ।

शंका—कषायप्राभृतके सूत्रसे तो यह सूत्र विरोधको प्राप्त होगा ?

समाधान—ऐसी आशंका होनेपर कहते हैं कि सचमुचमें कषायप्राभृतके सूत्रसे यह सूत्र विरुद्ध है, परन्तु यहां एकान्तग्रह नहीं करना चाहिये, क्योंकि, 'यही सत्य है'

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

सच्चमिदि सुदकेवलीहि पच्चक्खणाणीहि वा विणा अवहारिज्जमाणे मिच्छत्तप्पसंगादो । कधं सुत्ताणं विरोहो ? ण, सुत्तोवसंहाराणमसयलसुदधारयाइरियपरतंताणं विरोहसंभवदंसणादो । उवसंहाराणं कधं पुण सुत्तत्तं जुज्जदे ? ण, अमियसायरजलस्स अलिंजर-घड-घडी-सरावुदंचण-गयस्स वि अमियत्तुवलंभादो ।

संपहि एदेण सूइदत्थाणं परूवणा कीरदे । तं जहा— एदासिं दोण्णं पयडीणं बंधोदया अक्कमेण वोच्छिज्जंति, उदए विणट्ठे बंधाणुवलंभादो । ण च उदयद्धाक्खएण उदयस्स विणासो एत्थ विवक्खिओ, संतोवसम-खएहि समुप्पण्णुदयाभावेण अहियारादो । एदासिं सोदय-परोदएहि बंधो, णिरंतरबंधीणं सांतरुदयाणं सोदएणेव बंधविरोहादो । णिरंतर-बंधीओ, धुवबंधीहि सह पादादो । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जे पच्चया मूलुत्तरणाणेगसमयभेयभिण्णा पुव्वं परूविदा तग्गुणविसिट्ठजीवा तेहि चेव पच्चएहि एदाओ पयडीओ बंधंति, पच्चयंतरा-

---

या 'वही सत्य है' ऐसा श्रुतकेवलियों अथवा प्रत्यक्षज्ञानियोंके विना निश्चय करनेपर मिथ्यात्वका प्रसंग होगा।

शंका—सूत्रोंके विरोध कैसे हो सकता है ?

समाधान—यह शंका ठीक नहीं, क्योंकि, अल्प श्रुतके धारक आचार्योंके परतंत्र सूत्र व उपसंहारोंके विरोधकी सम्भावना देखी जाती है।

शंका—उपसंहारोंके सूत्रपना कैसे उचित है ?

समाधान—यह भी शंका ठीक नहीं, क्योंकि, आलिंजर (घटविशेष), घट, घटी, शराव व उदंचन आदिमें स्थित भी अमृतसागरके जलमें अमृतत्व पाया ही जाता है।

अब इस सूत्रके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— इन दोनों प्रकृतियोंका बन्ध और उदय दोनों एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, इनके उदयके नष्ट होनेपर फिर बन्ध नहीं पाया जाता। और यहां उदयकालके क्षयसे होनेवाला उदयका विनाश विवक्षित नहीं है, क्योंकि, सत्वोपशम या सत्वक्षयसे उत्पन्न उदयाभावका अधिकार है। इन दोनों प्रकृतियोंका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, निरन्तरबन्धी और सान्तर उदयवाली प्रकृतियोंके स्वोदयसे ही बन्ध होनेका विरोध है। ये निरन्तरबन्धी प्रकृतियां हैं, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंके साथ आती हैं। मिथ्यादृष्टिसे लेकर मूल, उत्तर व नाना एवं एक समय सम्बन्धी भेदोंसे भिन्न जो प्रत्यय पूर्वमें कहे जा चुके हैं, उन गुण-स्थानोंसे विशिष्ट जीव उन्हीं प्रत्ययोंसे इन प्रकृतियोंको बांधते हैं, क्योंकि, अन्य प्रत्ययोंका

---

१ अप्रतौ 'सुत्तोवसंधाराणा-', आ-काप्रत्योः 'सुत्तोवसंहाराणा-' इति पाठः।

२ अ-आप्रत्योः 'सहदत्थाणं', काप्रतौ 'सहिदत्थाणं' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावादो । अधवा, एदासिं संजलणोदयविसेसो चेव पच्चओ, तेण विणा बंधाणुवलंभादो ।

मिच्छादिट्ठी चउगइसंजुत्तं, तस्स सव्वगइबंधेहि विरोहाभावादो । सासणो तिगइसंजुत्तं, तस्स णिरयगइबंधेण सह विरोहादो । सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी च दुगइसंजुत्तं बंधंति, तेसिं णिरय-तिरिक्खगईहि सह विरोहादो । उवरिमा देवगइ-अगइसंजुत्तं वा बंधंति, तेसिं सेसगईहि सह विरोहादो । मिच्छाइट्ठी सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी चउगइया, दुगइसंजदासंजदा, सेसा मणुस्सगईया सामी । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुत्तुद्दिट्ठमिदि सुगमं । मिच्छाइट्ठिस्स चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो । सेसाणं तिविहो, धुवत्ताभावादो ।

लोभसंजलणस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ २५ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठउवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २६ ॥

अभाव है । अथवा, इन प्रकृतियोंका संज्वलनका उदयविशेष ही प्रत्यय है, क्योंकि, उसके विना इनका बन्ध पाया नहीं जाता ।

मिथ्यादृष्टि इन्हें चार गतियोंसे संयुक्त बांधता है, क्योंकि, उसके सब गतियोंके बन्धके साथ कोई विरोध नहीं है । सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है, क्योंकि, उसके नरकगतिबन्धके साथ विरोध है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उनके नरक व तिर्यग्गतिके साथ बन्ध होनेमें विरोध है । उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त या गतिसंयोगसे रहित बांधते हैं, क्योंकि उनके शेष गतियोंके साथ बन्ध होनेमें विरोध है । मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि चारों गतियोंवाले, दो गतियोंवाले संयतासंयत, और शेष गुणस्थानवर्ती जीव मनुष्यगतिवाले स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छित्तिस्थान चूंकि सूत्रप्रतिपादित हैं अतः सुगम हैं । मिथ्यादृष्टिके इनका चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं । शेष जीवोंके ध्रुवबन्धका अभाव होनेसे तीन प्रकारका ही बन्ध होता है ।

संज्वलनलोभका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिबादरसाम्परायिकप्रविष्ट उपशमक और क्षपक तक बन्धक हैं । अनिवृत्तिबादरकालके अन्तिम समयको प्राप्त होकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ २६ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'मिच्छाइट्ठिप्पहुडि०' एदेण सुत्तावयवेण बंधद्धाणं गुणट्ठाणगयसामित्तं च परूविदं । 'अणियट्टिबादर०' एदेण बंधविणट्ठट्ठाणपरूवणा कदा । एदेसिं तिण्णं चेवत्थाणं परूवणा कदा त्ति देसामासियसुत्तमेदं । तेणेदेण सूइदत्थाणं परूवणा कीरदे । तं जहा—

बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, अणियट्टिचरिमसमए बंधे वोच्छिण्णे सुहुमसांपराइयचरिमसमए उदयवोच्छेदुवलंभादो । लोभसंजलणस्स सोदय-परोदएहि बंधो, धुवोदयत्ताभावादो । णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । पच्चयपरूवणाए माणसंजलणभंगो । गइसंजुत्तसामित्तद्धाण-बंधवोच्छिण्णट्ठाणपरूवणाओ सुगमाओ । मिच्छाइट्ठिस्स चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो । सेसाणं तिविहो बंधो, धुवत्ताभावादो ।

हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २७ ॥

सुगमं ।

'मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिबादरसाम्परायिकप्रविष्ट उपशामक और क्षपक तक बन्धक हैं' इस सूत्रांश द्वारा बन्धाध्वान और गुणस्थानगत बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा की गई है । 'अनिवृत्तिबादरकालके अन्तिम समयको प्राप्त होकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है' इस सूत्रांश द्वारा बन्धव्युच्छित्तिस्थानका निरूपण किया गया है । चूंकि सूत्र द्वारा इन्हीं तीन अर्थोंकी प्ररूपणा की गई है, अतएव यह देशामर्शक सूत्र है । इस कारण इसके द्वारा सूचित अर्थोंका निरूपण करते हैं । वह इस प्रकार है—

संज्वलनलोभका बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, पश्चात् उदय; क्योंकि, अनिवृत्तिकरणके अन्तिम समयमें बन्धके व्युच्छिन्न होजानेपर सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । संज्वलनलोभका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, उसके ध्रुवोदयत्वका अभाव है । बन्ध उसका निरन्तर है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी है । प्रत्ययोंकी प्ररूपणा संज्वलनमानके समान है । गतिसंयुक्तता, स्वामित्व, अध्वान और बन्धव्युच्छित्तिस्थानकी प्ररूपणायें सुगम हैं । मिथ्यादृष्टिके चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी प्रकृति है । शेष जीवोंके तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके ध्रुवबन्धका अभाव है ।

हास्य, रति, भय और जुगुप्सा प्रकृतियोंका कौन बन्धक है और कौन अबन्धक है ? ॥ २७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २८ ॥

एदेण बंधद्धाणं गुणगयबंधसामित्तं बंधविणट्ठट्ठाणं च परूविदं । तेणेदं देसामासियं दट्ठव्वमण्णहा सेसत्थाणमेत्थ संभवाभावादो। तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे— हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, अपुव्वकरणचरिमसमए चदुण्णं वोच्छेदुवलंभादो। सोदय-परोदएहि बंधो, धुवोदयत्ताभावादो परोदए वि बंधविरोहाभावादो । भय-दुगुंछाणं सव्वगुणट्ठाणेसु णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । हस्स-रदीण मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो बंधो, एत्थ पडिवक्खपयडिबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पच्चयपरूवणाए णाणावरणभंगो । मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, एदासिं बंधस्स चउगइबंधेण सह विरोहाभावादो । णवरि हस्स-रदीओ तिगइसंजुत्तं बंधइ, तब्बंधस्स

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक और क्षपक तक बंधक हैं। अपूर्वकरणकालके अन्तिम समयको प्राप्त होकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ २८ ॥

इस सूत्रके द्वारा बन्धाध्वान, गुणस्थानगत बन्धस्वामित्व और बन्धव्युछित्तिस्थानकी प्ररूपणा की है, इसीलिये इसे देशामर्शक सूत्र समझना चाहिये, अन्यथा यहां शेष अर्थोंकी सम्भावना नहीं है। अतएव इसके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं— हास्य, रति, भय और जुगुप्सा इनका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें उक्त चारों प्रकृतियोंके बन्ध और उदय दोनोंकी व्युच्छित्ति पायी जाती है। इनका बन्ध स्वोदय-परोदयसे होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी प्रकृतियां नहीं हैं अतः इनके परोदयसे भी बन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं है। भय और जुगुप्साका सब गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं। हास्य और रतिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सान्तर बन्ध है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है। प्रमत्तसंयतसे ऊपर निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। प्रत्ययोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है।

मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिके इनके बन्धका चारों गतियोंके बन्धके साथ कोई विरोध नहीं है। विशेष इतना है कि हास्य और रतिको तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है, क्योंकि, इनके बन्धका नरकगतिके बन्धके साथ विरोध

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिरयगइबंधेण सह विरोहादो । सासणो तिगइसंजुत्तं, तत्थ णिरयगईए बंधाभावादो । सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजुत्तं, एदेसिं णिरय-तिरिक्खगईणं बंधाभावादो । उवरिमा देवगइसंजुत्तं बंधंति, तेसु अण्णगईणं बंधाभावादो । णवरि अपुव्वकरणद्धाए चरिमे सत्तमे भागे वट्टमाणा अगइसंजुत्तं बंधंति त्ति वत्तव्वं । चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी । दुगइसंजदासंजदा, देव-णेरइएसु अणुव्वईणमभावादो । उवरिमा मणुस्सा चेव होदूण एदासिं बंधस्स सामी, अण्णत्थ पमत्तादीणमभावादो । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । भय-दुगुंछाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो । उवरिमेसु तिविहो बंधो, धुवत्ताभावादो । हस्स-रदीणं बंधो सादि-अद्धुवो, पडिवक्खपयडिबंधुवलंभादो ।

मणुस्साउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ २९ ॥

एदं देसामासियं पुच्छासुत्तं । तेण को बंधओ को अबंधओ, किमेदस्स बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि किमुदओ किं दो वि समं वोच्छिज्जंति, किं सोदएण परोदएण किं सोदय-

---

है । सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है, क्योंकि, वहां नरकगतिका बन्ध नहीं रहता । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, इनके नरकगति और तिर्यग्गतिके बन्धका अभाव है । उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उनमें अन्य गतियोंका बन्ध नहीं होता । विशेष इतना है कि अपूर्वकरणकालके अन्तिम सप्तम भागमें वर्तमान जीव अगतिसंयुक्त बांधते हैं ऐसा कहना चाहिये ।

चारों गतियोंवाले मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । दो गतियोंवाले संयतासंयत स्वामी हैं, क्योंकि, देव और नारकियोंमें अणुव्रतियोंका अभाव है । उपरिम जीव मनुष्य ही होकर इनके बन्धके स्वामी हैं, क्योंकि, अन्यत्र प्रमत्तादिकोंका अभाव है ।

बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छेदस्थान सुगम हैं । भय और जुगुप्साका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं । उपरिम गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है । हास्य और रतिका बन्ध सादि-अध्रुव है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध उपलब्ध है ।

मनुष्यायुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २९ ॥

यह देशामर्शक पृच्छासूत्र है । इस कारण कौन बन्धक कौन अबन्धक; क्या इसका बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, क्या उदय, या क्या दोनों ही साथ व्युच्छिन्न होते हैं; क्या स्वोदयसे, क्या परोदयसे या क्या स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है; क्या इसका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परोदएण, किं सांतरं किं णिरंतरं किं सांतर-णिरंतरं, किं पच्चएहि किं तेहि विणा, किं गइसंजुत्तं किमगइसंजुत्तं बज्झइ, एदस्स बंधस्स कदिगदिया सामी असामी वा, किं बंधद्धाणं, किं चरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि किं पढमसमए किमपढम-अचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि, किं सादिओ किमणादिओ किं धुवो किमद्धुवो बंधो त्ति एदाओ पुच्छाओ एत्थ कायव्वाओ। पुणो पुच्छिदजणाणुग्गहट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि —

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३० ॥

एत्थ बंधद्धाणं गुणट्ठाणाणि अस्सिदूण बंधसामित्तं च उत्तं, तेण इदरत्थाणं परूवणा कीरदे। तं जहा— मणुस्साउअस्स पुव्वं बंधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि णट्ठबंधस्स मणुसाउअस्स अजोगिचरिमसमए उदयवोच्छेदुवलंभादो। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सोदएण परोदएण वि मणुसाउअं बंधंति, अविरोहादो। असंजदसम्मादिट्ठी परोदएणेव, सोदएण सह तत्थ बंधविरोहादो। णिरंतरो बंधो, वज्झमाणभवे पडिवक्खपयडीए

बन्ध सान्तर, क्या निरन्तर, या क्या सान्तर-निरन्तर है; क्या प्रत्ययोंसे या क्या उनके विना ही बन्ध होता है, क्या गतिसंयुक्त या क्या अगतिसंयुक्त बन्ध होता है, इसके बन्धके कितनी गतियोंवाले स्वामी अथवा अस्वामी हैं, बन्धाध्वान क्या है, क्या चरम समयमें बन्ध व्युछिन्न होता है, क्या प्रथम समयमें, या क्या अप्रथम-अचरम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है; क्या सादिक, क्या अनादिक, क्या ध्रुव या क्या अध्रुव बन्ध होता है; इन प्रश्नोंको यहां करना चाहिये। फिरसे पृच्छायुक्त जनोंके अनुग्रहके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ ३० ॥

इस सूत्रमें बन्धाध्वान और गुणस्थानोंका आश्रयकर बन्धस्वामित्व ही कहा गया है, इसलिये अन्य अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— मनुष्यायुका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है पश्चात् उदय, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें मनुष्यायुके बन्धके व्युच्छिन्न होजानेपर अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि स्वोदय और परोदयसे भी मनुष्यायुको बांधते हैं, क्योंकि, इसमें कोई विरोध नहीं है। असंयतसम्यग्दृष्टि परोदयसे ही मनुष्यायुको बांधते हैं, क्योंकि, स्वोदयके साथ बन्ध होनेका इस गुणस्थानमें विरोध है। इसका बन्ध निरन्तर है, क्योंकि, बध्यमान भवमें प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धके विना इसके बन्धकी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधेण विणा बंधपरिसमत्तिदंसणादो। बंधविरोहो अंतरमिदि किण्ण घेप्पदे ? ण, पडिवक्ख-पयडिबंधकदंतरेण एत्थ पओजणादो। मिच्छादिट्ठिस्स मूलुत्तरणाणेगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया णाणावरणम्हि वुत्ता चेव होंति। णवरि णाणासमयउक्कस्सपच्चया तेवण्णं होंति, वेउव्विय-मिस्स-कम्मइयाणमभावादो। सासणस्स णाणासमयउक्कस्सपच्चया सत्तेतालीस, ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयाणमभावादो। असंजदसम्माइट्ठिस्स मणुसाउअं बंधमाणस्स मूलपच्चया तिण्णि, मिच्छत्ताभावादो। एगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चया णव सोलस। णाणासमयउत्तरपच्चया बादालं, ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयाणमभावादो। तिण्णि वि गुणट्ठाणाणि मणुस्सगइसंजुत्तं बंधंति, तब्बंधस्स अण्णगईहि सह विरोहादो। चउगइमिच्छाइट्ठि-सासण-सम्माइट्ठिणो सामी। दुगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो सामी, तिरिक्ख-मणुस्सगइट्ठिदअसंजद-सम्मादिट्ठीणं मणुस्साउबंधेण विरोहादो। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो असंजदसम्मादिट्ठिस्स अपढम-अचरिमसमए। मणुस्साउअस्स बंधो सादि-अद्धुवो, बंधस्स धुवत्ताभावादो।

समाप्ति देखी जाती है।

शंका—बन्धका विरोध ही अन्तर है, ऐसा क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान—ऐसा ग्रहण इसलिये नहीं करते कि यहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्ध द्वारा किये गये अन्तरसे प्रयोजन है।

मिथ्यादृष्टिके मूल और उत्तर नाना व एक समय सम्बन्धी जघन्य एवं उत्कृष्ट प्रत्यय ज्ञानावरणमें कहे हुए ही होते हैं। विशेष इतना है कि नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय तिरेपन होते हैं, क्योंकि, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोगका यहां अभाव है। सासादनसम्यग्दृष्टिके नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय सैंतालीस होते हैं, क्योंकि, यहां औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोगोंका अभाव है। मनुष्यायुको बांधनेवाले असंयतसम्यग्दृष्टिके मूल प्रत्यय तीन होते हैं, क्योंकि, उसके मिथ्यात्वका अभाव है। एक समय सम्बन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्यय नौ और सोलह होते हैं। नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्यय ब्यालीस होते हैं, क्योंकि, यहां औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोगोंका अभाव है।

तीनों ही गुणस्थान मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उसके बन्धका अन्य गतियोंके साथ विरोध है। चारों गतियोंवाले मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। दो गतियोंवाले असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, तिर्यग्गति और मनुष्यगतिमें स्थित असंयतसम्यग्दृष्टियोंके मनुष्यायुबन्धसे विरोध है। बन्धाध्वान सुगम है। बन्धव्युच्छेद असंयतसम्यग्दृष्टिके अप्रथम-अचरम समयमें होता है। मनुष्यायुका बन्ध सादि-अध्रुव है, क्योंकि, उसके बन्धके ध्रुवताका अभाव है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवाउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ३१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा बंधा। अप्पमत्तसंजदद्धाए संखेज्जदिभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३२ ॥

'मिच्छाइट्ठिप्पहुडि०' एदेण सुत्तावयवेण बंधद्धाणं गुणगयसामित्तं च परूविदं । 'अप्पमत्तसंजदद्धाए०' एदेण बंधविणट्ठट्ठाणं परूविदं । तिण्णं चेव परूवणादो देसामासिय-सुत्तमिणं । तेणेदेण सूइदत्थे भणिस्सामो । तं जहा— एदस्स पुव्वमुदओ वोच्छिज्जदि पच्छा बंधो, देवाउअस्स असंजदसम्मादिट्ठिचरिमसमए वोच्छिण्णुदयस्स अप्पमत्तद्धाए संखेज्जदिभागं गंतूण बंधवोच्छेदुवलंभादो । परोदएणेव बंधो, सोदएणेदस्स तित्थयरस्सेव बंधविरोहादो । णिरंतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधकयंतराभावादो ।

मिच्छाइट्ठिस्स देवाउअं बंधंतस्स चत्तारि मूलपच्चया । एगसमइया जहण्णुक्कस्स-

देवायुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ३१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत, और अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं । अप्रमत्तसंयतकालके संख्यातवें भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ ३२ ॥

'मिथ्यादृष्टि आदि अप्रमत्तसंयत तक बन्धक हैं' इस सूत्रांश द्वारा बन्धाध्वान और गुणस्थानगत स्वामित्वकी प्ररूपणा की गई है । 'अप्रमत्तसंयतकालके संख्यातवें भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है' इससे बन्धविनष्टस्थानकी प्ररूपणा की है । इन तीन अर्थोंकी ही प्ररूपणा करनेसे यह सूत्र देशामर्शक है । इस कारण इससे सूचित अर्थोंको कहते हैं । वह इस प्रकार है— देवायुका पूर्वमें उदय व्युच्छिन्न होता है पश्चात् बन्ध, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टिके अन्तिम समयमें इसके उदयके व्युच्छिन्न होनेपर पश्चात् अप्रमत्तकालके संख्यातवें भाग जाकर बन्धव्युच्छेद पाया जाता है । इसका बन्ध परोदयसे ही होता है, क्योंकि, तीर्थंकर प्रकृतिके समान स्वोदयसे इसके बन्ध होनेका विरोध है । बन्ध इसका निरन्तर है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धसे किये गये अन्तरका यहां अभाव है ।

देवायुको बांधनेवाले मिथ्यादृष्टिके मूल प्रत्यय चार होते हैं । एक समय सम्बन्धी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चया दस अट्ठारस । णाणासमयउक्कस्सपच्चया एक्कवंचास, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणं तत्थाभावादो । सासणसम्मादिट्ठिस्स पच्चया देवाउअं बंधमाणस्स णाणावरणबंधतुल्ला । णवरि णाणासमयउक्कस्सपच्चया छादालं, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । असंजदसम्मादिट्ठिपच्चयपरूवणाए णाणावरणभंगो । णवरि णाणासमयउक्कस्सपच्चया बादालं, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु पच्चया देवाउअस्स णाणावरणतुल्ला ।

सव्वे देवगइसंजुत्तं, अण्णगइबंधेण देवाउअबंधस्स विरोहादो । तिरिक्ख-मणुस्सगइ-मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा सामी । उवरिमा मणुसा चेव, अण्णत्थ महव्वयाणमणुवलंभादो । बंधद्धाणं सुगमं । अप्पमत्तद्धाए संखेज्जदिभागे गदे देवाउअस्स बंधवोच्छेदो । अप्पमत्तद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु देवाउअस्स बंधो वोच्छिज्जदि त्ति केसु वि सुत्तपोत्थएसु उवलब्भइ । तदो एत्थ उवएसं लद्धूण वत्तव्वं । देवाउअस्स बंधो सादिओ अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्यय क्रमशः दश और अठारह होते हैं। नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय इक्यावन होते हैं, क्योंकि, वहां वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका अभाव है। देवायुको बांधनेवाले सासादनसम्यग्दृष्टिके प्रत्यय ज्ञानावरणके बन्धके समान हैं। विशेष इतना है कि नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय छ्यालीस होते हैं, क्योंकि, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका यहां अभाव है। असंयतसम्यग्दृष्टिकी प्रत्ययप्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। विशेषता यह है कि नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय ब्यालीस हैं, क्योंकि, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका यहां अभाव है। उपरिम गुणस्थानोंमें देवायुके प्रत्यय ज्ञानावरणके समान हैं।

सभी जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंके बन्धके साथ देवायुके बन्धका विरोध है। तिर्यंच और मनुष्य गतिके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत स्वामी हैं। उपरिम जीव मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, दूसरी गतियोंमें महाव्रतोंका अभाव है। बन्धाध्वान सुगम है। अप्रमत्तकालके संख्यातवें भागके वीत जानेपर देवायुका बन्धव्युच्छेद होता है। अप्रमत्तकालके संख्यात बहुभागोंके वीत जानेपर देवायुका बन्ध व्युच्छिन्न होता है, ऐसा किन्हीं सूत्रपुस्तकोंमें पाया जाता है। इस कारण यहां उपदेश प्राप्तकर कहना चाहिये। देवायुका बन्ध सादि व अध्रुव है, क्योंकि वह अध्रुवबन्धी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय तेजा-कम्मइयसरीर--समचउरस-संठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणु-पुव्वि-अगुरुवलहुव-उवघाद परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ३३ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा । अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३४ ॥

जेणेदेण सुत्तेण बंधद्धाणं गुणगयसामित्तं बंधविणट्ठट्ठाणं चि य वुत्तं तेणेदं देसामासियं । तदो एदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे--- देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियसरीर-वेउव्विय-अंगोवंगणामाण पुव्वमुदओ वोच्छिज्जदि पच्छा बंधो, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि णट्ठोदयाणमेदासिं चउण्णं पयडीणमपुव्वकरणद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु बंधवोच्छेदुवलंभादो । तेजा-कम्मइय-

---

देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और निर्माण, इन नामकर्म प्रकृतियोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ३३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरण-कालके संख्यात बहुभागोंको बिताकर इनका बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ ३४ ॥

चूंकि इस सूत्रके द्वारा बन्धाध्वान, गुणस्थानगत स्वामित्व और बन्धविनष्टस्थानका ही निर्देश किया गया है अतएव यह देशामर्शक सूत्र है । इस कारण इसके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं--- देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिक-शरीरांगोपांग नामकर्मका पूर्वमें उदय व्युच्छिन्न होता है पश्चात् वन्ध, क्योंकि, असंयतसम्य-ग्दृष्टि गुणस्थानमें इन चारों प्रकृतियोंके उदयके नष्ट होजानेपर पश्चात् अपूर्वकरणकालके संख्यात बहुभागोंको बिताकर इनका बन्धव्युच्छेद पाया जाता है । तैजस व कार्मण शरीर,

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

सरीर-समचउरससंठाण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहाय-गइ-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ सुस्सर-णिमिणणामाणं पुव्वं बंधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, अपुव्वकरणम्हि णट्ठबंधाणं एदासिं पयडीणं सजोगिचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदुवलंभादो । पंचिंदियजादि तस-बादर पज्जत्त-सुभगादेज्जाणं पि एवं[1] चेव। णवरि एदासिमजोगिचरिमसमए उदओ वोच्छिण्णो ।

देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगणामाणं परोदएण सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो, परोदएण बज्झमाणएक्कारसपयडीहि सह पादादो । तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ थिर-सुभ-णिमिणणामाओ सोदएणेव बज्झंति, धुवोदयत्तादो । पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्ताणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव, तत्थ पडिवक्खुदयाभावादो । समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सव्वगुणट्ठाणेसु सोदय-परोदओ,पडिवक्खुदयसंभवादो । सुभगादेज्जाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो । उवघाद-

समचतुरस्रसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुस्वर और निर्माण नामकर्मका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है पश्चात् उदय, क्योंकि, अपूर्वकरणमें बन्धके नष्ट होजानेपर पश्चात् सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें इन प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद पाया जाता है । पंचेन्द्रियजाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, सुभग और आदेय, इनका भी बन्धोदयव्युच्छेद इसी प्रकार है । विशेषता यह है कि इनका उदय अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें व्युच्छिन्न होता है ।

देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगका बन्ध सब गुणस्थानोंमें परोदयसे होता है, क्योंकि, ये प्रकृतियां परोदयसे बंधनेवाली ग्यारह प्रकृतियोंके साथ आती हैं । तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर शुभ और निर्माण, ये नामकर्मप्रकृतियां स्वोदयसे ही बंधती हैं, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी हैं । पंचेन्द्रिय जाति, त्रस, बादर और पर्याप्त प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदयसे होता है । इसके ऊपर स्वोदयसे ही होता है, क्योंकि वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है । समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका सब गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयकी सम्भावना है । सुभग और आदेय प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि एवं असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदयसे होता है । इसके ऊपर स्वोदयसे ही होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है ।

१ प्रतिषु ' एदं ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ बंधो; अपज्जत्तकाले परघादुस्सासाणमुदयाभावे वि, विग्गहगदीए उवघाद-पत्तेयसरीराण[1] उदयाभावे वि, मिच्छाइट्ठिम्हि पत्तेयसरीरस्स साहारणसरीरोदए संते वि बंधुवलंभादो । अवसेसाणं सोदओ चेव, अपज्जत्त-साहारणसरीरोदयाणमभावादो । णवरि परघादुस्सासाणं पमत्तम्मि सोदय-परोदओ बंधो ।

तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिणाणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो । कुदो ? असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु णिरंतरबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो चेव, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जाणं सांतर-णिरंतरो मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु, भोगभूमिएसु णिरंतरबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरं, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पंचिंदियजादि-तस-बादर-

उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीर प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें परघात और उच्छ्वास प्रकृतियोंके उदयका अभाव होनेपर भी उनका बन्ध, विग्रहगतिमें उपघात और प्रत्येकशरीरके उदयका अभाव होनेपर भी उनका बन्ध, तथा मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें प्रत्येकशरीरका साधारणशरीरके उदयके होनेपर भी बन्ध पाया जाता है । शेष गुणस्थानवर्ती जीवोंके उनका बन्ध स्वोदय ही है, क्योंकि, वहां अपर्याप्त और साधारणशरीरके उदयका अभाव है । विशेषता यह है कि परघात और उच्छ्वासका प्रमत्त गुणस्थानमें स्वोदय-परोदय बन्ध है ।

तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात और निर्माण, इनका निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं । देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांग, इनका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर है । इसका कारण यह है कि असंख्यातवर्षायुष्क तिर्यंच और मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है । इससे ऊपर निरन्तर ही बन्ध है, क्योंकि, एक समयसे बन्धका नाश नहीं होता । समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर और आदेय प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर है, क्योंकि, भोगभूमिजोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर ही बन्ध है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । पंचेन्द्रिय-

१ प्रतिषु ' पत्तेयसरीराणि ' इति पाठः ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो बंधो । कुदो ? सणक्कुमारादिदेव-णेरइएसु भोगभूमिएसु च णिरंतरबंधुवलंभादो । सासणादिसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । परघादुस्सासाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो, देव-णेरइएसु भोगभूमीए च णिरंतरबंधुवलंभादो । सासणादिसु णिरंतरो, अपज्जत्तबंधाभावादो । थिर-सुभाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तो त्ति सांतरो । उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खपयडिबंधादो ।

देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियदुगाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्स-कम्मइय-वेउव्वियदुगाभावादो एक्कवंचास-छाएदालीसपच्चया । सम्मामिच्छादिट्ठिम्मि बादालीसपच्चया, वेउव्वियकायजोगाभावादो । असंजदसम्मादिट्ठिम्मि चोदालीसपच्चया, वेउव्वियदुगाभावादो । अवसेसाणं पयडीणं पच्चया सव्वगुणट्ठाणेसु [णाणावरण-] पच्चयतुल्ला, विसेसकारणाभावादो । जदि अत्थि तो चिंतिय वत्तव्वो ।

देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीओ सव्वगुणट्ठाणजीवा देवगइसंजुत्तं बंधंति, अण्णगईहि सह विरोहादो । वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणि मिच्छाइट्ठी देव-णेरइयगइसंजुत्तं ।

जाति, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध है। इसका कारण यह है कि सनत्कुमारादि देवों, नारकियों और भोगभूमिजोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। सासादन आदि उपरिम गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। परघात और उच्छ्वासका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरतर बन्ध है, क्योंकि, देव, नारकी और भोगभूमिजोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। सासादन आदि उपरिम गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, वहां अपर्याप्तके बन्धका अभाव है। स्थिर और शुभ प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्त तक सान्तर है। ऊपर निरन्तर है, क्योंकि, वह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है।

देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और वैक्रियिकद्विकके प्रत्यय मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे इक्यावन और छ्यालीस हैं, क्योंकि, यहां औदारिकमिश्र, कार्मण और वैक्रियिकद्विक प्रत्ययोंका अभाव है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ब्यालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, वहां वैक्रियिक काययोगका अभाव है। असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें चवालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, वहां वैक्रियिकद्विकका अभाव है। शेष प्रकृतियोंके प्रत्यय सर्व गुणस्थानोंमें [ज्ञानावरणके] प्रत्ययोंके समान हैं, क्योंकि, विशेष कारणोंका अभाव है। और यदि हैं तो विचारकर कहना चाहिये।

देवगति और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको सब गुणस्थानोंके जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उनके बन्धका विरोध है। वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगको मिथ्यादृष्टि जीव देवगति व नरकगतिसे संयुक्त बांधते हैं। उपरिम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवरिमगुणट्ठाणेसु देवगइसंजुत्तं बंधंति, सेसगुणट्ठाणाणं णिरयगइबंधेण सह विरोहादो। पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिणणामाओ मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तं बंधंति। समचउरस-संठाण-पसत्थविहायगइ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जणामाओ मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो तिगइसंजुत्तं, णिरयगईए अभावादो। सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजुत्तं, णिरय तिरिक्खगईणमभावादो। उवरिमा देवगइसंजुत्तं, तत्थ सेसगईणं बंधाभावादो।

देवगदि-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगणामाण बंधस्स तिरिक्ख मणुस्सगइ मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदा सामी। उवरिमा मणुसा चेव, अण्णत्थ तेसिमभावादो। पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणणामाणं चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो, दुगइसंजदासंजदा, मणुसगइपमत्तादओ

गुणस्थानोंमें देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, शेष गुणस्थानोंका नरकगतिबन्धके साथ विरोध है। पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर और निर्माण नामकर्मोंको मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि व असंयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंसे संयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं। समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर और आदेय नामकर्मोंको मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, इनके बन्धके साथ उनके नरकगतिके बन्धका अभाव है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उनके नरकगति और तिर्यग्गतिके बन्धका अभाव है। उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उनमें शेष गतियोंके बन्धका अभाव है।

देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांग नामकर्मोंके बन्धके तिर्यंच व मनुष्य गतिवाले मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत स्वामी हैं। उपरिम जीव मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्यत्र प्रमत्तसंयतादिकोंका अभाव है। पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और निर्माण नामकर्मोंके बन्धके चारों गतियोंवाले मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि व असंयतसम्यग्दृष्टि; दो गतियोंवाले संयतासंयत, तथा मनुष्यगतिके

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामी । बंधद्धाणं सुगमं । अपुव्वकरणद्धं सत्तखंडाणि काऊण छखंडाणि उवरि चडिय सत्तम-खंडावसेसे बंधो वोच्छिज्जदि । सुत्ताभावे सत्त चेव खंडाणि कीरंति त्ति कधं णव्वदे ? ण, आइरियपरंपरागदुवदेसादो । तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिणणामाणं मिच्छादिट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो । उवरिमगुणेसु तिविहो, धुवत्ताभावादो । अवसेसाओ पयडीओ सादि-अद्धुवियाओ, पडिवक्खपयडिबंधसंभवादो, पर-घादुस्सासाणमपज्जत्तसंजुत्तं बंधमाणकाले पडिवक्खबंधपयडीए अभावे वि बंधाभावुवलंभादो ।

आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंगणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ३५ ॥

सुगममेदं ।

अप्पमत्तसंजदा अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा । अपुव्व-करणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३६ ॥

....

प्रमत्तसंयतादिक स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । अपूर्वकरणकालके सात खण्ड करके छह खण्ड ऊपर चढ़कर सातवें खण्डके शेष रहनेपर उनका बन्ध व्युच्छिन्न होता है ।

शंका—सूत्रके अभावमें सात ही खण्ड किये जाते हैं यह किस प्रकार ज्ञात होता है ?

समाधान—नहीं, यह आचार्यपरम्परागत उपदेशसे ज्ञात होता है ।

तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात और निर्माण नामकर्मोंका मिथ्यादृष्टि-गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं । उपरिम गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्ध नहीं है । शेष प्रकृतियां सादि व अध्रुव बन्धसे युक्त हैं, क्योंकि, उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव है; परघात और उच्छ्वासको अपर्याप्त संयुक्त बांधनेके कालमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धके अभावमें भी उनका बन्ध नहीं पाया जाता है ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांग नामकर्मोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ३५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तसंयत और अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक व क्षपक बन्धक हैं । अपूर्वकरण-कालके संख्यात बहुभागोंको बिताकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ ३६ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एदं देसामासियसुत्तं, बंधद्धाणं, सामित्त विणट्ठट्ठाणं वि य[1] परूवणादो । तेणेदेण सूइदत्थाणं परूवणा कीरदे— एदासिमुदओ पुव्वं वोच्छिज्जदि पच्छा बंधो, पमत्तसंजदम्मि णट्ठोदयाणमेदासिमपुव्वकरणम्मि बंधवोच्छेदुवलंभादो । परोदएणेव एदाओ बज्झंति, आहार-दुगोदयविरहिदअप्पमत्तेसु चेव बंधोवलंभादो । णिरंतरं बज्झंति, पडिवक्खपयडीण बंधेण विणा बंधभावादो[2] । पच्चयपरूवणाए मूलुत्तरणाणेगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया णाणावरणस्सेव वत्तव्वा । [जदि] चदुसंजलण-णवणोकसाय-जोगा बावीस चेव आहारदुगस्स पच्चया तो सव्वेसु अप्पमत्तापुव्वकरणेसु आहारदुगबंधेण होदव्वं । ण चेवं, तहाणुवलंभादो । तदो अण्णेहि वि पच्चएहि होदव्वमिदि ? ण एस दोसो, इच्छिज्जमाणत्तादो । के ते अण्णे पच्चया जेहि आहार-दुगस्स बंधो होदि त्ति वुत्ते वुच्चदे— तित्थयराइरिय-बहुसुद-पवयणाणुरागो आहारदुग-पच्चओ । अप्पमादो वि, सप्पमादेसु आहारदुगबंधस्साणुवलंभादो । अपुव्वस्सुवरिमसत्तमभागे[3]

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि वह बन्धाध्वान, स्वामित्व और बन्धविनष्टस्थानका ही प्ररूपण करता है। इसी कारण इस सूत्रसे सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं— इन दोनों प्रकृतियोंका उदय पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, पश्चात् बन्ध; क्योंकि प्रमत्तसंयतमें इनके उदयके नष्ट होजानेपर अपूर्वकरणमें बन्धव्युच्छेद पाया जाता है। ये दोनों प्रकृतियां परोदयसे बंधती हैं, क्योंकि, आहारद्विकके उदयसे रहित अप्रमत्तसंयतोंमें अर्थात् अप्रमत्त और अपूर्वकरण गुणस्थानोंमें ही इनका बन्ध पाया जाता है । उक्त दोनों प्रकृतियोंका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धके विना इनके बन्धका सद्भाव पाया जाता है। प्रत्ययप्ररूपणामें मूल व उत्तर नाना एवं एक समय सम्बन्धी जघन्य-उत्कृष्ट प्रत्यय ज्ञानावरणके समान ही कहना चाहिये ।

शंका— चार संज्वलन, नौ नोकषाय और नौ योग, इस प्रकार यदि बाईस ही आहारकद्विकके प्रत्यय हैं तो सर्व अप्रमत्त और अपूर्वकरण संयतोंमें आहारद्विकका बन्ध होना चाहिये। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, वैसा पाया नहीं जाता। अत एव अन्य भी प्रत्यय होना चाहिये ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अन्य प्रत्ययोंका मानना अभीष्ट ही है।

शंका— वे अन्य प्रत्यय कौनसे हैं जिनके द्वारा आहारद्विकका बन्ध होता है ?

समाधान— इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं— तीर्थंकर, आचार्य, बहुश्रुत अर्थात् उपाध्याय और प्रवचन, इनमें अनुराग करना आहारद्विकका कारण है । इसके अतिरिक्त प्रमादका अभाव भी आहारद्विकका कारण है, क्योंकि, प्रमाद सहित जीवोंमें आहारद्विकका बन्ध पाया नहीं जाता।

१ आप्रतौ ' वि य य ' इति पाठः । २ आ-काप्रत्योः ' बंधाभावादो ' इति पाठः ।
३ प्रतिषु ' अपुव्वासुवरिम ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किण्ण बंधो ? ण, तत्थ तित्थयराइरिय-बहुसुद-पवयणविसयरागजणिदसंसकाराभावादो। देवगइसंजुत्तो आहारदुगबंधो, अण्णगईहि सह तब्बंधविरोहादो। मणुसा चेव सामी, अण्णत्थ तित्थयराइरिय-बहुसुदरागस्स संजमसहियस्स अणुवलंभादो। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं, सुत्तणिद्दिट्ठत्तादो। सादिओ अद्धुवो च बंधो, आहारदुगपच्चयस्स सादि-सपज्जवसाणत्त-दंसणादो।

तित्थयरणामस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ३७ ॥

सुगमं।

असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३८ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, सामित्त-बंधद्धाण-बंधविणट्ठट्ठाणाणं चेव परूवणादो। तेणेदेण

शंका—अपूर्वकरणके उपरिम सप्तम भागमें इनका बन्ध क्यों नहीं होता ?

समाधान—नहीं होता, क्योंकि वहां तीर्थंकर, आचार्य, बहुश्रुत और प्रवचन-विषयक रागसे उत्पन्न हुए संस्कारोंका अभाव है।

आहारद्विकका बन्ध देवगतिसे संयुक्त होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उसके बन्ध होनेका विरोध है। इनके बन्धके मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्यत्र तीर्थंकर, आचार्य और बहुश्रुत विषयक राग संयम सहित पाया नहीं जाता। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं, क्योंकि, ये सूत्रमें ही निर्दिष्ट हैं। दोनों प्रकृतियोंका सादिक और अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, आहारद्विकका प्रत्यय सादि और सपर्यवसान देखा जाता है।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ३७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक और क्षपक तक बंधक हैं। अपूर्वकरणकालके संख्यात बहुभागोंको विताकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ ३८ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि यह स्वामित्व, बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थानका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूइदत्थवण्णणं कस्सामो— तित्थयरस्स पुव्वं बंधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, अपुव्वकरण-छसत्तमभागचरिमसमए णट्ठबंधस्स तित्थयरस्स सजोगिपढमसमए उदयस्सादिं कादूण अजोगिचरिमसमए उदयवोच्छेदुवलंभादो। परोदएणेव बंधो, तित्थयरकम्मुदयसंभवट्ठाणेसु सजोगि-अजोगिजिणेसु तित्थयरबंधाणुवलंभादो। णिरंतरो बंधो, सगबंधकारणे संते[1] अद्धाक्खएण बंधुवरमाभावादो। असंजदसम्मादिट्ठी दुगइसंजुत्तं बंधंति, तित्थयरबंधस्स णिरय-तिरिक्खगइ-बंधेहि सह विरोहादो। उवरिमा देवगइसंजुत्तं, मणुसगइट्ठिदजीवाणं तित्थयरबंधस्स देवगइं मोत्तूण अण्णगईहि सह विरोधादो। तिगदिअसंजदसम्मादिट्ठी सामी, तिरिक्खगईए[2] तित्थयरस्स बंधाभावादो। मा होदु तत्थ तित्थयरकम्मबंधस्स पारंभो, जिणाणमभावादो। किंतु पुव्वं बद्धतिरिक्खाउआणं पच्छा पडिवण्णसम्मत्तादिगुणेहि तित्थयरकम्मं बंधमाणाणं पुणो तिरिक्खे-सुप्पण्णाणं तित्थयरस्स बंधस्स सामित्तं लब्भदि त्ति वुत्ते— ण, बद्धतिरिक्ख-मणुस्साउआणं जीवाणं बद्धणिरय-देवाउआणं जीवाणं व तित्थयरकम्मस्स बंधाभावादो। तं पि

ही प्ररूपण करता है। इसी कारणसे इसके द्वारा सूचित अर्थोंका वर्णन करते हैं— तीर्थंकर नामकर्मका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, पश्चात् उदय, क्योंकि अपूर्वकरणके छठे सप्तम भागके अन्तिम समयमें बन्धके नष्ट होजानेपर तीर्थंकर नामकर्मका सयोगकेवलीके प्रथम समयमें उदयका प्रारंभ करके अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। इसका बन्ध परोदयसे ही होता है, क्योंकि, जहां तीर्थंकरकर्मका उदय सम्भव है उन सयोगकेवली और अयोगकेवली जिनोंमें तीर्थंकरका बन्ध पाया नहीं जाता। बन्ध इसका निरन्तर है, क्योंकि, अपने कारणके होनेपर कालक्षयसे बन्धका विश्राम नहीं होता। असंयतसम्यग्दृष्टि इसे दो गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धका नरक व तिर्यच गतियोंके बन्धके साथ विरोध है। उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, मनुष्यगतिमें स्थित जीवोंके तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धका देवगतिको छोड़कर अन्य गतियोंके साथ विरोध है। तीन गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि जीव इसके बन्धके स्वामी हैं, क्योंकि, तिर्यग्गतिके साथ तीर्थंकरके बन्धका अभाव है।

शंका—तिर्यग्गतिमें तीर्थंकरकर्मके बन्धका प्रारम्भ भले ही न हो, क्योंकि, वहां जिनोंका अभाव है। किन्तु जिन्होंने पूर्वमें तिर्यगायुको बांध लिया है उनके पीछे सम्य-क्त्वादि गुणोंके प्राप्त होजानेसे तीर्थंकरकर्मको बांधकर पुनः तिर्यचोंमें उत्पन्न होनेपर तीर्थंकरके बन्धका स्वामिपना पाया जाता है।

समाधान - इसके उत्तरमें कहते हैं कि ऐसा होना सम्भव नहीं है, क्योंकि, जिन्होंने पूर्वमें तिर्यच व मनुष्य आयुका बन्ध करलिया है उन जीवोंके नरक व देव आयुओंके बन्धसे संयुक्त जीवोंके समान तीर्थंकरकर्मके बन्धका अभाव है।

शंका—वह भी कैसे सम्भव है?

१ प्रतिषु 'सुत्ते' इति पाठः। २ प्रतिषु '-गईहि' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुदो ? पारद्धतित्थयरबंधभवादो[1] तदियभवे तित्थयरसंतकम्मियजीवाणं मोक्खगमणणियमादो[2] । ण च तिरिक्ख-मणुस्सेसुप्पण्णमणुससम्माइट्ठीणं देवेसु अणुप्पज्जिय देव-णेरइएसुप्पण्णाणं व मणुस्सेसुप्पत्ती अत्थि जेण तिरिक्ख-मणुस्सेसुप्पण्णमणुससम्माइट्ठीणं तदियभवे णिव्वुई होज्ज । तम्हा[3] तिगइअसंजदसम्माइट्ठिणो चेव सामिया त्ति सिद्धं । सादिओ अद्धुवो च बंधो, बंधकारणाणं सादि-सांतत्तदंसणादो । तित्थयरकम्मस्स पच्चयपरूवणट्ठमुत्तर-सुत्तं भणदि —

समाधान — क्योंकि, जिस भवमें तीर्थंकर प्रकृतिका बंध प्रारम्भ किया गया है उससे तृतीय भवमें तीर्थंकर प्रकृतिके सत्वयुक्त जीवोंके मोक्ष जानेका नियम है । परन्तु तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न हुए मनुष्य सम्यग्दृष्टियोंकी देवोंमें उत्पन्न न होकर देव नारकियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके समान मनुष्योंमें उत्पत्ति होती नहीं जिससे कि तिर्यंच व मनुष्योंमें उत्पन्न हुए मनुष्य सम्यग्दृष्टियोंकी तृतीय भवमें मुक्ति हो सके । इस कारण तीन गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि ही तीर्थंकरप्रकृतिके बन्धके स्वामी हैं, यह बात सिद्ध होती है ।

विशेषार्थ — यहां शंकाकारका कहना है कि जिस जीवने पूर्वमें तिर्यगायुको बांध लिया है वह यदि पश्चात् सम्यक्त्वादि गुणोंको प्राप्त कर तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध प्रारम्भ करे और तत्पश्चात् मरणको प्राप्त होकर तिर्यंचोंमें उत्पन्न हो तो वह तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धका स्वामी क्यों नहीं हो सकता? इसके उत्तरमें आचार्य कहते हैं कि यह सम्भव नहीं है, कारण कि तीर्थंकर प्रकृतिको बांधनेके भवसे तृतीय भवमें मोक्ष जानेका नियम है। परन्तु यह बात उक्त जीवमें बन नहीं सकती, क्योंकि, तिर्यगायुको बांधनेवाला जीव द्वितीय भवमें तिर्यंच होकर सम्यग्दृष्टि होनेसे तृतीय भवमें देव ही होगा, मनुष्य नहीं । अत एव कोई भी तिर्यंच तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धका स्वामी नहीं होसकता ।

तीर्थंकर प्रकृतिका सादिक व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, उसके बन्धकारणोंके सादि-सान्तता देखी जाती है। तीर्थंकर कर्मके प्रत्ययोंके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

---

१ अप्रतौ '-तित्थयरकम्मस्स बंधाभावादो', आ-काप्रत्योः '-तित्थयरबंधाभावादो' इति पाठः ।

२ एतच्च तीर्थकरनामकर्म मनुष्यगतावेव वर्तमानः पुरुषः स्त्री नपुंसको वा तीर्थकरभवात् पृष्ठतस्तृतीयभवे प्राप्य बद्धुमारभते । प्र. सा. १०, ३१३-१९.

३ प्रतिषु 'तं जहा' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कदिहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोदं[1] कम्मं बंधंति ? ॥ ३९ ॥

कधं तित्थयरस्स णामकम्मावयवस्स गोदसण्णा ? ण, उच्चागोदबंधाविणाभावित्तणेण तित्थयरस्स वि गोदत्तसिद्धीदो। सेसकम्माणं पच्चए अभणिदूण तित्थयरणामकम्मस्सेव किमिदि पच्चयपरूवणा कीरदे ? सोलसकम्माणि मिच्छत्तपच्चयाणि, मिच्छत्तोदएण विणा एदेसिं बंधाभावादो। पणुवीसकम्माणि अणंताणुबंधिपच्चयाणि, तदुदएण विणा तेसिं बंधाणुवलंभादो। दस कम्माणि असंजमपच्चयाणि, अपच्चक्खाणावरणोदएण विणा तेसिं बंधाभावादो। पच्चक्खाणावरणचदुक्कं सगसामण्णोदयपच्चयं, तेण विणा तब्बंधाणुवलंभादो[2]। छक्कम्माणि पमादपच्चयाणि, पमादेण विणा तेसिं बंधाणुवलंभादो। देवाउअं मज्झिमविसोहिपच्चइयं, अप्पमत्तद्धाए संखेज्जदिभागे गदे अइविसोहिट्ठाणमपावेदूण मज्झिमविसोहिट्ठाणे चेव देवाउअस्स

कितने कारणोंसे जीव तीर्थंकर नाम-गोत्रकर्मको बांधते हैं ? ॥ ३९ ॥

शंका—नामकर्मके अवयवभूत तीर्थंकर कर्मकी गोत्र संज्ञा कैसे सम्भव है ?

समाधान—यह शंका ठीक नहीं, क्योंकि, उच्च गोत्रके बन्धका अविनाभावी होनेसे तीर्थंकरकर्मको भी गोत्रत्व सिद्ध है।

शंका—शेष कर्मोंके प्रत्ययोंको न कहकर केवल तीर्थंकर नामकर्मकी ही प्रत्यय-प्ररूपणा क्यों की जाती है ?

समाधान—सोलह कर्म मिथ्यात्वनिमित्तक हैं, क्योंकि, मिथ्यात्वके उदयके विना इनके बन्धका अभाव है। पच्चीस कर्म अनन्तानुबन्धिनिमित्तक हैं, क्योंकि, अनन्तानुबन्धी कषायके उदय विना उनका बन्ध नहीं पाया जाता। दश कर्म असंयमनिमित्तक हैं, क्योंकि, अप्रत्याख्यानावरणके उदय विना उनका बन्ध नहीं होता। प्रत्याख्यानावरणचतुष्क अपने ही सामान्य उदयनिमित्तक है, क्योंकि, उसके विना प्रत्याख्यानावरणचतुष्कका बन्ध पाया नहीं जाता। छह कर्म प्रमादनिमित्तक हैं, क्योंकि, प्रमादके विना उनका बन्ध नहीं पाया जाता। देवायु मध्यम विशुद्धिनिमित्तक है, क्योंकि, अप्रमत्तकालका संख्यातवां भाग वीत जानेपर अतिशय विशुद्धिके स्थानको न पाकर मध्यम विशुद्धि-

१ **तित्थयरणामगोयकम्म**— तीर्थकरत्वनिबन्धनं नाम तीर्थकरनाम, नच गोत्रं च कर्मविशेष एवेत्येकत्वद्भावात् तीर्थकरनामगोत्रम्। अ. रा. पृ. २३१३.

२ अ-आप्रत्योः 'तब्बंद्धाणाणुवलंभादो', काप्रतौ 'तदद्धाणाणुवलंभादो' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधवोच्छेददंसणादो। आहारदुगं विसिट्ठरागसमण्णिदसंजमपच्चइयं, तेण विणा तब्बंधाणुवलंभादो। परभवणिबंधसत्तावीसकम्माणि हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-पुरिसवेद-चदुसंजलणाणि च कसायविसेसपच्चइयाणि, अण्णहा एदेसिं भिण्णट्ठाणेसु बंधवोच्छेदाणुववत्तीदो। सोलसकसायाणि सामण्णपच्चइयाणि, अणुमेत्तकसाए वि संते तेसिं बंधुवलंभादो। सादावेदणीयं जोगपच्चइयं, सुहुमजोगे वि तस्स बंधुवलंभादो। तेण सव्वकम्माणं पच्चया जुत्तिबलेण णव्वंति त्ति ण भणिदा। एदस्स पुण तित्थयरणामकम्मस्स बंधपच्चओ ण णव्वदे— णेदं मिच्छत्तपच्चइयं, तत्थ बंधाणुवलंभादो। णासंजमपच्चइयं, संजदेसु वि बंधदंसणादो। ण कसायसामण्णपच्चइयं, कसाए संते वि बंधवोच्छेददंसणादो बंधपारंभाणुवलंभादो वा। ण कसायमंददा कारणं, तिव्वकसाएसु णेरइएसु वि बंधदंसणादो। ण तिव्वकसाओ कारणं, मंदकसाएसु सव्वट्ठदेवेसु अपुव्वकरणेसु च बंधदंसणादो। ण सम्मत्तं तब्बंधकारणं, सम्मादिट्ठिस्स[1] वि तित्थयरस्स बंधाणुवलंभादो। ण केवलं दंसणविसुज्झदा कारणं, खीणदंसणमोहाणं पि केसिं वि बंधाणु-

स्थानमें ही देवायुका बन्धव्युच्छेद देखा जाता है। आहारद्विक विशिष्ट रागसे संयुक्त संयमके निमित्तसे बंधता है, क्योंकि, ऐसे संयमके विना उसका बन्ध नहीं पाया जाता। परभवनिबन्धक सत्ताईस कर्म एवं हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद और चार संज्वलन-कषाय, ये सब कर्म कषायविशेषके निमित्तसे बंधनेवाले हैं, क्योंकि, इसके विना उनके भिन्न स्थानोंमें बन्धव्युच्छेदकी उपपत्ति नहीं बनती। सोलह कर्म कषायसामान्यके निमित्तसे बंधनेवाले हैं, क्योंकि, अणुमात्र कषायके भी होनेपर उनका बन्ध पाया जाता है। सातावेदनीय योगनिमित्तक है, क्योंकि, सूक्ष्म योगमें भी उसका बन्ध पाया जाता है। इस प्रकार चूंकि सब कर्मोंके प्रत्यय युक्तिबलसे जाने जाते हैं, अतः उनका यहां कथन नहीं किया गया। किन्तु इस तीर्थंकर नामकर्मका बन्धप्रत्यय नहीं जाना जाता— कारण कि यह मिथ्यात्वनिमित्तक तो हो नहीं सकता, क्योंकि, मिथ्यात्वके होनेपर उसका बन्ध नहीं पाया जाता। असंयमनिमित्तक भी नहीं है, क्योंकि, संयतोंमें भी उसका बन्ध देखा जाता है। कषायसामान्यनिमित्तक भी वह नहीं है, क्योंकि, कषायके होनेपर भी उसका बन्धव्युच्छेद देखा जाता है, अथवा कषायके होनेपर भी उसके बन्धका प्रारम्भ नहीं होता। कषायमन्दतानिमित्तक भी इसका बन्ध नहीं हो सकता, क्योंकि, तीव्रकषायवाले नारकियोंके भी उसका बन्ध देखा जाता है। तीव्र कषाय भी इसके बन्धका कारण नहीं है, क्योंकि, मन्दकषायवाले सर्वार्थसिद्धिविमानवासी देवों और अपूर्वकरणगुणस्थानवर्ती जीवोंमें भी उसका बन्ध देखा जाता है। सम्यक्त्व भी उसके बन्धका कारण नहीं है, क्योंकि, सम्यग्दृष्टिके भी तीर्थंकर कर्मका बन्ध नहीं पाया जाता। केवल दर्शनविशुद्धता भी उसका कारण नहीं है, क्योंकि, दर्शनमोहका क्षय करचुकनेवाले भी किन्हीं जीवोंके उसका बन्ध

१ अ-आप्रत्योः 'सम्मादिट्ठिस्सु' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वलंभादो । तदो एदस्स बंधकारणं वत्तव्वमेव । अधवा, असंजद-पमत्त-सजोगिसण्णाओ व्व एदं सुत्तमंतदीवयं सव्वकम्माणं पच्चयपरूवणाए त्ति एदं सुत्तमागदं । कदिहि कारणेहि— किमेक्केण किं दोहि किं तिहिमेवं पुच्छा कायव्वा । एवंविहसंसयम्मि ट्ठिदाणं णिच्छय-जणणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

तत्थ इमेहि सोलसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोदकम्मं बंधंति ॥ ४० ॥

तत्थ मणुस्सगदीए चेव तित्थयरकम्मस्स बंधपारंभो होदि, ण अण्णत्थेत्ति जाणावणट्ठं तत्थेत्ति वुत्तं । अण्णगदीसु किण्ण पारंभो होदि त्ति वुत्ते – ण होदि, केवलणाणोवलक्खियजीव-दव्वसहकारिकारणस्स तित्थयरणामकम्मबंधपारंभस्स तेण विणा समुप्पत्तिविरोहादो । अधवा, तत्थ तित्थयरणामकम्मबंधकारणाणि भणामि त्ति भणिदं होदि । सोलसेत्ति कारणाणं संखा-णिद्देसो कदो । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे तित्थयरकम्मबंधकारणाणि सोलस चेव होंति । दव्वट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे एक्कं पि होदि, दो वि होंति । तदो एत्थ सोलस चेव

नहीं पाया जाता । अतएव इसके बन्धका कारण कहना ही चाहिये । अथवा असंयत, प्रमत्त और सयोगी संज्ञाओंके समान यह सूत्र सब कर्मोंकी प्रत्ययप्ररूपणामें अन्तर्दीपक है, इसलिये यह सूत्र आया है । कितने कारणोंसे — क्या एकसे, क्या दोसे, क्या तीनसे इस प्रकार यहां प्रश्न करना चाहिये । इस प्रकार संशयमें स्थित जीवोंके निश्चयोत्पादनार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

वहां इन सोलह कारणोंसे जीव तीर्थंकर नाम-गोत्रकर्मको बांधते हैं ॥ ४० ॥

मनुष्यगतिमें ही तीर्थंकरकर्मके बन्धका प्रारम्भ होता है, अन्यत्र नहीं, इस बातके ज्ञापनार्थ सूत्रमें 'वहां' ऐसा कहा गया है ।

शंका—मनुष्यगतिके सिवाय अन्य गतियोंमें उसके बन्धका प्रारम्भ क्यों नहीं होता ?

समाधान—इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि अन्य गतियोंमें उसके बन्धका प्रारम्भ नहीं होता, कारण कि तीर्थंकर नामकर्मके बन्धके प्रारम्भका सहकारी कारण केवलज्ञानसे उपलक्षित जीव द्रव्य है, अतएव, मनुष्य गतिके विना उसके बन्ध प्रारम्भकी उत्पत्तिका विरोध है । अथवा, उनमें तीर्थंकरनामकर्मके बन्धके कारणोंको कहते हैं, यह अभिप्राय है । 'सोलह' इस प्रकार कारणोंकी संख्याका निर्देश किया गया है । पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर तीर्थंकर नामकर्मके बन्धके कारण सोलह ही होते हैं । किन्तु द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर एक भी कारण होता है, दो भी होते हैं । इसलिये यहां सोलह ही कारण होते हैं ऐसा अवधारण नहीं करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कारणाणि त्ति णावहारणं कायव्वं । एदस्स णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि —

दंसणविसुज्झदाए विणयसंपण्णदाए सीलव्वदेसु णिरदिचारदाए आवासएसु अपरिहीणदाए खण-लवपडिबुज्झणदाए लद्धिसंवेगसंपण्णदाए जधाथामे[1] तधा तवे साहूणं[2] पासुअपरिचागदाए साहूणं समाहिसंधारणाए साहूणं वेज्जावच्चजोगजुत्तदाए अरहंतभत्तीए बहुसुदभत्तीए पवयणभत्तीए पवयणवच्छलदाए पवयणप्पभावणदाए अभिक्खणं अभिक्खणं णाणोवजोगजुत्तदाए इच्चेदेहि सोलसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोदं कम्मं बंधंति[3] ॥ ४१ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा— दंसणं सम्मद्दंसणं, तस्स विसुज्झदा दंसणविसुज्झदा, तीए दंसणविसुज्झदाए जीवा तित्थयरणामगोदं कम्मं बंधंति । तिमूढावोढ-अट्ठ-

---

चाहिये । इसके निर्णयार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं ।

दर्शनविशुद्धता, विनयसम्पन्नता, शील-व्रतोंमें निरतिचारता, छह आवश्यकोंमें अपरिहीनता, क्षण-लवप्रतिबोधनता, लब्धि-संवेगसम्पन्नता, यथाशक्ति तप, साधुओंको प्रासुकपरित्यागता, साधुओंकी समाधिसंधारणा, साधुओंकी वैयावृत्ययोगयुक्तता, अरहंतभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, प्रवचनवत्सलता, प्रवचनप्रभावनता और अभीक्ष्ण-अभीक्ष्णज्ञानोपयोगयुक्तता, इन सोलह कारणोंसे जीव तीर्थंकर नाम-गोत्रकर्मको बांधते हैं ॥ ४१ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है— 'दर्शन' का अर्थ सम्यग्दर्शन है । उसकी विशुद्धताका नाम दर्शनविशुद्धता है । उस दर्शनविशुद्धतासे जीव तीर्थंकर नाम-गोत्रकर्मको बांधते हैं । तीन मूढ़ताओंसे रहित और आठ मलोंसे व्यतिरिक्त जो

---

१ अप्रतौ 'यथापाये', आप्रतौ 'यथामे', काप्रतौ 'यथाथामे' इति पाठः ।

२ प्रतिषु 'साहूणं' इति पाठः ।

३ दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता शीलव्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोग-संवेगौ शक्तितस्त्याग-तपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्य बहुश्रुत-प्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य । त. सू. ६, २४. अरिहंत सिद्ध पवयण-गुरु-थेर-बहुस्सुए तवस्सी य । वच्छल्लया य एसिं अभिक्खनाणोवओगो य ॥ दंसणविणए आवस्सए य सीलव्वए णिरइयारो । खण-लव-तवच्चियाए वेयावच्चे समाही य ॥ अपुव्वनाणगहणे सुयभत्ती पवयणे पभावणया । एएहि कारणेहि तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥ प्र, सा. १०,३१०-३१२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मलवदिरित्तसम्मद्दंसणभावो दंसणविसुज्झदा णाम । कधं ताए एक्काए चेव तित्थयरणामकम्मस्स बंधो, सव्वसम्माइट्ठीणं तित्थयरणामकम्मबंधपसंगादो त्ति ? वुच्चदे— ण तिमूढावोढट्ठमलवदिरेगेहि चेव दंसणविसुज्झदा सुद्धणयाहिप्पाएण होदि, किंतु पुव्विल्लगुणेहि सरूवं लद्धूण[1] ट्ठिदसम्मद्दंसणस्स साहूणं पासुअपरिच्चागे साहूणं समाहिसंधारणे साहूणं वेज्जावच्चजोगे अरहंतभत्तीए बहुसुदभत्तीए पवयणभत्तीए पवयणवच्छलदाए पवयणे पहावणे अभिक्खणं णाणोवजोगजुत्तत्तणे[2] पयट्टावणं विसुज्झदा णाम । तीए दंसणविसुज्झदाए एक्काए वि तित्थयरकम्मं बंधंति ।

अधवा, विणयसंपण्णदाए चेव तित्थयरणामकम्मं बंधंति । तं जहा— विणओ तिविहो णाण-दंसण-चरित्तविणओ त्ति । तत्थ णाणविणओ णाम अभिक्खणभिक्खणं णाणोवजोगजुत्तदा बहुसुदभत्ती पवयणभत्ती च । दंसणविणओ णाम पवयणेसुवइट्ठसव्वभावसद्दहणं तिमूढादो ओसरणमट्ठमलच्छद्दणमरहंत-सिद्धभत्ती खण-लवपडिबुज्झणदा[3] लद्धिसंवेगसंपण्णदा

सम्यग्दर्शन भाव होता है उसे दर्शनविशुद्धता कहते हैं ।

शंका—केवल उस एक दर्शनविशुद्धतासे ही तीर्थंकर नामकर्मका बन्ध कैसे सम्भव है, क्योंकि, ऐसा माननेसे सब सम्यग्दृष्टियोंके तीर्थंकर नामकर्मके बन्धका प्रसंग आवेगा ?

समाधान—इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि शुद्ध नयके अभिप्रायसे तीन मूढ़ताओं और आठ मलोंसे रहित होनेपर ही दर्शनविशुद्धता नहीं होती, किन्तु पूर्वोक्त गुणोंसे अपने निजस्वरूपको प्राप्तकर स्थित सम्यग्दर्शनकी साधुओंको प्रासुकपरित्याग, साधुओंकी समाधिसंधारणा, साधुओंकी वैयावृत्तिका संयोग, अरहंतभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, प्रवचनवत्सलता, प्रवचनप्रभावना और अभीक्ष्णज्ञानोपयोगयुक्ततामें प्रवर्तनेका नाम विशुद्धता है । उस एक ही दर्शनविशुद्धतासे जीव तीर्थंकर कर्मको बांधते हैं ।

अथवा, विनयसम्पन्नतासे ही तीर्थंकर नामकर्मको बांधते हैं । वह इस प्रकारसे—ज्ञानविनय, दर्शनविनय और चारित्रविनयके भेदसे विनय तीन प्रकार है । उनमें बारंबार ज्ञानोपयोगसे युक्त रहनेके साथ बहुश्रुतभक्ति और प्रवचनभक्तिका नाम ज्ञानविनय है । आगमोपदिष्ट सर्व पदार्थोंके श्रद्धानके साथ तीन मूढ़ताओंसे रहित होना, आठ मलोंको छोड़ना, अरहंतभक्ति, सिद्धभक्ति, क्षण लवप्रतिबुद्धता और लब्धिसंवेगसम्पन्नताको दर्शन-

१ प्रतिषु ' सरूवलद्धूण ', मप्रतौ ' सरूवलद्धूण ' इति पाठः ।

२ आ-काप्रत्योः ' जुत्तसणेण ' इति पाठः ।

३ अ-काप्रत्योः ' पडिबज्झणदा ', आप्रतौ ' परिबज्झणदा ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च[1]। चरित्तविणओ णाम सीलव्वदेसु णिरदिचारदा आवासएसु अपरिहीणदा जहाथामे तहा तवो च। साहूणं पासुगपरिच्चाओ तेसिं समाहिसंधारणं तेसिं वेज्जावच्चजोगजुत्तदा पवयणवच्छल्लदा च णाण-दंसण-चरित्ताणं पि विणओ, तिरयणसमूहस्स[2] साहु-पवयण त्ति ववएसादो। तदो विणयसंपण्णदा एक्का वि होदूण सोलसावयवा। तेणेदीए विणयसंपण्णदाए एक्काए वि तित्थयरणामकम्मं मणुआ बंधंति। देव-णेरइयाण कधमेसा संभवदि ? ण, तत्थ वि णाण-दंसणविणयाणं संभवदंसणादो। कधं तिसमूहकज्जं दोहि चेव सिज्झदे ? ण एस दोसो, मट्टिया-जल-सूरणकंदेहिंतो समुप्पज्जमाणसूरणकंदंकुरस्स तक्कंद-दुद्दिणेहिंतो चेव समुप्पज्जमाणस्सुवलंभादो, दोहि तुरंगेहि कड्ढिज्जमाणसंदणस्स[3] बलवंतेणेक्केणेव देवेण विज्जाहरेण मणुएण वा कड्ढिज्जमाण-

---

विनय कहते हैं। शील-व्रतोंमें निरतिचारता, आवश्यकोंमें अपरिहीनता अर्थात् परिपूर्णता, और शक्त्यनुसार तपका नाम चारित्रविनय है। साधुओंके लिये प्रासुक आहारादिकका दान, उनकी समाधिका धारण करना, उनकी वैयावृत्तिमें उपयोग लगाना, और प्रवचन-वत्सलता, यह ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र तीनोंकी ही विनय है, क्योंकि, रत्नत्रय समूहको साधु व प्रवचन संज्ञा प्राप्त है। इसी कारण चूंकि विनयसम्पन्नता एक भी होकर सोलह अवयवोंसे सहित है, अतः उस एक ही विनयसम्पन्नतासे मनुष्य तीर्थंकर-नामकर्मको बांधते हैं।

शंका— यह विनयसम्पन्नता देव-नारकियोंके कैसे सम्भव है ?

समाधान—उक्त शंका ठीक नहीं, क्योंकि, देव-नारकियोंमें भी ज्ञानविनय और दर्शनविनयकी सम्भावना देखी जाती है।

शंका—तीनों विनयोंके समूहसे सिद्ध होनेवाला कार्य दोसे ही कैसे सिद्ध हो सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मट्टी, जल और सूरणकंदसे उत्पन्न होनेवाला सूरणकंदका अंकुर उसके कन्द और दुर्दिन अर्थात् वर्षासे ही उत्पन्न होता हुआ पाया जाता है, अथवा दो घोड़ोंसे खींचा जानेवाला रथ बलवान् एक ही देव, विद्याधर या मनुष्यसे

---

१ अरहंत-सिद्ध-चेइय सुदे य धम्मे य साधुवग्गे य। आयरिय उवज्झाए सुपवयणे दंसणे चावि ॥ भत्ती पूया वण्णजणणं च णासणमवण्णवादस्स। आसादणपरिहारो दंसणविणओ समासेण ॥ म. आ. ४७–४८,

२ प्रतिषु ' तिरियण ' इति पाठः।

३ अप्रतौ ' कड्ढिज्जमाणसेदंसणस्स ', आप्रतौ ' कंदिज्जमाणस्सेदंसणस्स ', काप्रतौ ' कड्ढिज्जमाणस्से-दंसणस्स ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्सुवलंभादो वा। जदि दोहि चेव तित्थयरणामकम्मं बज्झदि तो चरित्तविणओ किमिदि तक्कारणमिदि वुच्चदे ? ण एस दोसो, णाण-दंसणविणयकज्जविरोहिचरणविणवो ण होदि त्ति पदुप्पायणफलत्तादो।

अधवा, सीलव्वदेसु णिरदिचारदाए चेव तित्थयरणामकम्मं बज्झइ। तं जहा— हिंसालिय-चोज्जब्बंभ-परिग्गहेहिंतो विरदी वदं णाम। वदपरिरक्खणं[1] सीलं णाम। सुरावाण-मांसभक्खण-कोह-माण-माया-लोह-हस्स-रइ-सोग-भय-दुगुंछित्थि-पुरिस-णवुंसयवेयापरिचागो अदिचारो; एदेसिं विणासो णिरदिचारो संपुण्णदा, तस्स भावो णिरदिचारदा[2]। तीए[3] सीलव्वदेसु णिरदिचारदाए तित्थयरकम्मस्स बंधो होदि। कधमेत्थ सेसपण्णरसण्णं संभवो ? ण, सम्मद्दंसणेण खण-लवपडिबुज्झण-लद्धिसंवेगसंपण्णत्त-साहुसमाहिसंधा-

---

खींचा गया पाया जाता है।

शंका—यदि दो ही विनयोंसे तीर्थंकर नामकर्म बांधा जा सकता है, तो फिर चारित्रविनयको उसका कारण क्यों कहा जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, ज्ञान-दर्शनविनयके कार्यका विरोधी चारित्रविनय नहीं होता, इस बातको सूचित करनेके लिये चारित्रविनयको भी कारण मान लिया गया है।

अथवा, शील-व्रतोंमें निरतिचारतासे ही तीर्थंकर नामकर्म बांधा जाता है। वह इस प्रकारसे—हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्म और परिग्रहसे विरत होनेका नाम व्रत है। व्रतोंकी रक्षाको शील कहते हैं। सुरापान, मांसभक्षण, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद एवं नपुंसकवेद, इनके त्याग न करनेका नाम अतिचार और इनके विनाशका नाम निरतिचार या सम्पूर्णता है, इसके भावको निरतिचारता कहते हैं। शील-व्रतोंमें इस निरतिचारतासे तीर्थंकर कर्मका बन्ध होता है।

शंका—इसमें शेष पन्द्रह भावनाओंकी सम्भावना कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि क्षण-लवप्रतिबुद्धता, लब्धि-संवेगसम्पन्नता,

---

१ अप्रतौ '-परिवक्खणं', आ-काप्रत्योः 'परिक्खणं' इति पाठः।

२ अहिंसादिषु व्रतेषु तत्प्रतिपालनार्थेषु च क्रोधवर्जनादिषु शीलेषु निरवद्या वृत्तिः शील व्रतेष्वनतिचारः। स. सि. ६, २४. **चारित्रविकल्पेषु शील-व्रतेषु निरवद्या वृत्तिः शील-व्रतेष्वनतिचारः**—अहिंसादिषु व्रतेषु × × × निरवद्या वृत्तिः काय-वाङ्मनसां शील-व्रतेष्वनतिचार इति कथ्यते। त. रा. ६, २४, ३. शीलानि च व्रतानि च शील-व्रतम्, अत्रापि समाहारद्वन्द्वः, तस्मिन्; तत्र शीलानि उत्तरगुणाः व्रतानि मूलगुणाः तेषु निरतिचारः सन् तीर्थंकरनामकर्म बध्नातीति क्रियायोगः। प्रव. पृ. ८३.

३ अप्रतौ 'णिरदिचारदीए', आ-काप्रत्योः 'णिरदिचार तीए' इति पाठः।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

रण-वेज्जावच्चजोगजुत्तत्त-पासुअपरिच्चाग-अरहंत-बहुसुद-पवयणभत्ति-पवयणपहावणलक्खणसुद्धि-जुत्तेण विणा सीलव्वदाणमणदिचारत्तस्स अणुववत्तीदो। असंखेज्जगुणाए सेडीए कम्म-णिज्जरणहेदू वदं णाम। ण च सम्मत्तेण विणा हिंसालिय-चोज्जब्बंभपरिग्गहविरइमेत्तेण सा गुणसेडिणिज्जरा होदि, दोहिंतो चेवुप्पज्जमाणकज्जस्स तत्थेक्कादो समुप्पत्तिविरोहादो। होदु णाम एदेसिं संभवो, ण णाणविणयस्स? ण, छद्व्व-णवपदत्थसमूह-तिहुवणविसएण अभिक्खण-मभिक्खणमुवजोगविसयमापज्जमाणेण णाणविणएण विणा सीलव्वदणिबंधणसम्मत्तुप्पत्तीए अणुववत्तीदो। ण तत्थ चरणविणयाभावो वि, जहाथामतवावासयापरिहीणत्त-पवयणवच्छलत्त-लक्खणचरणविणएण विणा सीलव्वदणिरदिचारत्ताणुववत्तीदो। तम्हा[1] तदियमेदं तित्थयर-णामकम्मबंधस्स कारणं।

आवासएसु अपरिहीणदाए— समदा-थव[2]-वंदण-पडिक्कमण-पच्चक्खाण-विओसग्गभेएण

साधुसमाधिधारण, वैयावृत्ययोगयुक्तता, प्रासुकपरित्याग, अरहंतभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति और प्रवचनप्रभावना लक्षण शुद्धिसे युक्त सम्यग्दर्शनके विना शील-व्रतोंकी निरतिचारता बन नहीं सकती। दूसरी बात यह है कि जो असंख्यात गुणित श्रेणीसे कर्मनिर्जराका कारण है वही व्रत है। और सम्यग्दर्शनके विना हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्म और परिग्रहसे विरत होने मात्रसे वह गुणश्रेणीनिर्जरा हो नहीं सकती, क्योंकि, दोनोंसे ही उत्पन्न होनेवाले कार्यकी उनमेंसे एकके द्वारा उत्पत्तिका विरोध है।

शंका— इनकी सम्भावना यहां भले ही हो, पर ज्ञानविनयकी सम्भावना नहीं हो सकती?

समाधान— ऐसा नहीं है, क्योंकि छह द्रव्य, नौ पदार्थोंके समूह और त्रिभुवनको विषय करनेवाले एवं बार बार उपयोगविषयको प्राप्त होनेवाले ज्ञानविनयके विना शील-व्रतोंके कारणभूत सम्यग्दर्शनकी उत्पत्ति नहीं बन सकती।

शील-व्रतविषयक निरतिचारतामें चारित्रविनयका भी अभाव नहीं कहा जासकता है, क्योंकि यथाशक्ति तप, आवश्यकापरिहीनता और प्रवचनवत्सलता लक्षण चारित्र-विनयके विना शील-व्रतविषयक निरतिचारताकी उपपत्ति ही नहीं बनती। इस कारण यह तीर्थंकर नामकर्मके बन्धका तीसरा कारण है।

आवश्यकोंमें अपरिहीनतासे ही तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— समता, स्तव,

१ प्रतिषु 'तं जहा' इति पाठः। २ प्रतिषु 'थय' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छावासया होंति[1]। सत्तु-मित्त-मणि-पाहाण-सुवण्ण-मट्टियासु[2] राग-देसाभावो समदा णाम[3]। तीदा-णागद-वट्टमाणकालविसयपंचपरमेसराणं भेदमकाऊण णमो अरहंताणं णमो जिणाणमिच्चादिणमो-क्कारो दव्वट्ठियणिबंधणो थवो[4] णाम। उसहाजिय-संभवाहिणंदण-सुमइ-पउमप्पह-सुपास-चंदप्पह-पुप्फदंत-सीयल-सेयंस-वासुपुज्ज-विमलाणंत-धम्म-संति-कुंथु-अर-मल्लि-मुणिसुव्वय-णमि-णेमि-पास-वड्ढमाणादितित्थयराणं भरहादिकेवलीणं आइरिय-चइत्तालयादीणं भेयं काऊण णमोक्कारो गुणगयभेदमल्लीणो[5] सद्दकलावाउलो गुणाणुसरणसरूवो वा वंदणा[6] णाम। पंच-महव्वएसु चउरासीदिलक्खगुणगणकलिएसु[7] समुप्पण्णकलंकपक्खालणं पडिक्कमणं[8] णाम।

वन्दना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और व्युत्सर्गके भेदसे छह आवश्यक होते हैं। शत्रु-मित्र, मणि-पाषाण और सुवर्ण-मृत्तिकामें राग-द्वेषके अभावको समता कहते हैं। अतीत, अनागत और वर्तमान काल विषयक पांच परमेष्ठियोंके भेदको न करके 'अरहन्तोंको नमस्कार, जिनोंको नमस्कार' इत्यादि द्रव्यार्थिकनिबन्धन नमस्कारका नाम स्तव है। ऋषभ, अजित, सम्भव, अभिनन्दन, सुमति, पद्मप्रभ, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभ, पुष्पदन्त, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य, विमल, अनन्त, धर्म, शान्ति, कुन्थु, अर, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व और वर्धमानादि तीर्थंकर तथा भरतादिक केवली, आचार्य एवं चैत्यालया-दिकोंके भेदको करके अथवा गुणगत भेदके आश्रित, शब्दकलापसे व्याप्त गुणानु-स्मरण रूप नमस्कार करनेको वन्दना कहते हैं। चौरासी लाख गुणोंके समूहसे संयुक्त पांच महाव्रतोंमें उत्पन्न हुए मलको धोनेका नाम प्रतिक्रमण है। महाव्रतोंके विनाश व

---

१ समदा थवो य वंदण पडिक्कमणं तहेव णादव्वं। पच्चक्खाण विसग्गो करणीया वासया छप्पि ॥ मूला. २२. सामाइय चउवीसत्थव वंदणयं पडिक्कमणं। पच्चक्खाणं च तहा काओसग्गो हवदि छट्ठो ॥ मूला. ७, १५. षडावश्यकक्रियाः— सामायिकं चतुर्विंशतिस्तवः वंदना प्रतिक्रमणं प्रत्याख्यानं कायोत्सर्गश्चेति। त. रा. ६, २४, ११. से किं तं आवस्सयं ? आवस्सयं छव्विहं पण्णत्तं, तं जहा— सामाइयं चउवीसत्थवो वंदणयं पडि-क्कमणं काउस्सग्गो पच्चक्खाणं से त्तं आवस्सयं। नन्दीसूत्र ४४.

२ अप्रतौ 'पडियासु', आ-काप्रत्योः 'मडियासु' इति पाठः।

३ जीविद-मरणे लाभालाभे संजोय-विप्पओगे य। बंधुरि-सुह-दुक्खादिसु समदा सामाइयं णाम ॥ मूला. २३. तत्र सामायिकं सर्वसावद्ययोगनिवृत्तिलक्षणं चित्तस्यैकत्वेन ज्ञाने प्रणिधानम्। त. रा. ६, २४, ११.

४ उसहादिजिणवराणं णामणिरुत्तिं गुणाणुकित्तिं च। काऊण अच्चिदूण य तिसुद्धिपणमो थवो णेओ ॥ मूला. २४. चतुर्विंशतिस्तवः तीर्थकरगुणानुकीर्तनम्। त. रा. ६, २४, ११.

५ अप्रतौ 'गुणगणभेदमल्लिणो'; आ-काप्रत्योः 'गुणगयभेदमल्लिणो' इति पाठः।

६ अरहंत-सिद्धपडिमा-तव-सुद-गुण-गुरूण रादीणं। किदियम्मेणिदरेण य तियरणसंकोचणं पणमो ॥ मूला. २५. वंदना त्रिशुद्धिः द्व्यासना चतुःशिरोवनतिः द्वादशावर्तना। त. रा. ६,२४,११.

७ प्रतिषु 'लक्खणगुणगण-' इति पाठः।

८ दव्वे खेत्ते काले भावे य कयावराहसोहणयं। णिंदण-गरहणजुत्तो मण-वच-कायेण पडिक्कमणं ॥ मूला. २६. अतीतदोषनिवर्तनम् प्रतिक्रमणम्। त. रा. ६, २४, ११.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महव्वयाणं विणासण-मलारोहणकारणाणि जहा ण होसंति तहा करेमि त्ति मणेणालोचिय चउरासीदिलक्खवदसुद्धिपडिग्गहो पच्चक्खाणं[1] णाम । सरीराहारेसु[2] हु मण-वयण-पवुत्तीओ ओसारिय ज्झेयम्मि एअग्गेण चित्तणिरोहो विओसग्गो[3] णाम । एदेसिं छण्णमावासयाणं अपरिहीणदा अखंडदा आवासयापरिहीणदा । तीए आवासयापरिहीणदाए एक्काए वि तित्थयरणामकम्मस्स बंधो होदि । ण च एत्थ सेसकारणाणमभावो, ण च दंसणविसुद्धि-विणयसंपत्ति-वदसीलणिरदिचार-खणलवपडिबोह-लद्धिसंवेगसंपत्ति-जहाथामतव-साहुसमाहिसंधारण-वेज्जावच्चजोग-पासुअपरिच्चागारहंत-बहुसुद-पवयणभत्ति-पवयणवच्छल्ल-प्पहावणाभिक्खणणाणोवजोगजुत्तदाहि विणा छावासएसु णिरदिचारदा णाम संभवदि । तम्हा एदं तित्थयरणामकम्मबंधस्स चउत्थकारणं ।

खण-लवपडिबुज्झणदाए— खण-लवा णाम कालविसेसा । सम्मदंसण-णाण-वद-सील-गुणाणमुज्जालणं कलंकपक्खालणं संधुक्खणं वा पडिबुज्झणं णाम, तस्स भावो पडिबुज्झणदा । खण-लवं पडि पडिबुज्झणदा खण-लवपडिबुज्झणदा । तीए एक्काए वि तित्थयरणामकम्मस्स

मलोत्पादनके कारण जिस प्रकार न होंगे वैसा करता हूं, ऐसी मनसे आलोचना करके चौरासी लाख व्रतोंकी शुद्धिके प्रतिग्रहका नाम प्रत्याख्यान है । शरीर व आहारमें मन एवं वचनकी प्रवृत्तियोंको हटाकर ध्येय वस्तुकी ओर एकाग्रतासे चित्तका निरोध करनेको व्युत्सर्ग कहते हैं । इन छह आवश्यकोंकी अपरिहीनता अर्थात् अखण्डताका नाम आवश्यकापरिहीनता है । उस एक ही आवश्यकापरिहीनतासे तीर्थंकर नामकर्मका बन्ध होता है । इसमें शेष कारणोंका अभाव भी नहीं है, क्योंकि दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पत्ति, व्रत-शीलनिरतिचारता, क्षण-लवप्रतिबोध, लब्धि-संवेगसम्पत्ति, यथाशक्ति तप, साधुसमाधिसंधारण, वैयावृत्त्ययोग, प्रासुकपरित्याग, अरहन्तभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, प्रवचनवत्सलता, प्रवचनप्रभावना और अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगयुक्तता, इनके विना छह आवश्यकोंमें निरतिचारता सम्भव ही नहीं है । इस कारण यह तीर्थंकर नामकर्मके बन्धका चतुर्थ कारण है ।

क्षण-लवप्रतिबुद्धतासे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है—क्षण और लव ये कालविशेषके नाम हैं । सम्यग्दर्शन, ज्ञान, व्रत और शील गुणोंको उज्ज्वल करने, मलको धोने अथवा जलानेका नाम प्रतिबोधन और इसके भावका नाम प्रतिबोधनता है । प्रत्येक क्षण व लवमें होनेवाले प्रतिबोधको क्षण-लवप्रतिबुद्धता कहा जाता है । उस एक ही क्षण-लवप्रतिबुद्धतासे

---

१ णामादीणं छण्हं अजोगपरिवज्जणं तियरणेण । पच्चक्खाणं णेयं अणागयं चागमे काले ॥ मूला. २७. अनागतदोषापोहनं प्रत्याख्यानम् । त. रा. ६, २४, ११.

२ प्रतिषु ' सरीराहारासु ' इति पाठः ।

३ देवस्सियणियमादिसु जहुत्तमाणेण उत्तकालम्हि । जिणगुणचिंतणजुत्तो काउस्सग्गो तणुविसग्गो ॥ मूला. २८. परिमितकालविषया शरीरे ममत्वनिवृत्तिः कायोत्सर्गः । त. रा. ६,२४,११.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधो । एत्थ वि पुव्वं व सेसकारणाणमंतब्भावो दरिसेदव्वो । तदो एदं तित्थयरणामकम्मबंधस्स पंचमं कारणं ।

लद्धिसंवेगसंपण्णदाए— सम्मद्दंसण-णाण-चरणेसु जीवस्स समागमो लद्धी णाम । हरिसो संतो संवेगो णाम । लद्धीए संवेगो लद्धिसंवेगो, तस्स संपण्णदा संपत्ती । तीए तित्थयरणामकम्मस्स एक्काए वि बंधो । कधं लद्धिसंवेगसंपयाए सेसकारणाणं संभवो ? ण सेसकारणेहि विणा लद्धिसंवेगस्स संपया जुज्जदे, विरोहादो । लद्धिसंवेगो णाम तिरयणदोहलओ, ण सो दंसणविसुज्झदादीहिं विणा संपुण्णो होदि, विप्पडिसेहादो हिरण्ण-सुवण्णादीहि विणा अड्डो[1] व्व । तदो अप्पणो अंतोखित्तसेसकारणा लद्धिसंवेगसंपया छट्ठं कारणं ।

जहाथामे तहा तवे— बलो वीरियं थामो इदि एयट्ठो । तवो दुविहो बाहिरो अब्भंतरो चेदि । बाहिरो अणसणादिओ, अब्भंतरो विणयादिओ । एसो सव्वो वि तवो बारसविहो । जहाथामे तहा तवे संते तित्थयरणामकम्मं बज्झइ । कुदो ? जहाथामतवे सयलसेसतित्थयर-

---

तीर्थंकर नामकर्मका बन्ध होता है । इसमें भी पूर्वके समान शेष कारणोंका अन्तर्भाव दिखलाना चाहिये । इसीलिये यह तीर्थंकर नामकर्मके बन्धका पांचवां कारण है ।

लब्धिसंवेगसम्पन्नतासे तीर्थंकर कर्मका बन्ध होता है— सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्रमें जो जीवका समागम होता है उसे लब्धि कहते हैं; और हर्ष व सात्त्विक भावका नाम संवेग है । लब्धिसे या लब्धिमें संवेगका नाम लब्धिसंवेग और उसकी सम्पन्नताका अर्थ संप्राप्ति है । इस एक ही लब्धिसंवेगसम्पन्नतासे तीर्थंकर नामकर्मका बन्ध होता है ।

शंका—लब्धिसंवेगसम्पदामें शेष कारणोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान—क्योंकि, शेष कारणोंके विना विरूद्ध होनेसे लब्धिसंवेगकी सम्पदाका संयोग ही नहीं होसकता। इसका कारण यह कि रत्नत्रयजनित हर्षका नाम लब्धिसंवेग है। और वह दर्शनविशुद्धतादिकोंके विना सम्पूर्ण होता नहीं है, क्योंकि, इसमें हिरण्य-सुवर्णादिकोंके विना धनाढ्य होनेके समान विरोध है । अत एव शेष कारणोंको अपने अन्तर्गत करनेवाली लब्धिसंवेगसम्पदा तीर्थंकर कर्मबन्धका छठा कारण है ।

शक्त्यनुसार तपसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— बल, वीर्य और थाम (स्थामन्) ये समानार्थक शब्द हैं । तप दो प्रकार है— बाह्य और आभ्यन्तर । इनमें अनशनादिकका नाम बाह्य तप और विनयादिकका नाम आभ्यन्तर तप है । छह बाह्य एवं छह आभ्यन्तर इस प्रकार मिलकर यह सब तप बारह प्रकार है । जैसा बल हो वैसा तप करनेपर तीर्थंकर नामकर्म बंधता है । इसका कारण यह है कि यथाशक्तितपमें तीर्थंकर नामकर्मके बन्धके

---

१ प्रतिषु ‘ अद्दो ’ इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कारणाणं संभवादो, जदो जहाथामो णाम ओघबलस्स धीरस्स[1] णाणदंसणकलिदस्स होदि। ण च तत्थ दंसणविसुज्झदादीणमभावो, तहा तवंतस्स अण्णहाणुववत्तीदो। तदो एदं सत्तमं कारणं।

साहूणं पासुअपरिच्चागदाए— अणंतणाण-दंसण-वीरिय-विरइ-खइयसम्मत्तादीणं साहया साहू णाम। पगदा ओसरिदा आसवा जम्हा तं पासुअं, अधवा जं णिरवज्जं तं पासुअं। किं? णाण-दंसण-चरित्तादि। तस्स परिच्चागो विसज्जणं, तस्स भावो पासुअपरिच्चागदा। दयाबुद्धीए साहूणं णाण-दंसण-चरित्तपरिच्चागो दाणं पासुअपरिच्चागदा णाम। ण चेदं कारणं घरत्थेसु संभवदि, तत्थ चरित्ताभावादो। तिरयणोवदेसो वि ण घरत्थेसु अत्थि, तेसिं दिट्ठिवादादिउवरिमसुत्तोवदेसणे अहियाराभावादो। तदो एदं कारणं महेसिणं चेव होदि। ण च एत्थ सेसकारणाणमसंभवो। ण च अरहंतादिसु अभत्तिमंते णवपदत्थविसयसद्दहणेणुम्मुक्के सादिचारसीलव्वदे परिहीणावासए णिरवज्जो णाण-दंसण-चरित्तपरिच्चागो संभवदि, विरोहादो। तदो एदमट्ठमं कारणं।

सभी शेष कारण सम्भव हैं, क्योंकि, यथाथाम तप ज्ञान-दर्शनसे युक्त सामान्य बलवान् और धीर व्यक्तिके होता है, और इसलिये उसमें दर्शनविशुद्धतादिकोंका अभाव नहीं होसकता, क्योंकि, ऐसा होनेपर यथाथाम तप बन नहीं सकता। इस कारण यह तीर्थंकर नामकर्मबन्धका सातवां कारण है।

साधुओंके द्वारा विहित प्रासुक अर्थात् निरवद्य ज्ञान-दर्शनादिकके त्यागसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तवीर्य, विरति और क्षायिक सम्यक्त्वादि गुणोंके जो साधक हैं वे साधु कहलाते हैं। जिससे आस्रव दूर हो गये हैं उसका नाम प्रासुक है, अथवा जो निरवद्य है उसका नाम प्रासुक है। वह ज्ञान, दर्शन व चारित्रादिक ही तो सकते हैं। उनके परित्याग अर्थात् विसर्जन करनेको प्रासुकपरित्याग और इसके भावको प्रासुकपरित्यागता कहते हैं। अर्थात् दयाबुद्धिसे साधुओं द्वारा किये जानेवाले ज्ञान, दर्शन व चारित्रके परित्याग या दानका नाम प्रासुकपरित्यागता है। यह कारण गृहस्थोंमें सम्भव नहीं है, क्योंकि, उनमें चारित्रका अभाव है। रत्नत्रयका उपदेश भी गृहस्थोंमें सम्भव नहीं है, क्योंकि, दृष्टिवादादिक उपरिम श्रुतके उपदेश देनेमें उनका अधिकार नहीं है। अत एव यह कारण महर्षियोंके ही होता है। इसमें शेष कारणोंकी असंभावना नहीं है, क्योंकि अरहन्तादिकोंमें भक्तिसे रहित, नौ पदार्थविषयक श्रद्धानसे उन्मुक्त, सातिचार शील-व्रतोंसे सहित और आवश्यकोंकी हीनतासे संयुक्त होनेपर निरवद्य ज्ञान, दर्शन व चारित्रका परित्याग विरोध होनेसे सम्भव ही नहीं है। इसी कारण यह तीर्थंकर नामकर्म बन्धका आठवां कारण है।

१ अप्रतौ 'वीरस्स' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहूणं समाहिसंधारणदाए— दंसण-णाण-चरित्तेसु सम्ममवट्ठाणं समाही णाम। सम्मं साहणं धारणं संधारणं। समाहीए संधारणं समाहिसंधारणं, तस्स भावो समाहिसंधारणदा। ताए तित्थयरणामकम्मं बज्झदि त्ति। केण वि कारणेण पदंतिं समाहिं दट्ठूण सम्मादिट्ठी पवयण-वच्छलो पवयणप्पहावओ विणयसंपण्णो सील-वदादिचारवज्जिओ[1] अरहंतादिसु भत्तो संतो जदि धरेदि तं समाहिसंधारणं। कुदो एदमुवलब्भदे? सं-सद्दपउंजणादो। तेण बज्झदि[2] त्ति वुत्तं होदि। ण च एत्थ सेसकारणाणमभावो, तदत्थित्तस्स दरिसिदत्तादो। एवमेदं णवमं कारणं।

साहूणं वेज्जावच्चजोगजुत्तदाए— व्यापृते यत्क्रियते तद्वैयावृत्यम्। जेण सम्मत्त-णाण-अरहंत-बहुसुदभत्ति-पवयणवच्छल्लादिणा जीवो जुज्जइ वेज्जावच्चे सो वेज्जावच्चजोगो दंसण-विसुज्झदादि, तेण जुत्तदा वेज्जावच्चजोगजुत्तदा। ताए एवंविहाए एक्काए वि तित्थयरणामकम्मं बंधइ। एत्थ सेसकारणाणं जहासंभवेण अंतब्भावो वत्तव्वो। एवमेदं

साधुओंकी समाधिसंधारणतासे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— दर्शन, ज्ञान व चारित्रमें सम्यक् अवस्थानका नाम समाधि है। सम्यक् प्रकारसे धारण या साधनका नाम संधारण है। समाधिका संधारण समाधिसंधारण और उसके भावका नाम समाधि-संधारणता है। उससे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है। किसी भी कारणसे गिरती हुई समाधिको देखकर सम्यग्दृष्टि, प्रवचनवत्सल, प्रवचनप्रभावक, विनयसम्पन्न, शील-व्रता-तिचारवर्जित और अरहंतादिकोंमें भक्तिमान् होकर चूंकि उसे धारण करता है इसीलिये वह समाधिसंधारण है।

शंका—यह कहांसे जाना जाता है?

समाधान—यह 'संधारण' पदमें किये गये 'सं' शब्दके प्रयोगसे जाना जाता है।

इस समाधिसंधारणसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है, यह अभिप्राय है। इसमें शेष कारणोंका अभाव नहीं है, क्योंकि, उनका अस्तित्व वहां दिखला ही चुके हैं। इस प्रकार यह नौवां कारण है।

साधुओंकी वैयावृत्ययोगयुक्ततासे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— व्यापृत अर्थात् रोगादिसे व्याकुल साधुके विषयमें जो किया जाता है उसका नाम वैयावृत्य है। जिस सम्यक्त्व, ज्ञान, अरहन्तभक्ति, बहुश्रुतभक्ति एवं प्रवचनवत्सलत्वादिसे जीव वैयावृत्यमें लगता है वह वैयावृत्ययोग अर्थात् दर्शनविशुद्धतादि गुण हैं, उनसे संयुक्त होनेका नाम वैयावृत्ययोगयुक्तता है। इस प्रकारकी उस एक ही वैयावृत्ययोग-युक्ततासे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है। यहां शेष कारणोंका यथासम्भव अन्तर्भाव कहना

---

१ प्रतिषु 'सीउवदादि' इति पाठः।

२ आ-काप्रत्योः 'पउंजणादारेण बज्झदि' इति पाठः।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

दसमं कारणं ।

अरहंतभत्तीए— खविदघादिकम्मा केवलणाणेण दिट्ठसव्वट्ठा अरहंता णाम । अथवा, णिट्ठविदट्ठकम्माणं घाइदघादिकम्माणं च अरहंतेत्ति सण्णा, अरिहणणं पडि दोण्हं भेदाभावादो । तेसु भत्ती अरहंतभत्ती । ताए तित्थयरकम्मं बज्झइ । कधमेत्थ सेसकारणाणं संभवो ? वुच्चदे— अरहंतवुत्ताणुट्ठाणाणुवत्तणं तदणुट्ठाणपासो वा अरहंतभत्ती णाम । ण च एसा दंसणविसुज्झदादीहि विणा संभवइ, विरोहादो । तदो एसा एक्कारसमं कारणं ।

बहुसुदभत्तीए— बारसंगपारया बहुसुदा णाम, तेसु भत्ती - तेहि वक्खाणिद-आगमत्थाणुवत्तणं तदणुट्ठाणपासो वा- बहुसुदभत्ती । ताए वि तित्थयरणामकम्मं बज्झइ, दंसणविसुज्झदादीहि विणा एदिस्से असंभवादो । एदं बारसमं कारणं ।

चाहिये । इस प्रकार यह दशवां कारण है ।

अरहन्तभक्तिसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है– जिन्होंने घातियाकर्मोंको नष्ट कर केवलज्ञानके द्वारा सम्पूर्ण पदार्थोंको देख लिया है वे अरहन्त हैं । अथवा, आठों कर्मोंको दूर करदेनेवाले और घातिया कर्मोंको नष्ट करदेनेवालोंका नाम अरहन्त है, क्योंकि कर्म-शत्रुके विनाशके प्रति दोनोंमें कोई भेद नहीं है । (अर्थात् 'अरहन्त' शब्दका अर्थ चूंकि 'कर्म-शत्रुको नष्ट करनेवाला' है, अत एव जिस प्रकार चार घातिया कर्मोंको नष्ट कर देनेवाले सयोगी और अयोगी जिन 'अरहन्त' शब्दके वाच्य हैं उसी प्रकार आठों कर्मोंको नष्ट कर देनेवाले सिद्ध भी 'अरहन्त' शब्दके वाच्य होसकते हैं, क्योंकि, निरुक्त्यर्थकी अपेक्षा दोनोंमें कोई भेद नहीं है ।) उन अरहन्तोंमें जो गुणानुरागरूप भक्ति होती है वही अरहन्तभक्ति कहलाती है । इस अरहन्तभक्तिसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है ।

शंका—इसमें शेष कारणोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान—इस शंकाका उत्तर देते हैं कि अरहन्तके द्वारा उपदिष्ट अनुष्ठानके अनुकूल प्रवृत्ति करने या उक्त अनुष्ठानके स्पर्शको अरहन्तभक्ति कहते हैं । और यह दर्शनविशुद्धतादिकोंके विना सम्भव नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध है । अतएव यह तीर्थंकर कर्मबन्धका ग्यारहवां कारण है ।

बहुश्रुतभक्तिसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— जो बारह अंगोंके पारगामी हैं वे बहुश्रुत कहे जाते हैं, उनके द्वारा उपदिष्ट आगमार्थके अनुकूल प्रवृत्ति करने या उक्त अनुष्ठानके स्पर्श करनेको बहुश्रुतभक्ति कहते हैं । उससे भी तीर्थंकर नामकर्म बंधता है, क्योंकि, यह भी दर्शनविशुद्धतादिक शेष कारणोंके विना सम्भव नहीं है । यह तीर्थंकर नामकर्मबन्धका बारहवां कारण है ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

पवयणभत्तीए— सिद्धंतो बारहंगाणि पवयणं[1], प्रकृष्टं प्रकृष्टस्य वचनं प्रवचनमिति व्युत्पत्तेः। तम्हि भत्ती तत्थ पदुप्पादिदत्थाणुट्ठाणं। ण च अण्णहा तत्थ भत्ती संभवइ, असंपुण्णे संपुण्णववहारविरोहादो। तीए तित्थयरणामकम्मं बज्झइ। एत्थ सेसकारणाणमंतब्भावो वत्तव्वो। एवमेदं तेरसमं कारणं।

पवयणवच्छलदाए— पवयणं सिद्धंतो बारहंगाइं, तत्थ भवा देस-महव्वइणो असंजद-सम्माइट्ठिणो च पवयणा। कुदो एत्थ आकारस्स अस्सवणं? 'एए छच्च समाणा' त्ति[2] सुत्तेण आदिवुड्ढीए कयअकारत्तादो। तेसु अणुरागो आकंखा ममेदंभावो पवयणवच्छलदा णाम। तीए तित्थयरकम्मं बज्झइ। कुदो? पंचमहव्वदादिआगमत्थविसयस्सुक्कट्ठाणुरागस्स दंसणविसुज्झदादीहि अविणाभावादो। तेणेदं चोद्दसमं कारणं।

प्रवचनभक्तिसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— सिद्धान्त या बारह अंगोंका नाम प्रवचन है, क्योंकि, 'प्रकृष्ट वचन प्रवचन, या प्रकृष्ट (सर्वज्ञ) के वचन प्रवचन हैं' ऐसी व्युत्पत्ति है। उस प्रवचनमें कहे हुए अर्थका अनुष्ठान करना, यह प्रवचनमें भक्ति कही जाती है। इसके विना अन्य प्रकारसे प्रवचनमें भक्ति सम्भव नहीं है, क्योंकि, असम्पूर्णमें सम्पूर्णके व्यवहारका विरोध है। इस प्रवचनभक्तिसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है। इसमें शेष कारणोंका अन्तर्भाव कहना चाहिये। इस प्रकार यह तेरहवां कारण है।

प्रवचनवत्सलतासे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— सिद्धान्त या बारह अंगोंका नाम प्रवचन है; इसमें होनेवाले देशव्रती, महाव्रती और असंयतसम्यग्दृष्टि प्रवचन कहे जाते हैं।

शंका— इसमें आकारका श्रवण क्यों नहीं होता, अर्थात् 'प्रवचनमें होनेवाले' इस विग्रहके अनुसार 'प्रावचन' होना चाहिये, न कि 'प्रवचन'?

समाधान— 'अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ये छह स्वर और ए, ओ, ये दो सन्ध्यक्षर, इस प्रकार ये आठों स्वर अविरोध भावसे एक दूसरेके स्थानमें आदेशको प्राप्त होते हैं'। इस सूत्रसे आदि वृद्धिरूप आ के स्थानपर अ का आदेश हो गया है।

उन प्रवचनों अर्थात् देशव्रती, महाव्रती और असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें जो अनुराग, आकांक्षा अथवा 'ममेदं' बुद्धि होती है उसका नाम प्रवचनवत्सलता है। उससे तीर्थंकर कर्म बंधता है। इसका कारण यह है कि पांच महाव्रतादिरूप आगमार्थविषयक उत्कृष्ट अनुरागका दर्शनविशुद्धतादिकोंके साथ अविनाभाव है, अर्थात् उक्त प्रकार प्रवचनवत्सलता दर्शनविशुद्धतादि शेष गुणोंके विना नहीं बन सकती। इसीलिये यह चौदहवां कारण है।

---

१ प्रवचनं द्वादशाङ्गं तदुपयोगानन्यत्वात्संघो वा प्रवचनम्। प्रव. पृ. ८२.

२ एए छच्च समाणा दोण्णि अ संज्झक्खरा सरा अट्ठ। अण्णोण्णस्सविरोहा उवेंति सव्वे समाएसं॥ कसायपाहुड १, पृ. ३२६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(पवयणप्पहावणदाए— आगमट्ठस्स पवयणमिदि सण्णा । तस्स पहावणं णाम वण्णजणणं तव्वुड्ढिकरणं च, तस्स भावो पवयणप्पहावणदा । तीए तित्थयरकम्मं बज्झइ, उक्कट्ठपवयणप्पहावणस्स दंसणविसुज्झदादीहि अविणाभावादो । तेणेदं पण्णरसमं कारणं)

अभिक्खणमभिक्खणं णाणोवजोगजुत्तदाए — अभिक्खणमभिक्खणं णाम बहुवारमिदि भणिदं होदि । णाणोवजोगो त्ति भावसुदं दव्वसुदं वावेक्खदे । तेसु मुहुम्मुहुजुत्तदाए तित्थयरणामकम्मं बज्झइ, दंसणविसुज्झदादीहि विणा एदिस्से अणुववत्तीदो । एदेहि सोलसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामकम्मं बंधंति । अधवा, सम्मद्दंसणे संते सेसकारणाणं मज्झे एग-दुगादिसंजोगेण बज्झदि[१] त्ति वत्तव्वं ।)

(जस्स इणं तित्थयरणामगोदकम्मस्स उदएण सदेवासुर-माणुसस्स लोकस्स अच्चणिज्जा वंदणिज्जा णमंसणिज्जा णेदारा धम्म-तित्थयरा जिणा केवलिणो हवंति ॥ ४२ ॥)

प्रवचनप्रभावनासे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— आगमार्थका नाम प्रवचन है, उसके वर्णजनन अर्थात् कीर्तिविस्तार या वृद्धि करनेको प्रवचनकी प्रभावना और उसके भावको प्रवचनप्रभावनता कहते हैं। उससे तीर्थंकर कर्म बंधता है, क्योंकि, उत्कृष्ट प्रवचनप्रभावनाका दर्शनविशुद्धतादिकोंके साथ अविनाभाव है। इसीलिये यह पन्द्रहवां कारण है।

अभीक्ष्ण-अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगयुक्ततासे तीर्थंकर कर्म बंधता है— अभीक्ष्ण-अभीक्ष्णका अर्थ 'बहुत वार' है। ज्ञानोपयोगसे भावश्रुत अथवा द्रव्यश्रुतकी अपेक्षा है। उन (भाव व द्रव्य श्रुत) में बार बार उद्युक्त रहनेसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है, क्योंकि, दर्शनविशुद्धतादिकोंके विना यह अभीक्ष्ण-अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगयुक्तता बन नहीं सकती।

इन सोलह कारणोंसे जीव तीर्थंकर नामकर्मको बांधते हैं। अथवा, सम्यग्दर्शनके होनेपर शेष कारणोंमेंसे एक दो आदि कारणोंके संयोगसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है, ऐसा कहना चाहिये।

जिन जीवोंके तीर्थंकर नाम-गोत्रकर्मका उदय होता है वे उसके उदयसे देव, असुर और मनुष्य लोकके अर्चनीय, वंदनीय, नमस्करणीय, नेता, धर्म-तीर्थके कर्ता जिन व केवली होते हैं ॥ ४२ ॥

---

१ तान्येतानि षोडशकारणानि सम्यग्भाव्यमानानि व्यस्तानि समस्तानि च तीर्थकरनामकर्मास्रवकारणानि प्रत्येतव्यानि । स. सि. ६, २४. त. रा. ६, २४, १३. तीर्थकरनामकर्माणि षोडश तत्कारणान्यमून्यनिशम् । व्यस्तानि समस्तानि च भवन्ति सद्भाव्यमानानि ॥ ह. पु. ३४, १४९. एते गुणाः समस्ता व्यस्ता वा तीर्थकरनाम्न आस्रवा भवन्तीति । त. सू. भाष्य ६, २३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तित्थयरणामगोदकम्मस्सेत्ति एत्थ 'उदओ तेणेत्ति' दोण्णं पदाणमज्झाहारो कायव्वो, अण्णहा अत्थाणुवलंभादो। जस्स जेसिं जीवाणं इणं एदस्स तित्थयरणामगोदकम्मस्स उदओ तेण उदएण सदेवासुर-माणुसस्स लोगस्स अच्चणिज्जा त्ति संबंधो कायव्वो। चरु-बलि-पुप्फ-फल-गंध-धूव-दीवादीहि सगभत्तिपगासो अच्चणा णाम। एदाहि सह अइंदधय-कप्परुक्ख-महामह-सव्वदोभद्दादिमहिमाविहाणं पूजा णाम। तुहं णिट्ठवियट्ठकम्मो केवलणाणेण दिट्ठसव्वट्ठो धम्मुम्मुहसिट्ठगोट्ठीए पुट्ठाभयदाणो सिट्ठपरिवालओ दुट्ठणिग्गहकरो देव त्ति पसंसा वंदणा णाम। पंचहि मुट्ठीहि जिणिंदचलणेसु णिवदणं णमंसणं। धम्मो णाम सम्मद्दंसण-णाण-चरित्ताणि[1]। एदेहि संसार-सायरं तरंति त्ति एदाणि तित्थं[2]। एदस्स धम्म-तित्थस्स कत्तारा जिणा केवलिणो णेदारा च भवंति।

एवमोघाणुगमो समत्तो।

सूत्रमें 'तीर्थंकर नाम-गोत्रकर्मका' यहां 'उदय' और 'उससे' इन दो पदोंका अध्याहार करना चाहिये, अन्यथा अर्थकी उपलब्धि नहीं होती। जिसके अर्थात् जिन जीवोंके, यह अर्थात् इस तीर्थंकर नाम गोत्रकर्मका उदय होता है वे उसके उदयसे देव, असुर एवं मनुष्योंसे परिपूर्ण लोकके अर्चनीय होते हैं, ऐसा सम्बन्ध करना चाहिये। चरु, बलि, पुष्प, फल, गन्ध, धूप और दीप आदिकोंसे अपनी भक्ति प्रकाशित करनेका नाम अर्चना है। इनके साथ ऐन्द्रध्वज, कल्पवृक्ष, महामह और सर्वतोभद्र, इत्यादि महिमा-विधानको पूजा कहते हैं। आप अष्ट कर्मोंको नष्ट करनेवाले, केवलज्ञानसे समस्त पदार्थोंको देखनेवाले, धर्मोन्मुख शिष्टोंकी गोष्ठीमें अभयदान देनेवाले, शिष्टपरिपालक और दुष्टनिग्रह-कारी देव हैं, ऐसी प्रशंसा करनेका नाम वन्दना है। पांच मुष्टियों अर्थात् अंगोंसे जिनेन्द्र देवके चरणोंमें गिरनेको नमस्कार कहते हैं। धर्मका अर्थ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र है। चूंकि इनसे संसार-सागरको तरते हैं इसीलिये इन्हें तीर्थ कहा जाता है। इस धर्म-तीर्थके कर्ता जिन, केवली और नेता होते हैं।

इस प्रकार ओघानुगम समाप्त हुआ।

---

१ सद्दृष्टि-ज्ञान-वृत्तानि धर्म धर्मेश्वरा विदुः। र. श्रा. ३.

२ जं नाण-दंसण-चरित्तभावओ तव्विवक्खभावाओ। भवभावओ य तारेइ तेण तं भावओ तित्थं॥ विशेषा. १०३८.

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु पंचणाणावरण-छदंसणावरण-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगदि-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुलहुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ४३ ॥

एदं देसामासियपुच्छासुत्तं, तेणेदेण सूइदसव्वपुच्छाओ एत्थ वत्तव्वाओ । एवं पुच्छिदसिस्सणिच्छयजणणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि —

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ ४४ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, सामित्तद्धाणाणं चेव परूवणादो । तेणेदेण सूइदत्थाणं परूवणं

आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणानुसार नरकगतिमें नारकियोंमें पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, सातावेदनीय, असातावेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुअलघुक, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इन कर्मोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ४३ ॥

यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, इसी कारण इसके द्वारा सूचित सब पृच्छाओंको यहां कहना चाहिये । इस प्रकार पृच्छायुक्त शिष्यके निश्चयजननार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिथ्यादृष्टिको आदि लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ ४४ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि, वह बन्धस्वामित्व और बन्धाध्वानका ही निरूपण करता है । इसी कारण इसके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं— पांच ज्ञानावरणीय,

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

कस्सामो—पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास—अगुरुगलहुअ—उवघाद—परघाद—उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं एदेसिमेत्थ बंधोदयवोच्छेदो णत्थि, विरोहाभावादो। पुरिसवेद-मणुसगइ-ओरालियसरीर-समचउरस-संठाण—ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण—मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि—पसत्थविहायगइ—सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-उच्चागोदाणमुदओ एत्थ णत्थि चेव, विरोहादो। तम्हा एत्थ एदासु पयडीसु बंधोदयवोच्छेदाणं पुव्वापुव्वविचारो णत्थि।

पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस—फास—अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-अजसकित्ति णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो। णिद्दा-पयला-सादासाद-बारसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाओ सोदय-परोदएहि बज्झंति, सव्वगुणट्ठाणेसु परावत्तणोदयादो। उववादं मिच्छाइट्ठि असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदएहि बज्झइ, विग्गहगदीए उदयाभावादो। सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीसु सोदएण बज्झइ, तेसिं तत्थ उप्पत्तीए अभावादो। परघादुस्सास-पत्तेयसरीराणि मिच्छाइट्ठि-

....

छह दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, असातावेदनीय, बारह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, अयशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तराय, इनके बन्ध और उदयका यहां व्युच्छेद नहीं होता, क्योंकि, इसमें कोई विरोध नहीं है अर्थात् इनका बन्धोदयव्युच्छेद यथासम्भव उन उपरिम गुणस्थानोंमें होता है जो नरकगतिमें सम्भव नहीं हैं। पुरुषवेद, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति और उच्चगोत्र, इन कर्मोंका उदय यहां है ही नहीं, क्योंकि, नारकियोंमें इनके उदयका विरोध है। इसलिये यहां इन प्रकृतियोंमें बन्धव्युच्छेद और उदयव्युच्छेदकी पूर्वापरताका विचार नहीं है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, अयशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध है। निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्सा, ये प्रकृतियां स्वोदय-परोदयसे बंधती हैं, क्योंकि, इनका सब गुणस्थानोंमें परिवर्तित उदय रहता है। उपघात प्रकृति मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदयसे बंधती है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इसका उदय नहीं रहता। सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानोंमें यही प्रकृति स्वोदयसे बंधती है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंकी नारकियोंमें उत्पत्ति नहीं है। परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदएहि बज्झंति, अपज्जत्तकाले एदेसिमुदयाभावादो। णवरि पत्तेयसरीरस्स उवघादभंगो, विग्गहगदीए चेव उदयाभावादो। सेसेसु दोसु सोदएणेव एदासिं बंधो, तेसिं तत्थ अपज्जत्तकालाभावादो। पुरिसवेद-मणुसगइ-ओरालियसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-उच्चागोदाणं चदुसु गुणट्ठाणेसु परोदएणेव बंधो, णिरएसु एदासिमुदयविरोहादो।

पंचणाणावरणीय-छंदसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगलहुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, णिरयगइम्हि णिरंतरबंधित्तादो। सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुभासुभ-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, सव्वगुणट्ठाणेसु पडिवक्खपयडीए बंधुवलंभादो। पुरिसवेद-मणुसगइ-समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-उच्चागोदाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधुवलंभादो। णवरि मणुसगइ-

---

प्रकृतियां मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदयसे बंधती हैं, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें इनका उदय नहीं रहता। विशेष इतना है कि प्रत्येकशरीरका बन्ध उपघातके समान है, क्योंकि, केवल विग्रहगतिमें ही उसका उदय नहीं रहता। शेष दो गुणस्थानोंमें स्वोदयसे ही इनका बन्ध होता है, क्योंकि, शेष दोनों गुणस्थान नारकियोंके अपर्याप्तकालमें होते नहीं हैं। पुरुषवेद, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति और उच्चगोत्र प्रकृतियोंका चारों गुणस्थानोंमें परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, नारकियोंमें इनके उदयका विरोध है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक तैजस व कार्मण शरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, ये प्रकृतियां नरकगतिमें निरन्तर बंधती हैं। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्ति प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध है, क्योंकि, सर्व गुणस्थानोंमें इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है। पुरुषवेद, मनुष्यगति, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभसंहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्र, इनका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध है, क्योंकि, यहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है। विशेषता इतनी है कि तीर्थंकर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छादिट्ठिम्हि तित्थयरसंतकम्मियम्मि णिरंतरो वि बंधो लब्भदि। सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो बंधो, एदासिं पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो।

एदाओ पयडीओ बंधमाणमिच्छाइट्ठिस्स चत्तारि मूलपच्चया। णाणासमयउत्तरपच्चया एक्कवंचास, ओरालिय-ओरालियमिस्स-इत्थि-पुरिसपच्चयाणमभावादो। एगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया जहाकमेण दस अट्ठारस। सासणस्स मूलपच्चया तिण्णि, मिच्छत्ताभावादो। णाणासमयउत्तर-पच्चया चउवेत्तालीस, ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-इत्थि-पुरिसपच्च-याणमभावादो। एगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया जहाकमेण दस सत्तारस। सम्मामिच्छाइट्ठिस्स मूलपच्चया तिण्णि, मिच्छत्ताभावादो। णाणासमयउत्तरपच्चया चालीस, ओघेसु पच्चएसु ओरालिय-इत्थि-पुरिसपच्चयाणमभावादो। एगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चया जहाकमेण णव सोलस। असंजदसम्मादिट्ठिस्स मूलपच्चया तिण्णि, मिच्छत्ताभावादो। णाणासमयउत्तरपच्चया बाएत्तालीस, ओघपच्चएसु ओरालिय-ओरालियमिस्स-इत्थि-पुरिसपच्चयाणमभावादो। एगसमइय-जहण्णुक्कस्सपच्चया जहाकमेण णव सोलस।

प्रकृतिकी सत्ता रखनेवाले मिथ्यादृष्टि जीवमें मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका निरन्तर भी बन्ध पाया जाता है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उक्त प्रकृतियोंका निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, यहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध नहीं होता।

इन प्रकृतियोंको बांधनेवाले मिथ्यादृष्टि नारकी जीवके मूल प्रत्यय चारों होते हैं। नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्यय इक्यावन होते हैं, क्योंकि, उसके औदारिक, औदारिक-मिश्र, स्त्रीवेद, और पुरुषवेद, इन चार प्रत्ययोंका अभाव है। एक समय सम्बन्धी जघन्य और उत्कृष्ट प्रत्यय क्रमसे दश और अठारह होते हैं। सासादनसम्यग्दृष्टिके मूल प्रत्यय तीन होते हैं, क्योंकि, उसके मिथ्यात्वका अभाव है। नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्यय चवालीस होते हैं, क्योंकि, उसके औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, कार्मण, स्त्रीवेद और पुरुषवेद, इन छह प्रत्ययोंका अभाव है। एक समय सम्बन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्यय क्रमसे दश और सत्तरह होते हैं। सम्यग्मिथ्यादृष्टिके मूल प्रत्यय तीन होते हैं, क्योंकि, उसके मिथ्यात्वका अभाव है। नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्यय चालीस होते हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंमेंसे औदारिक, स्त्रीवेद और पुरुषवेद प्रत्यय नहीं होते। एक समय सम्बन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्यय क्रमसे नौ और सोलह होते हैं। असंयतसम्यग्दृष्टिके मिथ्यात्वका अभाव होनेसे मूल प्रत्यय तीन होते हैं, व नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्यय ब्यालीस होते हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंमेंसे औदारिक, औदारिकमिश्र, स्त्रीवेद और पुरुषवेद, इन चार प्रत्ययोंका अभाव है। एक समय सम्बन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्यय यथाक्रमसे नौ और सोलह होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीर-अंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहाय-गइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, सेसगईणं बंधाभावादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-उच्चागोदाणि सव्वे मणुसगइसंजुत्तं चेव बंधंति, सेसगईहि सह विरोहादो ।

एदासिं सव्वासिं पि पयडीणं बंधस्स णेरइया चेव सामी । बंधद्धाणं सुगमं । एदासिं णेरइयाणं गुणट्ठाणाणं चरिमाचरिमट्ठाणेसु बंधवोच्छेदो णत्थि । सव्वपयडीणं बंधो सादि-अद्धुवो, अणादि-धुवणेरइयाणमभावादो । अधवा, पंचणाणावरणीय-छद्दंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुव-उवघाद-तेजा-कम्मइय-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो, उवसमसेडीदो ओयरिय णिरयं पइट्ठम्मि सादि-अद्धुवबंधदंसणादो । सेस-गुणट्ठाणेसु धुवं णत्थि, बंधवोच्छेदमकुणमाणसासणादीणमभावादो । सेसपयडीणं बंधो सादि-

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तराय, इन प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टि दो [तिर्यंच और मनुष्य] गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उनके शेष गतियोंका बन्ध नहीं होता। मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रको सभी नारकी मनुष्यगतिसे संयुक्त ही बांधते हैं, क्योंकि, उनके शेष गतियोंके साथ इनके बांधनेका विरोध है ।

इन सभी प्रकृतियोंके बन्धके नारकी जीव ही स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । इन प्रकृतियोंका नारकियोंके गुणस्थानोंके चरम व अचरम स्थानोंमें बन्धव्युच्छेद नहीं है । अर्थात् इन प्रकृतियोंका बन्धव्युच्छेद नारकियोंके सम्भव चार गुणस्थानोंमें नहीं होता । सब प्रकृतियोंका बन्ध सादि-अध्रुव है, क्योंकि, अनादि और ध्रुव नारकियोंका अभाव है । अथवा, पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, तैजस व कार्मण शरीर, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध है, क्योंकि, उपशमश्रेणीसे उतरकर नरकमें प्रविष्ट हुए जीवमें सादि व अध्रुव बन्ध देखा जाता है । शेष गुणस्थानोंमें ध्रुव बन्ध नहीं है, क्योंकि, बन्धव्युच्छेदको न करनेवाले सासादनसम्यग्दृष्टि आदिकोंका अभाव है । शेष

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अद्धुवो चेव, अद्धुवबंधित्तादो ।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ४५ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ४६ ॥

सव्वाणि बंधसामित्तसुत्ताणि देसामासियाणि त्ति दट्ठव्वाणि । तेणेदेण सूइदत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा— अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, सासणचरिमसमयम्मि एदस्स समं बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । थीणगिद्धितिय-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोवाणं णिरयगदीए उदओ णत्थि, विरोहादो ।

प्रकृतियोंका बन्ध सादि-अध्रुव ही है, क्योंकि, वे प्रकृतियां अध्रुवबन्धी हैं ।

निद्रा-निद्रा, प्रचला-प्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, स्त्रीवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इन प्रकृतियोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ४५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष नारकी अबन्धक हैं ॥ ४६ ॥

बन्धस्वामित्वके सब सूत्र देशामर्शक हैं, ऐसा समझना चाहिये । इसी कारण इस सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— अनन्तानुबन्धि-चतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादनगुणस्थानके चरम समयमें अनन्तानुबन्धिचतुष्कका साथ ही बन्धोदयव्युच्छेद पाया जाता है । स्त्यान-गृद्धि आदिक तीन, स्त्रीवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गति-प्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनका नरकगतिमें उदय नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तदो एदासिं पुव्वं पच्छा वा बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, संतासंताणं सण्णिकासविरोहादो । अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं पुव्वं बंधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, सासणम्मि णट्ठबंधाणं असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदुवलंभादो ।

अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सर-अणंताणुबंधिचउक्काणं सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्तादो । णवरि अप्पसत्थविहायगदि-दुस्सराणं सासणसम्मादिट्ठिम्हि सोदओ चेव अत्थि । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-थीणगिद्धितियाणं परोदएणेव बंधो, एत्थ एदेसिमुदयाभावादो । दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं सोदएणेव बंधो, णेरइएसु एदेसिं पडिवक्खाणं उदयाभावादो ।

थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं णिरंतरो बंधो । इत्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधसंभवादो । तिरिक्खाउअस्स णिरंतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधेण विणा बंधविरामुवलंभादो । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-तिरिक्खगइ-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो, छसु पुढवीसु सांतरो होदूण सत्तमपुढविम्हि णिरंतरेणेव बंधदंसणादो । जदि पडिवक्खपयडिबंधमस्सिदूण थक्कमाणबंधा

....

है । इसीलिये इन प्रकृतियोंके पूर्वमें अथवा पश्चात् बन्धोदयव्युच्छेदका विचार नहीं है, क्योंकि, सत् और असत् वस्तुके सन्निकर्षका विरोध है । अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, पश्चात् उदय; क्योंकि, सासादनगुणस्थानमें बन्धके नष्ट होजानेपर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें इनका उदयव्युच्छेद पाया जाता है ।

अप्रशस्तविहायोगति, दुस्वर और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । विशेष इतना है कि अप्रशस्तविहायोगति और दुस्वरका सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय ही बन्ध होता है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत और स्त्यानगृद्धित्रय, इनका परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनके उदयका अभाव है । दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका स्वोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, नारकियोंमें इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है ।

स्त्यानगृद्धि आदिक तीन और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका निरन्तर बन्ध होता है । स्त्रीवेद, चार संस्थान, चार संहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर और अनादेय, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव है । तिर्यगायुका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धके विना इसके बन्धकी विश्रान्ति पायी जाती है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, तिर्यग्गति और नीचगोत्रका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, छह पृथिवियोंमें इनका सान्तर बन्ध होकर सातवीं पृथिवीमें निरन्तर रूपसे ही बन्ध देखा जाता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सांतरबंधपयडी वुच्चदि तो उज्जोवस्स पडिवक्खबंधपयडीए अणुज्जोवसरूवाए अभावादो उज्जोवेण णिरंतरबंधिणा होदव्वमध बंधविणासो अत्थि त्ति जदि सांतरत्तं वुच्चदि तो तित्थयराहारदुगाउआणं पि सांतरत्तं पसज्जदि त्ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे— जं वुत्तं पडिवक्खपयडिबंधमस्सिदूण थक्कमाणबंधा सांतरबंधि त्ति तं सांतरबंधीसु पडिवक्खपयडिबंधाविणाभावं दट्ठूण वुत्तं । परमत्थदो पुण एगसमयं बंधिदूण बिदियसमए जिस्से बंधविरामो दिस्सदि सा सांतरबंधपयडी । जिस्से बंधकालो[1] जहण्णो वि अंतोमुहुत्तमेत्तो सा णिरंतरबंधपयडि[2] त्ति घेत्तव्वं ।

पच्चयपरूवणे कीरमाणे चउठाणियपयडिभंगो । णवरि तिरिक्खाउअस्स मिच्छाइट्ठिम्हि एगुणवंचास पच्चया, वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो ।

शंका—यदि प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका आश्रय करके बन्धविश्रान्तिको प्राप्त होनेवाली प्रकृति सान्तरबन्ध प्रकृति कही जाती है तो उद्योतकी प्रतिपक्षभूत अनुद्योतस्वरूप प्रकृतिका अभाव होनेसे उद्योतको निरन्तरबन्धी प्रकृति होना चाहिये । अथवा बन्धका विनाश है, इस कारणसे यदि सान्तरता कही जाती है तो फिर तीर्थंकर, आहारद्विक और आयु कर्मोंके भी सान्तरताका प्रसंग आता है ?

समाधान—यहां उपर्युक्त शंकाका परिहार कहते हैं — प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका आश्रय करके बन्धविश्रान्तिको प्राप्त होनेवाली प्रकृति सान्तरबन्धी है, इस प्रकार जो कहा है वह सान्तरबन्धी प्रकृतियोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धके अविनाभावको देखकर कहा है । वास्तवमें तो एक समय बंधकर द्वितीय समयमें जिस प्रकृतिकी बन्धविश्रान्ति देखी जाती है वह सान्तरबन्ध प्रकृति है । जिसका बन्धकाल जघन्य भी अन्तर्मुहूर्तमात्र है वह निरन्तरबन्ध प्रकृति है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

प्रत्ययप्ररूपणा करते समय चतुस्थानिक (चार गुणस्थानोंमें बंधनेवाली) प्रकृतियोंके समान ही प्रत्ययप्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि तिर्यगायुके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें यहां उनंचास प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका अभाव है ।

---

१ प्रतिषु ' काला ' इति पाठः ।

२ यासां प्रकृतीनां जघन्यतः समयमात्रं बन्धः, उत्कर्षतः समयादारभ्य यावदन्तर्मुहुर्तं न परतः, ताः सान्तरबन्धाः; अन्तर्मुहूर्त्तमध्येऽपि सान्तरो विच्छेदलक्षणान्तरसंहितो बन्धो यासां ताः सान्तरा इति व्युत्पत्तेः । अन्तर्मुहूर्तोपरि विच्छिद्यमानबन्धवृत्तिजातिमत्यः सान्तरबन्धा इति फलितार्थः । ××× जघन्येनापि या अन्तर्मुहूर्त्तं यावन्नैरन्तर्येण बध्यन्ते ता निरन्तरबन्धाः, निर्गतमन्तरमन्तर्मुहूर्तमध्ये व्यवच्छेदलक्षणं यस्य तादृशो बन्धो यासामिति व्युत्पत्तेः, अन्तर्मुहूर्तमध्याविच्छिन्नबन्धवृत्तिजातिमत्य इति यावत् । क. प्र. पृ. १४–१५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोवाणि मिच्छाइट्ठि-सासण-सम्मादिट्ठिणो तिरिक्खगइसंजुत्तं बंधंति। सेसाओ दुट्ठाणपयडीओ दुगइसंजुत्तं बंधंति। सव्वासिं पयडीणं णेरइया सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधि-चउक्काणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। सासणे सादि-अद्धुवो। सेसाणं पयडीणं बंधो सादि-अद्धुवो चेव।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ४७ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ४८ ॥

एदेण सुइदत्थाणं परूवणा कीरदे— मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, मिच्छाइट्ठिचरिमसमए बंधोदयवोच्छेददंसणादो। णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडण-णामाणं पुव्वं बंधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, मिच्छाइट्ठिचरिमसमए णट्ठबंधाणमेदासिं असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदुवलंभादो। णवरि असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणस्स पुव्वावर-

---

तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं। शेष द्विस्थान प्रकृतियोंको दो गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं। सब प्रकृतियोंके नारकी स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्ध विनष्टस्थान सुगम हैं। स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। सासादनमें सादि और अध्रुव बन्ध होता है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अध्रुव ही होता है।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपटिकाशरीरसंहनन नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ४७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष नारकी जीव अबन्धक हैं ॥ ४८ ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं — मिथ्यात्वप्रकृतिका बन्ध और उदय दोनों एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके चरम समयमें इसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है। नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकाशरीरसंहनन नामकर्मोंका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, पश्चात् उदय; क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके चरम समयमें बन्धके नष्ट हो जानेपर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें इनका उदयव्युच्छेद पाया जाता है। विशेष इतना है कि असंप्राप्त-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, बंधं मोत्तूण उदयाभावादो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाणाणं सोदओ बंधो । णवरि हुंडसंठाणस्स स-परोदओ वि, विग्गहगदीए[1] तस्सुदयाभावादो । असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणस्स परोदओ बंधो, तत्थ संघडणस्सुदयाभावादो । मिच्छत्तस्स णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । सेसाणं तिण्णं सांतरो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो ।

पच्चया चउट्ठाणियपयडिपच्चएहि समा । एदाओ पयडीओ चत्तारि वि दुगइसंजुत्तं बज्झंति । णेरइया सामी । [बंधद्धाणं] बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । मिच्छत्तस्स चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो । सेसाणं सादि-अद्धुवो, धुवबंधित्ताभावादो ।

मणुस्साउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ४९ ॥

सुगमं ।

सृपाटिकाशरीरसंहननके पूर्व या पश्चात् बन्धोदयव्युच्छेद होनेका विचार नहीं है, क्योंकि, बन्धको छोड़कर वहां इसके उदयका अभाव है ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद और हुण्डसंस्थानका सोदय बन्ध होता है । विशेष यह है कि हुण्डसंस्थानका बन्ध स्वोदय-परोदयसे भी होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें उसका उदय नहीं रहता । असंप्राप्तसृपाटिकाशरीरसंहननका बन्ध परोदयसे होता है, क्योंकि, नारकियोंमें संहननका उदय नहीं रहता । मिथ्यात्वका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी प्रकृति है । शेष तीन प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें उनके बन्धका विश्राम देखा जाता है ।

प्रत्ययोंकी प्ररूपणा चतुस्थानिक प्रकृतियोंके प्रत्ययोंके समान है । ये चारों ही प्रकृतियां दो गतियोंसे संयुक्त बंधती हैं । नारकी जीव स्वामी हैं । [बन्धाध्वान] और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । मिथ्यात्वप्रकृतिका बन्ध चारों प्रकारका होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी प्रकृति है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी नहीं है ।

मनुष्यायुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ४९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

---

१ आप्रतौ ' गदीसु ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ५० ॥

एदेण सूइदत्थस्स परूवणं कस्सामो– एत्थ बंधोदयाणं पुव्वावरवोच्छेदविचारो णत्थि, बंधं मोत्तूण उदयाभावादो । परोदएण बंधंति, णिरयगदीए मणुस्साउअस्स उदयविरोहादो । णिरंतरं बंधंति, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । मिच्छाइट्ठिस्स एगूणवण्णपच्चया, वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । सासणस्स चोद्दाल असंजदसम्मादिट्ठिस्स चालीस पच्चया । सेसं सुगमं । मणुसगइसंजुत्तं बंधंति । णेरइया सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

तित्थयरणामकम्मस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ५१ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥५२॥

तित्थयरबंधस्स उदयादो पुव्वं पच्छा वोच्छेदो होदि त्ति सण्णिकासो णत्थि, तित्थयर-

---

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष नारकी जीव अबन्धक हैं ॥ ५० ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं — यहां बन्ध और उदयके पूर्व या पश्चात् व्युच्छेद होनेका विचार नहीं है, क्योंकि, बन्धको छोड़कर नारकियोंमें इसके उदय नहीं रहता है । नारकी जीव इसे परोदयसे बांधते हैं, क्योंकि, नरकगतिमें मनुष्यायुके उदयका विरोध है । निरन्तर बांधते हैं, क्योंकि, एक समयमें इसके बन्धका विश्राम नहीं होता। मिथ्यादृष्टिके उनंचास प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका यहां अभाव है । सासादनके चवालीस और असंयतसम्यग्दृष्टिके चालीस प्रत्यय होते हैं । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है । मनुष्यायुको नारकी जीव मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । नारकी जीव स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । इसका बन्ध सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, यह अध्रुवबन्धी प्रकृति है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ५१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष नारकी अबन्धक हैं ॥ ५२ ॥

तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धका उदयसे पूर्व अथवा पश्चात् व्युच्छेद होता है, इस प्रकार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्सेत्थुदयाभावादो । तेणेव परोदओ बंधो। णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। पच्चया दंसणविसुज्झदा लद्धिसंवेगसंपण्णदा अरहंत-बहुसुद-पवयणभत्तिआदओ[1] । मणुसगदिसंजुत्तं । णेरइया सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

एवं तिसु उवरिमासु पुढवीसु णेयव्वं ॥ ५३ ॥

एदं बंधसामित्तं [सामण्णं] पडुच्च उत्तं। विसेसे पुण अवलंबिज्जमाणे भेदो अत्थि। तं भणिस्सामो– मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सांतर-णिरंतरो मिच्छाइट्ठिम्हि पढमाए पुढवीए बंधो णत्थि; सांतरो चेव; तित्थयरसंतकम्मियमिच्छाइट्ठीणमभावादो । बिदियदंडयम्हि [तिरिक्खगइ-] तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो णत्थि, सांतरो चेव, सत्तमपुढवि मुच्चा अण्णत्थ णिरयगदीए एदासिं णिरंतरबंधाभावादो । एसो भेदो पढम-बिदिय-तदियपुढवीसु । बिदिय-तदियपुढवीसु उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदओ चेव बंधो, तत्थ अपज्जत्तकाले असंजदसम्माइट्ठीणं अभावादो। मणुसगइदुगं तित्थयरसंत-

....

तुलना यहां नहीं है, क्योंकि, तीर्थंकर प्रकृतिका यहां नारकियोंमें उदय नहीं होता । इसी कारण इसका परोदयसे बन्ध होता है । बन्ध इसका निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयमें इसके बन्धका विश्राम नहीं होता । इसके प्रत्यय दर्शनविशुद्धता, लब्धि-संवेगसम्पन्नता, अरहन्तभक्ति, बहुश्रुतभक्ति और प्रवचनभक्ति आदिक हैं । मनुष्यगतिसे संयुक्त इसका बन्ध होता है । नारकी जीव स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । इसका बन्ध सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, यह अध्रुवबन्धी प्रकृति है ।

इस प्रकार यह व्यवस्था उपरिम तीन पृथिवियोंमें जानना चाहिये ॥ ५३ ॥

यह बन्धस्वामित्व [सामान्यकी] अपेक्षासे कहा गया है । किन्तु विशेषताका अवलम्बन करनेपर भेद है । उसे कहते हैं— मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध प्रथम पृथिवीमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर नहीं है, किन्तु सान्तर ही है; क्योंकि यहां तीर्थंकर प्रकृतिके सत्ववाले मिथ्यादृष्टि नारकी जीव नहीं होते हैं । द्वितीय दण्डकमें (?) [तिर्यग्गति], तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्र प्रकृतियोंका सान्तर-निरन्तर बन्ध नहीं होता, किन्तु सान्तर ही होता है; क्योंकि सप्तम पृथिवीको छोड़कर अन्यत्र नरकगतिमें इन प्रकृतियोंके निरन्तर बन्धका अभाव है । यह भेद प्रथम, द्वितीय और तृतीय पृथिवियोंमें है । द्वितीय और तृतीय पृथिवियोंमें उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीर, इन प्रकृतियोंका असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अपर्याप्तकालमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अभाव है । मनुष्यगति और

....

१ प्रतिषु '-भत्ते आदओ ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्मियमिच्छाइट्ठीणं णिरंतरं, सेसाणं सांतरं। असंजदसम्मादिट्ठिस्स चालीस पच्चया, वेउव्विय-मिस्सकम्मइयपच्चयाणमभावादो। एत्तिओ चेव भेदो, णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि।

चउत्थीए पंचमीए छट्ठीए पुढवीए एवं चेव णेदव्वं। णवरि विसेसो तित्थयरं णत्थि[1] ॥ ५४ ॥

तित्थयरस्स बंधो किमिदि णत्थि त्ति उत्ते तित्थयरं बंधमाणसम्माइट्ठीणं मिच्छत्तं गंतूण तित्थयरसंतकम्मेण सह बिदिय-तदियपुढवीसु व उप्पज्जमाणाणमभावादो। एदेणेव कारणेण मणुसगइदुगं मिच्छादिट्ठी सांतरं बंधइ। णत्थि अण्णो भेदो।

सत्तमाए पुढवीए णेरइया पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरा-

---

मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी तीर्थंकर प्रकृतिकी सत्तावाले मिथ्यादृष्टियोंके निरन्तर बंधती हैं, शेष नारकियोंके सान्तर बंधती हैं। असंयतसम्यग्दृष्टिके चालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका यहां अभाव है। इतना ही भेद है, अन्यत्र कहीं और कोई भेद नहीं है।

चतुर्थ, पंचम और छठी पृथिवीमें इसी प्रकार जानना चाहिये। विशेषता केवल यह है कि इन पृथिवियोंमें तीर्थंकर प्रकृति नहीं है ॥ ५४ ॥

शंका—तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध यहां क्यों नहीं होता?

समाधान—इस शंकाके होनेपर उत्तर देते हैं कि जिस प्रकार तीर्थंकर प्रकृतिको बांधनेवाले सम्यग्दृष्टि जीव मिथ्यात्वको प्राप्त होकर तीर्थंकर प्रकृतिकी सत्ताके साथ द्वितीय व तृतीय पृथिवियोंमें उत्पन्न होते हैं वैसे इन पृथिवियोंमें उत्पन्न नहीं होते। इसी कारणसे ही मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको मिथ्यादृष्टि सान्तर बांधते हैं। और कोई भेद नहीं है।

सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता और असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग,

---

१ घम्मे तित्थं बंधदि वंसामेघाण पुण्णगो चेव। गो. क. १०६. पंकाइसु तित्थयरहीणो। क. प्र. ३, ६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-[सुहा-] सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो? ॥ ५५ ॥

सुगमं ।

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ ५६ ॥

एदेण देसामासियसुत्तेण सूइदत्थपरूवणं कस्सामो— एत्थ उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, एत्थ तस्स असंभवादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगलहुग-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एदेसिं धुवोदयत्तादो । णिद्दा-पयला-सादासाद-बारसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो । उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठिम्हि सोदय-परोदओ बंधो । सेसेसु

....

वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥५५॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ ५६ ॥

इस देशामर्शक सूत्रके द्वारा सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं— यहां उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है; क्योंकि, यहां उसकी सम्भावना नहीं है । पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, अयशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीर, इनका मिथ्या-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोदओ चेव, तेसिमेत्थ अपज्जत्तकाले अभावादो । पुरिसवेद-ओरालियसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं परोदओ बंधो, एदेसिमुदयस्स एत्थ विरोहादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारहकसाय-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधित्तादो । सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुभासुभ-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, सव्वगुणट्ठाणेसु एदासिमेगाणेगसमयबंधसंभवादो । पुरिसवेद-समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो बंधो, एगाणेगसमयबंधसंभवादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो बंधो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो ।

एदाओ पयडीओ बंधंतमिच्छाइट्ठिस्स मूलपच्चया चत्तारि । णाणासमयउत्तरपच्चया

दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । शेष गुणस्थानोंमें स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिको छोड़कर शेष गुणस्थान यहां अपर्याप्तकालमें नहीं होते । पुरुषवेद, औदारिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्ति प्रकृतियोंका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनके उदयका यहां विरोध है ।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक तैजस व कार्मण शरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये प्रकृतियां यहां ध्रुवबन्धी हैं । साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्ति प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सब गुणस्थानोंमें इनका एक और अनेक समय तक बन्ध सम्भव है । पुरुषवेद, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभसंहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर और आदेय, इन प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनका एक-अनेक समय तक बन्ध सम्भव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

इन प्रकृतियोंको बांधनेवाले मिथ्यादृष्टि नारकीके मूल प्रत्यय चार, नाना समय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कवंचास । एगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चया दस अट्ठारस । सासणसम्मादिट्ठिस्स मूलपच्चया[1] तिण्णि, णाणासमयउत्तरपच्चया चउवेत्तालीस, एगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया दस सत्तारस । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु मूलपच्चया तिण्णि, उत्तरपच्चया चालीस, एगसमय-जहण्णुक्कस्सपच्चया णव सोलस ।

एदाओ सव्वपयडीओ मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो च तिरिक्खगइसंजुत्तं बंधंति, सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तमुभयत्थ अण्णगईणं बंधाभावादो । णेरइया सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारस-कसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतरा-इयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि[2] चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो । सेसगुणट्ठाणेसु धुवबंधो णत्थि, बंधवोच्छेदमकुणमाणसासणादीणमभावादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधो सव्वगुणट्ठाणेसु सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

सम्बन्धी उत्तर प्रत्यय इक्यावन, तथा एक समय सम्बन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्यय दश और अठारह होते हैं। सासादनसम्यग्दृष्टिके मूल प्रत्यय तीन, नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्यय चवालीस और एक समय सम्बन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्यय दश और सत्तरह होते हैं। सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें मूल प्रत्यय तीन, उत्तर प्रत्यय चालीस, तथा एक समय सम्बन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्यय नौ और सोलह होते हैं।

इन सब प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं, तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, दोनों जगह अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है। नारकी जीव इनके बन्धके स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं। शेष गुणस्थानोंमें ध्रुव बन्ध नहीं है, क्योंकि, इनके बन्धव्युच्छेदको न करनेवाले सासादन-सम्यग्दृष्टि आदिकोंका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध सब गुणस्थानोंमें सादि और अध्रुव होता है, क्योंकि, वे प्रकृतियां अध्रुवबन्धी हैं।

१ प्रतिषु 'मूलपयडी' इति पाठः।

२ प्रतिषु 'मिच्छाइट्ठीहि' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइ-पाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ५७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ५८ ॥

एदस्स अत्थो उच्चदे— अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, सासणे चेव दोण्णं वोच्छेदुवलंभादो । अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणसम्मादिट्ठिम्हि बंधे वोच्छिण्णे संते पच्छा असंजदसम्मादिट्ठिम्हि[1] उदयवोच्छेदुवलंभादो । थीणगिद्धितिय-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउ-

....

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, स्त्रीवेद, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इन प्रकृतियोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ५७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ ५८ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें ही दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है। अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इनका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें बन्धके व्युच्छिन्न होजानेपर तत्पश्चात् असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। स्त्यानगृद्धि आदिक तीन, स्त्रीवेद, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायो-

....

१ अ-आप्रत्योः ' असंजद० दिट्ठीहि ', काप्रतौ ' असंजदसम्माइट्ठीहि ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं पुव्वं पच्छा बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, एदासिमेत्थ उदयाभावादो।

अणंताणुबंधिचउक्कस्स सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सराणं मिच्छाइट्ठिम्हि सोदय-परोदएण बंधो, अपज्जत्तकाले एदासिमुदयाभावादो। सासणे सोदएणेव बंधो, तस्सेत्थ अपज्जत्तकालभावादो। दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं सोदएणेव बंधो, धुवोदयत्तादो। थीणगिद्धितिय-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइ-पाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं परोदएणेव बंधो। कुदो? विस्ससादो।

थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-तिरिक्खगइ–तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी–णीचा-गोदाणं णिरंतरो बंधो। कुदो? एत्थ धुवबंधित्तादो। सेसाणं सांतरो, एगसमएण हि[1] बंधवोच्छे-दुवलंभादो। पच्चया चउट्ठाणपयडिपच्चयसमा। एदाओ सव्वपयडीओ तिरिक्खगइसंजुत्तं बंधंति। णेरइया सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधि-चउक्काणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो। सासणम्मि सादि-अद्धुवो। सेसाणं

ग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनके पूर्वमें या पश्चात् बन्धोदयव्युच्छेद होनेका विचार नहीं है, क्योंकि, यहां इनके उदयका अभाव है।

अनन्तानुबन्धिचतुष्कका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी हैं। अप्रशस्तविहायोगति और दुस्वरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें इनका उदय नहीं रहता। सासादन गुणस्थानमें स्वोदयसे ही इनका बन्ध होता है, क्योंकि, इस गुणस्थानका यहां अपर्याप्तकालमें अभाव है। दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्र, इनका स्वोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, ये प्रकृतियां ध्रुवोदयी हैं। स्त्यानगृद्धि आदिक तीन, स्त्रीवेद, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनका परोदयसे ही बन्ध होता है। इसका कारण स्वभाव ही है।

स्त्यानगृद्धि आदिक तीन, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानु-पूर्वी और नीचगोत्र, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां वे ध्रुवबन्धी हैं। शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धव्युच्छेद पाया जाता है। प्रत्ययोंकी प्ररूपणा चतुस्थानिक प्रकृतियोंके समान है। इन सब प्रकृतियोंको तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं। नारकी जीव इनके बन्धके स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। स्त्यानगृद्धि आदिक तीन और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं। सासादनगुणस्थानमें

---

१ प्रतिषु 'हि' पदं नोपलभ्यते, मप्रतौ तु समुपलभ्यते तत्।

पयडीणं बंधो सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-तिरिक्खाउ-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीर-संघडणणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ५९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ६० ॥

एदस्स वक्खाणं णिरओघएगट्ठाणियवक्खाणतुल्लं। णवरि तिरिक्खगइसंजुत्तं बंधदि त्ति वत्तव्वं ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ६१ ॥

सुगमं ।

सादि व अध्रुव बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यगायु, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकाशरीरसंहनन प्रकृतियोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ५९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ६० ॥

इस सूत्रका व्याख्यान नारकसामान्यकी एकस्थानिक प्रकृतियोंके व्याख्यानके समान है। विशेष इतना है कि [यहां सातवीं पृथिवीमें] तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं, ऐसा कहना चाहिये ।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्र प्रकृतियोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ६१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

---

१ प्रतिषु 'एगट्ठाणाणिय-' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा[1] ॥ ६२ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— एत्थ बंधादो उदओ पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, एदासिमेत्थ उदयाभावादो । एदासिं परोदएणेव बंधो, णिरयगदीए उदयाभावादो । णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । पच्चया चउट्ठाणियपयडिपच्चयतुल्ला । मणुसगइसंजुत्तं सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो बंधंति । णेरइया सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । सादि-अद्धुवबंधो, अद्धुवबंधित्तादो सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिणिव्वाणुवगमणे णियमादो[2] वा ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-अट्ठकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष गुणस्थानवर्ती अबन्धक हैं ॥ ६२ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— बन्धसे उदय पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है या पश्चात्, यह विचार यहां नहीं है, क्योंकि, इनका यहां उदय नहीं है । इनका परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, नरकगतिमें इनके उदयका अभाव है । बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धका विश्राम नहीं होता । इनके प्रत्यय चतुस्थानिक प्रकृतियोंके प्रत्ययोंके समान हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । नारकी स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि वे अध्रुवबन्धी हैं; अथवा सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंके मुक्तिगमनमें नियम होनेसे भी सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

तिर्यग्गतिमें तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, आठ कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक तैजस

१ मिस्साविरदे उच्चं मणुवदुगं सत्तमे हवे बंधो । मिच्छा सासणसम्मा मणुवदुगुच्चं ण बंधंति ॥ गो. क. १०७.

२ अ-काप्रत्योः 'णियमाभावादो' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण गंध-रस-फास–देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी–अगुरुवलहुव -उवघाद--परघाद--उस्सास- पसत्थविहायगइ--तस--बादर--पज्जत्त-पत्तेयसरीर-[थिरा-] थिर-सुहासुह सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जस-कित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ६३ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ ६४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे — देवगइ-वेउव्वियसरीर वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइ-पाओग्गाणुपुव्वि-उच्चागोदाणं तिरिक्खेसु उदयाभावादो पुव्वं पच्छा बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, संतासंताणं सण्णिकासविरोहादो । अवसेसपयडीसु वि एस विचारो णत्थि, अत्थगदीए एदासिं बंधोदयवोच्छेदाभावादो । पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइय-सरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-[थिरा-] थिर-सुभासुभ णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ

व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगति-प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ६३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ ६४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्र, इनका तिर्यंचोंमें उदय न होनेसे बन्धोदयव्युच्छेदकी पूर्वापरताका विचार नहीं है, क्योंकि, सत् और असत्‌की समानताका विरोध है । शेष प्रकृतियोंमें भी यह विचार नहीं है, क्योंकि, अर्थगतिसे इनके बन्धोदयव्युच्छेदका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, वैक्रियिक तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधो, धुवोदयत्तादो । णिद्दा-पयला-सादासाद-अट्ठकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सव्वट्ठाणेसु सोदय-परोदओ बंधो । णवरि जोणिणीसु पुरिसवेदबंधो परोदओ । उवघादबंधो मिच्छादिट्ठि सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं सोदय-परोदओ, विग्गहगदीए उवघादस्सुदयाभावादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-संजदासंजदाणं सोदओ चेव, तेसिमपज्जत्तकालाभावादो । परघादुस्सास-पत्तेयसरीराणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ, एदासिमपज्जत्तकाले उदयाभावादो । सेसदोगुणट्ठाणेसु सोदओ बंधो । णवरि जोणिणीसु असंजदसम्मादिट्ठी एदाओ सोदएणेव बंधदि, तत्थेदस्स अपज्जत्तकालाभावादो । तस-बादर-पज्जत्त पंचिंदियजादीओ मिच्छाइट्ठी सोदय-परोदएण बंधइ, पडिवक्खपयडीणं उदयसंभवादो । अवसेसा सोदएणेव, तत्थ पडिवक्खपयडीणमुदयाभावादो । पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु सोदएणेव सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो, एत्थ पडिवक्खपयडीणमुदयाभावादो । णवरि पंचिंदियतिरिक्खेसु मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्तस्स सोदय-परोदओ बंधो, तत्थ पडिवक्खपयडीए उदयसंभवादो । सुभगादेज्ज-जसकित्तीणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-

---

इनका सोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, आठ कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वर, इनका सब गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । विशेष इतना है कि योनिमती तिर्यंचोंमें पुरुषवेदका बन्ध परोदयसे होता है । उपघातका बन्ध मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें उपघातका उदय नहीं होता । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयतोंके स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, उनके अपर्याप्तकालका अभाव है । परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका बन्ध मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, इन प्रकृतियोंका अपर्याप्तकालमें उदय नहीं होता । शेष दो गुणस्थानोंमें स्वोदय बन्ध होता है । विशेषता यह है कि योनिमतियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीव इन्हें स्वोदयसे ही बांधता है, क्योंकि, योनिमतियोंके अपर्याप्तकालमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानका अभाव है । त्रस, बादर, पर्याप्त और पंचेन्द्रिय जाति, इनको मिथ्यादृष्टि जीव स्वोदय-परोदयसे बांधता है, क्योंकि, यहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदय सम्भव है । शेष गुणस्थानवर्ती स्वोदयसे ही बांधते हैं, क्योंकि, उन गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंमें स्वोदयसे ही सब गुणस्थानोंमें बन्ध होता है, क्योंकि, इनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है । विशेषता यह है कि पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें मिथ्यादृष्टियोंके पर्याप्त प्रकृतिका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय सम्भव है । सुभग, आदेय और यशकीर्तिका बन्ध मिथ्या-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधो सोदयपरोदओ, एत्थ पडिवक्खुदयदंसणादो। संजदासंजदेसु सोदओ चेव, तत्थ पडिवक्खाणमुदयाभावादो । मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु अजसकित्तीए बंधो सोदय-परोदओ, एत्थ पडिवक्खुदयदंसणादो। संजदासंजदेसु परोदओ, तत्थ पडिवक्खपयडीए चेव उदयदंसणादो । देवगदि-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदाणं परोदओ बंधो, एदासिमेत्थ उदयविरोहादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-अट्ठकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो। सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुभासुभ-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो । पुरिसवेदस्स मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतरो णिरंतरो च बंधो, पम्म-सुक्क-लेस्सिएसु णिरंतरबंधदंसणादो । सेसगुणट्ठाणेसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पंचिं-

---

दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि व असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है। संयतासंयतोंमें इनका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है। मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें अयशकीर्तिका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिका भी उदय देखा जाता है। संयतासंयतोंमें उसका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतिका ही उदय देखा जाता है। देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिक-शरीरांगोपांग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्र, इनका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, तिर्यंचोंमें इनके उदयका विरोध है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, आठ कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्ति, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धका विश्राम देखा जाता है। पुरुषवेदका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर व निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, पद्म और शुक्ल लेश्यावाले जीवोंमें निरन्तर बन्ध देखा जाता है। शेष गुण-स्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिय-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि[1] सांतर-णिरंतरो, तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सिएसु णिरंतरबंधदंसणादो। सेसुवरिमगुणट्ठाणेसु णिरंतरो, तत्थ पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। समचउरससंठाणस्स बंधो मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतर-णिरंतरो, असंखेज्जवासाउएसु तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सियसंखेज्जवासाउएसु च णिरंतरबंधदंसणादो। उपरिमगुणेसु णिरंतरो, तत्थ पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। परघादुस्सासाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो बंधो, अपज्जत्तसंजुत्तबंधाभावादो तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सिएसु संखेज्जवासाउएसु असंखेज्जवासाउएसु च णिरंतरबंधदंसणादो। उवरिमगुणेसु णिरंतरो बंधो, तत्थ अपज्जत्तस्स बंधाभावादो। पसत्थविहायगईए मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतर-णिरंतरो, सुहतिलेस्सियसंखेज्जासंखेज्जवासाउएसु णिरंतरबंधदंसणादो। उवरिमगुणेसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। सुभ-सुस्सर-आदेज्जाणं मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतर-णिरंतरो, सुहतिलेस्सियसंखेज्जासंखेज्जवासाउएसु णिरंतरबंधदंसणादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। देवगदिदुग-वेउव्वियदुग-

पंचेन्द्रिय, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीर, इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि तेज, पद्म और शुक्ल लेश्यावाले जीवोंमें इनका निरन्तर बन्ध देखा जाता है। शेष उपरिम गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। समचतुरस्रसंस्थानका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, असंख्यातवर्षायुष्क और तेज, पद्म एवं शुक्ल लेश्यावाले तिर्यंचोंके इन गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध देखा जाता है। उपरिम गुणस्थानोंमें उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। परघात और उच्छ्वास प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तके बन्धसे संयुक्त इनके बन्धका अभाव होनेसे तेज, पद्म एवं शुक्ल लेश्यावाले संख्यातवर्षायुष्क और असंख्यातवर्षायुष्कोंमें निरन्तर बन्ध देखा जाता है। उपरिम गुणस्थानोंमें दोनों प्रकृतियोंका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें अपर्याप्तके बन्धका अभाव है। प्रशस्तविहायोगतिका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, शुभ तीन लेश्यावाले संख्यातवर्षायुष्क और असंख्यातवर्षायुष्कोंमें निरन्तर बन्ध देखा जाता है। उपरिम गुणस्थानोंमें उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है। शुभ, सुस्वर और आदेय प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, शुभ तीन लेश्यावाले संख्यातवर्षायुष्क और असंख्यातवर्षायुष्कोंमें निरन्तर बन्ध देखा जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिक-

१ प्रतिषु ' मिच्छाइट्ठीहि ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उच्चागोदाणं मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतर-णिरंतरो बंधो, सुहतिलेस्सियसंखेज्जासंखेज्जवासाउएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो बंधो।

तिरिक्खेसु मिच्छाइट्ठीणं मूलपच्चया चत्तारि। उत्तरपच्चया तेवंचास, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सपच्चयाणमभावादो। णवरि देवगइचउक्कस्स एक्कवंचास पच्चया, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो। एगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया दस अट्ठारस। सासणस्स मूलपच्चया तिण्णि, उत्तरपच्चया अट्ठेत्तालीस। वेउव्विय-चउक्कस्स छाएत्तालीस, पुव्विल्लाणं चेवाभावादो। एगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया दस सत्तारस। सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं मूलोघपच्चया चेव। णवरि सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि वेउव्वियकायजोगो असंजदसम्मादिट्ठिम्हि वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सजोगा अवणेदव्वा। संजदासंजदे ओघपच्चया चेव। एवं चउव्विहाणं पच्चयपरूवणा कदा। णवरि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु पुरिस-णवुंसयपच्चया अवणेदव्वा। असंजदसम्माइट्ठिम्हि ओरालिय-मिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेदव्वा।

शरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग और उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, शुभ तीन लेश्यावाले संख्यातवर्षायुष्क और असंख्यातवर्षायुष्कोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है।

तिर्यंचोंमें मिथ्यादृष्टियोंके मूल प्रत्यय चार होते हैं। उत्तर प्रत्यय तिरेपन होते हैं, क्योंकि, यहां वैक्रियिक और वैक्रियिकमिश्र प्रत्ययोंका अभाव है। विशेष इतना है कि देवगतिचतुष्कके इक्यावन प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, औदारिक-मिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका अभाव है। एक समय सम्बन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्यय क्रमसे दश और अठारह होते हैं। सासादनसम्यग्दृष्टिके मूल प्रत्यय तीन और उत्तर प्रत्यय अड़तालीस होते हैं। वैक्रियिकचतुष्कके उत्तर प्रत्यय छ्यालीस होते हैं, क्योंकि, पूर्वोक्त प्रत्ययोंका ही अभाव रहता है। एक समय सम्बन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्यय क्रमसे दश और सत्तरह होते हैं। सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टिके मूलोघ प्रत्यय ही होते हैं। विशेषता यह है कि सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें वैक्रियिककाययोग और असंयत-सम्यग्दृष्टिमें वैक्रियिक और वैक्रियिकमिश्र योगोंको कम करना चाहिये। संयतासंयत गुणस्थानमें ओघ प्रत्यय ही होते हैं। इस प्रकार चार प्रकारके तिर्यंचोंके प्रत्ययोंकी प्ररूपणा की है। विशेषता यह है कि पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्यय कम करना चाहिये। असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये।

---

१ अप्रतावतः प्राक् ' णवरि देवगइचउक्कस्स ' इत्यधिकः पाठः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-अट्ठकसाय-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगलहुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्ताणं, सासणो णिरयगईए विणा तिगइ-संजुत्ताणं, सेसा देवगइसंजुत्ताणं बंधया। सादावेदणीय-हस्स-रदीओ मिच्छाइट्ठी सासणो च णिरय-गईए विणा तिगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं बंधंति। एवं जसकित्तिं पि बंधंति[1], विसेसाभावादो। असादावेदणीय-अजसकित्तीओ मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं। पुरिसवेदं मिच्छाइट्ठी सासणो च णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं बंधंति। समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जाणमेवं चेव वत्तव्वं। देवगदि-देव-गदिपाओग्गाणुपुव्वीओ सव्वे देवगइसंजुत्तं बंधंति। [वेउव्वियसरीर-] वेउव्वियसरीर-अंगोवंगाणि मिच्छाइट्ठी देव-णिरयगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं। थिर-सुभाणं सादभंगो। अथिर-असुहाणं असादभंगो। उच्चागोदं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं बंधंति।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, आठ कषाय, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच अन्तराय, इन प्रकृतियोंके मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त; सासादनसम्यग्दृष्टि नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त, और शेष जीव देवगतिसे संयुक्त बन्धक हैं। सातावेदनीय, हास्य और रतिको मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टि नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त, तथा शेष जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं। इसी प्रकार यशकीर्तिको भी बांधते हैं, क्योंकि, इसके कोई विशेषता नहीं है। असातावेदनीय और अयशकीर्तिको मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त, सासादन तीन गतियोंसे संयुक्त, और शेष जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं। पुरुषवेदको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त और शेष जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं। समचतुरस्र-संस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर और आदेय प्रकृतियोंका गतिसंयोग भी इसी प्रकार कहना चाहिये। देवगति और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको सब देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं। [वैक्रियिकशरीर] और वैक्रियिकशरीरांगोपांगको मिथ्यादृष्टि देव व नरकगतिसे संयुक्त तथा शेष देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं। स्थिर और शुभ प्रकृतियोंका गतिसंयोग सातावेदनीयके समान है। अस्थिर और अशुभ प्रकृतियोंका गतिसंयोग असातावेदनीयके समान है। उच्चगोत्रको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त, तथा शेष तिर्यंच देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं।

१ प्रतिषु 'जसकित्तिं हि बंधं पि' इति पाठः।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

सव्वासिं पयडीणं बंधस्स तिरिक्खा चेव सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-अट्ठकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो, सेसेसु तिविहो, धुवाभावादो । अवसेसाणं पयडीणं सादि-अद्धुवो ।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-मणुसाउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ६५ ॥

सुगममेदं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ६६ ॥

सब प्रकृतियोंके बन्धके तिर्यंच ही स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, आठ कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, स्त्रीवेद, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, चार संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, पांच संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय व नीचगोत्र, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ६५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ ६६ ॥

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

एदेण सुइदत्थाणं परूवणा कीरदे — थीणगिद्धितिय-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सर-णीचागोदाणं तिरिक्खगईए उदयवोच्छेदो णत्थि, सासणे बंधवोच्छेदो चेव । णवरि तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए[1] पुव्वं बंधो वोच्छिण्णो पच्छा उदओ, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदादो । अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, सासणसम्मादिट्ठिचरिमसमयम्हि उभयवोच्छेददंसणादो । मणुसाउ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं तिरिक्खगईए उदओ चेव णत्थि, विरोहादो । तेणेदासिं बंधोदयाणं पुव्वं पच्छा वोच्छेद-विचारो णत्थि । दुभग-अणादेज्जाणं पुव्वं बंधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, सासणे[2] वोच्छिण्ण-बंधाणं अजंदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेददंसणादो ।

थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-इत्थिवेद-चउसंठाण-पंचसंघडण-उज्जोव अप्पसत्थ-विहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं सोदय-परोदएहि बंधो । णवरि तिरिक्खजोणिणीसु इत्थि-वेदस्स सोदएणेव बंधो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-णीचागोदाणं सोदएणेव बंधो । मणुस्साउ-

---

इसके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं— स्त्यानगृद्धि आदिक तीन, स्त्रीवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, औदारिकशरीर, चार संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, पांच संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुस्वर और नीचगोत्र, इनका तिर्यग्गतिमें उदयव्युच्छेद नहीं है, सासादनगुणस्थानमें केवल बन्धव्युच्छेद ही है। विशेष इतना है कि तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, पश्चात् उदय; क्योंकि [सासादनगुणस्थानमें बन्धके नष्ट हो जानेपर तत्पश्चात्] असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उदयका व्युच्छेद होता है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टिके चरम समयमें दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है । मनुष्यायु और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका तिर्यग्गतिमें उदय ही नहीं है, क्योंकि, वहां इनके उदयका विरोध है । इसी कारण इनके बन्ध और उदयके पूर्व या पश्चात् व्युच्छेद होनेका विचार नहीं है । दुर्भग और अनादेयका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, पश्चात् उदय; क्योंकि सासादनगुणस्थानमें इनके बन्धके नष्ट हो जानेपर असंयत-सम्यग्दृष्टिमें उदयका व्युच्छेद देखा जाता है ।

स्त्यानगृद्धि आदिक तीन, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, चार संस्थान, पांच संहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर और अनादेय, इनका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है । किन्तु विशेष इतना है कि तिर्यंच योनिमतियोंमें स्त्रीवेदका स्वोदयसे ही बन्ध होता है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति और नीचगोत्रका स्वोदयसे ही बन्ध होता है ।

---

१ प्रतिषु ' तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' सासणो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदएणेव बंधो। ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंगाणं सोदय-परोदएण बंधो, विग्गहगदीए उदयाभावादो। तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वीए वि सोदय-परोदएण बंधो, विग्गहगदीए विणा अण्णत्थ उदयाभावादो।

थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो। इत्थिवेद-मणुसगइ-चउसंठाण-पंचसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। तिरिक्खाउ-मणुस्साउआणं णिरंतरो बंधो, जहण्णेण वि एगसमयबंधाणुवलंभादो। तिरिक्खगइ-ओरालियदुग-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो, तेउ-वाउकाइयाणं तेउ-वाउकाइय-सत्तमपुढवीणेरइएहिंतो आगंतूण पंचिंदियतिरिक्ख-तप्पज्जत्त[1]-जोणिणीसु उप्पण्णाणं सणक्कुमारादि[2]-देव-णेरइएहिंतो तिरिक्खेसुप्पण्णाणं च णिरंतरबंधदंसणादो। णवरि सासणे सांतरो चेव, तस्स तेउ-वाउकाइएसु अभावादो सत्तमपुढवीदो तग्गुणेण णिग्गमणाभावादो च। ओरालियदुगस्स

मनुष्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदयसे बन्ध होता है। औदारिकशरीर और औदारिकशरीरांगोपांगका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इनका उदय नहीं रहता। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका भी स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिको छोड़कर अन्यत्र उसके उदयका अभाव है।

स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी हैं। स्त्रीवेद, मनुष्यगति, चार संस्थान, पांच संहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर और अनादेय, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धका विश्राम देखा जाता है। तिर्यगायु और मनुष्यायुका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, जघन्यसे भी इनका एक समय बन्ध नहीं पाया जाता। तिर्यग्गति, औदारिकद्विक, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्र, इनका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तेजकायिक व वायुकायिकोंके तथा तेजकायिक, वायुकायिक व सप्तम पृथिवीके नारकियोंमेंसे आकर पंचेन्द्रिय तिर्यंच और उसके पर्याप्त व योनिमतियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके, और सनत्कुमारादि देव व नारकियोंमेंसे तिर्यंचोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके भी इनका निरन्तर बन्ध देखा जाता है। विशेषता यह है कि सासादन गुणस्थानमें सान्तर ही बन्ध होता है, क्योंकि, वह गुणस्थान तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमें होता नहीं है, तथा सप्तम पृथिवीसे इस गुणस्थानके साथ निर्गमन भी नहीं होता। औदारिकद्विकका

---

१ काप्रतौ '-तिरिक्खसपज्जत्त-' अ-आप्रत्योः '-तिरिक्खतसपज्जत्त-' इति पाठः।

२ प्रतिषु 'उप्पण्णाणं ओरालियसरीरअंगोवंग सणक्कुमारादि-' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सांतर-णिरंतरो ।

एदासिं पच्चया सव्वगुणेसु पंचट्ठाणियपयडिपच्चएहि तुल्ला । णवरि तिरिक्ख-मणुस्साउआणं मिच्छाइट्ठिम्हि कम्मइयपच्चओ णत्थि । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिणीसु ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया णत्थि । चउव्विहेसु तिरिक्खेसु सासणे ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया णत्थि, अपज्जत्तकाले तस्साउबंधाभावादो ।

थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइ-संजुत्तं बंधओ । इत्थिवेदं[1] णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं, मणुसाउ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीओ मणुसगइसंजुत्तं, तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणि तिरिक्खगइसंजुत्तं, ओरा-लियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, अप्पसत्थ[2]-विहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि देवगदीए विणा तिगइसंजुत्तं बंधंति । एदासिं पयडीणं बंधस्स तिरिक्खा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो । सासणे दुविहो, अणादि-धुवा-

सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

इन प्रकृतियोंके प्रत्यय सब गुणस्थानोंमें पंचस्थानिक प्रकृतियोंके समान हैं । विशेषता केवल यह है कि तिर्यगायु और मनुष्यायुका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें कार्मण प्रत्यय नहीं होता । पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंमें औदारिकमिश्र व कार्मण प्रत्यय नहीं होते । चार प्रकारके तिर्यंचोंमें सासादन गुणस्थानमें औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्यय नहीं होते, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें उसके आयुका बन्ध नहीं होता ।

स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कके मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त और सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त बन्धक हैं । स्त्रीवेदको नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त, मनुष्यायु एवं मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको मनुष्यगतिसे संयुक्त; तिर्यगायु, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको तिर्यग्गतिसे संयुक्त; औदारिकशरीर, चार संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग और पांच संहननको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त; तथा अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रको देवगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं । इन प्रकृतियोंके बन्धक तिर्यंच स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबंधिचतुष्कका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अनादि और ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका

१ प्रतिषु ' इत्थिवेद- ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' अपज्जत्त- ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावादो । सेसपयडीणं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-णिरयाउ--णिरयगइ--एइंदिय--बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाण--असंपत्तसेवट्टसंघडण-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ६७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ६८ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— मिच्छत्त-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, मिच्छाइट्ठिं मोत्तूणेदासिं उवरिमेसु उदयाभावादो[1] । णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं बंधवोच्छेदो चेव णोदयस्स, सव्वगुणेसुदयदंसणादो । णिरयाउ-णिरयगइपाओग्गापुव्वीणं तिरिक्खगदीए उदयाभावादो पुव्वं पच्छा बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि ।

बन्ध सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि वे अध्रुवबन्धी हैं ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, नारकायु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकाशरीरसंहनन, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ६७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष तिर्यंच अबन्धक हैं ॥ ६८ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— मिथ्यात्व, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इनका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि मिथ्यादृष्टि गुणस्थानको छोड़कर उपरिम गुणस्थानोंमें इन प्रकृतियोंके उदयका अभाव है । नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, इनके बन्धका ही व्युच्छेद है, उदयका नहीं; क्योंकि सब गुणस्थानोंमें इनका उदय देखा जाता है । नारकायु और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका तिर्यग्गतिमें उदय न होनेसे इनके पूर्व या पश्चात् बन्धोदयव्युच्छेद होनेका विचार नहीं है ।

---

१ अ-आप्रत्योः ' उदयभावादो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छत्तस्स सोदएणेव, णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदएणेव, सेसाणं सोदय-परोदएहि बंधो। णवरि पंचिंदियतिरिक्खतियम्मि एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं परोदएण बंधो । पंचिंदियतिरिक्ख-[पज्जत्त]-जोणिणीसु अपज्जत्तस्स परोदएण बंधो । जोणिणीसु णवुंसयवेदस्स परोदएण बंधो । मिच्छत्त-णिरयाऊणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधस्सुवरमाभावादो। सेसपयडीणं बंधो सांतरो, एगसमएण बंधवरमदंसणादो । मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-णिरयगइ-णिरयगइ-पाओग्गाणुपुव्वी-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं तेवण्ण पच्चया । जोणिणीसु एक्कावण्ण पच्चया । णिरयाउअस्स तिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तएसु एक्कावण्ण पच्चया । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु एगूणवंचास पच्चया । मिच्छत्तं चउगइसंजुत्तं, णवुंसयवेद-हुंडसंठाणाणि तिगइसंजुत्तं, णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीओ णिरयगइसंजुत्तं, एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणे तिरिक्खगइसंजुत्तं, असंपत्तसेवट्टसंघडणमपज्जत्तं च तिरिक्ख-मणुसगइ-संजुत्तं मिच्छाइट्ठी बंधंति । एदासिं पयडीणं बंधस्स तिरिक्खा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं

मिथ्यात्वका स्वोदयसे ही; नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदयसे ही; तथा शेष प्रकृतियोंका स्वोदय-परोदयसे ही बन्ध होता है। विशेषता यह है कि पंचेन्द्रियादिक तीन प्रकारके तिर्यंचोंमें एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण प्रकृतियोंका परोदयसे बन्ध होता है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और योनिमतियोंमें अपर्याप्तका परोदयसे बन्ध होता है। योनिमतियोंमें नपुंसकवेदका परोदयसे बन्ध होता है। मिथ्यात्व और नारकायुका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धका विश्राम नहीं होता। शेष प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धका विश्राम देखा जाता है।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, नरकगति, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इनके तिरेपन प्रत्यय होते हैं। योनिमतियोंमें इक्यावन प्रत्यय होते हैं। नारकायुके तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच और पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तोंमें इक्यावन प्रत्यय होते हैं। पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंमें उनंचास प्रत्यय होते हैं।

मिथ्यादृष्टि तिर्यंच मिथ्यात्वको चारों गतियोंसे संयुक्त, नपुंसकवेद व हुण्डसंस्थानको तीन गतियोंसे संयुक्त; नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको नरकगतिसे संयुक्त; एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण, इनको तिर्यग्गतिसे संयुक्त; तथा असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन और अपर्याप्तको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। इन प्रकृतियोंके बन्धके तिर्यंच

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

च सुगमं । मिच्छत्तस्स सादिओ अणादिओ धुवो अद्धुवो त्ति चउव्विहो बंधो । सेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

अपच्चक्खाणकोध-माण-माया-लोभाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ६९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ७० ॥

एदेण संगहिदत्थाणं पयासो कीरदे — एदासिं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, दोण्हमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि विणासुवलंभादो । सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्ता । णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । पच्चया तिरिक्खाणं पंचट्ठाणियपयडिपच्चएहि तुल्ला[1] । मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणसम्मादिट्ठी तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी देवगइसंजुत्तं

स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । मिथ्यात्वका सादिक, अनादिक, ध्रुव और अध्रुव चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया और लोभका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ६९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ७० ॥

इस सूत्रके द्वारा संगृहीत अर्थोंका प्रकाश करते हैं— इन चारों प्रकृतियोंका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें दोनोंका विनाश पाया जाता है । इनका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी हैं । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवबन्धी हैं । इनके प्रत्यय तिर्यंचोंके पंचस्थानिक प्रकृतियोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि तिर्यंच इन्हें चारों गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त, तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि व असंयतसम्यग्दृष्टि देवगतिसे संयुक्त

---

१ प्रतिषु ' पंचट्ठाणाणिय- इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधंति । तिरिक्खा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो । सेसगुणेसु तिविहो, धुवाभावादो ।

देवाउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ७१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ७२ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— बंधोदयाणमेत्थ पुव्वं पच्छा वोच्छेदविचारो णत्थि, तिरिक्खगईए देवाउअस्स उदयाभावादो । परोदएण बंधो, बंधोदयाणमक्कमेण उत्तिविरोहादो । णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । तिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं जहाकमेण एक्कावण्ण-छादाल-बादाल-सत्ततीसपच्चया होंति । जोणिणीसु एगूणवंचास-चउवेदालीस-चालीस-पंचतीस-पच्चया । सेसं सुगमं । सव्वे देवगइसंजुत्तं बंधंति । तिरिक्खा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । देवाउअस्स बंधो सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

बांधते हैं । तिर्यंच जीव इनके स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध है, क्योंकि, उनमें ध्रुव बन्धका अभाव है ।

देवायुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ७१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष तिर्यंच अबन्धक हैं ॥ ७२ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— यहां बन्ध और उदयका पूर्व या पश्चात् व्युच्छेद होनेका विचार नहीं है, क्योंकि, तिर्यग्गतिमें देवायुके उदयका अभाव है । देवायुका परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, उसके बन्ध और उदय दोनोंके एक साथ अस्तित्वका विरोध है । बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे बन्धविश्रामका अभाव है । तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच और पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोंमें मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके यथाक्रमसे इक्यावन, छयालीस, ब्यालीस और सैंतीस प्रत्यय होते हैं । योनिमतियोंमें उनंचास, चवालीस, चालीस और पैंतीस प्रत्यय होते हैं । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है । सब तिर्यंच देवायुको देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं । तिर्यंच स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । देवायुका बन्ध सर्वत्र सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी प्रकृति है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीर-अंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुगलहुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदाउज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुगभ-[दुभग-] सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ७३ ॥

सुगमं ।

सव्वे एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ ७४ ॥

थीणगिद्धितिय-मणुस्साउ-मणुस्सगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंड-

---

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंमें पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक तैजस व कार्मण शरीर, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गति व मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, प्रत्येक, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, [दुर्भग], सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीचगोत्र, ऊंचगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ७३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

ये सब पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ ७४ ॥

स्त्यानगृद्धित्रय, मनुष्यायु, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संठाणविरहिदपंचसंठाण–असंपत्तसेवट्टसंघडणविरहिदपंचसंघडण–मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी–पर–घादुस्सासादावुज्जोव-दोविहायगइ-थावर-सुहुम-पज्जत्त-साहारण-सुभग-सुस्सर-दुस्सर–आदेज्ज–-जसकित्ति-उच्चागोद-इत्थि-पुरिसवेदाणमपज्जत्तएसु[1] उदयाभावादो अवसेसाणं पयडीणमुदय-वोच्छेदाभावादो च पुव्वं पच्छा बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-मिच्छत्त-णवुंसयवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-अपज्जत्त-थिराथिर–सुभासुभ-दूभग–अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइय-णीचागोदाणं सोदएणेव बंधो । णिद्दा-पयला-सादा-साद-सोलसकसाय-छण्णोकसायाणं सोदय-परोदएणेव बंधो, अद्धुवोदयत्तादो । ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडण-उवघाद-पत्तेयसरीराणं सोदय-परोदएण बंधो, विग्गहगदीए एदासिमुदयाभावादो । तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वीए वि सोदय-परोदएण बंधो, विग्गहगदीए चेव उदयादो। अण्णपयडीणं परोदएणेव बंधो, एत्थ एदासिमुदयाभावादो[2] ।

जाति, हुण्डसंस्थानसे रहित पांच संस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहननसे रहित पांच संहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, स्थावर, सूक्ष्म, पर्याप्त, साधारण, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र, स्त्रीवेद और पुरुषवेद, इनका अपर्याप्तोंमें उदय न होनेसे तथा शेष प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद न होनेसे यहां बन्ध और उदयके पूर्व या पश्चात् व्युच्छेद होनेका विचार नहीं है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, अपर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति, निर्माण, पांच अन्तराय और नीचगोत्र, इनका स्वोदयसे ही बन्ध होता है। निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय और छह नोकषाय, इनका स्वोदय-परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं। औदारिकशरीर, हुण्डसंस्थान, औदारिक-शरीरांगोपांग, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, उपघात और प्रत्येकशरीर, इनका स्वोदय-परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव है। तिर्यग्गति-प्रायोग्यानुपूर्वीका भी स्वोदय-परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, उसका विग्रहगतिमें ही उदय रहता है। अन्य प्रकृतियोंका परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहां उनके उदयका अभाव है।

१ प्रतिषु ' -पुरिसवेदा णवुंसयपज्जत्तएसु ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' रासिमुदयाभावादो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुस्साउ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो एगसमएण बंधुवरमाभावादो च । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो, तेउक्काइय-वाउक्काइएहिंतो पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएसुप्पण्णाणमंतोमुहुत्तकालं णिरंतरं बंधुवलंभादो, अण्णत्थ सांतरत्तदंसणादो । अवसेसाणं पयडीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमुवलंभादो ।

एत्थ सव्वकम्माणं बादाल पच्चया, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-इत्थि-पुरिसोरालिय-मण-वचिजोगाणमभावादो । णवरि तिरिक्ख-मणुस्साउआणमिगिदालीस पच्चया, कम्मइयकायजोगेण सह चोद्दसण्णं पच्चयाणमभावादो । सेसं सुगमं ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदाउज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणाणि तिरिक्खगइसंजुत्तं बज्झंति । मणुस्साउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदाणि मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति । कुदो ? साभावियादो । अवसेसाओ पयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति । सव्वासिं पयडीणं बंधस्स

पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, मनुष्यायु, औदारिक तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं, तथा एक समयमें इनका बन्धविश्राम भी नहीं होता । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमेंसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्मुहूर्त काल तक इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है, तथा अन्यत्र सान्तर बन्ध देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें उनके बन्धका विश्राम पाया जाता है ।

यहां सब कर्मोंके ब्यालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, औदारिककाययोग, चार मन और चार वचन योग प्रत्ययोंका अभाव है । विशेषता यह है कि तिर्यगायु और मनुष्यायुके इकतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, कार्मण काययोगके साथ यहां चौदह प्रत्ययोंका अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है ।

तिर्यगायु, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तिर्यग्गतिप्रायाग्योनुपूर्वी, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण, ये प्रकृतियां तिर्यंचगतिसे संयुक्त बंधती हैं । मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्र प्रकृतियां मनुष्यगतिसे संयुक्त बंधती हैं । इसका कारण स्वभाव ही है । शेष प्रकृतियां तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बंधती हैं । सब प्रकृतियोंके बन्धके तिर्यंच स्वामी हैं ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

तिरिक्खा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो ।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु ओघं णेयव्वं जाव तित्थयरेत्ति । णवरि विसेसो, बेट्ठाणे अपच्चक्खाणावरणीयं जधा पंचिंदियतिरिक्खभंगो ॥ ७५ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— ओघम्मि जासिं पयडीणं जे बंधया परूविदा ते चेव तासिं पयडीणं बंधया एत्थ वि होंति त्ति ओघमिदि उत्तं । सव्वट्ठाणेसु ओघत्ते संपत्ते तण्णिसेहट्ठं बेट्ठाणियपयडीणं अपच्चक्खाणावरणीयस्स च पंचिंदियतिरिक्खभंगो त्ति परूविदं । एदेण देसामासिएण सुइदत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं गुणगयबंधसामित्तेण, बंधोदयाणं पुव्वं पच्छा वोच्छेद-विचारेण, सोदय-परोदय-सांतर-णिरंतरबंधविचारणाए, बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सादि[१]-आदि-

---

बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवबन्धी हैं ।

मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त एवं मनुष्यनियोंमें तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान जानना चाहिये । विशेषता इतनी है कि द्विस्थानिक प्रकृतियों और अप्रत्याख्याना-वरणीयकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके समान है ॥ ७५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— ओघमें जिन प्रकृतियोंके जो बन्धक कहे गये हैं वे ही उन प्रकृतियोंके बन्धक यहां भी हैं, इसीलिये सूत्रमें 'ओघके समान' ऐसा कहा है । सब स्थानोंमें ओघत्वके प्राप्त होनेपर उसके निषेधार्थ 'द्विस्थानिक प्रकृतियों और अप्रत्याख्यानावरणीयकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके समान है' ऐसा कहा है । इस देशामर्शक सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— पांच ज्ञाना-वरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका गुणस्थानगत बन्धस्वामित्व, बन्ध और उदयका पूर्व या पश्चात् व्युच्छेद होनेका विचार, स्वोदय-परोदय बन्धका विचार, सान्तर-निरन्तर बन्धका विचार, बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान

---

१ अ-आप्रत्योः 'बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं सादि-'; काप्रतौ 'बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं सादि' इति पाठः । मप्रतौ स्वीकृतपाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विचारेसु वि ओघादो णत्थि भेदो । जत्थत्थि तं परूवेमो— मिच्छाइट्ठिस्स तेवण्ण पच्चया, सासणे अट्ठेत्तालीस, सम्मामिच्छादिट्ठिम्हि बाएत्तालीस, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि चोदालीस, वेउव्वियदुगभावादो । मणुसिणीसु एवं चेव । णवरि सव्वगुणट्ठाणेसु पुरिस-णवुंसयवेदा, असंजदसम्माइट्ठिम्हि ओरालियमिस्स-कम्मइया, अप्पमत्ते आहारदुगं णत्थि । मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तं मणुसगइसंजुत्तं च बंधंति ।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिचउक्क-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-मणुसाउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि त्ति एदाओ एत्थ बेट्ठाणपयडीओ । ओघबेट्ठाणपयडीहिंतो जेण मणुस्साउ-मणुसदुग-ओरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणेहि अधियाओ तेण पंचिंदियतिरिक्खबेट्ठाणभंगो त्ति वुत्तं ।

एत्थ थीणगिद्धितिय-इत्थिवेद-मणुस्साउ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं पुव्वं बंधो वोच्छिण्णो पच्छा उदओ । अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छि-

---

तथा सादि आदि बन्धके विचारोंमें भी ओघसे कोई भेद नहीं है । जहां भेद है उसे कहते हैं— मिथ्यादृष्टिके तिरेपन प्रत्यय, सासादनमें अड़तालीस, सम्यग्मिथ्यादृष्टिमें ब्यालीस और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें चवालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, यहां वैक्रियिक व वैक्रियिकमिश्र प्रत्यय नहीं होते । मनुष्यनियोंमें इसी प्रकार प्रत्यय होते हैं । विशेष इतना है कि सब गुणस्थानोंमें पुरुष व नपुंसक वेद, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिश्र व कार्मण, तथा अप्रमत्त गुणस्थानमें आहारद्विक प्रत्यय नहीं होते । मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त और उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं ।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, चार संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, पांच संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, ये यहां द्विस्थानिक प्रकृतियां हैं । ओघद्विस्थान प्रकृतियोंसे चूंकि यहां मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकद्विक और वज्रर्षभसंहनन प्रकृतियोंसे अधिक हैं, अत एव ' पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंकी द्विस्थान प्रकृतियोंके समान प्ररूपणा है ' ऐसा कहा है ।

यहां स्त्यानगृद्धित्रय, स्त्रीवेद, मनुष्यायु, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, चार संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, पांच संहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर और अनादेय, इनका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, पश्चात् उदय । अनन्तानु-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्जंति, सासणे दोण्णमुच्छेददंसणादो । तिरिक्खाउ- [तिरिक्खगइ-] तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं मणुस्सेसुदयाभावादो बंधोदयाणं पुव्वं पच्छा वोच्छेदविचारो णत्थि । णीचागोदस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, बंधे सासणम्मि णट्ठे संते पच्छा संजदासंजदम्मि उदयवोच्छेददंसणादो ।

मणुस्साउ-मणुस्सगईओ सोदएणेव बंधंति । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं परोदएणेव, मणुस्सेसु एदासिमुदयाभावादो । अवसेसाओ पयडीओ सोदय-परोदएण बज्झंति, अद्धुवोदयत्तादो काओ विग्गहगदीए उदयाभावादो का वि तत्थेवुदयादो ।

थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । [मणुस्साउ-] तिरिक्खाउआणं पि णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंगाणं सांतर-णिरंतरो, सव्वत्थ सांतरस्स एदासिं बंधस्स आणदादि-

बन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है । तिर्यगायु, [तिर्यग्गति], तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनका चूंकि मनुष्योंमें उदय होता नहीं है अतः इनके बन्ध और उदयके पूर्व या पश्चात् व्युच्छेद होनेका यहां विचार नहीं है । नीचगोत्रका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनमें बन्धके नष्ट हो जानेपर पश्चात् संयतासंयतमें उदयका व्युच्छेद देखा जाता है ।

मनुष्यायु और मनुष्यगति स्वोदयसे ही बंधती हैं । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत प्रकृतियां परोदयसे ही बंधती हैं, क्योंकि, मनुष्योंमें इनके उदयका अभाव है । शेष प्रकृतियां स्वोदय-परोदयसे बंधती हैं, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी हैं तथा किन्हींके विग्रहगतिमें उदयका अभाव है तो किन्हींका वहां ही उदय रहता है ।

स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं । [मनुष्यायु] और तिर्यगायुका भी निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धका विश्राम नहीं होता । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर और औदारिकशरीरांगोपांगका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इनके बन्धके सर्वत्र सान्तर होनेपर भी आनतादिक देवोंमेंसे मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्मुहूर्त

१ अ-काप्रत्योः ' ओरालियसरीर ' इत्येतन्नास्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवेहिंतो मणुस्सेसुप्पण्णाणमंतोमुहुत्तकालं णिरंतरत्तुवलंभादो। अवसेसाओ सांतरं बज्झंति, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो।

एदासिं पच्चया दोसु वि गुणट्ठाणेसु तिरिक्खबेट्ठाणियपयडिपच्चएहि तुल्ला। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कं च मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, इत्थिवेदं दो वि णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं, तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणि तिरिक्खगइसंजुत्तं, मणुस्साउ-मणुस्सगइ-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वीओ मणुसगइसंजुत्तं, ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि देवगईए विणा मिच्छाइट्ठी तिगइसंजुत्तं, सासणो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधइ त्ति।

सव्वासिं पयडीणं बंधस्स मणुसा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं सादि-आदिविचारो वि ओघतुल्लो।

णिद्दा-पयलाणं पुव्वंपच्छाबंधोदयवोच्छेद-सोदयपरोदय-सांतरणिरंतरं बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं सादि-आदिबंधपरिक्खा ओघतुल्ला। पच्चया मणुसगईए परूविदपच्चयतुल्ला। मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणसम्मादिट्ठी तिगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं बंधंति।

....

काल तक निरन्तरता पायी जाती है। शेष प्रकृतियां सान्तर बंधती हैं, क्योंकि, एक समयमें उनके बन्धका विश्राम देखा जाता है।

इनके प्रत्यय दोनों ही गुणस्थानोंमें तिर्यंचोंकी द्विस्थानिक प्रकृतियोंके प्रत्ययोंके समान हैं। स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कको मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त, स्त्रीवेदको मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि दोनों ही नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त; तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको तिर्यग्गतिसे संयुक्त; मनुष्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको मनुष्यगतिसे संयुक्त; औदारिकशरीर, चार संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग और पांच संहनन, इनको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त; तथा अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रको मिथ्यादृष्टि देवगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त व सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति एवं मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। सब प्रकृतियोंके बन्धके मनुष्य स्वामी हैं। बन्धाध्वान बन्धविनष्टस्थान और सादि आदिकका विचार भी ओघके समान है।

निद्रा और प्रचलाका पूर्व या पश्चात् होनेवाला बन्धोदयव्युच्छेद, स्वोदय-परोदयबन्ध, सान्तर-निरन्तर बन्ध, बन्धाध्वान, बन्धविनष्टस्थान और सादि-आदि बन्धकी परीक्षा ओघके समान है। प्रत्यय मनुष्यगतिमें कहे हुए प्रत्ययोंके समान हैं। मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त, और शेष गुणस्थानवर्ती देव-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणुस्सा सामी ।

सादावेदणीयपरिक्खा वि मूलोघतुल्ला । णवरि पच्चयभेदो सामिभेदो च णायव्वो । मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सादावेदणीयं णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तं बंधंति । एवं सव्वपदेसु पच्चयसंजुत्तसामित्तभेदो चेव । सो वि सुगमो । अण्णत्थ मूलोघं पेच्छिदूण ण कोच्छि भेदो अत्थि त्ति ण परूविज्जदे । णवरि पंचिंदिय-तस-बादराणं बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि सोदओ सांतर-णिरंतरो । मणुसपज्जत्तएसु अपज्जत्तबंधो परोदओ । एवं मणुसिणीसु वि वत्तव्वं । णवरि उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदओ बंधो । पुरिस-णवुंसयवेदाणं सव्वत्थ परोदओ । इत्थिवेदस्स सोदओ । खवगसेडीए तित्थयरस्स णत्थि बंधो, इत्थिवेदेण सह खवगसेडिमारोहणे संभवाभावादो ।

मणुसअपज्जत्ताणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो ॥ ७६ ॥

एदं बज्झमाणपयडिसंखाए समाणत्तं पेक्खिय पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो[1] त्ति वुत्तं । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे भेदो उवलब्भदे । तं जहा— पंचणाणावरणीय-णवदंसणा-

गतिसे संयुक्त बांधते हैं । मनुष्य स्वामी हैं ।

सातावेदनीयकी परीक्षा भी मूलोघके समान है । विशेष यह है कि प्रत्ययभेद व स्वामिभेद जानना चाहिये । मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि सातावेदनीयको नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं । इस प्रकार सब पदोंमें प्रत्ययसंयुक्त स्वामित्वभेद ही है । वह भी सुगम है । अन्यत्र मूलोघकी अपेक्षा और कुछ भेद नहीं है, इसीलिये उसकी यहां प्ररूपणा नहीं की जाती । विशेषता यह है कि पंचेन्द्रिय, त्रस और बादरका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय और सान्तर-निरन्तर होता है । मनुष्य पर्याप्तकोंमें अपर्याप्तका बन्ध परोदयसे होता है । इसी प्रकार मनुष्यनियोंमें भी कहना चाहिये । विशेषता केवल यह है कि उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीर, इनका असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय बन्ध होता है । पुरुषवेद और नपुंसकवेदका सर्वत्र परोदय बन्ध होता है । स्त्रीवेदका स्वोदय बन्ध होता है । क्षपकश्रेणीमें तीर्थंकरका बन्ध नहीं होता, क्योंकि, स्त्रीवेदके साथ क्षपकश्रेणी चढ़नेकी सम्भावना नहीं है ।

मनुष्य अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है ॥ ७६ ॥

यह बध्यमान प्रकृतियोंकी [१०९] संख्यासे समानताकी अपेक्षा करके 'पंचेन्द्रियतिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है' ऐसा कहा गया है । पर्यायार्थिक नयका अवलंबन करनेपर भेद पाया जाता है । वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता

१ प्रतिषु 'पेक्खिय ओघभंगो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोलसकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ तिरिक्खगइ-मणुसगइ-एइंदिय-बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदाउज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साधारणसरीर-[थिरा-]थिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणि त्ति एदाओ एत्थ बज्झमाणपयडीओ। एत्थ थीणगिद्धितिय-इत्थि-पुरिसवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाणविरहिदपंचसंठाण-असंपत्तसेवट्टवदिरित्तपंचसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-परघादुस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगदि-थावर-सुहुम-पज्जत्त-साहारण-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-उच्चागोदाणं उदयाभावादो बंधोदयाणं संतासंताणं सण्णिकासाभावादो पुव्वं पच्छा बंधोदयवोच्छेदपरिक्खा ण कीरदे। सेसपयडीणं पि बंधस्सेव एत्थ उदयस्स वोच्छेदाभावादो ण कीरदे।

पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-मिच्छत्त-णवुंसयवेद-मणुस्साउ-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइय-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-अपज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-दुभग-

---

व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय व पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीचगोत्र, ऊंचगोत्र और पांच अन्तराय, ये यहां बध्यमान प्रकृतियां हैं। इनमें स्त्यानगृद्धित्रय, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रियजाति, हुण्डसंस्थानसे रहित पांच संस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहननको छोड़कर शेष पांच संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, स्थावर, सूक्ष्म, पर्याप्त, साधारण, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, यशकीर्ति और उच्चगोत्र, इनका उदयाभाव होनेसे विद्यमान बन्ध और अविद्यमान उदयमें समानता न होनेके कारण पूर्व या पश्चात् होनेवाले बन्धोदयव्युच्छेदकी परीक्षा नहीं की जाती है। शेष प्रकृतियोंके भी बन्धके समान यहां उदयका व्युच्छेद न होनेसे उक्त परीक्षा नहीं की जाती।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, मनुष्यायु, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, त्रस,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-णीचागोद-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो । णिद्दा-पयला-सादासाद-वीसकसाय-ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडण-मणुसगइ-पाओग्गाणुपुव्वि-उवघाद-पत्तेयसरीराणं सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्तादो, कासिं च विग्गहगदीए उदयाभावादो एक्किस्से विग्गहगदीए चेव उदयत्तादो । अवसेसाओ[1] परोदएणेव बज्झंति ।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुस्साउ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ बंधेण धउव्वियादो[2] । अवसेसाणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधस्स विरामदंसणादो । [तिर्यग्गइ-तिर्यग्गइपाओग्गाणुपुव्वी-] णीचागोदाणं बंधस्स सांतर-णिरंतरत्तं किण्ण उच्चदे ? ण, तेउ-वाउक्काइयाणं सत्तमपुढवीणेरइयाणं व मणुसेसुप्पत्तीए अभावादो ।

बादर, अपर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति, निर्माण, नीचगोत्र और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है । निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, वीस कषाय, औदारिकशरीर, हुण्डसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात और प्रत्येकशरीर, इनका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं; तथा किन्हींका विग्रहगतिमें उदय नहीं रहता और एकका विग्रहगतिमें ही उदय रहता है । शेष प्रकृतियां परोदयसे ही बंधती हैं ।

पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, मनुष्यायु, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, बन्धकी अपेक्षा ये प्रकृतियां ध्रुव हैं । शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें उनके बन्धका विश्राम देखा जाता है ।

शंका—[तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और] नीचगोत्रके बन्धमें सान्तर-निरन्तरता क्यों नहीं कहते ?

समाधान — नहीं कहते, क्योंकि, तेजकायिक व वायुकायिक जीवोंकी सातवीं पृथिवीके नारकियोंके समान मनुष्योंमें उत्पत्तिका अभाव है ।

---

१ अ-काप्रत्योः ' अवसेसट्ठाओ '; आप्रतौ ' अवसेसद्धाओ ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' दउव्वियादो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिरिक्खअपज्जत्ताणं व पच्चया परूवेदव्वा। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणसरीराणि तिरिक्खगइसंजुत्तं बज्झंति। मणुस्साउ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदाणि मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति। अवसेसाओ पयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति। मणुस्सा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं सादिआदिपरूवणा च पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तपरूवणाए तुल्ला।

देवगदीए देवेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसाणुपुव्वि-अगुरुअलहुव उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ७७ ॥

प्रत्ययोंकी प्ररूपणा तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान करना चाहिये। तिर्यगायु, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणशरीरको तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं। मनुष्यायु, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रको मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। शेष प्रकृतियोंको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। मनुष्य स्वामी हैं। बन्धाध्वान, बन्धविनष्टस्थान और सादि आदिकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी प्ररूपणाके समान है।

देवगतिमें देवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ७७ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुगममेदं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ ७८ ॥

देसामासियसुत्तमेदं, तेणेदेण सूइदत्थपरूवणं कस्सामो— मणुसगइ-ओरालिय-सरीर-अंगोवंग[1]-वज्जरिसहसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अजसकित्तीणमुदयाभावादो बंधोदयाणं पुव्वं पच्छा वोच्छेदपरिक्खा ण कीरदे । ण सेसाणं पि, बंधस्सेव उदयस्स वोच्छेदाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस फास-अगुरुवलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं सोदएणेव बंधो । णिद्दा-पयला-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्तादो[2] । समचउरससंठाण-

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ ७८ ॥

यह सूत्र देशामर्शक है, इसलिये इससे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं— मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और अयशकीर्ति, इनके उदयका अभाव होनेसे बन्ध और उदयके पूर्व या पश्चात् व्युच्छेद होनेकी परीक्षा नहीं की जाती है। शेष प्रकृतियोंकी भी वह परीक्षा नहीं की जाती, क्योंकि, बन्धके समान उनके उदयके व्युच्छेदका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका स्वोदयसे ही बन्ध होता है । निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्सा, इनका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । समचतुरस्रसंस्थान, प्रत्येकशरीर और उपघातका स्वोदय-

१ काप्रतौ ' ओरालियसरीरंगोवंग ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' अद्धुवो अद्धुवोदयत्तादो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्तेयसरीर-उवघादाणं सोदय-परोदएण बंधो, विग्गहगदीए उदयाभावादो। परघादुस्सास-पसत्थविहायगदि-सुस्सराणं सोदय परोदएण बंधो, अपज्जत्तकाले उदयाभावे वि बंधदंसणादो। णवरि सम्मामिच्छाइट्ठिस्स एदासिं सोदएण बंधो। मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुस्साणुपुव्वी-अजसकित्तीणं परोदएणेव बंधो, तत्थेदेसिमुदयविरोहादो।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-उस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, देवगदीए बंधविरोहाभावादो। सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुभासुभ-जसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधविरामुवलंभादो। पुरिसवेद-समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीसु सांतरो बंधो, एगसमएण बंधविरामदंसणादो। सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीसु णिरंतरो, तत्थ पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। पंचिंदियजादि-मणुस्सगइ-मणुस्साणुपुव्वी-ओरालियसरीरअंगोवंग-तसाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो। सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। णवरि

परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव है। परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वर, इनका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें इनके उदयका अभाव होनेपर भी बन्ध देखा जाता है। विशेषता यह है कि सम्यग्मिथ्यादृष्टिके इनका स्वोदयसे बन्ध होता है। मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, मनुष्यानुपूर्वी और अयशकीर्ति, इनका परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, देवोंमें इनके उदयका विरोध है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, देवगतिमें इनके निरन्तर बन्धका विरोध नहीं है। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और यशकीर्ति, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धका विश्राम पाया जाता है। पुरुषवेद, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभसंहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र, इनका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धका विश्राम देखा जाता है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। पंचेन्द्रिय जाति, मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, औदारिकशरीरांगोपांग और त्रस, इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है। सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। विशेष इतना है कि मनुष्यद्विकका सासादन गुणस्थानमें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणुअदुगस्स सासणम्मि सांतर-णिरंतरो ।

मिच्छाइट्ठिस्स बावण्ण, सासणस्स सत्तेत्तालीस, असंजदसम्मादिट्ठिस्स तेत्तालीस देवेसु पच्चया; ओघपच्चएसु णवुंसयवेदोरालियदुगाणमभावादो । सम्मामिच्छादिट्ठिस्स एक्केत्तालीस पच्चया, ओघपच्चएसु णवुंसयवेदोरालियकायजोगाणमभावादो । सेसं सुगमं ।

एदाओ सव्वपयडीओ सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, तत्थ तिरिक्खगईए बंधाभावादो । मणुसगइ-मणुसाणुपुव्वी-उच्चागोदाणि मणुसगइसंजुत्तं, अवसेसाओ पयडीओ मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, अविरोहादो । सव्वपयडीणं बंधस्स देवा सामी । बंधद्धाणं बंधविणासो च सुगमो । पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो । अण्णत्थ तिविहो, धुवाभावादो[1] । अवसेसाणं पयडीणं सव्वगुणेसु सादि-अद्धुवो ।

सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

देवोंमें मिथ्यादृष्टिके बावन, सासादनके सैंतालीस और असंयतसम्यग्दृष्टिके तेतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, यहां ओघप्रत्ययोंमें नपुंसकवेद और औदारिकद्विकका अभाव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टिके इकतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उसके ओघ प्रत्ययोंमें नपुंसकवेद और औदारिक काययोगका अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपण सुगम है ।

इन सब प्रकृतियोंको सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें तिर्यचगतिका बन्ध नहीं होता । मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रको मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । शेष प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, इसमें कोई विरोध नहीं है ।

सर्व प्रकृतियोंके बन्धके देव स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनाश सुगम है । पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सब गुणस्थानोंमें सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

---

१ अप्रतौ ' चउव्विहाभावादो '; आप्रतौ ' चउव्वियाभावादो '; काप्रतौ ' चदुव्विहाभावादो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ७९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ८० ॥

अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, सासणम्मि उभयाभावदंसणादो । इत्थिवेदस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणम्मि वोच्छिण्णबंधित्थिवेदस्स असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेददंसणादो । अधवा, देवगदीए बंधो चेव वोच्छिज्जदि णोदओ, तदुदयविरोहिगुणट्ठाणाभावादो । एदमत्थपदमण्णत्थ वि जोजेयव्वं । थीणगिद्धितिय-

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, स्त्रीवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ७९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं ॥ ८० ॥

अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । स्त्रीवेदका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें स्त्रीवेदके बन्धके व्युच्छिन्न हो जानेपर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । अथवा, देवगतिमें बन्ध ही व्युच्छिन्न होता है, उदय नहीं; क्योंकि, देवगतिमें उक्त प्रकृतियोंके उदयके विरोधी गुणस्थानोंका अभाव है । इस अर्थपदकी अन्यत्र भी योजना करना चाहिये ।

१ प्रतिषु ' उभयभाव ' इति पाठः । २ प्रतिषु ' -सम्मादिट्ठीहि ' इति पाठः ।

३ प्रतिषु ' एदमत्थपदमणत्थ ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थ-विहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं देवेसुदयाभावादो बंधोदयाणं पुव्वं पच्छा वोच्छेदपरिक्खा ण कीरदे ।

अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदा सोदय-परोदएण, अवसेसाओ पयडीओ परोदएणेव बज्झंति । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-तिरिक्खाउआणं णिरंतरो बंधो । अवसेसाणं सांतरो, एगसमएण बंधुवरमुवलंभादो । कयावि दो-तिण्णिसमयादिकालपडिबद्धबंधदंसणादो सांतर-णिरंतरबंधो[1] किण्ण उच्चदे ? ण, एदासु पयडीसु णिरंतरबंधणियमाभावादो[2] । एदासिं पयडीणं पच्चया देवगइचउट्ठाणपयडिपच्चयतुल्ला । णवरि तिरिक्खाउअस्स पुव्विल्लपच्चएसु वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेदव्वा । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणि तिरिक्खगइसंजुत्तं, अवसेसाओ पयडीओ मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, अविरोहादो । देवा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । थीण-

स्त्यानगृद्धित्रय, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इनका देवोंमें उदयाभाव होनेसे बन्ध और उदयके पूर्व या पश्चात् व्युच्छेद होनेकी परीक्षा नहीं की जाती ।

अनन्तानुबन्धिचतुष्क और स्त्रीवेद स्वोदय-परोदयसे तथा शेष प्रकृतियां परोदयसे ही बंधती हैं । स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क और तिर्यगायुका निरन्तर बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें उनके बन्धका विश्राम पाया जाता है ।

शंका—कदाचित् दो तीन समयादि कालसे संबद्ध बन्धके देखे जानेसे सान्तर-निरन्तर बन्ध क्यों नहीं कहते ?

समाधान—नहीं कहते, क्योंकि इन प्रकृतियोंमें निरन्तर बन्धके नियमका अभाव है ।

इन प्रकृतियोंके प्रत्यय देवगतिकी चतुस्थानिक प्रकृतियोंके प्रत्ययोंके समान हैं । विशेषता केवल यह है कि तिर्यगायुके पूर्वोक्त प्रत्ययोंमें वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनको तिर्यग्गतिसे संयुक्त, तथा शेष प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उसमें कोई विरोध नहीं है । देव स्वामी हैं । बन्धाध्वान

१ प्रतिषु '-थोवो ' इति पाठः ।

२ अ-काप्रत्योः ' णियमामावा ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं[1] मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो । सासणे दुविहो, अणादि-धुवत्ताभावादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-एइंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावरणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ८१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ८२ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे — मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, मिच्छाइट्ठिम्हि चेव तदुभयमुवलंभिय उवरि तदणुवलंभादो । णवुंसयवेद-एइंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण आदाव-थावराणमेत्थुदयाभावादो बंधोदयाणं पुव्वापुव्ववोच्छेदपरिक्खा ण कीरदे । मिच्छत्तं सोदएण, अण्णाओ पयडीओ परोदएणेव बज्झंति, तहोवलंभादो[2] । मिच्छत्तं णिरंतरं बज्झइ, धुवबंधित्तादो । अवराओ सांतरं बज्झंति, एगसमएण बंधुवरमुवलंभादो । एदासिं पच्चया

और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अनादि और ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, एकेन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, आताप और स्थावर नामकर्मोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ८१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं ॥ ८२ ॥

इसका अर्थ कहते हैं — मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों पाये जाते हैं, ऊपर वे नहीं पाये जाते । नपुंसकवेद, एकेन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिका-संहनन, आताप और स्थावर, इनके उदयका यहां अभाव होनेसे बन्ध और उदयके पूर्व या पश्चात् व्युच्छेदकी परीक्षा नहीं की जाती । मिथ्यात्व प्रकृति स्वोदयसे और अन्य प्रकृतियां परोदयसे ही बंधती हैं, क्योंकि, वैसा पाया जाता है । मिथ्यात्व प्रकृति निरन्तर बंधती है, क्योंकि, ध्रुवबन्धी है । अन्य प्रकृतियां सान्तर बंधती हैं, क्योंकि, एक समयमें

१ अ-काप्रत्योः 'अणंताणुबंधी ति चउक्काण' इति पाठः । २ प्रतिषु 'तवोवलंभादो' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवचउट्ठाणपयडिपच्चयतुल्ला। मिच्छत्त-णउंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, एइंदियजादि-आदाव-थावराणि तिरिक्खगइसंजुत्तं बज्झंति, साभावियादो। देवा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्स बंधो चउव्विहो, धुवबंधित्तादो। सेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

मणुस्साउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ८३ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ८४ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— देवेसु मणुस्साउअस्स उदयाभावादो बंधोदयाणं पुव्वावर-वोच्छेदपरिक्खा णत्थि। परोदएण बंधंति[1], मणुस्साउअस्स देवेसु उदयभावविरोहादो। णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मा-दिट्ठीणं जहाकमेण पंचास पंचेत्तालीस [एक्केत्तालीस] पच्चया, सग-सगोघपच्चएसु ओरालिय-

उनका बन्धविश्राम पाया जाता है। इन प्रकृतियोंके प्रत्यय देवोंकी चतुस्थानिक प्रकृतियोंके प्रत्ययोंके समान हैं। मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, ये तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा एकेन्द्रियजाति, आताप और स्थावर, ये तिर्यग्गतिसे संयुक्त बंधती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है। देव स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्ध-विनष्टस्थान सुगम हैं। मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकार होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

मनुष्यायुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ८३ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं ॥ ८४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— देवोंमें मनुष्यायुका उदय न होनेसे पूर्व या पश्चात् बन्धोदयव्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है। मनुष्यायुको परोदयसे बांधते हैं, क्योंकि, देवोंमें मनुष्यायुके उदयका विरोध है। बन्ध उसका निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयमें बन्धविश्रामका अभाव है। मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके यथाक्रमसे पचास, पैंतालीस [और इकतालीस] प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, अपने अपने ओघप्रत्ययोंमें यहां औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, कार्मण और नपुंसकवेद

१ आ-काप्रत्योः 'बज्झंति' इति पाठः।

ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-णउंसयवेदपच्चयाणमभावादो । मणुसगइसंजुत्तं । देवा सामी । बंधद्धाणं बंधाभावट्ठाणं च सुगमं । सम्मामिच्छत्तगुणेण जीवा किण्ण मरंति ? तत्थाउअस्स बंधाभावादो । मा बंधउ आउअं, पुव्वमण्णगुणट्ठाणम्हि आउअं बंधिय पच्छा सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जिय तेण गुणेण णूणं कालं करेदि ? ण, जेण गुणेणाउबंधो संभवदि तेणेव गुणेण मरदि, ण अण्णगुणेणेत्ति परमगुरूवदेसादो । ण उवसामगेहि अणेयंतो, सम्मत्तगुणेण आउअ-बंधाविरोहिणा णिस्सरणे विरोहाभावादो । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

तित्थयरणामकम्मस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ८५ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ८६ ॥

प्रत्ययोंका अभाव है । मनुष्यायुको मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । देव स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं ।

शंका—सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानके साथ जीव क्यों नहीं मरते ?

समाधान—चूंकि इस गुणस्थानमें आयुके बन्धका अभाव है, अतएव जीव यहां मरण नहीं करते ।

शंका—यहां आयुबन्ध भले ही न हो, फिर भी पहिले अन्य गुणस्थानमें आयुको बांधकर और पश्चात् सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्तकर उस गुणस्थानके साथ तो निश्चयतः मरण कर सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि जिस गुणस्थानके साथ आयुबन्ध सम्भव है उसी गुणस्थानके साथ जीव मरता है, अन्य गुणस्थानके साथ नहीं, ऐसा परमगुरुका उपदेश है।

इस नियममें उपशामकोंके साथ अनैकान्तिक दोष भी सम्भव नहीं है, क्योंकि, आयुबन्धके अविरोधी सम्यक्त्वगुणके साथ निकलनेमें कोई विरोध नहीं है। (देखो जीवस्थान-चूलिका ९, सूत्र १३० की टीका) ।

मनुष्यायुका बन्ध सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ८५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टि देव बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं ॥ ८६ ॥

---

१ प्रतिषु ' आउमबंधिय ' इति पाठः ।

२ अप्रतौ ' गुणेण्णोणं '; आ-काप्रत्योः ' गुणेणण्णोण्णं ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एत्थ बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, उदयाभावादो । तेणेव कारणेण[1] परोदए बज्झइ । णिरंतरो तित्थयरबंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । दंसणविसुज्झदा-लद्धिसंवेगसंपण्णदा-अरहंताइरिय-बहुसुद-पवयणभत्तीओ तित्थयरकम्मस्स विसेसपच्चया । सेसं सुगमं । मणुसगइ-संजुत्तो बंधो । देवा सामी । बंधद्धाणं सुगमं । एत्थ बंधविणासो णत्थि । सादि-अद्धुवो बंधो, अणादि-धुवभावेण अवट्ठिदकारणाभावादो ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवाणं देवभंगो । णवरि विसेसो तित्थयरं णत्थि[2] ॥ ८७ ॥

एदेण सुत्तेण देसामासिएण 'तित्थयरं णत्थि' त्ति बज्झमाणपयडिभेदो चेव परूविदो पुहमुच्चारणाए[3] । समचउरससंठाण-उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीर-पसत्थविहाय-गदि-सुस्सरणामाओ असंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदएणेव बज्झंति । वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया असंजदसम्मादिट्ठिम्हि अवणेदव्वा, भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसिएसु सम्मादिट्ठीणमुववादा-

यहां तीर्थंकर नामकर्मके बन्धोदयव्युच्छेदका विचार नहीं है, क्योंकि, देवोंमें उसके उदयका अभाव है । इसी कारण वह परोदयसे बंधती है । तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उसके बन्धविश्रामका अभाव है । दर्शनविशुद्धता, लब्धिसंवेगसम्पन्नता, अरहन्तभक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति और प्रवचनभक्ति, ये तीर्थंकर कर्मके विशेष प्रत्यय हैं (जो सूत्र ४१ में विस्तारसे कहे जा चुके हैं) । शेष प्रत्यय सुगम हैं । मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । देव स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । यहां बन्धविनाश नहीं है । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, अनादि व ध्रुव रूपसे अवस्थित रहनेके कारणोंका अभाव है ।

भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंकी प्ररूपणा सामान्य देवोंके समान है । विशेषता केवल यह है कि इन देवोंके तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध नहीं होता ॥ ८७ ॥

इस देशामर्शक सूत्रके द्वारा 'तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध नहीं होता' इस पृथक् उच्चारणासे केवल बध्यमान प्रकृतियोंका भेद ही कहा गया है । समचतुरस्रसंस्थान, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रत्येकशरीर, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वर नामकर्म असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदयसे ही बंधते हैं । वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें कम करना चाहिये, क्योंकि, भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सम्यग्दृष्टियोंकी उत्पत्तिका अभाव है । पंचेन्द्रिय जाति

१ अ-काप्रत्योः 'कालेण'; आप्रतौ 'कालेणेण' इति पाठः ।

२ भवणतिए णत्थि तित्थयरं ॥ गो. क. १११. जिणहीणो जोइ-भवण-वणे ॥ कर्मग्रन्थ ३, ११.

३ प्रतिषु 'पदमुच्चारणाए' इति पाठः ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

भावादो। पंचिंदिय-तसणामाओ मिच्छादिट्ठिम्हि सांतरं बज्झइ, एइंदिय-थावरपडिवक्खपयडीणं संभवादो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीओ मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सांतरं बंधंति। ओरालियसरीरअंगोवंगं मिच्छाइट्ठिणो सांतरं बंधंति। एसो भेदो संतो वि ण कहिदो। एवंविधं भेदं संतमकहंतस्स कधं सुत्तभावो ण फिट्टदे? ण एस दोसो, देसामासियसुत्तेसु एवंविहभावाविरोहादो।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवाणं देवभंगो ॥ ८८ ॥

एदस्स अत्थो— जधा देवोघम्मि सव्वपयडीओ परूविदाओ तहा एत्थ वि परूवेदव्वाओ। एदमप्पणासुत्तं देसामासियं, तेणेदेण सूइदत्थो उच्चदे— पंचिंदिय-तसणामाओ मिच्छाइट्ठी देवोघम्मि सांतर-णिरंतरं बंधंति, सणक्कुमारादिसु एइंदिय-थावरबंधाभावेण णिरंतरबंधोवलंभादो। एत्थ पुण सांतरमेव बंधंति, पडिवक्खपयडिभावं[1] पडुच्च एगसमएण

और त्रस नामकर्म मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर बंधते हैं, क्योंकि, उक्त देवोंके इस गुणस्थानमें एकेन्द्रिय जाति और स्थावर रूप प्रतिपक्ष प्रकृतियोंकी सम्भावना है। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि सान्तर बांधते हैं। औदारिकशरीरांगोपांगको मिथ्यादृष्टि सान्तर बांधते हैं। यद्यपि बध्यमान प्रकृतिभेदके साथ यह भेद भी है, तथापि देशामर्शक होनेसे वह सूत्रमें नहीं कहा गया।

शंका—इस प्रकारके भेदके होनेपर भी उसे न कहनेवाले वाक्यका सूत्रत्व क्यों नहीं नष्ट होता?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, देशामर्शक सूत्रोंमें इस प्रकारके स्वरूपका कोई विरोध नहीं है।

सौधर्म व ईशान कल्पवासी देवोंकी प्ररूपणा सामान्य देवोंके समान है ॥ ८८ ॥

इस सूत्रका अर्थ— जिस प्रकार सामान्य देवोंमें सब प्रकृतियोंकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार यहां भी प्ररूपणा करना चाहिये। यह अर्पणासूत्र देशामर्शक है, इसलिये इसके द्वारा सूचित अर्थको कहते हैं— पंचेन्द्रिय जाति और त्रस नामकर्मको मिथ्यादृष्टि देव देवोघमें सान्तर-निरन्तर बांधते हैं, क्योंकि, सनत्कुमारादि देवोंमें एकेन्द्रिय और स्थावर प्रकृतियोंके बन्धका अभाव होनेसे निरन्तर बन्ध पाया जाता है। परन्तु यहां उन्हें सान्तर ही बांधते हैं, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके सद्भावकी अपेक्षा करके

[1] प्रतिषु '-पडिभावं' इति पाठः।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

बंधुवरमदंसणादो । मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो मणुसगइदुगं देवोघम्मि सांतर-णिरंतरं बंधंति, सुक्कलेस्सिएसु मणुसगइदुगस्स णिरंतरबंधदंसणादो । एत्थ पुण सांतरं बंधंति, मणुसगइदुगणिरंतरबंधकारणाभावादो । ओरालियसरीरअंगोवंगं देवोघम्मि मिच्छाइट्ठी सांतर-णिरंतरं बंधंति, सणक्कुमारादिसु णिरंतरबंधुवलंभादो । एत्थ पुण सांतरमेव, थावरबंधकाले अंगोवंगस्स बंधाभावादो त्ति ।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवाणं पढमाए पुढवीए णेरइयाणं भंगो ॥ ८९ ॥

णवरि एत्थ पुरिसवेदस्स सोदएण बंधो, अण्णवेदस्सुदयाभावादो । णउंसयवेदस्स पढमाए पुढवीए सोदएण बंधो, एत्थ पुण परोदएण । पच्चएसु णउंसयवेदो इत्थिवेदेण सह अवणेदव्वो । सासणसम्माइट्ठिम्हि वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया पक्खिविदव्वा, णेरइय-सासणेसु तेसिमभावादो । सदार-सहस्सारदेवेसु मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो मणुसगइदुगं सांतर-णिरंतरं[1] बंधंति, तत्थतणसुक्कलेस्सिएसु मणुसगइदुगं मोत्तूण तिरिक्खगइदुगस्स

एक समयसे बन्धविश्राम देखा जाता है । मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिद्विकको देवोघमें सान्तर-निरन्तर बांधते हैं, क्योंकि, शुक्ललेश्यावालोंमें मनुष्यगतिद्विकका निरन्तर बन्ध देखा जाता है । परन्तु यहां सान्तर बांधते हैं, क्योंकि, मनुष्यगतिद्विकके निरन्तर बन्धके कारणोंका अभाव है । औदारिकशरीरांगोपांगको देवोघमें मिथ्यादृष्टि सान्तर-निरन्तर बांधते हैं, क्योंकि, सनत्कुमारादि देवोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है । परन्तु यहां सान्तर ही बांधते हैं, क्योंकि, स्थावरबन्धकालमें आंगोपांगका बन्ध नहीं होता ।

सनत्कुमारसे लेकर शतार-सहस्रार तक कल्पवासी देवोंकी प्ररूपणा प्रथम पृथिवीके नारकियोंके समान है ॥ ८९ ॥

विशेष इतना है कि यहां पुरुषवेदका स्वोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य वेदके उदयका अभाव है । नपुंसकवेदका प्रथम पृथिवीमें स्वोदयसे बन्ध होता है । परन्तु यहां उसका परोदयसे बन्ध होता है । प्रत्ययोंमें नपुंसकवेदको स्त्रीवेदके साथ कम करना चाहिये । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें यहां वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको जोड़ना चाहिये, क्योंकि नारकी सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें उनका अभाव है । शतार-सहस्रारकल्पवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिद्विकको सान्तर-निरन्तर बांधते हैं, क्योंकि, उन कल्पोंके शुक्ललेश्यावाले देवोंमें मनुष्यगतिद्विकको

१ प्रतिषु ' सांतरं ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधाभावादो ।

आणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ९० ॥

सुगममेदं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ ९१ ॥

एदेण सूइदत्थे भणिस्सामो— मणुसगइ-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-

---

छोड़कर तिर्यग्गतित्रिकके बन्धका अभाव है ।

आनत कल्पसे लेकर नव ग्रैवेयक तक विमानवासी देवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ९० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ ९१ ॥

इस सूत्रके द्वारा सूचित अर्थोंको कहते हैं—मनुष्यगति, औदारिकशरीरांगोपांग,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणुस्साणुपुव्वी-अजसकित्तीणमुदयाभावादो सेसपयडीणं उदयवोच्छेदाभावादो च बंधोदयाणं पच्छापच्छोच्छेदपरिक्खा ण कीरदे ।

पंचणाणावरणीय चउदंसणावरणीय-पुरिसवेद-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतरायइयाणं सोदएणेव बंधो, धुवोदयत्तादो । णिद्दा-पयला-सादासाद-बारसकसाय-हस्स रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्तादो । समचउरससंठाण-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-सुस्सरणामाओ मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सोदय-परोदएण बंधंति । सम्मामिच्छाइट्ठिणो सोदएणेव बंधंति, तेसिमपज्जत्तकालाभावादो । मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुस्साणुपुव्वी-अजसकित्तीणं परोदएणेव बंधो, देवेसु एदासिं बंधोदयाणमक्कमेण उत्तिविरोहादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-

---

वज्रर्षभसंहनन, मनुष्यानुपूर्वी और अयशकीर्ति, इनका उदयाभाव होनेसे तथा शेष प्रकृतियोंके उदयव्युच्छेदका अभाव होनेसे यहां बन्ध और उदयके पूर्व या पश्चात् व्युच्छेद होनेकी परीक्षा नहीं की जाती है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पुरुषवेद, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र, और पांच अन्तराय, इनका स्वोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्सा, इनका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । समचतुरस्रसंस्थान, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, प्रत्येकशरीर और सुस्वर नामकर्मोंको मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वोदय-परोदयसे बांधते हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव स्वोदयसे ही बांधते हैं, क्योंकि, उनके अपर्याप्तकालका अभाव है । मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, मनुष्यानुपूर्वी और अयशकीर्तिका परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, देवोंमें इन प्रकृतियोंके बन्ध और उदयके एक साथ अस्तित्वका विरोध है ।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति,

---

१ अप्रतौ ' -पच्छाच्छेद ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधित्तादो। सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुभासुभ-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो, एगसमएण बंधविरामदंसणादो। पुरिसवेद-समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सांतरं बंधंति, एगसमएण बंधविरामुवलंभादो। सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो णिरंतरं बंधंति, पडिवक्खपयडीण बंधाभावादो।

एदासिं पच्चया देवोघपच्चयतुल्ला। णवरि सव्वत्थ इत्थिवेदपच्चओ अवणेदव्वो। सव्वे सव्वाओ पयडीओ मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, अण्णगईणं बंधाभावादो। देवा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। अण्णत्थ तिविहो, धुवाभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सव्वगुणट्ठाणेसु सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

पंचेन्द्रियजाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये प्रकृतियां ध्रुवबन्धी हैं। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्ति, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा जाता है। पुरुषवेद, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभसंहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र, इनको मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टि सान्तर बांधते हैं, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम पाया जाता है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि इन्हें निरन्तर बांधते हैं, क्योंकि, उनके प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है।

इन प्रकृतियोंके प्रत्यय देवोघ प्रत्ययोंके समान हैं। विशेषता केवल इतनी है कि सब जगह स्त्रीवेद प्रत्ययको कम करना चाहिये। उक्त सब देव सब प्रकृतियोंको मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उनके अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है। देव स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। अन्यत्र तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुवबन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध सब गुणस्थानोंमें सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ९२ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ९३ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, सासणम्मि तदुभयवोच्छेददंसणादो । अवसेसाणं बंधोदयवोच्छेदपरिक्खा णत्थि, तासिमेत्थुदयाभावादो । अणंताणुबंधिचउक्कस्स सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्तादो । अवसेसाणं पयडीणं परोदएणेव, एत्थ तासिं बंधेणुदयस्स अवट्ठाणविरोहादो । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । सेसाणं सांतरो, एगसमएण बंधविरामदंसणादो । पच्चयाणं सहस्सारभंगो । सव्वे सव्वाओ पयडीओ मणुसगइसंजुत्तं बंधंति । देवा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छादिट्ठिस्स

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, स्त्रीवेद, चार संस्थान, चार संहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ९२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं ॥ ९३ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंके बन्धोदयव्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहां उनके उदयका अभाव है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी हैं । शेष प्रकृतियोंका बन्ध परोदयसे ही होता है, क्योंकि, यहां उनके बन्धके साथ उदयके अवस्थानका विरोध है । स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवबन्धी है । शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उनका बन्धविश्राम देखा जाता है । प्रत्ययप्ररूपणा सहस्रार देवोंके समान है । उक्त सब देव सब प्रकृतियोंको मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । देव स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानु-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउव्विहो बंधो । अण्णत्थ दुविहो, अणादि-धुवाभावत्तादो[1] । सेसाणं पयडीणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ९४ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ९५ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, मिच्छाइट्ठिम्हि तदुभयाभावदंसणादो । अवसेसाणं बंधोदयवोच्छेदपरिक्खा णत्थि, एत्थेयंतेणेदासिमुदयाभावादो । मिच्छत्तं सोदएण बज्झइ । कुदो ? साभावियादो । अवसेसाओ पयडीओ परोदएण । मिच्छत्तं णिरंतरं बज्झइ, धुवबंधित्तादो । अवसेसाओ सांतरमद्धुवबंधित्तादो । पच्चया सहस्सारपच्चयतुल्ला । मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति । देवा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । मिच्छत्तस्स बंधो

ग्रन्थिचतुष्कका मिथ्यादृष्टिके चारों प्रकारका बन्ध होता है । अन्यत्र दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अनादि और ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन नामकर्मोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ९४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं ॥ ९५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंके बन्धोदयव्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहां नियमसे इनके उदयका अभाव है । मिथ्यात्व प्रकृति स्वोदयसे बंधती है । इसका कारण स्वभाव है । शेष प्रकृतियां परोदयसे बंधती हैं । मिथ्यात्व प्रकृति निरन्तर बंधती है, क्योंकि, ध्रुवबन्धी है । शेष प्रकृतियां सान्तर बंधती हैं, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं । प्रत्ययप्ररूपणा सहस्रार-देवोंके प्रत्ययोंके समान है । मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । देव स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है, क्योंकि,

१ प्रतिषु ' अणादिदेवाभावत्तादो ' इति पाठः ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

चउव्विहो, धुवबंधित्तादो । सेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

मणुस्साउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ९६ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ९७ ॥

एदस्स अत्थो — बंधोदयाणं वोच्छेदपरिक्खा एत्थ णत्थि, उदयाभावादो । परोदएण बज्झइ, बंधेणुदयस्स एत्थ अवट्ठाणविरोहादो । णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । मिच्छाइट्ठिस्स एगूणवंचास, सासणस्स चउएत्तालीस, असंजदसम्मादिट्ठिस्स चालीस पच्चया । मणुसगइसंजुत्तं । देवा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

तित्थयरणामकम्मस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ९८ ॥

सुगमं ।

ध्रुवबन्धी है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

मनुष्यायुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ९६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं ॥ ९७ ॥

इसका अर्थ— बन्ध और उदयके व्युच्छेदकी परीक्षा यहां नहीं है, क्योंकि, मनुष्यायुके उदयका देवोंमें अभाव है । वह परोदयसे बंधती है, क्योंकि, यहां उसके बन्धके साथ उदयके अवस्थानका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उसके बन्धविश्रामका अभाव है । मिथ्यादृष्टिके उनंचास, सासादनसम्यग्दृष्टिके चवालीस और असंयतसम्यग्दृष्टिके चालीस प्रत्यय होते हैं । मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । देव स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी प्रकृति है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ९८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ९९ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— बंधोदयाणं वोच्छेदविचारो णत्थि, संतासंताणं सण्णियास-विरोहादो । परोदएण बंधो, सव्वत्थ तित्थयरकम्मबंधोदयाणमक्कमेण उत्तिविरोहादो । णिरंतरो बंधो, संखेज्जावलियादिकालेण विणा एगसमएण बंधुवरमाभावादो । एदस्स पच्चया देवोघ-पच्चयतुल्ला । उत्तरोत्तरपच्चया पुण अरहंताइरिय-बहुसुद-पवयणभत्ति-लद्धिसंवेगसंपत्ति-दंसण-विसुद्धि-पवयणप्पहावणादओ । मणुसगइसंजुत्तो बंधो । देवा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

अणुदिस जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय दुगुंछा-मणुस्साउ-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसह-संघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-

---

असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं ॥ ९९ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— बन्ध और उदयके व्युच्छेदका विचार यहां नहीं है, क्योंकि, सत् और असत् बन्धोदयकी समानताका विरोध है । परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, सर्वत्र तीर्थंकर कर्मके बन्ध और उदयके एक साथ रहनेका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, संख्यात आवली आदि कालके विना एक समयसे उसके बन्धविश्रामका अभाव है । इसके प्रत्यय देवोघ प्रत्ययोंके समान हैं । परन्तु इसके उत्तरोत्तर प्रत्यय अरहन्तभक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, लब्धिसंवेगसम्पत्ति, दर्शनविशुद्धि और प्रवचनप्रभावनादिक हैं । मनुष्यगतिसे संयुक्त इसका बन्ध होता है । देव स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । सादि-अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी प्रकृति है ।

अनुदिशोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके विमानवासी देवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यायु, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श,

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग–सुस्सर–आदेज्ज–जसकित्ति–अजसकित्ति णिमिण-तित्थयर-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १०० ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठी बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १०१ ॥

एदस्स अत्थो परूविज्जदे — मणुसाउ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अजसकित्ति-तित्थयराणं उदयाभावादो अवसेसाणं च पयडीणमुदयवोच्छेदाभावादो 'बंधादो उदयस्स किं पुव्वं किं वा पच्छा वोच्छेदो होदि' त्ति एत्थ परिक्खा णत्थि ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पुरिसवेद-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ–तस–बादर–पज्जत्त–थिराथिर–सुहासुह–सुभगादेज्ज–जसकित्ति–णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो । णिद्दा-पयला-सादासाद-

---

मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १०० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ १०१ ॥

इसके अर्थकी प्ररूपणा करते हैं— मनुष्यायु, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अयशकीर्ति और तीर्थंकर, इनके उदयका अभाव होनेसे, तथा शेष प्रकृतियोंके उदयव्युच्छेदका अभाव होनेसे 'बन्धसे उदयका क्या पूर्वमें या क्या पश्चात् व्युच्छेद होता है' इस प्रकारकी यहां परीक्षा नहीं है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पुरुषवेद, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये यहां ध्रुवोदयी हैं । निद्रा, प्रचला, साता व असाता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बारसकसाय-हस्स-रदि-सोग-भय-दुगुंछाणं सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सोदय-परोदएण बंधो, अपज्जत्तकाले उदयाभावे वि बंधुवलंभादो। समचउरससंठाणुवघाद-पत्तेयसरीराणं पि सोदय-परोदएण बंधो, विग्गहगदीए उदयाभावे वि बंधदंसणादो। मणुसाउ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वी-अजसकित्ति-तित्थयराणं परोदएण बंधो, एत्थेदासिमुदयाभावादो।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-पुरिसवेद-भय-दुगुंछा-मणुसाउ-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसह-संघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एदासिमेगसमएण बंधुवरमाभावादो। सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमादो[1]।

वेदनीय, बारह, कषाय, हास्य, रति, शोक, भय और जुगुप्साका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं। परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें उदयका अभाव होनेपर भी इनका बन्ध पाया जाता है। समचतुरस्रसंस्थान, उपघात और प्रत्येकशरीरका भी स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें उदयके अभावके होनेपर भी बन्ध देखा जाता है। मनुष्यायु, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अयशकीर्ति और तीर्थंकरका परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनके उदयका अभाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, मनुष्यायु, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्र-संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगति-प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इनके एक समयसे बन्धविश्रामका अभाव है। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्ति, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम है।

---

१ अ-आप्रत्योः ' बंधुवरमाभावादो ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एत्थ असंजदसम्मादिट्ठिम्हि बाएत्तालीस पच्चया, ओघपच्चएसु ओरालियदुगित्थि-णवुंसयवेदपच्चयाणमभावादो । सेसं सुगमं । एदासिं पयडीणं बंधो मणुसगइसंजुत्तो । देवा सामी । बंधद्धाणं सुगमं । बंधविणासो एत्थ णत्थि । पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय बारस-कसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगलहुग-उवघाद-णिमिण-पंचं-तराइयाणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो । सेसाणं पयडीणं सादि-अद्धुवो, अधुवबंधित्तादो ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिंदियअपज्जत्ताणं[1] पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो ॥ १०२ ॥

एदमप्पणासुत्तं[2] देसामासियं, बज्झमाणपयडीणं संखमवेक्खिय अवट्ठिदत्तादो । तेणेदेण सूइदत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा— एत्थ ताव बज्झमाणपयडिणिद्देसं कस्सामो । पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्खाउ-

यहां असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें ब्यालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंमेंसे औदारिकद्विक, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपण सुगम है । इन प्रकृतियोंका बन्ध मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है । देव स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । बन्धविनाश यहां है नहीं । पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

इन्द्रियमार्गणानुसार एकेन्द्रिय, बादर, सूक्ष्म, इनके पर्याप्त व अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त तथा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है ॥ १०२ ॥

यह अर्पणासूत्र देशामर्शक है, क्योंकि, बध्यमान प्रकृतियोंकी [१०९] संख्याकी अपेक्षा करके अवस्थित है । इसी कारण इससे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— यहां पहिले बध्यमान प्रकृतियोंका निर्देश करते हैं । पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, तिर्यगायु,

१ अप्रतौ ' चउरिंदियपज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिंदियपज्जत्ता अपज्जत्ताणं ', आप्रतौ ' चउरिंदियपज्जत्ता-पज्जत्ताणं '; काप्रतौ ' चउरिंदियपज्जत्त अपज्जत्ताणं ' इति पाठः ।

२ अप्रतौ '-मुप्पणासुत्तं '; आप्रतौ '-मुप्पणसुत्तं ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणुस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेयसरीर-साहारण-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ एत्थ बज्झमाणियाओ। एइंदियमस्सिदूण एदासिं परूवणं कस्सामो— इत्थि-पुरिसवेद-मणुस्साउ-मणुसगइ-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-अणंतिमपंचसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-दोविहायगदि-तस-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणं उदयाभावादो सेसाणमुदयवोच्छेदाभावादो 'उदयादो बंधो किं पुव्वं वोच्छिज्जदि किं पच्छा वोच्छिज्जदि' त्ति विचारो णत्थि, संतासंताणं सण्णियासविरोहादो।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-मिच्छत्त-णवुंसयवेद-तिरिक्खाउ[1]-तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-तेजाकम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगलहुग-थावर-थिराथिर-सुहासुह-दुभग-

---

मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दोनों विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारण, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच व उच्च गोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियां यहां बध्यमान प्रकृतियां हैं। एकेन्द्रिय जीवका आश्रय करके इनकी प्ररूपणा करते हैं— स्त्रीवेद, पुरुषवेद, मनुष्यायु, मनुष्यगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, अन्तिम संस्थानको छोड़कर पांच संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, दो विहायोगतियां, त्रस, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र, इनके उदयका अभाव होनेसे, तथा शेष प्रकृतियोंके उदयव्युच्छेदका अभाव होनेसे यहां 'उदयसे बन्ध क्या पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है या क्या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है' यह विचार नहीं है, क्योंकि, सत् और असत्की समानताका विरोध है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु,

---

१ अ-काप्रत्योः 'तिरिक्खादि' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणादेज्ज-णिमिण-णीचागोद-पंचतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ एदासिं धुवोदयदंसणादो। सादासादं[1]-सोलसकसाय-छण्णोकसाय-आदावुज्जोव-बादर[2]-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-उवघादाणं पि सोदय-परोदओ बंधो, विग्गहगदीए उदयाभावे वि बंधुवलंभादो। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए वि सोदय-परोदओ, गहिदसरीरेसु उदयाभावे वि बंधदंसणादो। परघादुस्सासाणं पि सोदय-परोदओ बंधो, अपज्जत्तद्धाए उदयाभावे वि बंधदंसणादो। अवसेसाणं परोदओ बंधो, एत्थ तासिं सव्वदो उदयाभावादो।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुस्साउ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगलहुग-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। सादासाद-सत्तणोकसाय-मणुसगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-मणुसगइ-

---

स्थावर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, निर्माण, नीचगोत्र और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनका ध्रुव उदय देखा जाता है। साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, छह नोकषाय, आताप, उद्योत, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण शरीर, यशकीर्ति और अयशकीर्ति, इनका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि ये अध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं। औदारिकशरीर, हुण्डसंस्थान और उपघातका भी स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव होनेपर भी बन्ध पाया जाता है। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका भी स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, जिन जीवोंने शरीर ग्रहण करलिया है उनके तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीके उदयका अभाव होनेपर भी बन्ध देखा जाता है। परघात और उच्छ्वासका भी स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें उदयाभावके होनेपर भी उनका बन्ध देखा जाता है। शेष प्रकृतियोंका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां उनके उदयका सर्वदा अभाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, मनुष्यायु, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविश्रामका अभाव है। साता व असाता वेदनीय, सात नोकषाय, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, छह संस्थान, औदारिक-

---

१ प्रतिषु ' पंचणाणावरणीय-सादासाद- ' इति पाठः।

२ प्रतिषु ' थावर ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो, सव्वेइंदिएसु सांतरबंधाणमेदासिं तेउ-वाउकाइएसु णिरंतर-बंधुवलंभादो। परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं बंधो सांतर-णिरंतरो। कधं णिरंतरं? एइंदिएसुप्पण्णदेवाणमंतोमुहुत्तकालं णिरंतरबंधदंसणादो।

एइंदिएसु मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगभेदेण चत्तारि मूलपच्चया। पंचमिच्छत्तपच्चया। कुदो? पंचमिच्छत्तेहि सह णाणामणुस्साणमेइंदिएसुप्पण्णाणं पंचमिच्छत्तुवलंभादो। एगो एइंदियासंजमो, छप्पाणासंजमा, कसाया सोलस, इत्थि-पुरिसवेदेहि विणा णोकसाया सत्त, ओरालियदुग-कम्मइयमिदि तिण्णि जोगा, एदे सव्वे वि अट्ठत्तीस उत्तरपच्चया। णवरि तिरिक्ख-मणुस्साउआणं कम्मइयपच्चएण विणा सत्तत्तीस पच्चया। एक्कारस अट्ठारस

शरीरांगोपांग, छह संहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्र, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा जाता है। तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्र, इनका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सर्व एकेन्द्रियोंमें सान्तर बन्धवाली इन प्रकृतियोंका तेजकायिक व वायु-कायिक जीवोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। परघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीर प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है।

शंका—इनका निरन्तर बन्ध कैसे होता है?

समाधान—क्योंकि एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए देवोंके अन्तर्मुहूर्त काल तक इनका निरन्तर बन्ध देखा जाता है।

एकेन्द्रियोंमें मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योगके भेदसे चार मूल प्रत्यय होते हैं। उत्तर प्रत्ययोंमें पांच मिथ्यात्व प्रत्यय, क्योंकि, पांच मिथ्यात्वोंके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए नाना मनुष्योंके पांच मिथ्यात्व प्रत्यय पाये जाते हैं। एक एकेन्द्रियासंयम, छह प्राणि-असंयम, सोलह कषाय, स्त्री और पुरुष वेदके विना सात नोकषाय, तथा दो औदारिक व कार्मण ये तीन योग, ये सब ही अड़तीस उत्तर प्रत्यय एकेन्द्रियोंमें होते हैं। विशेषता केवल यह है कि तिर्यगायु व मनुष्यायुके कार्मण प्रत्ययके विना सैंतीस प्रत्यय होते हैं। ग्यारह व अठारह एक समय सम्बन्धी जघन्य और उत्कृष्ट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चया ।

तिरिक्खाउ- [तिरिक्खगइ-] तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणसरीराणि तिरिक्खगइसंजुत्तं बज्झंति[1] । मणुस्साउ-मणुस्सगइ-मणुस्साणुपुव्वी-उच्चागोदाणि मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति । अवसेसाओ पयडीओ तिरिक्खगइ-मणुसगइसंजुत्तं बंज्झंति, दुगईहि विरोहाभावादो । एइंदिया सामी । बंधद्धाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णत्थि । पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुअ-लहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं चउव्विहो बंधो । अवसेसाणं सादि-अद्धुवो ।

एवं बादरएइंदियाणं । णवरि बादरं सोदएण बज्झदि । सुहुमस्स परोदओ बंधो । बादरएइंदियपज्जत्ताणं बादरेइंदियभंगो । णवरि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स परोदओ बंधो । बादरएइंदियअपज्जत्ताणं पि बादरएइंदियभंगो । णवरि थीणगिद्धितिय-परघादुस्सास-आदावुज्जोव-पज्जत्त-जसकित्तीणं परोदओ बंधो । अपज्जत्त-अजसकित्तीणं सोदओ । परघादुस्सास-बादर-

---

प्रत्यय होते हैं ।

तिर्यगायु, [तिर्यग्गति,] तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणशरीरको तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं । मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रको मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । शेष प्रकृतियोंको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, दोनों गतियोंके साथ उनके बन्धका विरोध नहीं है । एकेन्द्रिय जीव स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । बन्धव्युच्छेद है नहीं । पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

इसी प्रकार बादर एकेन्द्रिय जीवोंकी भी प्ररूपणा है । विशेष इतना है कि इनके बादर नामकर्म स्वोदयसे बंधता है । सूक्ष्म प्रकृतिका बन्ध परोदयसे होता है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी प्ररूपणा बादर एकेन्द्रियोंके समान है । विशेषता केवल इतनी है कि उनके पर्याप्त प्रकृतिका स्वोदय और अपर्याप्त प्रकृतिका परोदय बन्ध होता है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी भी प्ररूपणा बादर एकेन्द्रियोंके समान है । विशेष यह है कि स्त्यानगृद्धित्रय, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, पर्याप्त और यशकीर्तिका उनके परोदय बन्ध होता है । अपर्याप्त और अयशकीर्तिका स्वोदय बन्ध होता है । परघात,

---

१ अप्रतौ ' बंधंति ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जत्त-पत्तेयसरीराणमेइंदिएसु सांतर-णिरंतरो बंधो। एत्थ पुण सांतरो चेव, अपज्जत्तेसु देवाणमुप्पत्तीए अभावादो। ओरालियकायजोगपच्चओ णत्थि। सुहुमएइंदियाणं एइंदियभंगो[1]। णवरि परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं सांतरो बंधो, सुहुमेइंदिएसु देवाणमुववादाभावादो। बादर-आदाउज्जोव-जसकित्तीणं परोदओ बंधो। सुहुमेइंदियपज्जत्ताणं [सुहुमेइंदियभंगो। णवरि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स परोदओ बंधो। सुहुमेइंदियअपज्जत्ताणं] सुहुमेइंदियपज्जत्तभंगो। णवरि थीणगिद्धितिय-परघादुस्सासपज्जत्ताणं परोदओ बंधो। अपज्जत्तणामस्स सोदओ। पच्चएसु ओरालियकायजोगपच्चओ अवणेदव्वो।

संपधि बीइंदियाणं भणामो— इत्थि-पुरिसवेद-मणुस्साउ-मणुसगइ-एइंदिय-तीइंदिय[2]-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-अणंतिमपंचसंठाण-पंचसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदाव-पसत्थविहायगदि-थावर-सुहुम-साहारणसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणमुदयाभावादो सेसपयडीणं चोदयवोच्छेदाभावादो बेइंदिएसु पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएहि

उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीर, इनका एकेन्द्रियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है। परन्तु यहां उनका सान्तर ही बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकोंमें देवोंकी उत्पत्तिका अभाव है। यहां प्रत्ययोंमें औदारिक काययोग प्रत्यय नहीं है।

सूक्ष्म एकेन्द्रियोंकी प्ररूपणा एकेन्द्रियोंके समान है। विशेषता यह है कि परघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका उनके सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें देवोंकी उत्पत्तिका अभाव है। बादर, आताप, उद्योत और यशकीर्तिका परोदय बन्ध होता है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तोंकी प्ररूपणा [सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके समान है। विशेष इतना है कि उनके पर्याप्त प्रकृतिका स्वोदय और अपर्याप्त प्रकृतिका परोदय बन्ध होता है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा] सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके समान है। विशेष इतना है कि स्त्यानगृद्धित्रय, परघात, उच्छ्वास और पर्याप्त प्रकृतियोंका परोदय बन्ध होता है। अपर्याप्त नामकर्मका स्वोदय बन्ध होता है। प्रत्ययोंमें औदारिककाययोग प्रत्ययको कम करना चाहिये।

अब द्वीन्द्रिय जीवोंकी प्ररूपणा करते हैं— स्त्रीवेद, पुरुषवेद, मनुष्यायु, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, अन्तिम संस्थानको छोड़ शेष पांच संस्थान, अन्तिम संहननको छोड़ शेष पांच संहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, प्रशस्तविहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, साधारणशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र, इनके उदयका अभाव होनेसे, तथा शेष प्रकृतियोंके उदयव्युच्छेदका अभाव होनेसे पंचेन्द्रिय

१ अप्रतौ 'सुहुमेएइंदियाणि वेइंदियभंगो'; आप्रतौ 'सुहुमएइंदियाणि वेइंदियभंगो'; काप्रतौ 'सुहुमेइंदियाणि वेइंदियभंगो' इति पाठः।

२ प्रतिषु 'एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वज्झमाणपयडीओ बंधमाणेसु 'बंधादो उदओ किं पुव्वं किं वा पच्छा वोच्छिण्णो' त्ति विचारो णत्थि ।

पंचणाणावरणीय–चउदंसणावरणीय–मिच्छत्त–णवुंसयवेद–तिरिक्खाउ–तिरिक्खगइ–बीइंदियजादि–तेजा–कम्मइयसरीर–वण्ण–गंध–रस–फास–अगुरुवलहुअ–तस–बादर–थिराथिर–सुभासुभ–दुभग–अणादेज्ज–णिमिण–णीचागोद–पंचंतरायइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ एदासिं धुवोदयत्तदंसणादो । णिद्दाणिद्दा–पयलापयला–सादासाद–सोलसकसाय–छणोकसाय–पज्जत्तापज्जत्त–जसअजसकित्तीणं सोदय–परोदओ बंधो, उभयथा वि बंधस्स विरोहाभावादो । ओरालियसरीर–हुंडसंठाण–ओरालियसरीरअंगोवंग–असंपत्तसेवट्टसंघडण–उवघाद–पत्तेयसरीराणं पि सोदय–परोदओ, विग्गहगदीए उदयाभावे वि बंधुवलंभादो । तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वीए वि सोदय–परोदओ बंधो, विग्गहगदीदो अण्णत्थ उदयाभावे [वि] बंधदंसणादो । परघादुस्सासुज्जोव–अप्पसत्थविहायगइ–दुस्सराणं पि सोदय–परोदओ बंधो, अपज्जत्तकाले उदयाभावे वि बंधदंसणादो, उज्जोवस्स उज्जोवोदयविरहिदाविरहिदेसु बंधुवलंभादो । इत्थि–पुरिस–मणुस्साउ–मणुसगइ–एइंदिय–तीइंदिय[1]–

तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्वारा बध्यमान प्रकृतियोंको बांधनेवाले द्वीन्द्रिय जीवोंमें 'बन्धसे उदय क्या पूर्वमें या क्या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है' यह विचार नहीं है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, द्वीन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, निर्माण, नीचगोत्र और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनका ध्रुव उदय देखा जाता है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, छह नोकषाय, पर्याप्त, अपर्याप्त, यशकीर्ति, और अयशकीर्ति, इनका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके बन्धका विरोध नहीं है । औदारिकशरीर, हुण्डसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, उपघात और प्रत्येकशरीर, इनका भी स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि विग्रहगतिमें उदयका अभाव होनेपर भी इनका बन्ध पाया जाता है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका भी स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिको छोड़कर अन्यत्र उसका उदयाभाव होनेपर भी बन्ध देखा जाता है । परघात, उच्छ्वास, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति और दुस्वरका भी स्वोदय-परोदय बन्ध होता है; क्योंकि, अपर्याप्तकालमें इनका उदयाभाव होनेपर भी बन्ध देखा जाता है, तथा उद्योतका उद्योतके उदयसे रहित और उससे सहित जीवोंमें उसका बन्ध पाया जाता है । स्त्रीवेद, पुरुषवेद, मनुष्यायु, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति,

१ मप्रतौ 'एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-' इति पाठः ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-अणंतिमपंचसंठाण-पंचसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदाव-पसत्थविहायगइ-थावर-सुहुम-साहारणसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणं परोदओ बंधो।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुस्साउ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। दोण्णमाउआणं णिरंतरो, एगसमएण वोच्छेदाभावादो। सादासाद-सत्तणोकसाय-मणुसगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-परघादुस्सास-आदाउज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-उच्चागोदाणं सांतरो बंधो, एगसमएणेदासिं बंधुवरमदंसणादो। परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणमेइंदिएसु व सांतर-णिरंतरो बंधो किण्ण परूविदो? ण, देवाणमेइंदिएसु व विगलिंदिएसु उववादाभावादो।

अन्तिम संस्थानको छोड़कर पांच संस्थान, पांच संहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, प्रशस्तविहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म साधारणशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र, इनका परोदय बन्ध होता है।

पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, मनुष्यायु, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविश्रामका अभाव है। दो आयुओंका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धव्युच्छेदका अभाव है। साता व असाता वेदनीय, सात नोकषाय, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति और उच्चगोत्र, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा जाता है।

शंका—परघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका एकेन्द्रिय जीवोंके समान सान्तर-निरन्तर बन्ध क्यों नहीं कहा गया?

समाधान—एकेन्द्रियोंके समान विकलेन्द्रियोंमें देवोंकी उत्पत्ति न होनेसे यहां उक्त प्रकृतियोंका सान्तर-निरन्तर बन्ध नहीं कहा गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो । कधं णिरंतरो ? ण, तेउ-वाउकाइएहिंतो बीइंदिएसुप्पण्णाणमंतोमुहुत्तकालमेदासिं णिरंतरबंधुवलंभादो ।

एदासिं मूलपच्चया चत्तारि । पंच मिच्छत्त, दोइंदियासंजमा, छप्पाणासंजमा, सोलस कसाया, सत्त णोकसाया, चत्तारि जोगा, सव्वेदे बीइंदियस्स[1] चालीसुत्तरपच्चया । णवरि तिरिक्ख-मणुस्साउआणं कम्मइयपच्चएण विणा एगूणचालीस पच्चया । एक्कारस अट्ठारस एगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चया ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बंधो । मणुस्साउ-मणुस्सगइ-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदाणं मणुसगइसंजुत्तो बंधो । सेसाणं पयडीणं तिरिक्ख-मणुस्सगइसंजुत्तो बंधो । कुदो ? दोहि गदीहि सह विरोहाभावादो । बंधद्धाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णत्थि । धुवियाणं[2] चउव्विहो बंधो । अवसेसाणं सादि-अद्धुवो । एवं पज्जत्ताणं । णवरि

तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका — निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह शंका ठीक नहीं, क्योंकि, तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमेंसे द्वीन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्मुहूर्त काल तक इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

इनके मूल प्रत्यय चार होते हैं। पांच मिथ्यात्व, दो इन्द्रियासंयम, छह प्राणि-असंयम, सोलह कषाय, सात नोकषाय और चार योग, ये सब द्वीन्द्रिय जीवके चालीस उत्तर प्रत्यय होते हैं। विशेषता केवल इतनी है कि तिर्यगायु व मनुष्यायुके कार्मण प्रत्ययके विना उनतालीस प्रत्यय होते हैं। ग्यारह व अठारह क्रमसे एक समय सम्बन्धी जघन्य और उत्कृष्ट प्रत्यय होते हैं।

तिर्यगायु, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तिर्यग्गति-प्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण, इनका तिर्यग्गतिसे संयुक्त बंध होता है। मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रका मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। शेष प्रकृतियोंका तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों गतियोंके साथ उनके बन्धका विरोध नहीं है। बन्धाध्वान सुगम है। बन्धव्युच्छेद नहीं है। ध्रुव प्रकृतियोंका चारों प्रकारका बन्ध होता है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है।

इसी प्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी प्ररूपणा है। विशेषता केवल इतनी है कि

---

१ प्रतिषु ' - सव्वेदे वा बीइंदियस्स ' इति पाठः। २ प्रतिषु ' दुवियाणं ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जत्तणामस्स सोदओ, अपज्जत्तणामस्स परोदओ बंधो । एवमपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं । णवरि थीणगिद्धितिय-परघादुस्सास-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-पज्जत्त-दुस्सर-जसकित्तीणं परोदओ बंधो । अपज्जत्त-अजसकित्तीणं सोदओ । अपज्जत्ताणमट्ठत्तीस पच्चया, ओरालियकायासच्चमोसवचिजोगाणमभावादो ।[1]

तीइंदियाणं तीइंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं च बीइंदिय-बीइंदियपज्जत्त-बीइंदियअपज्जत्त-भंगो ।[2] णवरि घाणिंदिएण सह तेइंदियपज्जत्ताणमेक्केतालीस पच्चया । अपज्जत्ताणमेगूणचालीस, ओरालियकायासच्चमोसवचिजोगाणमभावादो ।[3] तीइंदियणामस्स सोदओ बंधो । अवसेसिंदियणामाणं परोदओ ।

चउरिंदियाणमेवं चेव वत्तव्वं । णवरि चउरिंदियजादिबंधो सोदओ । सेसिंदियजादिबंधो परोदओ । बादालीसुत्तरपच्चया, चक्खिदियप्पवेसादो । अपज्जत्ताणं चालीस पच्चया,

उनके पर्याप्त नामकर्मका स्वोदय और अपर्याप्त नामकर्मका परोदय बन्ध होता है। इसी प्रकार द्वीन्द्रिय अपर्याप्तोंका भी कथन करना चाहिये। विशेष यह है कि स्त्यानगृद्धित्रय, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, पर्याप्त, दुस्वर और यशकीर्तिका परोदय बन्ध होता है। अपर्याप्त और अयशकीर्तिका स्वोदय बन्ध होता है। अपर्याप्तोंके अड़तीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, औदारिक काययोग और असत्य मृषा वचनयोगका उनके अभाव है।

त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय पर्याप्त और त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्ररूपणा द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय पर्याप्त और द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके समान है। विशेषता इतनी है कि घ्राण इन्द्रियके साथ त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके इकतालीस प्रत्यय होते हैं। अपर्याप्तोंके उनतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उनके औदारिक काययोग और असत्य-मृषा वचनयोगका अभाव है। त्रीन्द्रिय नामकर्मका स्वोदय बन्ध होता है। शेष इन्द्रिय नामकर्मोंका परोदय बन्ध होता है।

चतुरिन्द्रिय जीवोंका भी इसी प्रकार ही कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि उनके चतुरिन्द्रिय जातिका स्वोदय बन्ध होता है। शेष इन्द्रिय जातियोंका बन्ध परोदय होता है। यहां चक्षु इन्द्रियका प्रवेश होनेसे ब्यालीस उत्तर प्रत्यय होते हैं। अपर्याप्तोंके

१ आप्रतौ 'ओरालियकायसच्चमोस-' इति पाठः।

२ प्रतिषु 'तीइंदियाणं तीइंदियपज्जत्ताणं तीइंदियअपज्जत्ताणं चउरिंदिय-बीइंदियपज्जत्त-'; मप्रतौ 'तीइंदियाणं तीइंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं च बीइंदियपज्जत्त-' इति पाठः।

३ प्रतिषु 'ओरालियकायसच्चमोस' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओरालियकायासच्चमोसवचिजोगाणमभावादो ।

पंचिंदियअपज्जत्ताणं भणिस्सामो — एत्थ वज्झमाणपयडीओ पंचिंदियतिरिक्ख-अपज्जत्तेहि वज्झमाणाओ चेव, ण अण्णाओ । एत्थ एदासिं उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, संतासंताणं बंधोदयाणमेत्थ वोच्छेदाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-मिच्छत्त-णवुंसयवेद-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइय-सरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-अपज्जत्त-थिराथिर-सुहासुह-दुभग-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-णीचागोद-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । णिद्दा-पयला-सादा-साद-सोलसकसाय-छणोकसाय-तिरिक्खाउ--मणुस्साउ--तिरिक्खगइ--मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सोदय-परोदओ बंधो; उदएण विणा वि, संते वि उदए बंधुवलंभादो । ओरालियसरीर-हुंड-संठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडण-उवघाद-पत्तेयसरीराणं सोदय-परोदओ बंधो, विग्गहगदीए उदयाभावे वि अण्णत्थ उदए संते वि बंधदंसणादो । थीणगिद्धितिय-इत्थि-पुरिसवेद-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचसंठाण-पंचसंघडण-परघादुस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-थावर-सुहुम-पज्जत्त-साहारणसरीर-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-उच्चा—

चालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उनके औदारिक काययोग और असत्य-मृषा वचनयोगका अभाव है । -

पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा करते हैं— यहां वध्यमान प्रकृतियां पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तों द्वारा बांधी जानेवाली ही हैं, अन्य नहीं हैं । यहां 'इनका उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है' यह विचार नहीं है, क्योंकि, सत् और असत् बन्धोदयके व्युच्छेदका यहां अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, अपर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति, निर्माण, नीचगोत्र और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, छह नोकषाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु और तिर्यग्गति व मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, इनका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उदयके विना भी, तथा उदयके होनेपर भी इनका बन्ध पाया जाता है । औदारिकशरीर, हुण्डसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, उपघात और प्रत्येक-शरीरका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें उदयाभावके होनेपर भी, तथा अन्यत्र उदयके होते हुए भी इनका बन्ध देखा जाता है । स्त्यानगृद्धित्रय, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, पांच संस्थान, पांच संहनन, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, स्थावर, सूक्ष्म, पर्याप्त, साधारण-शरीर, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, यशकीर्ति और उच्चगोत्र, इनका परोदयसे बन्ध

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोदाणं परोदएण बंधो, एदासिमेत्थ उदयविरोहादो।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुस्साउ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ एदासिं धुवबंधित्तादो। सादासाद-सत्तणोकसाय-मणुसगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-परघादुस्सास-आदाउज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं सांतरो बंधो, एगसमएणेदासिं बंधुवरमदंसणादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो। कधं णिरंतरो? ण, तेउ-वाउ-काइएहिंतो पंचिंदियअपज्जत्तएसुप्पण्णाणमंतोमुहुत्तकालमेदासिं णिरंतरबंधुवलंभादो।

पंचिंदियअपज्जत्ताणमेदाओ पयडीओ बंधमाणाणं[1] पंच मिच्छत्ताणि, बारस असंजम,

---

होता है, क्योंकि, यहां इनके उदयका विरोध है।

पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, मनुष्यायु, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवबन्धी हैं। साता व असाता वेदनीय, सात नोकषाय, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्र, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा जाता है। तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमेंसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्मुहूर्त काल तक इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

इन प्रकृतियोंको बांधनेवाले पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके पांच मिथ्यात्व, बारह

---

१ प्रतिषु 'बंधणाणं' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोलस कसाय, सत्त णोकसाय दोण्णि जोग त्ति बादालीस पच्चया होंति । तिरिक्ख-मणुस्साउआणं एक्केतालीस पच्चया, कम्मइयपच्चयाभावादो । सेसं सुगमं ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइ-पाओग्गाणुपुव्वी-आदाउज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणसरीराणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बंधो । मणुस्साउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदाणं मणुसगइसंजुत्तो । सेसाणं पयडीणं बंधो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो । पंचिंदियअपज्जत्ता सामी । बंधद्धाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णत्थि । पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो । सेसाणं सादि-अद्धुवो ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १०३ ॥

एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेणेदेण सूइदत्थाणं परूवणा कीरदे । तं जहा — किं

....

असंयम, सोलह कषाय, सात नोकषाय और दो योग, इस प्रकार ब्यालीस प्रत्यय होते हैं । तिर्यगायु और मनुष्यायुके इकतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उनके कार्मण प्रत्ययका अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है ।

तिर्यगायु, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तिर्यग्गति-प्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण शरीर, इनका तिर्यग्गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रका मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा शेष प्रकृतियोंका बन्ध तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । बन्धव्युच्छेद यहां है नहीं । पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका चार प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी हैं । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १०३ ॥

यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, इसलिये इसके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छाइट्ठी बंधओ किं सासणो बंधओ किं सम्मामिच्छाइट्ठी बंधओ किमसंजदसम्माइट्ठी बंधओ किं संजदासंजदो किं पमत्तो किमपमत्तो किमपुव्वो किमणियट्टी किं सुहुमसांपराइयओ किमुवसंतकसाओ किं खीणकसाओ किं सजोगिजिणो किमजोगिभडारओ बंधओ त्ति एवमेसो एगसंजोगो। संपधि एत्थ दुसंजोगादीहि अक्खसंचारं करिय सोलहसहस्स-तिण्णिसय-तेयासीदि-पण्णभंगा उप्पाएयव्वा। किं पुव्वमेदासिं बंधो वोच्छिज्जदि किमुदओ किं दो वि समं वोच्छिज्जंति एवमेत्थ तिण्णि भंगा। किं सोदएण बंधो किं परोदएण किं सोदय-परोदएण एत्थ वि तिण्णि भंगा। किं सांतरो बंधो किं णिरंतरो [किं] सांतर-णिरंतरो त्ति एत्थ वि तिण्णेव भंगा। एदासिं किं मिच्छत्तपच्चओ बंधो किमसंजमपच्चओ किं कसायपच्चओ किं जोगपच्चओ बंधो त्ति पण्णारस मूलपच्चयपण्हभंगा[१] हवंति। एयंत-विवरीय-मूढ-संदेह-अण्णाणमिच्छत्त-चक्खु-सोद-घाण-जिब्भा-पास-मण-पुढवीकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइय-वणप्फदिकाइय-तसकाइयासंजम-सोलसकसाय-णवणोकसाय-पण्णारसजोगपच्चए ठविय

करते हैं। वह इस प्रकार है— क्या मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक है, क्या सम्यग्मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक है, क्या संयतासंयत, क्या प्रमत्त, क्या अप्रमत्त, क्या अपूर्वकरण, क्या अनिवृत्तिकरण, क्या सूक्ष्मसाम्परायिक, क्या उपशान्तकषाय, क्या क्षीणकषाय, क्या सयोगी जिन, या क्या अयोगी भट्टारक बन्धक हैं, इस प्रकार ये एकसंयोगी भंग हैं। अब यहां द्विसंयोगादिकोंके द्वारा अक्षसंचार करके सोलह हजार तीन सौ तेरासी प्रश्नभंग उत्पन्न कराना चाहिये। क्या पूर्वमें इनका बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्या उदय, या क्या दोनों एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं, इस प्रकार यहां तीन भंग होते हैं। क्या स्वोदयसे बन्ध होता है, क्या परोदयसे या क्या स्वोदय-परोदयसे, इस प्रकार यहां भी तीन भंग होते हैं। क्या सान्तर बन्ध होता है, क्या निरन्तर बन्ध होता है, या क्या सान्तर-निरन्तर, इस प्रकार यहां भी तीन ही भंग होते हैं।

इनका बन्ध क्या मिथ्यात्वप्रत्यय है, क्या असंयमप्रत्यय है, क्या कषायप्रत्यय है, या क्या योगप्रत्यय बन्ध है, इस प्रकार पन्द्रह मूल-प्रत्यय-निमित्तक प्रश्नभंग होते हैं। एकान्त, विपरीत, मूढ़ [विनय], सन्देह और अज्ञान रूप पांच मिथ्यात्व; चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा, स्पर्श, मन, पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक, इनके निमित्तसे होनेवाले बारह असंयम; सोलह कषाय, नौ

१ अ-काप्रत्योः '-पंचण्हभंगा'; आप्रतौ '-पंचण्हं भंगा' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोद्दससदएक्केतालीसकोडाकोडी-पण्णारसलक्ख-अट्ठारससहस्स-अट्ठसय-सत्तकोडी[1]-अट्ठवंचास-लक्ख-वंचवंचाससहस्स-अट्ठसय-एक्कहत्तरिउत्तरपच्चयपण्णभंगा[2] उप्पाएदव्वा १४४११५-१८८०७५८५५८७१। किं णिरयगइसंजुत्तं बज्झंति किं तिरिक्खगइसंजुत्तं किं मणुस्सगइसंजुत्तं [किं देवगइसंजुत्तं] इदि एत्थ पण्णारस पण्हभंगा उप्पाएदव्वा। अद्धाणभंगपमाणं सुगमं। किमप्पिदगुणट्ठाणस्सादिए[3] मज्झे अंते बंधो वोच्छिज्जदि त्ति एक्केक्कम्हि गुणट्ठाणे तिण्णि तिण्णि भंगा उप्पाएयव्वा। सव्वबंधवोच्छेदपण्हसमासो बाएत्तालीस। किं सादिओ बंधो किमणादिओ किं धुवो किमद्धुवो त्ति एत्थ पण्णारस पण्हभंगा उप्पाएयव्वा।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु उवसमा खवा बंधा। सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १०४ ॥

एदस्स अत्थो उच्चदे— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं पुव्वं बंधो

नोकषाय और पन्द्रह योग, इन प्रत्ययोंको स्थापित कर चौदह सौ इकतालीस कोड़ाकोड़ी, पन्द्रह लाख, अठारह हजार, आठ सौ सात करोड़, अट्ठावन लाख, पचपन हजार, आठ सौ इकत्तर उत्तर प्रत्यय निमित्तक प्रश्नभंग उत्पन्न कराना चाहिये। १४४११५१८८०७५८५५८७१।

ये क्या नरकगतिसे संयुक्त बंधते हैं, क्या तिर्यग्गतिसे संयुक्त बंधते हैं, क्या मनुष्यगतिसे संयुक्त बंधते हैं, [या क्या देवगतिसे संयुक्त बंधते हैं,] इस प्रकार यहां पन्द्रह प्रश्नभंग उत्पन्न कराना चाहिये। बन्धाध्वानका भंगप्रमाण सुगम है। क्या विवक्षित गुणस्थानके आदिमें, मध्यमें या अन्तमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, इस प्रकार एक एक गुणस्थानमें तीन तीन भंग उत्पन्न कराना चाहिये। बन्धव्युच्छेदके प्रश्नविषयक सर्व भंगोंका योग ब्यालीस होता है। क्या सादि, क्या अनादि, क्या ध्रुव और क्या अध्रुव बन्ध होता है, इस प्रकार यहां पन्द्रह प्रश्नभंग उत्पन्न कराना चाहिये।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतोंमें उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं। सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १०४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच

---

१ प्रतिषु 'सत्त-सत्तकोडी' इति पाठः।

२ प्रतिषु 'पच्चया पण्णभंगा' इति पाठः।

३ अ-आप्रत्योः 'किमप्पिदुगुण-'; काप्रतौ 'किमपिदुगुण-' इति पाठः।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सुहुमसांपराइयचरिमसमयम्हि णट्ठबंधाणमेदासिं खीणकसायचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदुवलंभादो। जसकित्तीए उच्चागोदस्स य पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सुहुमसांपराइयचरिमसमयम्मि णट्ठबंधाणं अजोगिचरिमसमयम्मि उदय[1]-वोच्छेदुवलंभादो।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो। जसकित्तीए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति सोदय-परोदएण बंधो, एदेसु अजसकित्तीए वि उदयदंसणादो। उवरि सोदएणेव, पडिवक्खुदयाभावादो। मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदो [त्ति] उच्चागोदस्स सोदय-परोदएण बंधो, एदेसु णीचागोदस्स वि उदयदंसणादो। उवरि सोदओ, पडिवक्खुदयाभावादो।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, सव्वगुणट्ठाणेसु वि एगसमएण बंधवोच्छेदाभावादो। जसकित्तीए सांतर-णिरंतरो बंधो, मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो बंधो, एदेसु पविक्खपयडिबंधदंसणादो; उवरि णिरंतरो, पडिवक्ख-

अन्तरायका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें बन्धके नष्ट हो जानेपर क्षीणकषाय गुणस्थानके अन्तिम समयमें उनका उदयव्युच्छेद पाया जाता है। यशकीर्ति और उच्चगोत्रका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें बन्धके नष्ट हो जानेपर अयोगिकेवलीके अन्तिम समयमें इनका उदयव्युच्छेद पाया जाता है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है। यशकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें अयशकीर्तिका भी उदय देखा जाता है। ऊपर इसका स्वोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अयशकीर्तिके उदयका अभाव है। मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत तक उच्चगोत्रका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें नीचगोत्रका भी उदय देखा जाता है। उपरिम गुणस्थानोंमें उसका स्वोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नीचगोत्रके उदयका अभाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सब गुणस्थानोंमें ही एक समयसे इनके बन्धव्युच्छेदका अभाव है। यशकीर्तिका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक इनमें प्रतिपक्ष प्रकृतिका बन्ध देखे जानेसे सान्तर बन्ध होता है और इससे ऊपर

१ अप्रतौ '-समयम्मि णट्ठबंधाणं उदय-' इति पाठः।

पयडीए बंधाभावादो। उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतर-णिरंतरो। असंखेज्जवासाउअ-तिरिक्ख-मणुस्सेसु, संखेज्जवासाउअसुहतिलेस्सिएसु णिरंतरबंधदंसणादो। उवरिमगुणेसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो। पच्चयाणं मूलोघभंगो। गइसंजुत्तादि उवरि जाणिय वत्तव्वं।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १०५ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १०६ ॥

प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव होनेसे उसका निरन्तर बन्ध होता है। उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां असंख्यातवर्षायुष्क तिर्यंच व मनुष्योंमें, तथा संख्यातवर्षायुष्क तीन शुभ लेश्या-वालोंमें उसका निरन्तर बन्ध देखा जाता है। उपरिम गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है। प्रत्ययोंकी प्ररूपणा मूलोघके समान है। गतिसंयुक्तादि उपरिम पृच्छाओंके विषयमें जानकर कहना चाहिये।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, स्त्रीवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १०५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १०६ ॥

१ प्रतिषु 'ण संखेज्ज-' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एदस्स अत्थो वुच्चदे—थीणगिद्धितियस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदेसु जहासंखाए बंधोदयवोच्छेददंसणादो । अणंताणुबंधिचउक्कस्स दो वि समं वोच्छिज्जंति, सासणे तदुभयाभावदंसणादो[1] । इत्थिवेदस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणाणियट्टीसु जहासंखाए बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-उज्जोव-णीचागोदाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणसम्मादिट्ठि-सजदासंजदेसु तेसिं दोण्णं वोच्छेदुवलंभादो । चउसंठाणाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासण-सजोगीसु तेसिं दोण्णं वोच्छेदुवलंभादो । एवं चदुसंघडणाणं पि वत्तव्वं, सासणे फिट्टबंधाणमप्पमत्तुवसंतकसाएसु पढम-बिदियसंघडणदुगोदयवोच्छेददंसणादो । एवं तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-दुभग-अणादेज्जाणं वत्तव्वं सासण-असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदय-वोच्छेददंसणादो । एवमप्पसत्थविहायगइ-दुस्सराणं वत्तव्वं, सासण-सजोगीसु बंधोदयवोच्छेद-दंसणादो ।

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— स्त्यानगृद्धित्रयका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें यथाक्रमसे इनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । स्त्रीवेदका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादन और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानोंमें यथाक्रमसे उसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, उद्योत और नीचगोत्र, इनका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत गुणस्थानोंमें क्रमशः उन दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । चार संस्थानोंका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादन और सयोगकेवली गुणस्थानोंमें उन दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । इसी प्रकार चार संहननोंके भी पूर्व-पश्चात् बन्धोदयव्युच्छेदको कहना चाहिये, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें बन्धके नष्ट हो जानेपर अप्रमत्त व उपशान्तकषाय गुणस्थानोंमें क्रमसे उक्त चार संहननोंके प्रथम व द्वितीय युगलके उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, दुर्भग और अनादेयके भी कहना चाहिये, क्योंकि, सासादन व असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमशः इनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार अप्रशस्तविहायोगति और दुस्वरके भी कहना चाहिये, क्योंकि, सासादन और सयोगकेवली गुणस्थानोंमें इनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है ।

१ प्रतिषु ' तदुभयभाव-' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थीणगिद्धितियादीणं सव्वासिं पयडीणं बंधो सोदय-परोदओ, उभयथा वि विरोहाभावादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-तिरिक्खाउआणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो। कधं णिरंतरो? ण, तेउ-वाउक्काइयचरपंचिंदियमिच्छाइट्ठीसु सत्तमपुढवीमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो[1]। सेसाणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। पच्चया ओघपच्चयतुल्ला। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणि दो वि तिरिक्खगइसंजुत्तं, इत्थिवेदं णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं, चउसंठाण-चउसंघडणाणि दो वि तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि मिच्छाइट्ठी तिगइसंजुत्तं बंधइ देवगईए विणा, सासणो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं। सेसाओ पयडीओ मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं सासणो तिगइसंजुत्तं। सेसं चिंतिय वत्तव्वं।

स्त्यानगृद्धित्रय आदिक सब प्रकृतियोंका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी उनके बन्धका विरोध नहीं है। स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क और तिर्यगायुका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविश्रामका अभाव है। तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका— निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह शंका ठीक नहीं, क्योंकि, तेजकायिक व वायुकायिक जीवोंमेंसे आकर पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंमें उत्पन्न हुए जीवों तथा सप्तम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि नारकियोंमें उक्त प्रकृतियोंका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धका विश्राम देखा जाता है। प्रत्ययोंकी प्ररूपणा ओघप्रत्ययोंके समान है। तिर्यगायु, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको दोनों ही गुणस्थानवर्ती जीव तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं। स्त्रीवेदको नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं। चार संस्थान और चार संहननको दोनों ही तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रको मिथ्यादृष्टि देवगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, तथा सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। शेष प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त और सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं। शेष विचार कर कहना चाहिये।

१ प्रतिषु ' णिरंतरो बंधुवलंभादो ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिद्दा-पयलाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १०७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्ठसुद्धिसंजदेसु उवसमा खवा बंधा । अपुव्वकरणसंजदद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १०८ ॥

एदस्स अत्थो उच्चदे—बंधो एदासिं पुव्वं वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, अपुव्व-खीणकसाएसु कमेण बंधोदयवोच्छेददंसणादो । सोदय-परोदएण सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो, अद्धुवोदयत्तादो । णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । पच्चया सव्वगुणट्ठाणेसु ओघपच्चयतुल्ला । मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दुगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं । गइसामित्तद्धाण-बंधवोच्छेदट्ठाणाणि सुगमाणि । मिच्छाइट्ठिस्स चउव्विहो बंधो । सेसेसु तिविहो, धुवत्ताभावादो ।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ १०९ ॥

निद्रा और प्रचलाका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १०७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्टशुद्धिसंयतोंमें उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरणसंयतकालके संख्यातवें भाग जाकर बन्धव्युच्छेद होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १०८ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— इनका बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है और उदय पश्चात्, क्योंकि, अपूर्वकरण व क्षीणकषाय गुणस्थानोंमें क्रमसे इनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । सब गुणस्थानोंमें इनका बन्ध स्वोदय-परोदयसे होता है, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी हैं । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवबन्धी हैं । प्रत्यय सब गुणस्थानोंमें ओघप्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंसे संयुक्त, तथा शेष गुणस्थानवर्ती देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं । गतिस्वामित्व, अध्वान और बन्धव्युच्छेदस्थान सुगम हैं । मिथ्यादृष्टिके चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है ।

सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १०९ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा[1] । सजोगिकेवलि-अद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो[2] वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ११० ॥

एदस्स अत्थो उच्चदे— बंधो पुव्वं पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, सजोगिकेवलि-अजोगिकेवलीसु जहाकमेण बंधोदयवोच्छेददंसणादो । सोदय-परोदएण बंधो, सव्वगुणट्ठाणेसु अद्धुवोदयत्तादो । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरम-दंसणादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । पच्चया सव्वगुणट्ठाणेसु ओघपच्चय-तुल्ला । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो तिगइसंजुत्तं, णिरयगईए सह सादबंधाभावादो । सेसं सव्वमोघतुल्लं ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्तिणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १११ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं । सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर बन्धव्युच्छेद होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ११० ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— सातावेदनीयका बन्ध पूर्वमें और उदय पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सयोगकेवली और अयोगकेवली गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, वह सब गुणस्थानोंमें अध्रुवोदयी है । मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां एक समयसे उसका बन्धविश्राम देखा जाता है । प्रमत्तसंयतसे ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । प्रत्यय सब गुणस्थानोंमें ओघप्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, नरकगतिके साथ सातावेदनीयका बन्ध नहीं होता । शेष सब प्ररूपणा ओघके समान है ।

असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १११ ॥

---

१ प्रतिषु ' बंधो ' इति पाठः ।

२ अ-काप्रत्योः ' बंधा ' इति पाठः ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[सुगमं ।]

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ११२ ॥

असादावेदणीयस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, पमत्त-अजोगिकेवलीसु जहाकमेण बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । एवमरदि-सोगाणं वत्तव्वं, पमत्तापुव्वकरणेसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो । एवं चेव अथिर-असुहाणं वत्तव्वं, पमत्त-सजोगिकेवलीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । अजसकित्तीए पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिण्णो, पमत्तसंजद-असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो ।

असादावेदणीय-अरदि-सोगाणं सोदय-परोदएण सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो, परावत्तणोदयत्तादो । अथिरासुभाणं सव्वत्थ[1] सोदएण बंधो, धुवोदयत्तादो । अजसकित्तीए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति सोदय-परोदएण बंधो, एदेसु पडिवक्खोदएण वि बंधुवलंभादो ।

[यह सूत्र सुगम है ।]

मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ ११२ ॥

असातावेदनीयका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्तसंयत और अयोगकेवली गुणस्थानोंमें यथाक्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । इसी प्रकार अरति और शोकके कहना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्त और अपूर्वकरण गुणस्थानोंमें क्रमशः इनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार ही अस्थिर और अशुभके भी कहना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्त और सयोगकेवली गुणस्थानोंमें उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । अयशकीर्तिका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्तसंयत और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है ।

असातावेदनीय, अरति और शोकका सब गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, इनका उदय परिवर्तनशील है । अस्थिर और अशुभका सर्वत्र स्वोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी हैं । अयशकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयके साथ भी उसका बन्ध पाया जाता है । इसके ऊपर परोदयसे

---

१ प्रतिषु 'सव्व' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवरि परोदएण, जसकित्तीए चेव तत्थोदयदंसणादो । एदासिं छण्हं पयडीणं सांतरो बंधो, दो-तिण्णिसमयादिकालपडिबद्धबंधणियमाभावादो । पच्चया सुगमा । एदाओ छप्पयडीओ मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दुगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तं बंधंति । उवरि ओघभंगो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-णिरयाणुपुव्वी-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ११३ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ११४॥

'एदे बंधा' त्ति णिद्देसो अणत्थओ, अवगदट्ठपरूवणादो । ण एस दोसो,

---

बन्ध होता है, क्योंकि, वहां यशकीर्तिका ही उदय देखा जाता है । इन छह प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, दो-तीन समयादि रूप कालसे सम्बद्ध इनके बन्धके नियमका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । इन छह प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि चार गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि व असंयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंसे संयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं । उपरिम प्ररूपणा ओघके समान है ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, नारकायु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, नरकानुपूर्वी, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ११३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ११४ ॥

शंका—'ये बन्धक हैं' यह निर्देश अनर्थक है, क्योंकि, वह ज्ञात अर्थका प्ररूपण करता है ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मेधावर्जित अर्थात् मूर्ख जनोंके

---

१ प्रतिषु 'तत्तोदय-' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेहावज्जियजणाणुग्गहट्ठं तण्णिद्देसादो। मिच्छत्त-अपज्जत्ताणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति; मिच्छाइट्ठिम्हि चेव तदुभयवोच्छेददंसणादो। एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणमेस विचारो णत्थि, पंचिंदिएसु तेसिमुदयाभावादो। णवरि पंचिंदियपज्जत्तएसु अपज्जत्तस्स वि एसो विचारो णत्थि त्ति वत्तव्वं। णवुंसयवेदस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, मिच्छाइट्ठि-अणियट्टिगुणेसु[1] बंधोदयवोच्छेददंसणादो। एवं णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयाणुपुव्वीणं वत्तव्वं, मिच्छादिट्ठि-असंजदसमादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो। एवं हुंडसंठाणस्स वत्तव्वं, मिच्छाइट्ठि-सजोगिकेवलीसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो। एवमसंपत्तसेवट्टसंघडणस्स वि वत्तव्वं, मिच्छाइट्ठि-अप्पमत्तेसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो।

मिच्छत्तस्स सोदएण बंधो, धुवोदयत्तादो[2]। णवुंसयवेद-अपज्जत्ताणं सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो। णवरि पंचिंदियपज्जत्तएसु अपज्जत्तस्स परोदओ बंधो, तत्थ तदुदयाभावादो।

अनुग्रहके लिये वह निर्देश किया गया है।

मिथ्यात्व और अपर्याप्तका बन्ध व उदय दोनों एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही उन दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण, इन प्रकृतियोंके यह विचार नहीं है, क्योंकि, पंचेन्द्रिय जीवोंमें उनके उदयका अभाव है। विशेष इतना है कि पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें अपर्याप्त प्रकृतिके भी यह विचार नहीं है, ऐसा कहना चाहिये। नपुंसकवेदका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानोंमें क्रमशः उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है। इसी प्रकार नारकायु, नरकगति और नरकानुपूर्वीके कहना चाहिये, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे इनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है। इसी प्रकार हुण्डसंस्थानके भी कहना चाहिये, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि और सयोगकेवली गुणस्थानोंमें इसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है। इसी प्रकार असंप्राप्तसृपाटिका संहननके भी कहना चाहिये, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि और अप्रमत्त गुणस्थानोंमें इसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है।

मिथ्यात्वका स्वोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि वह ध्रुवोदयी है। नपुंसकवेद और अपर्याप्तका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी हैं। विशेष इतना है कि पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें अपर्याप्तका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें अपर्याप्तके

---

१ आप्रतौ '-अणियट्टिगुणट्ठाणेसु ' इति पाठः।

२ अ-आप्रत्योः ' धुवोदयादो ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं सोदय-परोदओ बंधो, विग्गहगदीए उदयाभावे वि बंधदंसणादो सव्वेसिं तदुदयणियमाभावादो वा। णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-णिरयाणुपुव्वी-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं परोदओ बंधो, पंचिंदिएसु एदासिमुदयविरोहादो उदएण सह बंधस्स उत्तिविरोहादो।

मिच्छत्त-णिरयाउआणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। सेसाणं पयडीणं सांतरो, णिरंतरबंधे[1] णियमाभावादो। पच्चया सुगमा। मिच्छत्तं चउगइसंजुत्तं, णउंसयवेद-हुंडसंठाणाणि तिगइसंजुत्तं, अपज्जत्तासंपत्तसेवट्टसंघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति। णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयाणुपुव्वीओ णिरयगइसंजुत्तं, सेसाओ सव्वपयडीओ तिरिक्खगइसंजुत्तं। सेसमोघं।

अपच्चक्खाणावरणीयकोध-माण-माया-लोभ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाणं को बंधो को अबंधो? ॥ ११५ ॥

सुगमं।

उदयका अभाव है। हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासंहननका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें उनका उदयाभाव होनेपर भी बन्ध देखा जाता है, अथवा सब पंचेन्द्रियोंके उनके उदयका नियम भी नहीं है। नारकायु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, नरकानुपूर्वी, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण, इनका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, पंचेन्द्रियोंमें इनके उदयका विरोध होनेसे उदयके साथ उनके बन्धके कथनका विरोध है।

मिथ्यात्व और नारकायुका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविश्रामका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, निरन्तर बन्धमें नियमका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं। मिथ्यात्वको चारों गतियोंसे संयुक्त, नपुंसकवेद और हुण्डसंस्थानको देवगति विना तीन गतियोंसे संयुक्त, तथा अपर्याप्त और असंप्राप्तसृपाटिकासंहननको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। नारकायु, नरकगति और नरकानुपूर्वीको नरकगतिसे संयुक्त, तथा शेष सब प्रकृतियोंको तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं। शेष प्ररूपणा ओघके समान है।

अप्रत्याख्यानावरणीय क्रोध, मान, माया, लोभ, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्म, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है? ॥ ११५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

---

१ आ-काप्रत्योः ' णिरंतरबंधो ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ११६ ॥

मणुस्साणुपुव्वी-अपच्चक्खाणचउक्काणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि[1] तदुभयाभावदंसणादो । मणुसगईए पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, असंजदसम्मादिट्ठि-अजोगिकेवलीसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो । ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणाणमेवं चेव वत्तव्वं, असंजदसम्मादिट्ठि-सजोगीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । अपच्चक्खाणचउक्कादीणं सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्तादो[2] । अपच्चक्खाणचउक्कस्स बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंगाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो सांतर-णिरंतरो, तिरिक्ख-मणुस्सेसु सांतरस्स आणदादिदेवेसु णिरंतरत्तुवलंभादो[3] । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, एगसमएण तत्थ बंधुवरमाभावादो । वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणस्स[4] मिच्छाइट्ठि-

मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक बन्धक हैं । ये बन्धक है, शेष अबन्धक हैं ॥ ११६ ॥

मनुष्यानुपूर्वी और अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । मनुष्यगतिका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि और अयोगकेवली गुणस्थानोंमें क्रमशः उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग और वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहननके भी इसी प्रकार ही कहना चाहिये, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगकेवली गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है ।

अप्रत्याख्यावरणचतुष्कादिकोंका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, ध्रुवबन्धी हैं । मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर और औदारिकशरीरांगोपांगका बन्ध मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, वह तिर्यंच व मनुष्योंमें सान्तर होकर भी आनतादि देवोंमें निरन्तर पाया जाता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें एक समयसे इनके बन्धविश्रामका अभाव है । वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहननका मिथ्यादृष्टि और सासादन गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध

१ प्रतिषु '-सम्मादिट्ठीहि ' इति पाठः । २ प्रतिषु ' बंधोदयत्तादो ' इति पाठः ।
३ प्रतिषु ' णिरंतरुवलंभादो ' इति पाठः । ४ प्रतिषु '-संघडणाणं ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सासणेसु सांतरो बंधो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो । पच्चया सुगमा । उवरि मूलोघभंगो ।

पच्चक्खाणावरणकोध-माण-माया-लोभाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ११७ ॥

सुगमं ।

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ११८ ॥

एदं पि सुगमं ।

पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ११९ ॥

सुगमं ।

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठउवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए सेसे संखेज्जाभागे[1] गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२० ॥

होता है । ऊपर उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । उपरिम प्ररूपणा मूलोघके समान है ।

प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया और लोभका कौन बन्धक व कौन अबन्धक है ? ॥ ११७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ११८ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

पुरुषवेद और संज्वलनक्रोधका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ११९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरणबादरसाम्परायिकप्रविष्ट उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरणबादरकालके शेषमें संख्यात बहुभागोंके वीत जानेपर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १२० ॥

---

१ प्रतिषु ' संखेज्जेसु भागे ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एदं पि सुगमं ।

माण-माया-संजलणाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १२१ ॥

सुगमं ।

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए सेसे सेसे संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२२ ॥

सुगमं ।

लोभसंजलणस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ १२३ ॥

सुगमं ।

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२४ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

संज्वलन मान और मायाका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अनिवृत्ति-बादरकालके शेष शेषमें संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १२२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संज्वलन लोभका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १२३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरणबादरकालके अन्तिम समयमें जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १२४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुगमं ।

हस्स-रदि-भय-दुगंछाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १२५ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्ठउवसमा खवा बंधा । अपुव्वकरणद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२६ ॥

एदं पि सुगमं ।

मणुस्साउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ १२७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२८ ॥

सुगमं ।

यह सूत्र सुगम है ।

हास्य, रति, भय और जुगुप्साका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥१२५॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरण-कालके अन्तिम समयमें जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १२६ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

मनुष्यायुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक हैं ? ॥ १२७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १२८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

Jain Education International		For Private & Personal Use Only		www.jainelibrary.org

देवाउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ १२९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा बंधा । अप्पमत्तद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १३० ॥

सुगमं ।

देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-संठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-णामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १३१ ॥

सुगमं ।

देवायुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १२९ ॥

यह सूत्र सुगम्म है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं । अप्रमत्तकालके संख्यातवें भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १३० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और निर्माण नामकर्म, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १३१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा॥ १३२॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— देवगइ-वेउव्वियसरीर-अंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिण्णो, अपुव्वकरणासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-सुभग-आदेज्जाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, अपुव्वकरणाजोगीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। तेजा-कम्मइय-समचउरससंठाण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुस्सर-णिमिणणामाणमेवं चेव वत्तव्वं, अपुव्वकरण-सजोगीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो।

देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदओ बंधो, उदए संते एदासिं बंधविरोहादो। पंचिंदिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-तस-बादर-पज्जत्त-थिर-सुह-णिमिणाणं सोदएणेव बंधो, धुवोदयत्तादो। परघादुस्सास-

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं। अपूर्वकरणकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं॥ १३२॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमशः उनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। पंचेन्द्रियजाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, सुभग और आदेय, इनका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और अयोगकेवली गुणस्थानोंमें क्रमसे इनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुस्वर और निर्माण नामकर्म, इनके भी बन्ध व उदयका व्युच्छेद इसी प्रकार कहना चाहिये, क्योंकि, अपूर्वकरण और सयोगकेवली गुणस्थानोंमें इनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है।

देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उदयके होनेपर इनके बन्धका विरोध है। पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, शुभ और निर्माण नामकर्मका स्वोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी हैं। परघात,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पसत्थविहायगइ-सुस्सर-आदेज्जाणं सोदय-परोदओ बंधो, अपज्जत्तकाले उदयाभावे पि बंधुवलंभादो, पसत्थविहायगइ-सुस्सराणमद्धुवोदयत्तदंसणादो, आदेज्जस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि-जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति उदयस्स भयणिज्जत्तुवलंभादो, उवरि सव्वत्थ धुवोदयत्त-दंसणादो च । समचउरससंठाणुवघाद-पत्तेयसरीराणमेवं चेव वत्तव्वं, विग्गहगदीए उदया-भावे वि बंधुवलंभादो, समचउरससंठाणोदयस्स भयणिज्जत्तदंसणादो च । एवं सुभग-पज्जत्ताणं पि वत्तव्वं, पंचिंदिएसु पडिवक्खपयडीए उदयदंसणादो । णवरि पंचिंदियपज्जत्तएसु पज्जत्तस्स सोदएणेव बंधो, तत्थ पडिवक्खपयडीए उदयाभावादो । एवमेदं मिच्छाइट्ठीणं परूविदं । सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणमेवं चेव परूवेदव्वं । णवरि पज्जत्तस्स सोदए-णेव[1] बंधो । एवं सम्मामिच्छादिट्ठिआदिउवरिमगुणट्ठाणाणं पि वत्तव्वं । णवरि उवघाद-परघाद-उस्सास पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं पि सोदएणेव बंधो, तत्थ अपज्जत्तकालाभावादो ।

तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिणाणं सव्वगुणट्ठाणेसु

उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, सुस्वर और आदेय, इनका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें उदयके न होनेपर भी इनका बन्ध पाया जाता है, प्रशस्त-विहायोगति और सुस्वर प्रकृतियोंका अध्रुवोदय देखा जाता है, तथा मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक आदेयका उदय भजनीय अर्थात् विकल्पसे पाया जाता है, और इससे ऊपर सर्वत्र ध्रुवोदय देखा जाता है । समचतुरस्रसंस्थान, उपघात और प्रत्येकशरीरके भी इसी प्रकार कहना चाहिये, क्योंकि, विग्रहगतिमें उदयके न होनेपर भी बन्ध पाया जाता है, तथा समचतुरस्रसंस्थानका उदय भजनीय देखा जाता है । इसी प्रकार सुभग और पर्याप्तके भी कहना चाहिये, क्योंकि, पंचेन्द्रियोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय देखा जाता है । विशेष इतना है कि पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें पर्याप्त प्रकृतिका स्वोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । इस प्रकार यह मिथ्यादृष्टियोंकी प्ररूपणा हुई । सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंकी भी प्ररूपणा इसी प्रकार करना चाहिये । विशेषता यह है कि पर्याप्तका स्वोदयसे ही बन्ध होता है । इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि उपरिम गुणस्थानोंके भी कहना चाहिये । विशेष इतना है कि उपघात, परघात, उच्छ्वास, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका भी स्वोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, उन गुणस्थानोंमें अपर्याप्तकालका अभाव है ।

तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, और

१ प्रतिषु 'पज्जत्तस्सोदएणेव' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । पंचिंदियजादीए मिच्छाइट्ठीसु सांतर-णिरंतरो । कधं णिरंतरो ? ण, सणक्कुमारादिदेवेसु णेरइएसु असंखेज्जवासाउअ-सुहतिलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु च णिरंतरबंधुवलंभादो । सासणादीसु णिरंतरो बंधो, तत्थ एइंदियजादिआदीणं बंधाभावादो । एवं परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं पि वत्तव्वं, भेदाभावादो । समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जाणं मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतर-णिरंतरो बंधो । कधं णिरंतरो ? ण, असंखेज्जवासाउएसु एदासिं णिरंतरबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो । थिर-सुभाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो, पडिवक्खपयडीए बंधसंभवादो । उवरि णिरंतरो । देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतर-णिरंतरो, सुहतिलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु णिरंतरबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो । पच्चया सुगमा । सेसं ओघभंगो ।

निर्माण, इनका सब गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवबन्धी हैं । पंचेन्द्रिय जातिका मिथ्यादृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका— निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, सानत्कुमारादि देव, नारकी, असंख्यातवर्षायुष्क और शुभ तीन लेश्यावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि आदि उपरिम गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें एकेन्द्रियजाति आदिकोंका बन्ध नहीं होता । इसी प्रकार परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरके भी कहना चाहिये, क्योंकि, इनके कोई विशेषता नहीं है । समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर और आदेयका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका— निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान— यह ठीक नहीं, क्योंकि, असंख्यातवर्षायुष्कोंमें इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

उपरिम गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका वहां अभाव है । स्थिर और शुभका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतिका बन्ध सम्भव है । इससे ऊपर निरन्तर बन्ध होता है । देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, शुभ तीन लेश्यावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है । इससे ऊपर निरन्तर बन्ध होता है । प्रत्यय सुगम हैं । शेष प्ररूपणा ओघके समान है ।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

आहारसरीर-आहारअंगोवंगणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १३३ ॥

सुगमं ।

अप्पमत्तसंजदा अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा । अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १३४ ॥

सुगमं ।

तित्थयरणामाए को बंधो को अबंधो ? ॥ १३५ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा । अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १३६ ॥

आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांग नामकर्मोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १३३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तसंयत और अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक व क्षपक बन्धक हैं । अपूर्वकरणकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १३४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १३५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक और क्षपक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरणकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १३६ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एदं पि सुगमं ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-वणप्फदिकाइय-णिगोद-जीव-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीर-पज्जत्तापज्जत्ताणं च पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो ॥ १३७ ॥

एदमप्पणासुत्तं देसामासियं, तेणेदेण सूइदत्थाणं परूवणा कीरदे -- तत्थ ताव पुढविकाइयाणं भण्णमाणे पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग- [दुभग-] सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ पुढविकाइएहि बज्झमाणाओ ठवेदव्वा । एत्थ बंधोदयवोच्छेद-विचारो णत्थि, तदुभयवोच्छेदाभावादो ।

यह सूत्र भी सुगम है ।

कायमार्गणानुसार पृथिवीकायिक, अप्कायिक, वनस्पतिकायिक और निगोद जीव बादर सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त तथा बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त अपर्याप्त जीवोंकी परूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है ॥ १३७ ॥

यह अर्पणासूत्र देशामर्शक है, अत एव इससे सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं--उनमें पहले पृथिवीकायिक जीवोंकी प्ररूपणा करते समय पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गति व मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, [दुर्भग,] सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीचगोत्र, ऊंचगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियां पृथिवीकायिक जीवों द्वारा बध्यमान स्थापित करना चाहिये । यहां बन्ध और उदयके व्युच्छेदका विचार नहीं है, क्योंकि, दोनोंके व्युच्छेदका यहां अभाव है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचणाणावरणीय चउदंसणावरणीय-मिच्छत्त-णउंसयवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थावर-थिराथिर-सुहासुह-दुभग-अणादेज्ज-णिमिण-णीचागोद-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ एदासिं धुवोदयत्तादो । इत्थि-पुरिसवेद-मणुस्साउ-मणुस्सगइ-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-पंचसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-साहारण-दोविहायगइ-तस-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणं परोदओ बंधो, एदासिमेत्थ उदयविरोहादो । पंचदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-छणोकसाय-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो । ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-उवघाद-पत्तेयसरीर-आदावुज्जोवाणं पि सोदय-परोदओ, विग्गहगदीए उदयाभावादो अद्धुवोदयत्तादो च । परघादुस्सासाणं पि सोदय-परोदओ बंधो, एदासिमुदयाणुदयसहिदपज्जत्तापज्जत्तद्धासु बंधदंसणादो । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए सोदय-परोदओ बंधो, सोदयाणुदयविग्गहाविग्गहगदीसु बंधुवलंभादो ।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणु-

पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थावर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, निर्माण, नीचगोत्र और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये प्रकृतियां ध्रुवोदयी हैं । स्त्रीवेद, पुरुषवेद, मनुष्यायु, मनुष्यगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, पांच संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, साधारणशरीर, दो विहायोगतियां, त्रस, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र, इनका परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनके उदयका विरोध है । पांच दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, छह नोकषाय, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवोदयी हैं । औदारिकशरीर, हुण्डसंस्थान उपघात, प्रत्येकशरीर, आताप, और उद्योतका भी स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव है, तथा ये अध्रुवोदयी भी हैं । परघात और उच्छ्वासका भी स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, क्रमशः इनके उदय और अनुदय सहित पर्याप्त व अपर्याप्त कालोंमें उनका बन्ध देखा जाता है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, क्रमशः अपने उदय व अनुदय सहित विग्रह व अविग्रह गतियोंमें उसका बन्ध पाया जाता है ।

पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा,

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

स्साउ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो धुवबंधित्तादो च । सादासाद-सत्तणोकसाय-मणुसगइ-एइंदिय-बीइंदिए-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदाउज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति--उच्चागोदाणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो । कधं णिरंतरो ? ण, तेउ-वाउकाइएहिंतो पुढविकाइएसुप्पण्णाणं णिरंतरबंधुवलंभादो । परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं पि सांतर-णिरंतरो बंधो । कधं णिरंतरो ? ण, देवाणं पुढविकाइएसुप्पण्णाणं मुहुत्तस्संते णिरंतरबंधुवलंभादो ।

एदेसिं पच्चया एइंदियपच्चएहि समा । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-

---

तिर्यगायु, मनुष्यायु, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविश्रामका अभाव है, तथा ये ध्रुवबन्धी भी हैं। साता व असाता वेदनीय, सात नोकषाय, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, मनुष्यगति-प्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा जाता है । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, तेज व वायु कायिकोंमेंसे पृथिवीकायिकोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

परघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका भी सान्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, पृथिवीकायिकोंमें उत्पन्न हुए देवोंके अन्तर्मुहूर्त तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इन प्रकृतियोंके प्रत्यय एकेन्द्रियप्रत्ययोंके समान हैं। तिर्यगायु, तिर्यग्गति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीइंदिय-चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणसरीराणि तिरिक्खगइसंजुत्तं बज्झंति । मणुसाउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदाणि मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति । सेसाओ पयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं । तिरिक्खा सामी । बंधद्धाणं सुगमं । एत्थ बंधवोच्छेदो णत्थि । धुवबंधीणं चउव्विहो बंधो । सेसाणं सादि-अद्धुवो ।

बादरपुढविकाइयाणमेवं चेव वत्तव्वं । णवरि बादरस्स सोदएण बंधो, सुहुमस्स परोदएण । बादरपुढविकाइयपज्जत्ताणं पि एवं चेव वत्तव्वं । णवरि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स परोदओ बंधो । बादरपुढविकाइयअपज्जत्ताणं पि बादरपुढविकाइयभंगो । णवरि पज्जत्त-थीणगिद्धितिय परघादुस्सास-आदावुज्जोव-जसकित्तीणं परोदओ, अपज्जत्त-अजसकित्तीणं सोदओ बंधो । परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं सांतरो बंधो, अपज्जत्तएसु देवाणमुववादाभावादो । पच्चया सत्ततीस, ओरालियकायजोगपच्चयस्साभावादो ।

सुहुमपुढविकाइयाणं पुढविकाइयभंगो । णवरि बादर-आदाउज्जोव-जसकित्तीणं परोदओ, सुहुम-अजसकित्तीणं सोदओ बंधो । परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं सांतरो

....

एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणशरीर, इनको तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं। मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रको मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। शेष प्रकृतियोंको मनुष्य व तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं। तिर्यंच स्वामी हैं। बन्धाध्वान सुगम है। यहां बन्धव्युच्छेद है नहीं। ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका चारों प्रकारका बन्ध होता है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है।

बादर पृथिवीकायिकोंकी भी इसी प्रकार प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि बादरका स्वोदय और सूक्ष्मका परोदयसे बन्ध होता है। बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंकी भी इसी प्रकार प्ररूपणा करना चाहिये। विशेषता इतनी है कि पर्याप्तका स्वोदय और अपर्याप्तका परोदय बन्ध होता है। बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंकी भी प्ररूपणा बादर पृथिवीकायिकोंके समान है। विशेषता यह है कि पर्याप्त, स्त्यानगृद्धित्रय, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत और यशकीर्तिका परोदय तथा अपर्याप्त और अयशकीर्तिका स्वोदय बन्ध होता है। परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तोंमें देवोंकी उत्पत्ति नहीं होती। प्रत्यय सैंतीस होते हैं, क्योंकि, उनके औदारिककाययोग प्रत्ययका अभाव है।

सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंकी प्ररूपणा पृथिवीकायिकोंके समान है। विशेष यह है कि बादर, आताप, उद्योत और यशकीर्तिका परोदय तथा सूक्ष्म और अयशकीर्तिका स्वोदय बन्ध होता है। परघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका सान्तर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधो, सुहुमेइंदिएसु देवाणमुववादाभावादो णिरंतरबंधाभावा । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ताणमेवं चेव वत्तव्वं । णवरि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स परोदओ बंधो । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ताणमेवं चेव वत्तव्वं । णवरि अपज्जत्तस्स सोदओ, पज्जत्त-थीणगिद्धितिय-परघादुस्सासाणं परोदओ बंधो । सव्वआउकाइयाणं जहापच्चासण्णपुढविकाइयभंगो । णवरि आदावस्स परोदओ बंधो, पुढविकाइए मोत्तूण अण्णत्थ आदावस्सुदयाभावादो ।

पंचणाणावरणीय–णवदंसणावरणीय–सादासाद–मिच्छत्त–सोलसकसाय- णवणोकसाय- तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-पंचजादि-ओरालिय-तेजा--कम्मइयसरीर--छसंठाण– ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-वण्णचउक्क--तिरिक्खगइ–मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी–अगुरुव- लहुवचउक्क-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारण - सरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति- अजसकित्ति- णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ ठविय वणप्फदिकाइयाणं परूवणा कीरदे — बंधोदयाणं पुव्वापुव्वकालगयवोच्छेदपरिक्खा णत्थि, बंधोदयाणमेत्थ वोच्छेदाभावादो ।

बन्ध होता है, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें देवोंकी उत्पत्ति न होनेसे वहां निरन्तर बन्धका अभाव है। सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंकी इसी प्रकार ही प्ररूपणा करना चाहिये। विशेषता इतनी है कि पर्याप्तका स्वोदय और अपर्याप्तका परोदय बन्ध होता है। सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंकी भी इसी प्रकार ही प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि अपर्याप्तका स्वोदय और पर्याप्त, स्त्यानगृद्धित्रय, परघात व उच्छ्वासका परोदय बन्ध होता है। सब अप्कायिक जीवोंकी प्ररूपणा अपनी अपनी प्रत्यासत्तिके अनुसार पृथिवीकायिकोंके समान है। विशेषता यह है कि आतापका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, पृथिवीकायिकोंको छोड़कर अन्यत्र आताप कर्मका उदय नहीं होता।

पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, पांच जातियां औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, वर्णादिक चार, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु आदिक चार, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीचगोत्र, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियोंको स्थापित कर वनस्पतिकायिकोंकी प्ररूपणा करते हैं— बन्ध और उदयके पूर्व व अपूर्व कालगत व्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहां बन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचणाणावरणीय - चउदंसणावरणीय - मिच्छत्त - णवुंसयवेद - तिरिक्खाउ - तिरिक्खगइ - एइंदियजादि - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्णचउक्क - अगुरुवलहुव - थावर - थिराथिर - सुहासुह - दुभग - अणादेज्ज - णिमिण - णीचागोद - पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, अत्थगईए धुवोदयत्तादो । इत्थि - पुरिसवेद - मणुसाउ - मणुसगइ - बीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदिय - पंचिंदियजादि - पंचसंठाण - ओरालिय - सरीरअंगोवंग - छसंघडण - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - आदाव - दोविहायगइ - तस - सुभग - सुस्सर दुस्सर - आदेज्जुच्चागोदाणं परोदओ बंधो । पंचदंसणावरणीय - सादासाद - सोलसकसाय - छण्णोकसाय - हुंडसंठाण - ओरालियसरीर - तिरिक्खाणुपुव्वी - उवघाद - परघादुस्सासुज्जोव - बादर - सुहुम - पज्जत्ता - पज्जत्त - पत्तेय - साहारणसरीर - जसकित्ति - अजसकित्तीणं सोदय - परोदओ बंधो ।

पंचणाणावरणीय - मिच्छत्त - सोलसकसाय - भय - दुगुंछा - तिरिक्ख - मणुसाउ - ओरालिय - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्णचउक्क - अगुरुवलहुव - उवघाद - णिमिण - पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो । सादासाद - सत्तणोकसाय - मणुस्सगइ - एइंदिय - बीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदिय - पंचिंदियजादि - छसंठाण - ओरालियसरीरअंगोवंग - छसंघडण - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - आदावुज्जोव - दोविहायगदि - तस - थावर - सुहुम - अपज्जत्त - साहारणसरीर - थिराथिर - सुहासुह - सुभग - दुभग - सुस्सर - दुस्सर - आदेज्ज - अणादेज्ज -

....

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, स्थावर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, निर्माण, नीचगोत्र और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अर्थापत्तिसे ये प्रकृतियां ध्रुवोदयी हैं । स्त्रीवेद, पुरुषवेद, मनुष्यायु, मनुष्यगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, पांच संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, दो विहायोगतियां, त्रस सुभग, सुस्वर दुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र, इनका परोदय बन्ध होता है । पांच दर्शनावरणीय साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, छह नोकषाय, हुंडसंस्थान, औदारिकशरीर, तिर्यगानुपूर्वी, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है ।

पांच ज्ञानावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, मनुष्यायु, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है । साता व असाता वेदनीय, सात नोकषाय, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमुवलंभादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो। कुदो? तेउ-वाउकाइएहिंतो वणप्फदिकाइएसुप्पण्णाणं मुहुत्तस्संतो[1] णिरंतरबंधुवलंभादो। परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं सांतर-णिरंतरो बंधो। कधं णिरंतरो? ण, देवेहिंतो वणप्फदिकाइएसुप्पण्णाणं मुहुत्तस्संतो णिरंतर-बंधुवलंभादो। पच्चया सुगमा। गइसंजुत्तादिउवरिमेइंदियपरूवणातुल्ला।

एवं बादरवणप्फदिकाइयाणं च वत्तव्वं[2]। णवरि बादरस्स सोदओ बंधो, सुहुमस्स परोदओ। बादर-[वणप्फदि-] पज्जत्ताणं बादरवणप्फदिभंगो। णवरि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स परोदओ बंधो। बादरवणप्फदिअपज्जत्ताणं बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो। सुहुमवणप्फदिपज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तभंगो[3]। तसअपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्तभंगो। णवरि बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियाणं सोदय-परोदओ बंधो। णिगोदजीवाणं तेसिं[4] बादर-सुहुम-

सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इनका एक समयसे बन्धविश्राम पाया जाता है। तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तेज व वायु कायिकोंमेंसे वनस्पतिकायिकोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्मुहूर्त तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है। परघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, देवोंमेंसे वनस्पतिकायिकोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्मुहूर्त तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

प्रत्यय सुगम हैं। गतिसंयुक्तता आदि उपरिम प्ररूपणा एकेन्द्रिय प्ररूपणाके समान है।

इसी प्रकार बादर वनस्पतिकायिकोंके भी कहना चाहिये। विशेषता केवल इतनी है कि बादरका स्वोदय बन्ध होता है और सूक्ष्मका परोदय। बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंकी प्ररूपणा बादर वनस्पतिकायिकोंके समान है। विशेषता यह है कि पर्याप्तका स्वोदय और अपर्याप्तका परोदय बन्ध होता है। बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त व अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्तोंके समान है। त्रस अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है। विशेषता यह है कि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रियका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। निगोद जीव व

१ प्रतिषु 'मुहुत्तो' इति पाठः। २ अप्रतौ 'व वत्तव्वं', आप्रतौ 'वत्तव्वं' इति पाठः। ३ अप्रतौ 'सुहुमेइंदियपज्जत्तभंगो' इति पाठः। ४ प्रतिषु 'तस-' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जत्तापज्जत्ताणं वणप्फदिकाइयभंगो । णवरि पत्तेयसरीरस्स परोदओ सांतरो बंधो । तस-बादर-पज्जत्त-परघादुस्सासाणं बंधो सांतरो । साहारणसरीरस्स सोदय-परोदओ । बादरवणप्फदि-काइयपत्तेयसरीरपज्जत्तापज्जत्ताणं पि एवं चेव वत्तव्वं । णवरि साहारणसरीरस्स परोदओ बंधो, पत्तेयसरीरस्स सोदय-परोदओ बंधो ।

तेउकाइय-वाउकाइय-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जाणं सो चेव भंगो । णवरि विसेसो मणुस्साउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदं णत्थि ॥ १३८ ॥

एदमप्पणासुत्तं देसामासियं, तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे— परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं सांतरो बंधो, देवाणं तेउ-वाउकाइएसु उववादाभावादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खाणुपुव्वी-णीचागोदाणं णिरंतरो बंधो सोदओ चेव । णवरि तिरिक्खाणुपुव्वीए बंधो सोदय-परोदओ । आदाउज्जोवाणं परोदओ बंधो । होदु णाम वाउकाइएसु आदावुज्जोवाण-

उसके बादर सूक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा वनस्पतिकायिकोंके समान है । विशेष यह है कि प्रत्येकशरीरका परोदय व सान्तर बन्ध होता है । त्रस, बादर, पर्याप्त, परघात और उच्छ्वासका सान्तर बन्ध होता है । साधारणशरीरका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त व अपर्याप्तोंके भी इसी प्रकार ही कहना चाहिये । विशेषता यह है कि साधारणशरीरका परोदय बन्ध होता है । प्रत्येक-शरीरका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है ।

तेजकायिक और वाउकायिक बादर सूक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है । विशेषता केवल यह है कि मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्र प्रकृतियां इनके नहीं हैं ॥ १३८ ॥

यह अर्पणासूत्र देशामर्शक है, इसीलिये इससे सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं— परघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, देवोंकी तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमें उत्पत्ति नहीं होती । तिर्यग्गति, तिर्यगानु-पूर्वी और नीचगोत्रका बन्ध निरन्तर व स्वोदय ही होता है । विशेषता यह है कि तिर्यगानुपूर्वीका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है । आताप और उद्योतका परोदय बन्ध होता है ।

शंका— वायुकायिक जीवोंमें आताप और उद्योतका अभाव भले ही हो, क्योंकि,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुदयाभावो[1], तत्थ तदणुवलंभादो । ण तेउकाइएसु तदभावो, पच्चक्खेणुवलंभमाणत्तादो ? एत्थ परिहारो वुच्चदे — ण ताव तेउकाइएसु आदाओ अत्थि, उण्हप्पहाए तत्थाभावादो । तेउम्हि वि उण्हत्तमुवलंभइ च्चे उवलब्भउ णाम, [ण] तस्स आदाववएसो, किंतु तेजासण्णा; "मूलोष्णवती प्रभा तेजः, सर्वांगव्याप्युष्णवती प्रभा आतापः, उष्णरहिता प्रभोद्योतः," इति तिण्हं भेदोवलंभादो[2] । तम्हा ण उज्जोवो वि तत्थत्थि, मूलुण्हुज्जोवस्स तेजववएसादो । एत्तिओ चेव भेदो, ण अण्णत्थ कत्थ वि । णवरि सव्वासिं पयडीणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बंधो ।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्ताणमोघं णेदव्वं जाव तित्थयरे त्ति ॥ १३९ ॥

एदं देसामासियवप्पणासुत्तं[3], तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे— बीइंदिय-तीइंदिय-

उनमें वह पाया नहीं जाता । किन्तु तेजकायिक जीवोंमें उन दोनोंका उदयाभाव सम्भव नहीं है, क्योंकि, यहां उनका उदय प्रत्यक्षसे देखा जाता है ।

समाधान—यहां उक्त शंकाका परिहार कहते हैं— तेजकायिक जीवोंमें आतापका उदय नहीं है, क्योंकि, वहां उष्ण प्रभाका अभाव है ।

शंका—तेजकायमें भी तो उष्णता पायी जाती है, फिर वहां आतापका उदय क्यों न माना जाय ?

समाधान—तेजकायमें भले ही उष्णता पायी जाती हो, परन्तु उसका नाम आताप [नहीं] हो सकता, किन्तु 'तेज' संज्ञा होगी; क्योंकि, मूलमें उष्णवती प्रभाका नाम तेज, सर्वांगव्यापी उष्णवती प्रभाका नाम आताप, और उष्णता रहित प्रभाका नाम उद्योत है, इस प्रकार तीनोंके भेद पाया जाता है ।

इसी कारण वहां उद्योत भी नहीं है, क्योंकि, मूलोष्ण उद्योतका नाम तेज है [न कि उद्योत] । केवल इतना ही भेद है, और कहीं भी कुछ भेद नहीं है । विशेष इतना है कि सब प्रकृतियोंका तिर्यग्गतिसे संयुक्त बन्ध होता है ।

त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तोंके तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान ले जाना चाहिये ॥ १३९ ॥

यह देशामर्शक अर्पणासूत्र है, इसलिये इससे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते

१ प्रतिषु '-मुदयाभावादो' इति पाठः ।

२ मूलुण्हपहा अग्गी आदाओ होदि उण्हसहियपहा । आइच्चे तेरिच्छे उण्हूणपहा हु उज्जोओ ॥ गो. क. ३३.

३ अ-आप्रत्योः '-वुप्पण्णासुत्तं' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउरिंदिय-पंचिंदियाणं सोदय-परोदओ बंधो । तस-बादराणं सोदओ चेव । एइंदिय-थावर-सुहुम-साहारणादावाणं परोदओ चेव बंधो । अवसेसाणं पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ताणं उत्तिविहाणेण वत्तव्वं ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-कायजोगीसु ओघं णेयव्वं जाव तित्थयरेत्ति ॥ १४० ॥

ओघम्मि उत्तसत्तारसण्हं सुत्ताणमत्थो ससुत्तो एत्थ णिरवयवो वत्तव्वो, भेदाभावादो । णवरि पच्चयगदो भेदो अत्थि तं परूवेमो— मणजोगे णिरुद्धे छाएत्तालीस एक्केत्तालीस सत्ततीस [सत्ततीस] बत्तीस उणवीस[1] सत्तारस सत्तारस एक्कारस दस णव अट्ठ सत्त छ पंच [पंच चत्तारि चत्तारि] दोण्णि मिच्छाइट्ठिप्पहुडिसव्वगुणट्ठाणाणं जहाकमेण एदे पच्चया होंति । अण्णो वि विसेसो मणजोगे णिरुद्धे संते अत्थि— चदुजादि चत्तारिआणुपुव्वी-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं परोदएण[2], उवघाद-परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-पंचिंदियजादीणं सोदएण बंधो त्ति वत्तव्वं । एवं चेव चदुण्हं मणजोगाणं परूवणा

हैं— द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रियका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । त्रस और बादरका स्वोदय ही बन्ध होता है । एकेन्द्रिय, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण और आतापका परोदय ही बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंके पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंकी प्ररूपणाके अनुसार कहना चाहिये ।

योगमार्गणानुसार पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी और काययोगियोंमें तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान जानना चाहिये ॥ १४० ॥

ओघमें कहे हुए सत्तरह (५ वें सूत्रसे ३८ में सूत्र तक १७+१७=३४) सूत्रोंका अर्थ ससूत्र यहां संपूर्ण कहना चाहिये, क्योंकि, ओघसे यहां विशेषताका अभाव है । विशेष यह है कि प्रत्ययगत जो कुछ भेद है उसे यहां कहते हैं— मनोयोगके निरुद्ध होने अर्थात् उसके आश्रित व्याख्यान करनेपर छयालीस, इकतालीस, सैंतीस, [सैंतीस] बत्तीस, उन्नीस, सत्तरह, सत्तरह, ग्यारह, दश, नौ, आठ, सात, छह, पांच, [पांच, चार, चार] और दो, इस प्रकार ये क्रमसे मिथ्यादृष्टि आदि सब गुणस्थानोंके प्रत्यय होते हैं । मनोयोगके निरुद्ध होनेपर और भी विशेषता है— चार जातियां, चार आनुपूर्वी, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इनका परोदयसे तथा उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर और पंचेन्द्रिय जातिका स्वोदयसे बन्ध होता है, ऐसा कहना चाहिये । इसी प्रकार ही चार मनोयोगोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

१ प्रतिषु ' सचारस ' इति पाठः ।

२ मण-वयणसत्तगे ण हि ताविगिविगलं च थावराणुचओ ॥ गो. क. ३१०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कायव्वा । णवरि एक्कम्हि मणजोगे णिरुद्धे अवसेससव्वजोगा मूलोघुत्तरपच्चएसु अवणेदव्वा । अवसेसा णिरुद्धमणजोगीणं पच्चया होंति । णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि विसेसो ।

वचिजोगीणमेवं चेव वत्तव्वं, सांतर-णिरंतर-सोदय-परोदय-सामित्तपच्चयादीहि मणजोगीहिंतो वचिजोगीणं भेदाभावादो । णवरि बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियाणं सोदय-परोदओ बंधो त्ति वत्तव्वं । असच्च-मोसवचिजोगीणं वचिजोगिभंगो । णवरि सव्वगुणाणं उत्तरपच्चएसु असच्च-मोसवचिजोगं मोत्तूण सेससव्वजोगा अवणेदव्वा । सच्च-मोस-सच्चमोस-वचिजोगीणं सच्च-मोस-सच्चमोसमणजोगिभंगो, विसेसाभावादो ।

कायजोगीणं पि ओघभंगो चेव । णवरि सव्वगुणट्ठाणाणमोघपच्चएसु मण-वचिजोगट्ठ-पच्चया अवणेदव्वा । सजोगिपच्चएसु दोहोमण-वचिजोगपच्चया अवणेदव्वा । णत्थि अण्णत्थ विसेसो । ओघम्मि पुव्वुत्तसत्तारससुत्तेसु[1] चउत्थसुत्तम्मि भेदपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १४१ ॥

विशेषता यह है कि एक मनोयोगके निरुद्ध होनेपर शेष सब योगोंको मूलोघ उत्तर प्रत्ययोंमेंसे कम करना चाहिये । इस प्रकार शेष रहे निरुद्धमनोयोगियोंके प्रत्यय होते हैं । अन्यत्र और कहीं विशेषता नहीं है ।

वचनयोगियोंके भी इसी प्रकार ही कहना चाहिये, क्योंकि सान्तर-निरन्तर, स्वोदय-परोदय, स्वामित्व और प्रत्ययादिकोंकी अपेक्षा मनोयोगियोंसे वचनयोगियोंके कोई भेद नहीं है । विशेष इतना है कि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जातिका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, ऐसा कहना चाहिये । असत्यमृषावचनयोगियोंकी प्ररूपणा वचनयोगियोंके समान है । विशेषता यह है कि सब गुणस्थानोंके उत्तर प्रत्ययोंमेंसे असत्यमृषावचनयोगको छोड़कर शेष सब योगोंको कम करना चाहिये । सत्य, मृषा और सत्यमृषा वचनयोगियोंकी प्ररूपणा सत्य, मृषा और सत्यमृषा वचन-योगियोंके समान है, क्योंकि, कोई विशेषता नहीं है ।

काययोगियोंकी भी प्ररूपणा ओघके समान ही है । विशेष इतना है कि सब गुणस्थानोंके ओघ प्रत्ययोंमेंसे चार मनोयोग और चार वचनयोग, इस प्रकार आठ प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । अन्यत्र विशेषता नहीं है । ओघमें पूर्वोक्त सत्तरह सूत्रोंमेंसे चतुर्थ सूत्रमें भेद प्ररूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

साता वेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं है ॥ १४१ ॥

---

१ प्रतिषु 'पुव्विवुत्त-' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओघम्मि ' अवसेसा अबंधा ' त्ति उत्तं । एत्थ पुण ' अबंधा णत्थि ' त्ति वत्तव्वं, जोगप्पणादो । ण च सजोगेसु अजोगा होंति, विप्पडिसेहादो । जदि एत्तियमेत्तो चेव भेदो तो एत्तियस्सेव णिद्देसो किण्ण कदो ? ण एस दोसो, थूलबुद्धीणं[1] पि सुहग्गहणट्ठं तधोवदेसादो ।

ओरालियकायजोगीणं मणुसगइभंगो ॥ १४२ ॥

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं बंधोदयवोच्छेदे मणुसगदीदो णत्थि विसेसो, विसेसकारणाभावादो । जसकित्ति-उच्चागोदेसु विसेसो अत्थि, तेसिमेत्थुदयवोच्छेदाभावादो । मणुसगदीए पुण उदयवोच्छेदो अत्थि, अजोगिचरिमसमए मणुसगदीए सह एदासिमुदयवोच्छेददंसणादो । सोदय-परोदय-सांतर-णिरंतरपरिक्खासु णत्थि भेदो, भेदकारणाणुवलंभादो । पच्चएसु अत्थि भेदो, ओरालियमिस्स-कम्मइय-वेउव्वियदुग-चदुमण-वचिपच्चएहि विणा मिच्छाइट्ठिम्हि सासणे च जहाकमेण तेदालीस-अट्ठतीसपच्चयदंसणादो,

---

ओघमें ' अवशेष अबन्धक हैं ' ऐसा कहा गया है । परन्तु यहां ' अबन्धक कोई नहीं है ' ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि, यहां योगकी प्रधानता है । और सयोगियोंमें अयोगी होते नहीं हैं, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध है ।

शंका — यदि केवल इतनी मात्र ही विशेषता थी तो इतनेका ही निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, स्थूलबुद्धि शिष्योंके भी सुखपूर्वक ग्रहण हो, एतदर्थ उक्त प्रकार उपदेश किया गया है ।

औदारिककाययोगियोंकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है १४२ ॥

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय, इन प्रकृतियोंके बन्धोदयव्युच्छेदमें मनुष्यगतिसे कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, विशेष कारणोंका यहां अभाव है । यशकीर्ति और उच्चगोत्रमें विशेषता है, क्योंकि, यहां उनके उदयव्युच्छेदका अभाव है । परन्तु मनुष्यगतिमें इनका उदयव्युच्छेद है, क्योंकि, अयोगकेवली गुणस्थानके अन्तिम समयमें मनुष्यगतिके साथ इनका उदयव्युच्छेद देखा जाता है । स्वोदय-परोदय और सान्तर-निरन्तर बन्ध की परीक्षामें कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, यहां विशेषताके उत्पादक कारणोंका अभाव है । प्रत्ययोंमें विशेषता है, क्योंकि औदारिकमिश्र, कार्मण, वैक्रियिकद्विक, चार मनोयोग और चार वचनयोग प्रत्ययोंके विना मिथ्यादृष्टि और सासादन गुणस्थानमें यथाक्रमसे तेतालीस और अड़तीस प्रत्यय देखे जाते हैं,

---

१ प्रतिषु ' ण एस दोसो एदस्स सुत्तस्स एदम्मि उद्देसविसेसो अत्थि थूलबंधीणं ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु चोत्तीसपच्चयदंसणादो, उवरिमगुणट्ठाणपच्चएसु वि ओरालियकायजोगं मोत्तूण सेसजोगपच्चयाणमभावादो। उवरिपरिक्खासु वि णत्थि विसेसो। णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदा तिरिक्खगइ-मणुसगइमहिट्ठिदा सामि त्ति वत्तव्वं। एसो पढमसुत्तट्ठियभेदो। एत्थ उत्तपच्चय-गइ-गयसामित्तभेओ सव्वसुत्तेसु दट्ठव्वो। णवरि बिट्ठाणियपयडीसु तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं बंधो मणुसगईए परोदओ, एत्थ पुण सोदय-परोदओ त्ति वत्तव्वं। णवरि तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए परोदओ चेव बंधो, ओरालियकायजोगे तिस्से उदयाभावादो। तिरिक्खगइ- तिरिक्खाणुपुव्वीणं मणुसगईए सांतरो बंधो, एत्थ पुण सांतर-णिरंतरो। एवं चेव णीचागोदस्स वि वत्तव्वं। मणुसाउ-मणुसगईणं मणुसगईए सोदओ बंधो, एत्थ पुण सोदय-परोदओ। [ओरालियसरीरंगोवंग-] मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सांतर-णिरंतरो मणुसगईए बंधो, एत्थ पुण सांतरो। मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीए मणुसगईए सोदय-परोदओ, एत्थ पुण परोदओ। ओरालियसरीरस्स मणुसगईए सोदय-परोदओ बंधो, एत्थ पुण सोदओ। ओरालियसरीरस्स मणुसगईए सांतर-णिरंतरो, एत्थ वि सांतर-णिरंतरो

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें चौंतीस प्रत्यय देखे जाते हैं, तथा उपरिम गुणस्थान प्रत्ययोंमें भी औदारिककाययोगको छोड़कर शेष योग प्रत्ययोंका अभाव है। उपरिम परीक्षाओंमें भी कोई विशेषता नहीं है। केवल इतना विशेष है कि मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत तिर्यग्गति व मनुष्यगतिके आश्रित होकर स्वामी हैं, ऐसा कहना चाहिये। यह प्रथम सूत्रस्थित भेद है। यहां पूर्वोक्त प्रत्यय और गतिगत स्वामित्वका भेद सब सूत्रोंमें देखना चाहिये। विशेष इतना है कि द्विस्थानिक प्रकृतियोंमें तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतका बन्ध मनुष्यगतिमें परोदय होता है; परन्तु यहां इनका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, ऐसा कहना चाहिये। विशेषता यह है कि तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, औदारिककाययोगमें उसके उदयका अभाव है। तिर्यग्गति और तिर्यगानुपूर्वीका मनुष्यगतिमें सान्तर बन्ध होता है, किन्तु यहां उनका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है। इसी प्रकार ही नीचगोत्रके भी कहना चाहिये। मनुष्यायु और मनुष्यगतिका मनुष्यगतिमें स्वोदय बन्ध होता है, परन्तु यहां स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। [औदारिकशरीरांगोपांग] और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध मनुष्यगतिमें सान्तर-निरन्तर होता है, परन्तु यहां सान्तर होता है। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मनुष्य-गतिमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, परन्तु यहां परोदय बन्ध होता है। औदारिक-शरीरका मनुष्यगतिमें स्वोदय-परोदय बन्ध है, परन्तु यहां स्वोदय बन्ध होता है। औदारिकशरीरका मनुष्यगतिमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, यहां भी सान्तर-निरन्तर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चेव । एसो बेट्ठाणिसुत्तट्ठियभेदो ।

एइंदिय–बीइंदिय–तीइंदिय-चउरिंदिय पंचिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं मणुसगईए परोदओ बंधो, एत्थ पुण सोदय-परोदओ। अपज्जत्तस्स मणुसगईए सोदय-परोदओ, एत्थ पुण परोदओ । एसो एगट्ठाणियसुत्तट्ठियभेदो ।

संपधिय अण्णसुत्तेसु भेदाभावादो ताणि मोत्तूण अट्ठट्ठाणियसुत्तट्ठियभेदो उच्चदे— मिच्छादिट्ठि–सासणसम्मादिट्ठि–असंजदसम्मादिट्ठीसु उवघाद–परघाद–उस्सास-अपज्जत्ताणं मणुसगईए सोदय-परोदओ, एत्थ पुण सोदओ चेव । पंचिंदियजादि-तस-बादराणं मणुसगईए सोदओ, एत्थ पुण सोदय-परोदओ । जेणेदं देसामासियमप्पणासुत्तं तेणेदे सव्वविसेसा एत्थुवलब्भंति । अण्णं पि भेददंसणट्ठमुवरिमसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स मणजोगिभंगो ॥ १४३ ॥

ओरालियकायजोगीसु अबंधगाभावादो ।

ओरालियमिस्सकायजोगीसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादावेदणीय–बारसकसाय–पुरिसवेद–हस्स–रदि-अरदि-सोग-भय-

---

ही होता है । यह द्विस्थानिक सूत्रस्थित भेद है ।

एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणका मनुष्यगतिमें परोदय बन्ध होता है, परन्तु यहां स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । अपर्याप्तका मनुष्यगतिमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, परन्तु यहां परोदय बन्ध होता है । यह एकस्थानिक सूत्रस्थित भेद है ।

इस समय अन्य सूत्रोंमें भेद न होनेसे उन्हें छोड़कर अष्टस्थानिक सूत्रस्थित भेदको कहते हैं— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उपघात, परघात, उच्छ्वास और अपर्याप्तका मनुष्यगतिमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, परन्तु यहां स्वोदय ही होता है । पंचेन्द्रिय जाति, त्रस और बादरका मनुष्यगतिमें स्वोदय बन्ध होता है, परन्तु यहां स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । चूंकि यह अपर्णासूत्र देशामर्शक है, अत एव ये सब विशेषतायें यहां पायी जाती हैं । अन्य भी भेद दिखलानेके लिये उपरिम सूत्र कहते हैं—

विशेषता यह है कि साता वेदनीयकी प्ररूपणा मनोयोगियोंके समान है ॥ १४३ ॥

क्योंकि, औदारिककाययोगियोंमें साता वेदनीयके अबन्धकोंका अभाव है ।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुगंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण--वण्ण--गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग--सुस्सर--आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १४४ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १४५ ॥

परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणमेत्थुदयाभावादो बंधोदयाणं पुव्वावरकाल-संबंधिवोच्छेदविचारो णत्थि । अवसेसाणं पयडीणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि तदुभयाभावदंसणादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुव-लहुअ-उवघाद-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो ।

व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १४४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १४५ ॥

परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका यहां उदयाभाव होनेसे बन्ध व उदयके पूर्व और अपर काल सम्बधी व्युच्छेदका विचार नहीं है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरूलघु, उपघात, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवोदयी हैं । निद्रा, प्रचला, बारह कषाय,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिद्दा-पयला-बारसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगंच्छा-असादावेदणीय-उच्चागोदाणं सोदय-परोदओ बंधो। कधमुच्चागोदबंधो सम्मादिट्ठीसु परोदओ ? ण, तिरिक्खेसु पुव्वाउवबंधवसेणुप्पण्णखइयसम्मादिट्ठीसु परोदएणुच्चागोदस्स बंधुवलंभादो। पुरिसवेद-समचउरससंठाण-सुभगादेज्ज-जसकित्तीणं मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सोदय-परोदओ। असंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदओ। पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठिम्हि सोदय-परोदएण बंधो। सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदएण। परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-अप्पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं तिसु वि गुणट्ठाणेसु परोदएण बंधो। अजसकित्तीए मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदएण बंधो, असंजदसम्मादिट्ठीसु परोदएण।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो। असाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-जसकित्ति-अजसकित्ति-थिराथिर-सुभासुभाणं सांतरो बंधो, तिसु वि गुणट्ठाणेसु एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। पुरिसवेद-समचउरससंठाण-सुभगादेज्ज-उच्चागोद-पसत्थविहाय-

....

हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, असाता वेदनीय और उच्चगोत्रका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है।

शंका—सम्यग्दृष्टियोंमें उच्चगोत्रका परोदय बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह शंका ठीक नहीं, क्योंकि, पूर्व आयुबन्धके वशसे तिर्यंचोंमें उत्पन्न हुए क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें परोदयसे उच्चगोत्रका बन्ध पाया जाता है।

पुरुषवेद, समचतुरस्रसंस्थान, सुभग, आदेय और यशकीर्तिका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें इनका स्वोदय बन्ध होता है। पंचेन्द्रिय जाति, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है। सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदयसे बन्ध होता है। परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, अप्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका तीनों ही गुणस्थानोंमें परोदयसे बन्ध होता है। अयशकीर्तिका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदयसे और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें परोदयसे बन्ध होता है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है,। असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, स्थिर, अस्थिर, शुभ और अशुभका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तीनों ही गुणस्थानोंमें इनका एक समयसे बन्धविश्राम देखा जाता है। पुरुषवेद, समचतुरस्र-संस्थान, सुभग, आदेय, उच्चगोत्र, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका मिथ्यादृष्टि व

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गइ-सुस्सराणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो बंधो, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि णिरंतरो। पंचिंदिय-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-परघादुस्सासाणं मिच्छाइट्ठीसु सांतर-णिरंतरो बंधो। कधं णिरंतरो ? तिरिक्ख-मणुस्सुप्पण्णसणक्कुमारादिदेवाणं णेरइयाणं च णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो।

मिच्छाइट्ठिस्स तेदालीस पच्चया, ओघपच्चएसु ओरालियमिस्सकायजोगवदिरित्त-बारसजोगाणमभावादो। सासणस्स अट्ठतीस, असंजदसम्माइट्ठिस्स बत्तीस पच्चया; तेसिं चेव जोगाणमभावादो असंजदसम्मादिट्ठीसु त्थी-णवुंसयवेदेहि सह बारसजोगाभावादो। एदाओ सव्वपयडीओ असंजदसम्मादिट्ठिणो देवगइसंजुत्तं बंधंति। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो उच्चागोदं मणुसगइसंजुत्तं, सेसाओ सव्वपयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति। देव-णिरयगईओ मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो किण्ण बंधंति ? ण, अपज्जत्तद्धाए तासिं बंधाभावादो।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें निरन्तर बन्ध होता है। पंचेन्द्रिय, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, परघात और उच्छ्वासका मिथ्यादृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, तिर्यंच व मनुष्योंमें उत्पन्न हुए सानत्कुमारादि देवों और नारकियोंके निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है।

मिथ्यादृष्टिके तेतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, ओघ प्रत्ययोंमेंसे उसके औदारिकमिश्र काययोगको छोड़कर अन्य बारह योगोंका अभाव है। सासादनसम्यग्दृष्टिके अड़तीस और असंयतसम्यग्दृष्टिके बत्तीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उन्हीं योगोंका यहां भी अभाव है, चूंकि असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्त्री और नपुंसक वेदोंके साथ बारह योगोंका अभाव है। इन सब प्रकृतियोंको असंयतसम्यग्दृष्टि देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं। मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि उच्चगोत्रको मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा शेष सब प्रकृतियोंको तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं।

शंका—देवगति व नरकगतिको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि क्यों नहीं बांधते ?

समाधान—नहीं बांधते, क्योंकि, अपर्याप्त कालमें उनका बन्ध नहीं होता।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

तिरिक्ख-मणुस्सा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइय-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो । सेसेसु तिविहो, धुवबंधाभावादो । अवसेसाणं सव्वपयडीणं तिसु वि गुणट्ठाणेसु बंधो सादि-अद्धुवो ।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज[2]-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १४६ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा[1] । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १४७ ॥

तिर्यंच व मनुष्य स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष दो गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष सब प्रकृतियोंका बन्ध तीनों ही गुणस्थानोंमें सादि व अध्रुव होता है ।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, स्त्रीवेद, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, चार संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, पांच संहनन, तिर्यग्गति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १४६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १४७ ॥

---

१ प्रतिषु '-मिच्छाइट्ठीहि ' इति पाठः । २ प्रतिषु ' आदेज्ज ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एदस्स अत्थो उच्चदे— अणंताणुबंधिचउक्क-[1]त्थीवेद-चउसंठाण-पंचसंघडण-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं बंधोदया सासणसम्माइट्ठिम्हि समं वोच्छिज्जंति, ण मिच्छाइट्ठिम्हि; अणुवलंभादो। अवसेसाणं पयडीणमेत्थुदयवोच्छेदो णत्थि, उवरि तदुवलंभादो। केवलो एत्थ बंधवोच्छेदो चेव, तस्स[2] दंसणादो।

थीणगिद्धितिय-तिरिक्खगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सराणं परोदओ बंधो, अपज्जत्तएसु एदासिमुदयाभावादो। ओरालियसरीरस्स सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो। ओरालियसरीरअंगोवंगस्स मिच्छाइट्ठिम्हि सोदय-परोदओ बंधो, सासणे सोदओ। अणंताणुबंधिचउक्क-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-चउसंठाण-पंचसंघडण-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं दोसु वि गुणट्ठाणेसु सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-ओरालियसरीराणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधित्तादो। इत्थिवेद-चउसंठाण-पंचसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, चार संस्थान, पांच संहनन, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका बन्ध व उदय दोनों सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें नहीं, क्योंकि, वहां इनका व्युच्छेद पाया नहीं जाता। शेष प्रकृतियोंका यहां उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, ऊपर उनका उदय पाया जाता है। उनका यहां केवल बन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, वह यहां देखनेमें आता है।

स्त्यानगृद्धित्रय, तिर्यग्गति व मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति और दुस्वरका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तोंमें इनके उदयका अभाव है। औदारिकशरीरका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां वह ध्रुवोदयी है। औदारिकशरीरांगोपांगका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, सासादनमें स्वोदय बन्ध होता है। अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, चार संस्थान, पांच संहनन, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका दोनों ही गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवोदयी हैं। स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क और औदारिकशरीरका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवबन्धी हैं। स्त्रीवेद, चार संस्थान, पांच संहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, और अनादेयका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा जाता है। तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका बन्ध मिथ्यादृष्टि

---

१ आप्रतौ 'चउक्कित्थी-' इति पाठः।

२ प्रतिषु 'तत्थ-' इति पाठः।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

मिच्छाइट्ठिम्हि[1] बंधो सांतर-णिरंतरो। कधं णिरंतरो ? ण, तेउ-वाउकाइएसु सत्तमपुढवीए[2] तिरिक्खेसुप्पण्णणेरइएसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणसम्मादिट्ठिम्हि सांतरो, तत्थ तेसिमुववादाभावादो। [मणुसगइ-] मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सांतर-णिरंतरो। कधं णिरंतरो ? आणदादिदेवेसु मणुसेसुप्पण्णेसु दुविहगुणेसु मुहुत्तस्संतो णिरंतरबंधुवलंभादो। ओरालियसरीरअंगोवंगस्स मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो सांतर-णिरंतरो। कधं णिरंतरो ? ण, सणक्कुमारादिदेव-णेरइएसु तिरिक्ख-मणुस्सुप्पण्णेसु अंतोमुहुत्तं णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणसम्मादिट्ठिम्हि णिरंतरो।

मिच्छाइट्ठिम्हि तेदालीस, सासणे अट्ठतीसुत्तरपच्चया। सेसं सुगमं। तिरिक्खगइ-[तिरिक्खगइ-]पाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं तिरिक्खगइसंजुत्तं। [मणुसगइ-]मणुसगइपाओग्गाणु-

गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर होता है।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं है, क्योंकि, तेज व वायुकायिकोंमें तथा तिर्यंचोंमें उत्पन्न हुए सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां उनके उत्पादका अभाव है। [मनुष्यगति और] मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, मनुष्योंमें उत्पन्न हुए आनतादिक देवोंमें दोनों गुणस्थानोंमें अन्तर्मुहूर्त तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है। औदारिकशरीरांगोपांगका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर होता है।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, तिर्यंच व मनुष्योंमें उत्पन्न हुए सानत्कुमारादि देव और नारकियोंमें अन्तर्मुहूर्त तक उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उसका निरन्तर बन्ध होता है।

मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें तेतालीस और सासादन गुणस्थानमें अड़तीस उत्तर प्रत्यय होते हैं। शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है। [तिर्यग्गति], तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतका तिर्यग्गतिसे संयुक्त, [मनुष्यगति] और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मनुष्यगतिसे संयुक्त,

१ प्रतिषु 'मिच्छाइट्ठिं वा' इति पाठः। २ प्रतिषु 'सत्तमपुढवी' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुव्वीणं मणुसगइसंजुत्तो, सेसाणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो बंधो । तिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधि-चउक्काणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो । सासणे दुविहो, अणादि-धुवत्ताभावादो । सेसाणं पयडीणं सव्वत्थ सादि-अद्धुवो ।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ १४८ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १४९ ॥

सादावेदणीयस्स बंधादो उदओ पुव्वं पच्छा [वा] वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, चदुसु गुणट्ठाणेसु तदुभयवोच्छेदाणुवलंभादो । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-सजोगीसु बंधो सोदय-परोदओ, परावत्तणुदयत्तादो । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधो सांतरो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो । सजोगीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए

तथा शेष प्रकृतियोंका तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । तिर्यंच और मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका होता है । सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका होता है, क्योंकि, वहां अनादि और ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र सादि और अध्रुव होता है ।

साता वेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १४८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगकेवली बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ १४९ ॥

साता वेदनीयका उदय बन्धसे पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, चारों गुणस्थानोंमें उन दोनोंका व्युच्छेद पाया नहीं जाता । मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगकेवली गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां परिवर्तित होकर अन्यका भी उदय होता है । मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें साता वेदनीयका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे यहां उसका बन्धविश्राम देखा जाता है । सयोगकेवलियोंमें निरन्तर

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

बंधाभावादो । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु जहाकमेण तेदालीस-अट्ठत्तीस-बत्तीसपच्चया । सजोगिम्हि एक्को चेव ओरालियमिस्सकायजोगपच्चओ । सेसं सुगमं । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजुत्तं, असंजदसम्मादिट्ठिणो देवगइसंजुत्तं, सजोगिजिणा अगइसंजुत्तं बंधंति । तिरिक्ख-मणुसगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसजोगिजिणा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । सादावेदणीयस्स बंधो सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

मिच्छत्त-णउंसयवेद-तिरिक्खाउ-मणुसाउ--चदुजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-णामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १५० ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १५१ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— बंधोदयाणमेत्थ वोच्छेदो णत्थि, उवलंभादो । अधवा,

....

बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें यथाक्रमसे तेतालीस, अड़तीस और बत्तीस प्रत्यय होते हैं । सयोगकेवली गुणस्थानमें एक ही औदारिकमिश्रकाययोग प्रत्यय होता है । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है । मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि दो गतियोंसे संयुक्त, असंयतसम्यग्दृष्टि देवगतिसे संयुक्त, और सयोगी जिन अगतिसंयुक्त बांधते हैं । तिर्यगति व मनुष्यगतिके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि; तथा मनुष्यगतिके सयोगी जिन स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । साता वेदनीयका बन्ध सर्वत्र सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी है ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यगायु, मनुष्यायु, चार जातियां, हुंडसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १५० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक है, शेष अबन्धक हैं ॥ १५१ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— बन्ध और उदयका यहां व्युच्छेद नहीं हैं, क्योंकि,

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

मिच्छत्त-चदुजादि-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणमेत्थ बंधोदया समं वोच्छिण्णा, अवसेसाणं पयडीणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो। आदावस्स एत्थ उदओ णत्थि चेव। मिच्छत्तस्स सोदओ बंधो। आदावस्स परोदओ, अपज्जत्तकाले आदावस्सुदयाभावादो। णउंसयवेद-तिरिक्ख-मणुसाउ-चदुजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं सोदय-परोदओ बंधो। मिच्छत्त-तिरिक्ख-मणुसाउआणं बंधो णिरंतरो। अवसेसाणं सांतरो, एगसमएण बंधुवरमुवलंभादो। पच्चया सुगमा। तिरिक्खाउ-चदुजादि-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो, मणुसाउअस्स मणुसगइसंजुत्तो, सेसाणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो बंधो। दुगइमिच्छाइट्ठी सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्स चदुविहो बंधो, धुवबंधित्तादो। सेसाणं सादि-अद्धुवो।

देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-तित्थयरणामाणं को बंधो को अबंधो? १५२॥

सुगमं।

ये दोनों पाये जाते हैं। अथवा मिथ्यात्व, चार जातियां, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर, इनका बन्ध और उदय दोनों यहां साथमें व्युच्छिन्न होते हैं। शेष प्रकृतियोंका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है। आताप प्रकृतिका उदय यहां है ही नहीं। मिथ्यात्व प्रकृतिका स्वोदय बन्ध होता है। आतापका बन्ध परोदय होता है, क्योंकि, अपर्याप्त कालमें आतापके उदयका अभाव है। नपुंसकवेद, तिर्यगायु, मनुष्यायु, चार जातियां, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इनका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। मिथ्यात्व, तिर्यगायु और मनुष्यायुका बन्ध निरन्तर होता है। शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम पाया जाता है। प्रत्यय सुगम हैं। तिर्यगायु, चार जातियां, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण, इनका तिर्यग्गतिसे संयुक्त, मनुष्यायुका मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा शेष प्रकृतियोंका तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। तिर्यंच व मनुष्य दो गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अध्रुव होता है।

देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है? ॥ १५२ ॥

यह सूत्र सुगम है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १५३॥

एदस्सत्थो वुच्चदे — एत्थ बंधो उदओ वा पुव्वं पच्छा वा वोच्छिज्जदि त्ति परिक्खा णत्थि, उदयाभावादो। णवरि तित्थयरस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि। एदाओ पंच वि पयडीओ परोदएण बज्झंति, ओरालियमिस्सकायजोगम्मि एदासिमुदयविरोहादो। णिरंतरो बंधो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। असंजदसम्मादिट्ठिम्हि एदासिं बंधस्स बत्तीसुत्तरपच्चया, ओघपच्चएसु बारसजोगित्थि-णवुंसयवेदाणमभावादो। सेसं सुगमं। चउण्हं पयडीणं तिरिक्ख-मणुसगइ-असंजदसम्मादिट्ठी सामी। तित्थयरस्स मणुसा चेव, तिरिक्खेसु उप्पण्णाणं तत्थुप्पत्तिपाओग्गसम्माइट्ठीण तित्थयरस्स बंधाभावादो। गइसंजुत्तत्तमभणिय किमिदि सामित्तं परूविदं? ण, देवगइसंजुत्तं बज्झंति त्ति अणुत्तसिद्धीदो। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो।

वेउव्वियकायजोगीणं देवगईए[1] भंगो ॥ १५४॥

असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १५३॥

इसका अर्थ कहते हैं — यहां बन्ध व उदय पूर्वमें अथवा पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह परीक्षा नहीं है; क्योंकि, यहां उन प्रकृतियोंके उदयका अभाव है। विशेष इतना है कि तीर्थंकर प्रकृतिका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है। ये पांचों ही प्रकृतियां परोदयसे बंधती हैं, क्योंकि, औदारिकमिश्रकाययोगमें इनके उदयका विरोध है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका यहां अभाव है। असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें इनके बन्धके बत्तीस उत्तर प्रत्यय हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंमेंसे बारह योग, स्त्रीवेद और नपुंसकवेदका अभाव है। शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है। चार प्रकृतियोंके तिर्यंच व मनुष्यगतिके असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। तीर्थंकर-प्रकृतिके मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, तिर्यंचोंमें उत्पन्न हुए वहां उत्पत्तिके योग्य सम्यग्दृष्टियोंके तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध नहीं होता।

शंका — गतिसंयुक्तताको न कहकर स्वामित्वकी प्ररूपणा क्यों की गयी है?

समाधान — चूंकि उक्त प्रकृतियां देवगतिसे संयुक्त बंधती हैं, यह विना कहे ही सिद्ध है, अतः गतिसंयोगकी प्ररूपणा नहीं की।

बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं।

वैक्रियिककाययोगियोंकी प्ररूपणा देवगतिके समान है ॥ १५४॥

१ प्रतिषु 'देवगईणं' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एदमप्पणासुत्तं देसामासियं, तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे— पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसह-संघडण-वण्णचउक्क-मणुसाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअचउक्क-पसत्थविहायगइ-तसचउक्क-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ एत्थ चदुसु गुणट्ठाणेसु बंधपाओग्गाओ। एत्थ पुव्वं बंधो उदओ वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अजसगित्तीणमुदयाभावादो सेसाणं पयडीणमुदयवोच्छेदाभावादो च।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, वेउव्वियकायजोगम्हि एदासिं धुवोदयत्तदंसणादो। णवरि सम्मामिच्छाइट्ठिं मोत्तूण अण्णत्थ उस्सासस्स[1] सोदय-परोदओ बंधो, सरीरपज्जत्तीए

यह अर्पणासूत्र देशामर्शक है, इसलिये इससे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं— पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभ-संहनन, वर्णादिक चार, मनुष्यानुपूर्वी, अगुरुलघु आदिक चार, प्रशस्तविहायोगति, त्रस आदिक चार, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियां यहां चार गुणस्थानोंमें बन्धके योग्य हैं। यहां पूर्वमें बन्ध या उदय व्युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और अयशकीर्ति, इनका उदयाभाव तथा शेष प्रकृतियोंके उदयव्युच्छेदका अभाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वैक्रियिककाययोगमें इनका ध्रुवोदय देखा जाता है। विशेष इतना है कि सम्यग्मिथ्यादृष्टिको छोड़कर अन्यत्र उच्छ्वासका स्वोदय-परोदय बन्ध

१ प्रतिषु 'उस्सास' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जत्तस्स अंतोमुहुत्तं गंतूण आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासस्सोदयदंसणादो । णिद्दा-पयला-सादासाद बारसकसाय-सत्तणोकसाय-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं सोदय-परोदओ बंधो, असुहाणं णेरइएसु उदयदंसणादो । मणुसगइ-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदओ बंधो, वेउव्वियकायजोगम्मि एदासिमुदयविरोहादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-ओरालिय-तेजा-कम्मइय-सरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधित्तादो । सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो । पुरिसवेद-समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधसंभवादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पंचिंदियजादि-ओरालियसरीर-

होता है, क्योंकि, शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवके अन्तर्मुहूर्त जाकर आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उच्छ्वासका उदय देखा जाता है । निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, सात नोकषाय, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्र, इनका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, नारकियोंमें अशुभ प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । मनुष्यगति, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वैक्रियिककाययोगमें इनके उदयका विरोध है ।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवबन्धी हैं । साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा जाता है । पुरुषवेद, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभसंहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । पंचेन्द्रिय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंगोवंग-तसणामाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो । कधं णिरंतरो ? ण, णेरइएसु सणक्कुमारादिदेवेसु च णिरंतरबंधुवलंभादो । सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो । कधं णिरंतरो ? ण, आणदादिदेवेसु णिरंतरबंधुवलंभादो । सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो ।

मिच्छाइट्ठी एदाओ पयडीओ तेदालीसपच्चएहि, सासणो अट्ठतीसपच्चएहि, सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो चोत्तीसपच्चएहि बंधंति, मूलोघपच्चएसु बारसजोगपच्चयाभावादो । सेसं सुगमं ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदाणि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तं । अवसेससव्वपयडीओ मिच्छाइट्ठि-

---

जाति, औदारिकशरीरांगोपांग और त्रस नामकर्मका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका— निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि नारकियों और सनत्कुमारादि देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि आनतादि देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध देखा जाता है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

मिथ्यादृष्टि इन प्रकृतियोंको तेतालीस प्रत्ययोंसे, सासादनसम्यग्दृष्टि अड़तीस प्रत्ययोंसे, तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि चौंतीस प्रत्ययोंसे बांधते हैं; क्योंकि, मूलोघ प्रत्ययोंमें बारह योग प्रत्ययोंका यहां अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है ।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रको मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । शेष

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सासणसम्मादिट्ठिणो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तं बंधंति ।

देव-णेरइया सामी । बंधद्धाणं सुगमं । बंधविणासो णत्थि । पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइय-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो । अण्णत्थ तिविहो, धुवबंधित्ताभावादो । सेससव्वपयडीओ सव्वत्थ सादि-अद्धुवाओ ।

थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि बेट्ठाणियपयडीओ । एदासु अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, सासणम्मि तदुभयाभावदंसणादो[१] । इत्थिवेद-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो । अवसेसाणं ऐसा परिक्खा णत्थि, उदयाभावादो ।

सब प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति एवं मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं ।

देव और नारकी स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । बन्धविनाश है नहीं । पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तरायका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । अन्य गुणस्थानोंमें उनका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनके ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष सब प्रकृतियां सर्वत्र सादि व अध्रुव बन्धवाली हैं ।

स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, ये द्विस्थानिक प्रकृतियां हैं । इनमें अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । स्त्रीवेद, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें क्रमशः इनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंके यह परीक्षा नहीं है, क्योंकि, उनका उदयाभाव है ।

१ प्रतिषु ' तदुभयभाव- ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणंताणुबंधिचउक्क-इत्थिवेद-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचा-गोदाणं सोदय-परोदओ बंधो, वेउव्वियकायजोगम्मि पडिवक्खुदयदंसणादो। अवसेसाणं पयडीणं परोदओ बंधो, तासिमेत्थुदयविरोहादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-तिरिक्खाउआणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो[1]। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइ-पाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो। कधं णिरंतरो ? ण, सत्तमपुढविणेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सांतरो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। पच्चया सुगमा। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणि तिरिक्खगइ-संजुत्तं, सेससव्वपयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति। देव-णेरइया सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। सत्तण्हं धुवपयडीणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। सासणे दुविहो बंधो।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-एइंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावर-पयडीओ मिच्छाइट्ठिणा बज्झमाणियाओ। एत्थ मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति,

अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वैक्रियिककाययोगमें इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है। शेष प्रकृतियोंका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि यहां उनके उदयका विरोध है। स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क और तिर्यगायुका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविश्रामका अभाव है। तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह शंका ठीक नहीं, क्योंकि, सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

शेष प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनका बन्ध-विश्राम देखा जाता है। प्रत्यय सुगम हैं। तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको तिर्यग्गतिसे संयुक्त, तथा शेष सब प्रकृतियोंको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। देव व नारकी स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। सात ध्रुवप्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। सासादनमें दो प्रकारका बन्ध होता है।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, एकेन्द्रियजाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, आताप और स्थावर, ये मिथ्यादृष्टिके द्वारा बध्यमान प्रकृतियां हैं। यहां मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें साथ ही व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, उपरिम

१ अप्रतौ ' बंधुवरमानाभावादो ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवरिमगुणेसु तदुभयाणुवलंभादो। णवुंसयवेद-हुंडसंठाणाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु तदुभयाभावदंसणादो। सेसासु एसो विचारो णत्थि, उदयाभावादो। मिच्छत्तस्स सोदएण, णवुंसयवेद-हुंडसंठाणाणं सोदय-परोदओ, अवसेसाणं परोदओ बंधो। मिच्छत्तस्स बंधो णिरंतरो, अवसेसाणं सांतरो। पच्चया सुगमा। णवरि एइंदियजादि-आदाव-थावराणं णवुंसयवेदपच्चओ अवणेदव्वो, णेरइएसु एदासिं बंधाभावादो। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, अवसेसाओ पयडीओ तिरिक्खगइसंजुत्तं बज्झंति। एइंदियजादि-आदाव-थावराणं बंधस्स देवा सामी, अवसेसाणं बंधस्स देव-णेरइया सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्स चउव्विहो बंधो, अवसेसाणं सादि-अद्धुवो।

मणुसाउअस्स बंधो उदयादो[1] पुव्वं पच्छा वा वोच्छिज्जदि त्ति णत्थि [विचारो], संता-संताणं सण्णियासविरोहादो। परोदओ बंधो, वेउव्वियकायजोगम्मि मणुसाउअस्स उदयविरोहादो। णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं

गुणस्थानोंमें वे दोनों पाये नहीं जाते। नपुंसकवेद और हुण्डसंस्थानका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें क्रमसे उन दोनोंका अभाव देखा जाता है। शेष प्रकृतियोंमें यह विचार नहीं है, क्योंकि, उनका उदयाभाव है। मिथ्यात्वका स्वोदयसे, नपुंसकवेद और हुण्डसंस्थानका स्वोदय-परोदयसे, तथा शेष प्रकृतियोंका परोदयसे बन्ध होता है। मिथ्यात्वका बन्ध निरन्तर और शेष प्रकृतियोंका सान्तर होता है। प्रत्यय सुगम हैं। विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय-जाति, आताप और स्थावरके प्रत्ययोंमें नपुंसकवेद प्रत्ययको कम करना चाहिये, क्योंकि, नारकियोंमें इनके बन्धका अभाव है। मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त; तथा शेष प्रकृतियां तिर्यग्गतिसे संयुक्त बंधती हैं। एकेन्द्रियजाति, आताप और स्थावरके बन्धके देव स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंके बन्धके देव व नारकी स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका, तथा शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव होता है।

मनुष्यायुका बन्ध उदयसे पूर्व या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार यहां नहीं है, क्योंकि, सत् (बन्ध) और असत् (उदय) की तुलनाका विरोध है। परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वैक्रियिककाययोगमें मनुष्यायुके उदयका विरोध है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इसके बन्धविश्रामका अभाव है। मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयत-

१ अप्रतौ ' बंधोदयादो ' इति पाठः।

तेदालीस–अट्ठत्तीस–चोत्तीसपच्चया । मणुसगइसंजुत्तं । देव–णेरइया सामी । अद्धाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठि त्ति । बंधविणासो णत्थि । सादि-अद्धुवो बंधो ।

तित्थयरस्स बंधोदयवोच्छेदसण्णियासो णत्थि, संतासंताणं सण्णियासविरोहादो । परोदओ बंधो, मणुसगइं मोत्तूणण्णत्थुदयाभावादो । णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा । मणुसगइसंजुत्तं । देव-णेरइया सामी । असंजदसम्मादिट्ठी अद्धाणं । बंधविणासो णत्थि । सादि-अद्धुवो बंधो ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीणं देवगइभंगो[1] ॥ १५५ ॥

एदस्स देसामासियअप्पणासुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा — पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय–दुगुंछ[2]–मणुसगइ–पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा–कम्मइयसरीर–समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग[3]–वज्ज–रिसहसंघडण-वण्णचउक्क-मणुस्साणुपुव्वि-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-

सम्यग्दृष्टिके क्रमसे तेतालीस, अड़तीस व चौंतीस प्रत्यय होते हैं । मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । देव व नारकी स्वामी हैं । बन्धाध्वान मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि व असंयतसम्यग्दृष्टि तक है । बन्धविनाश है नहीं । सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

तीर्थंकरप्रकृतिके बन्ध व उदयके व्युच्छेदकी सदृशता नहीं है, क्योंकि, सत् और असत्की तुलनाका विरोध है । परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, मनुष्यगतिको छोड़कर दूसरी जगह तीर्थंकरप्रकृतिके उदयका अभाव है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उसके बन्धविश्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । देव व नारकी स्वामी हैं । बन्धाध्वान असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान है । बन्धविनाश है नहीं । सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी प्ररूपणा देवगतिके समान है ॥ १५५ ॥

इस देशामर्शक अर्पणासूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्णादिक चार, मनुष्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस,

१ अ-आप्रत्योः ' देवगईणं भंगो ' इति पाठः ।

२ अप्रतौ ' दुगुंछाणं ' इति पाठः ।

३ प्रतिषु ' ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ तीहि गुणट्ठाणेहि बज्झमाणियाओ ट्ठविय परूवणा कीरदे— बंधोदय-वोच्छेदविचारो णत्थि, बंधेणुदएणुभएहि वा विरहिदगुणट्ठाणाणमुवरि अणुवलंभादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो । णिद्दा-पयला-सादासाद-बारसकसाय-छणोकसाय-पुरिसवेदाणं बंधो सोदय-परोदओ, उभयथा वि बंधविरोहाभावादो । समचउरससंठाण-सुभगादेज्ज-जसकित्ति-उच्चागोदाणं बंधो मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ । सासणे सोदओ, अपज्जत्तद्धाए णेरइएसु सासणाणमभावादो । मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीर-अंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुस्साणुपुव्वि-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं परोदओ बंधो, एत्थ एदासिमुदयविरोहादो । अजसकित्तीए मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-

---

बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इन तीन गुणस्थानवर्ती वैक्रियिककाययोगियोंके द्वारा बध्यमान प्रकृतियोंको स्थापित कर प्ररूपणा करते हैं— इनके बन्ध व उदयके व्युच्छेदका विचार यहां नहीं है, क्योंकि बन्ध, उदय या दोनोंसे रहित गुणस्थान ऊपर पाये नहीं जाते।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवोदयी हैं। निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, छह नोकषाय और पुरुषवेदका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके बन्धविरोधका अभाव है। समचतुरस्रसंस्थान, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और उच्चगोत्रका बन्ध मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय होता है। सासादन गुणस्थानमें स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें नारकियोंमें सासादन गुणस्थानका अभाव है। मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिक-शरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, मनुष्यानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनके उदयका विरोध है। अयश-कीर्तिका मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परोदओ। सासणे परोदओ, देवगदीए तिस्से उदयाभावादो।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध--रस-फास-अगुरुअलहुअ--उवघाद--परघादुस्सास--बादर--पज्जत्त--पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधित्तादो। सादासाद-हस्स-रदि-[अरदि-] सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। पुरिसवेद-समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्वर-आदेज्जुच्चागोदाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो सांतरो। असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। पंचिंदियजादि-ओरालियसरीरअंगोवंग-तसणामाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो। कधं णिरंतरो ? ण, सणक्कुमारादिदेवेसु णेरइएसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। मणुसगइ-मणुसाणुपुव्वीणं

है। सासादन गुणस्थानमें परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, देवगतिमें उसके उदयका अभाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवबन्धी हैं। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, [अरति], शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा जाता है। पुरुषवेद, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभसंहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र, इनका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है। असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। पंचेन्द्रिय जाति, औदारिकशरीरांगोपांग और त्रस नामकर्मका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि सनत्कुमारादि देवों और नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। मनुष्यगति और मनुष्यगति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु[1] सांतर-णिरंतरो । कधं णिरंतरो ? ण, आणदादिदेवेसु णिरंतरबंधुवलंभादो । असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो ।

मिच्छाइट्ठिस्स तेदालीस पच्चया, ओघपच्चएसु चदुमण-वचि-कायजोगपच्चयाणमभावादो । सासणस्स सत्तत्तीसुत्तरपच्चया, मिच्छाइट्ठिपच्चएसु पंचमिच्छत्त-णवुंसयवेदाणमभावादो । असंजदसम्मादिट्ठीसु तेत्तीस पच्चया, मिच्छाइट्ठिपच्चएसु पंचमिच्छत्ताणंताणुबंधिचउक्कित्थि-वेदाणमभावादो । सेसं सुगमं ।

मणुसगइ-मणुसाणुपुव्वी-उच्चागोदाणं मणुसगइसंजुत्तो, अवसेसाणं पयडीणं बंधो मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो, असंजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइसंजुत्तो । मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो देव-णेरइया सामी । सासणसम्मादिट्ठिणो देवा चेव सामी ।

प्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ।

समाधान—नहीं, क्योंकि, आनतादिक देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

मिथ्यादृष्टिके तेतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंमें यहां चार मनोयोग, चार वचनयोग और चार काययोग प्रत्ययोंका अभाव है । सासादनसम्यग्दृष्टिके सैंतीस उत्तर प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिके प्रत्ययोंमेंसे यहां पांच मिथ्यात्व और नपुंसकवेदका अभाव है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें तेतीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिके प्रत्ययोंमेंसे यहां पांच मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धिचतुष्क और स्त्रीवेद प्रत्ययोंका अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपण सुगम है ।

मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रका बन्ध मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा शेष प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त, और असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है । मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देव व नारकी स्वामी हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि देव ही स्वामी हैं । बन्धा-

---

१ अप्रतौ ' सासणसम्मादिट्ठीहि ' इति पाठः ।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि। बंधेण धुवपयडीणं[1] मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। अण्णत्थ तिविहो, धुवाभावादो[2]। सेसाणं पयडीणं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं परूवणा कीरदे— अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति सासणगुणट्ठाणे, ण अण्णत्थ; मिच्छाइट्ठिम्हि तदणुवलंभादो। दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, उवरिमअसंजदसम्मादिट्ठिगुणम्मि बंधेण विणा उदयस्सेव दंसणादो। अवसेसाणमेसो विचारो णत्थि, बंधस्सेकस्सेवुवलंभादो।

अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणं बंधो सोदय-परोदओ, उभयथावि अविरोहादो। दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सोदय-परोदओ। सासणे परोदओ, णेरइएसु अपज्जत्तद्धाए तदभावादो। सेससोलसपयडीओ परोदएणेव बज्झंति, तासिमेत्थुदयविरोहादो।

ध्वान सुगम है। बन्धव्युच्छेद नहीं है। बन्धसे ध्रुवप्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रकी प्ररूपणा करते हैं— अनन्तानुबन्धिचतुष्क और स्त्रीवेदका बन्ध व उदय दोनों सासादन गुणस्थानमें साथ व्युच्छिन्न होते हैं, अन्यत्र नहीं, क्योंकि मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें उनके विच्छेदका अभाव है। दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, उपरिम असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें बन्धके विना केवल उदय ही देखा जाता है। शेष प्रकृतियोंके यह विचार नहीं है, क्योंकि, उनका केवल एक बन्ध ही यहां पाया जाता है।

अनन्तानुबन्धिचतुष्क और स्त्रीवेदका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, दोनों ही प्रकारसे कोई विरोध नहीं है। दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। सासादन गुणस्थानमें परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, नारकियोंमें अपर्याप्तकालमें सासादन गुणस्थानका अभाव है। शेष सोलह प्रकृतियां परोदयसे ही बंधती हैं, क्योंकि, यहां उनके उदयका विरोध है।

---

१ अप्रतौ 'बंधेणवपयडीणं' इति पाठः।

२ प्रतिषु 'धुवभावादो' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । इत्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधदंसणादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-णीचागोदाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो । कधं णिरंतरो ? सत्तमपुढविणेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो । सासणे सांतरो, अपज्जत्तद्धाए सत्तमपुढविट्ठियसासणाणुवलंभादो ।

पच्चया सुगमा । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणि तिरिक्खगइसंजुत्तं, अवसेसाओ तिरिक्ख-मणुस्सगइसंजुत्तं बंधंति । मिच्छाइट्ठिदेव-णेरइया, सासणा देवा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । सत्तण्हं धुवबंधपयडीणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो । सासणे दुविहो, अणादि-धुवाभावादो । सेसाणं सव्वत्थ सादि-अद्धुवो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-एइंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावराणं परूवणं कस्सामो — मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, उवरि तदुभयाणुवलंभादो[1] । णवुंसय-

---

स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं । स्त्रीवेद, चार संस्थान, चार संहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर और अनादेयका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध देखा जाता है । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

सासादन गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें सप्तम पृथिवीस्थ सासादनसम्यग्दृष्टि नारकियोंका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम हैं । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायाग्योनुपूर्वी और उद्योतको तिर्यग्गतिसे संयुक्त, तथा शेष प्रकृतियोंको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । मिथ्यादृष्टि देव व नारकी, तथा सासादनसम्यग्दृष्टि देव स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । सात ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अनादि व ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सर्वत्र सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, एकेन्द्रियजाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, आताप और स्थावर प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करते हैं— मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों [मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें] साथ ही व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यात्व गुणस्थानसे ऊपर

---

१ प्रतिषु ' तदुदयाणुवलंभादो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेद-हुंडसंठाणाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु कमेण बंधोदयवोच्छेददंसणादो। अवसेसासु एसो विचारो णत्थि, बंधस्सेकस्सेव दंसणादो।

मिच्छत्तस्स सोदएण, णवुंसयवेद-हुंडसंठाणाणं[१] सोदय-परोदएण, अवसेसाणं परोदएण बंधो। मिच्छत्तस्स णिरंतरो। अवसेसाणं पयडीणं सांतरो, बंधगद्धाभयसंखाणियमाणुवलंभादो। पच्चया सुगमा। णवरि एइंदिय-आदाव-थावराणं णवुंसयवेदपच्चओ णत्थि त्ति दुग्गममेयं संभरेदव्वं। एइंदियजादि-आदाव-थावराणि तिरिक्खगइसंजुत्तं, सेसाओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति। एइंदिय-आदाव-थावराणं देवा सामी। सेसाणं देव-णेरइया। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्स बंधो चउव्विहो। सेसाणं सादि-अद्धुवो।

तित्थयरस्स बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, बंधअइक्कियादो। परोदओ बंधो, सजोगिभडारयं मोत्तूण तित्थयरस्सण्णत्थुदयाभावादो। णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमा-

वे दोनों पाये नहीं जाते। नपुंसकवेद और हुण्डसंस्थानका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है। शेष प्रकृतियोंमें यह विचार नहीं है, क्योंकि, उनका केवल एक बन्ध ही देखा जाता है।

मिथ्यात्वका स्वोदयसे, नपुंसकवेद व हुण्डसंस्थानका स्वोदय-परोदयसे, तथा शेष प्रकृतियोंका परोदयसे बन्ध होता है। मिथ्यात्वका निरन्तर बन्ध होता है। शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि बन्धककालमें उनकी संख्याका नियम पाया नहीं जाता। प्रत्यय सुगम हैं। विशेष इतना है कि एकेन्द्रियजाति, आताप और स्थावरका नपुंसकवेद प्रत्यय नहीं है, इस दुर्गम बातका स्मरण रखना चाहिये। एकेन्द्रियजाति, आताप और स्थावर प्रकृतियां तिर्यग्गतिसे संयुक्त और शेष प्रकृतियां तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बंधती हैं। एकेन्द्रियजाति, आताप और स्थावर प्रकृतियोंके देव स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंके देव व नारकी स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है।

तीर्थंकर प्रकृतिके बन्ध व उदयके व्युच्छेदका विचार नहीं है, क्योंकि, उसका एक बन्ध ही होता है। परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, सयोगी भट्टारकको छोड़कर अन्यत्र तीर्थंकर प्रकृतिके उदयका अभाव है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे

१ अप्रतौ ' मिच्छत्तस्स णवुंसयवेद सोदएण हुंडसंठाणाणं ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावादो। पच्चया सुगमा। मणुसगइसंजुत्तो बंधो। देव-णेरइयअसंजदसम्मादिट्ठी सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। सादि-अद्धुओ बंधो। पयडिबंधगयविसेसपरूवणट्ठमुत्तर-सुत्तं भणदि —

णवरि विसेसो बेट्ठाणियासु तिरिक्खाउअं णत्थि मणुस्साउअं णत्थि ॥ १५६ ॥

कुदो ? देव-णेरइयाणमपज्जत्तद्धाए आउवबंधविरोहादो।

आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगीसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-चदुसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगंछा-देवाउ-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइय-सरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहाय-गइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोद-पंचंत-राइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १५७ ॥

बन्धविश्रामका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं। मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। देव व नारकी असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। सादि व अध्रुव बन्ध होता है। प्रकृतिबन्धगत विशेषके प्ररूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

विशेषता केवल इतनी है कि द्विस्थानिक प्रकृतियोंमें तिर्यगायु नहीं है और मनुष्यायु नहीं है ॥ १५६ ॥

इसका कारण यह है कि देव व नारकियोंके अपर्याप्तकालमें आयुबन्धका विरोध है।

आहारकाययोगी और आहारमिश्रकाययोगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, देवायु, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १५७ ॥

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

सुगमं ।

पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १५८ ॥

एदस्सत्थो उच्चदे — एत्थ बंधो उदओ वा पुव्वं वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, एक्कगुणट्ठाणम्मि पुव्वावरभावाभावादो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पुरिसवेद-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुवचउक्क-पसत्थ-विहायगइ-तसचउक्क-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो। णिद्दा-पयला-सादासाद-चदुसंजलण-छण्णोकसायाणं सोदय-परोदओ बंधो, उभयथावि बंधविरोहाभावादो। देवाउ-देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अजसकित्ति-तित्थयराणं परोदओ बंधो, आहारकायजोगीसु एदासिमुदय-विरोहादो।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-चदुसंजलण-पुरिसवेद-भय-दुगुंछा-देवाउ-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्णचउक्क-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुवलहुवचउक्क-पसत्थविहायगइ-तसचउक्क-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-

---

यह सूत्र सुगम है।

प्रमत्तसंयत बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ १५८ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— यहां बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है या उदय, यह विचार नहीं है; क्योंकि, एक गुणस्थानमें पूर्वापरभावका अभाव होता है। पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पुरुषवेद, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वर्णादिक चार, अगुरुलघु आदिक चार, प्रशस्तविहायोगति, त्रसादिक चार, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है। निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, चार संज्वलन और छह नौ कषायोंका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों ही प्रकारसे बन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं है। देवायु, देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिक-शरीरांगोपांग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अयशकीर्ति और तीर्थकरका परोदय बन्ध होता हैं, क्योंकि, आहारकाययोगियोंमें इनके उदयका विरोध है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, देवायु, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्णादिक चार, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु आदिक चार, प्रशस्तविहायोगति, त्रसादिक चार, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिमिण-तित्थयर-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो।

चदुसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-आहारकायजोगेहि बारस-पच्चएहि एदाओ पयडीओ बज्झंति। सेसं सुगमं। एदासिं बंधो देवगदिसंजुत्तो। मणुसा सामी। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि। धुवबंधपयडीणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो। अवसेसाणं सादि-अद्धुवो।

एवमाहारमिस्सकायजोगीणं पि वत्तव्वं। णवरि परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-दुस्सराणं परोदओ बंधो। पुव्वमोरालियसरीरस्स उदए संते एदासिं संतोदयाणं कधमेत्थ अकारणेण उदयवोच्छेदो होज्ज? ण, ओरालियसरीरोदएणोदइल्लाणं तदुदयाभावेणेदासिमुदयाभावस्स णाइयत्तादो। पच्चएसु आहारकायजोगमवणेदूण आहारमिस्सकायजोगो पक्खिवित्तव्वो। एत्तिओ चेव भेदो, णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि।

और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्ध-विश्रामका अभाव है। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा जाता है।

ये प्रकृतियां चार संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा और आहारकाययोग, इन बारह प्रत्ययोंसे बंधती हैं। शेष प्रत्ययप्ररूपण सुगम है। इनका बन्ध देवगतिसे संयुक्त होता है। मनुष्य स्वामी हैं। बन्धाध्वान सुगम है। बन्धव्युच्छेद नहीं है। ध्रुवप्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवबन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है।

इसी प्रकार आहारमिश्रकाययोगियोंके भी कहना चाहिये। विशेषता केवल इतनी है कि इनके परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति और दुस्वरका परोदय बन्ध होता है।

शंका—चूंकि पूर्वमें औदारिकशरीरके उदयके होनेपर इनका उदय था, अतएव अब यहां उनका निष्कारण उदयव्युच्छेद क्यों हो जाता है?

समाधान—ऐसा नहीं है, क्योंकि, औदारिकशरीरके उदयके साथ उदयको प्राप्त होनेवाली इन प्रकृतियोंका उसके उदयका अभाव होनेसे उदयाभाव न्याययुक्त है।

प्रत्ययोंमें आहारकाययोगको कम करके आहारमिश्रकाययोगको जोड़ना चाहिये। केवल इतना ही भेद है, और कहीं कुछ भेद नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्मइयकायजोगीसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादावेदणीय--बारसकसाय--पुरिसवेद--हस्स--रदि--अरदि - सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ--पंचिंदियजादि--ओरालिय--तेजा--कम्मइयसरीर--समचउरस-संठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थ-विहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर--थिराथिर--सुहासुह--सुभग--सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद--पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १५९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १६० ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— एत्थ बंधो उदओ वा पुव्वं वोच्छिण्णो त्ति णत्थि विचारो, एत्थ ओरालियदुग-समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-

---

कार्मणकाययोगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, असातावेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १५९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १६० ॥

इसका अर्थ कहते हैं— यहां बन्ध या उदय पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, यहां औदारिकद्विक, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभसंहनन, उपघात,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्तेयसरीर-सुस्सराणमेयंतेण उदयाभावादो, सेसाणमुदयसंभवादो च। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थतणसव्वगुणट्ठाणेसु णियमेणुदयदंसणादो। णिद्दा-पयला-असादावेदणीय-बारसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पुरिसवेद-सुभगादेज्ज-जसकित्ति-उच्चागोदाणं सोदय-परोदओ बंधो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ बंधो, उभयथा वि बंधविरोहाभावादो। असंजदसम्मादिट्ठीसु परोदओ, मणुस्सअसंजदसम्मादिट्ठीणं मणुवदुगस्स बंधविरोहादो। पंचिंदिय-तस-बादर-पज्जत्ताणं मिच्छाइट्ठिम्हि सोदय-परोदओ बंधो, पडिवक्खुदयसंभवादो। सासणसम्मादिट्ठि-असंजद-सम्मादिट्ठीसु सोदओ, विगलिंदिएसु एदेसिं दोण्णं गुणट्ठाणाणं अभावादो। ओरालियसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थ-विहायगइ-पत्तेयसरीर-सुस्सराणं परोदओ बंधो, विग्गहगदीए एदासिमुदयाभावादो।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-ओरालिय-तेजा-कम्मइय-सरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ

परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, प्रत्येकशरीर और सुस्वरका नियमसे उदयाभाव है, तथा शेष प्रकृतियोंके उदयकी सम्भावना है। पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां सब गुणस्थानोंमें इनका नियमसे उदय देखा जाता है। निद्रा, प्रचला, असातावेदनीय, बारह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और उच्चगोत्रका, स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। मनुष्यगति व मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे ही बन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं है। असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके मनुष्यद्विकके बन्धका विरोध है। पंचेन्द्रियजाति, त्रस, बादर और पर्याप्तका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदय सम्भव है। सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, विकलेंद्रियोंमें इन दोनों गुणस्थानोंका अभाव है। औदारिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, प्रत्येकशरीर और सुस्वरका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धुवबंधित्तादो। असादावेदणीय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। पुरिसवेद-समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुस्सर-सुभगादेज्ज-उच्चागोदाणं मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतरो बंधो। असंजद-सम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। [मणुसगइ-] मणुसगइपाओग्गाणु-पुव्वीणं मिच्छाइट्ठि-सासणेसु बंधो सांतर-णिरंतरो। कधं णिरंतरो ? ण, आणदादिदेवेहिंतो विग्गहगदीए मणुसेसुप्पण्णाणं[1] मणुसगइदुगस्स णिरंतरबंधुवलंभादो। असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो बंधो, विग्गहगदीए मणुवदुगबंधपाओग्गसम्मादिट्ठीणमण्णगइदुगस्स बंधाभावादो। पंचिंदिय-ओरालियसरीरअंगोवंग-तस-बादर-पज्जत्त-परघादुस्सास-पत्तेयसरीराणं बंधो मिच्छाइट्ठीसु सांतर-णिरंतरो। कधं णिरंतरो ? ण, सणक्कुमारादिदेव-णेरइएहिंतो तिरिक्ख-मणुस्सेसुप्पण्णाणं

अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं। असाता-वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा जाता है। पुरुषवेद, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभसंहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुस्वर, सुभग, आदेय और उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर बन्ध होता है। असंयतसम्यग्दृष्टि-योंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। [मनुष्यगति] और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, आनतादिक देवोंमेंसे मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवोंके विग्रहगतिमें मनुष्यगतिद्विकका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें मनुष्यद्विकके बन्धके योग्य सम्यग्दृष्टियोंके अन्य दो गतियोंके बन्धका अभाव है। पंचेन्द्रियजाति, औदारिकशरीरांगोपांग, त्रस, बादर, पर्याप्त, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका बन्ध मिथ्यादृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर होता है।

शंका— निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सनत्कुमारादि देव व नारकियोंमेंसे तिर्यंचों व

१ प्रतिषु ' मणुसेसुववण्णाणं ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, तत्थ पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो।

मिच्छाइट्ठीसु तेदालीसुत्तरपच्चया, ओघपच्चएसु कम्मइयकायजोगं मोत्तूण सेस-बारसजोगपच्चयाणमभावादो। तत्थ पंचमिच्छत्तेसु अवणिदेसु अट्ठत्तीस सासणसम्मादिट्ठि-पच्चया। तत्थ अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदेसु अवणिदेसु तेत्तीस असंजदसम्मादिट्ठिपच्चया होंति। सेसं सुगमं।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादावेदणीय-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय दुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठी सासणो[1] च तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, एदेसिमपज्जत्तकाले णिरय-देवगईणं बंधाभावादो। असंजद-सम्मादिट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, तेसिं णिरय-तिरिक्खगईणं बंधाभावादो। मणुसगइ-

मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवोंके निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है।

मिथ्यादृष्टियोंमें तेतालीस उत्तर प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंमें कार्मण-काययोगको छोड़कर शेष बारह योगप्रत्ययोंका अभाव है। उनमेंसे पांच मिथ्यात्वोंको कम करनेपर अड़तीस सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रत्यय होते हैं। उनमेंसे अनन्तानुबन्धि-चतुष्क और स्त्रीवेदको कम करनेपर तेतीस असंयतसम्यग्दृष्टियोंके प्रत्यय होते हैं। शेष प्ररूपण सुगम है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, असातावेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तरायको मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति एवं मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, इनके अपर्याप्तकालमें नरक व देव गतियोंके बन्धका अभाव है। असंयतसम्यग्दृष्टि देवगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उनके नरकगति और तिर्यग्गतिके बन्धका अभाव

१ अप्रतौ ' मिच्छाइट्ठिसासणे च ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीओ सव्वे मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, साभावियादो । ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, एदासिमण्णगईहि सह विरोहादो । उच्चागोदं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तमेदेसिमपज्जत्तकाले उच्चागोदाविणाभाविदेवगईए बंधाभावादो । असंजदसम्मादिट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, तस्सुभयत्थ बंधसंभवदंसणादो ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसह-संघडणाणं चउगइमिच्छाइट्ठि-तिगइसासणसम्माइट्ठि-देवणेरइयअसंजदसम्माइट्ठिणो सामी । अवसेसाणं पयडीणं चउगइमिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिणो तिगइसासणसम्माइट्ठिणो च सामी । बंधद्धाणं सुगमं । एदेसिमेत्थ बंधविणासो णत्थि । पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो । अण्णत्थ तिविहो, धुवबंधाभावादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधो सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

....

है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको सब मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, ऐसा स्वाभाविक है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग और वज्रर्षभसंहननको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त तथा असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, इनका अन्य गतियोंके साथ विरोध है । उच्चगोत्रको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, इनके अपर्याप्तकालमें उच्चगोत्रकी अविनाभाविनी देवगतिके वन्धका अभाव है । असंयतसम्यग्दृष्टि देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उच्चगोत्रके वन्धकी सम्भावना उक्त दोनों गतियोंके साथ देखी जाती है ।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग और वज्रर्षभसंहननके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, तीन गतियोंके सासादनसम्यग्दृष्टि, तथा देव व नारकी असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि व असंयतसम्यग्दृष्टि, तथा तीन गतियोंके सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । इनका यहां बन्धविनाश नहीं है ।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तरायका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । अन्यत्र तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुवबन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र आदि व अध्रुव होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि--अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण[1]-तिरिक्खगइ-पाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १६१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १६२ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, सासणसम्मादिट्ठिम्हि तदुभयाभावदंसणादो । एवमण्णपयडीणं जाणिय वत्तव्वं ।

थीणगिद्धितिय-चउसंठाण-चउसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सराणं परोदओ बंधो, विग्गहगदीए एदासिमुदयाभावादो । अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेद-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं सोदय-परोदओ बंधो, एदासिमेत्थ

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, स्त्रीवेद, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १६१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १६२ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—अनन्तानुबन्धिचतुष्क और स्त्रीवेदका बन्ध व उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । इसी प्रकार अन्य प्रकृतियोंका पूर्व या पश्चात् होनेवाला बन्ध व उदयका व्युच्छेद जानकर कहना चाहिये ।

स्त्यानगृद्धित्रय, चार संस्थान, चार संहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति और दुस्वरका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव है । अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्र, इनका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनके उदयके

---

१ प्रतिषु ' पंचसंघडण ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदयणियमाभावादो । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो बंधो । कधं णिरंतरो ? सत्तमपुढविणेरइएहिंतो तेउ-वाउक्काइएहिंतो च कयविग्गहाणं णिरंतरबंधदंसणादो । सासणसम्माइट्ठिम्हि सांतरो, तत्तो विणिग्गयसासणसम्माइट्ठीणं संभवाभावादो । अवसेसाणं पयडीणं सव्वत्थ सांतरो बंधो, अणियमेण बंधुवरमदंसणादो । पच्चया सुगमा । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणि तिरिक्खगइसंजुत्तमवसेसाओ पयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति । चउगइमिच्छाइट्ठी तिगइसासणसम्मादिट्ठिणो च सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो । सासणे दुविहो, अणाइ-धुवाभावादो । अवसेसाणं पयडीणं सव्वत्थ बंधो सादि-अद्धुवो ।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ १६३ ॥

सुगमं ।

नियमका अभाव है । स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी हैं । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, सप्तम पृथिवीके नारकियों और तेजकायिक व वायुकायिकोंमेंसे विग्रहको करनेवाले जीवोंके निरन्तर बन्ध देखा जाता है

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहांसे निकले हुए सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी सम्भावना नहीं है । शेष प्रकृतियोंका सर्वत्र सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अनियमसे उनका बन्धविश्राम देखा जाता है । प्रत्यय सुगम हैं ।

तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको तिर्यग्गतिसे संयुक्त; तथा शेष प्रकृतियोंको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि और तीन गतियोंके सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अनादि व ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सर्वत्र सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १६३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १६४ ॥

सादावेदणीयस्स बंधो उदओ वा पुव्वं वोच्छिण्णो किं पच्छा वोच्छिण्णो त्ति एत्थ परिक्खा णत्थि, तदुभयवोच्छेदाभावादो । सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो । सजोगिकेवलिम्हि णिरंतरो बंधो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । अण्णत्थ सांतरो । पच्चया सुगमा । णवरि सजोगिकेवलिम्हि कम्मइयकायजोगपच्चओ एक्को चेव । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं असंजदसम्मादिट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति । सजोगिकेवली अगइसंजुत्तं । चउगइमिच्छाइट्ठि असंजदसम्मादिट्ठिणो तिगइसासणसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसजोगिकेवलिणो च सामी । बंधद्धाणं सुगमं । एत्थ बंधवोच्छेदो णत्थि । सादि-अद्धुवो बंधो, परियत्तमाणबंधादो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-चउजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १६५ ॥

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगकेवली बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ १६४ ॥

सातावेदनीयका बन्ध अथवा उदय पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है या क्या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, इसकी यहां परीक्षा नहीं है, क्योंकि, उन दोनोंके व्युच्छेदका यहां अभाव है । स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवोदयी प्रकृति है । सयोगकेवली गुणस्थानमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । अन्यत्र सान्तर बन्ध होता है । प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि सयोगकेवली गुणस्थानमें एक ही कार्मणकाययोग प्रत्यय है । मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा असंयतसम्यग्दृष्टि देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बांधते हैं । सयोगकेवली गतिसंयोगसे रहित बांधते हैं । चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि व असंयतसम्यग्दृष्टि, तीन गतियोंके सासादनसम्यग्दृष्टि, तथा मनुष्यगतिके सयोगकेवली स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । यहां बन्धव्युच्छेद नहीं है । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, उसका बन्ध परिवर्तनशील है ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, चार जातियां, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मका कौन बन्धक व कौन अबन्धक है ? ॥ १६५ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १६६ ॥

एत्थ पुव्वं पच्छा वा बंधो वोच्छिण्णो[1] त्ति विचारो णत्थि, एक्कगुणट्ठाणम्मि तदसंभवादो । मिच्छत्तस्स सोदओ बंधो, अण्णहा बंधाणुवलंभादो । णवुंसयवेद-चउजादि-थावर-सुहुम-अपज्जत्तणामाणं बंधो सोदय-परोदओ, विग्गहगदीए उदयणियमाभावादो । हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-साहारणसरीरणामाणं परोदओ बंधो, विग्गहगदीए णियमेणेदासिं उदयाभावादो । मिच्छत्तस्स बंधो णिरंतरो । अवसेसाणं पयडीणं सांतरो, अणियमेण एगसमय-बंधदंसणादो । पच्चया सुगमा । मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-अपज्जत्ताणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो, चदुजादि-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बंधो, अण्णगईहि सह एदासिं बंधविरोहादो । मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं चउगइमिच्छाइट्ठी सामी, चउगइउदएण सह एदासिं बंधस्स विरोहाभावादो । एइंदिय-

---

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १६६ ॥

यहां उदयसे पूर्वमें अथवा पीछे बन्ध व्युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें वह सम्भव ही नहीं है । मिथ्यात्वका स्वोदय बन्ध होता है; क्योंकि, अपने उदयके विना उसका बन्ध पाया नहीं जाता । नपुंसकवेद, चार जातियां, स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्त नामकर्मका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका नियम नहीं है । हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, आताप और साधारणशरीर नामकर्मका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें नियमसे इनके उदयका अभाव है ।

मिथ्यात्वका बन्ध निरन्तर होता है । शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनका अनियमसे एक समय बन्ध देखा जाता है । प्रत्यय सुगम हैं । मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन और अपर्याप्तका तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त तथा चार जातियां, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणका तिर्यग्गतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ इनके बन्धका विरोध है । मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासंहननके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, चारों गतियोंके उदयके साथ इनके बन्धका

---

१ काप्रतौ ' पच्छा वा वोच्छिण्णो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदाव-थावराणं तिगइमिच्छाइट्ठी सामी, णिरयगइमिच्छाइट्ठिम्हि तासिं बंधाभावादो। बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं तिरिक्ख-मणुसगइमिच्छाइट्ठी सामी, देव-णेरइएसु एदासिं बंधाभावादो। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्स बंधो चउव्विहो। सेसाणं सादि-अद्धुवो।

देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-तित्थयरणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १६७ ॥

सुगमं।

असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १६८ ॥

किं बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति एत्थ विचारो णत्थि, एक्कम्हि तदसंभवादो। एदासिं पंचण्हं पि परोदओ बंधो, सोदएण सह सगबंधस्स विरोहादो। णिरंतरो बंधो, णियमेणाणेगसमयबंधदंसणादो। विग्गहगदीए दोण्हं समयाणं कधमणेगववएसो ? ण, एगं मोत्तूणुवरिमसव्वसंखाए अणेगसद्दपवुत्तीदो। पच्चया सुगमा। णवरि णवुंसयवेदपच्चओ

विरोध नहीं है। एकेन्द्रिय, आताप और स्थावर प्रकृतियोंके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नरकगतिमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें उनके बन्धका अभाव है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण प्रकृतियोंके तिर्यग्गति व मनुष्यगतिके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, देव व नारकियोंमें इनके बन्धका अभाव है। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है।

देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १६७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १६८ ॥

क्या बन्ध उदयसे पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार यहां नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें उक्त विचार सम्भव नहीं है। इन पांचों प्रकृतियोंका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनके अपने उदयके साथ बन्ध होनेका विरोध है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, नियमसे इनका अनेक समय तक बन्ध देखा जाता है।

शंका—विग्रहगतिमें दो समयोंका नाम अनेक समय कैसे हो सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, एकको छोड़कर ऊपरकी सब संख्यामें 'अनेक' शब्दकी प्रवृत्ति है।

प्रत्यय सुगम हैं। विशेष इतना है कि यहां नपुंसकवेद प्रत्यय नहीं है, क्योंकि,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णत्थि, विग्गहगदीए वट्टमाणणेरइयअसंजदसम्मादिट्ठीसु वेउव्वियचउक्कस्स बंधाभावादो। तित्थयरस्स पुण ते चेव तेत्तीस पच्चया, तत्थ णवुंसयवेदपच्चयदंसणादो। वेउव्वियचउक्कस्स देवगइसंजुत्तो, तित्थयरस्स देव-मणुसगइसंजुत्तो बंधो। वेउव्वियचउक्कबंधस्स तिरिक्ख-मणुसअसंजदसम्मादिट्ठी सामी। तित्थयरस्स तिगइअसंजदसम्मादिट्ठी सामी, तिरिक्खगइअसंजदसम्मादिट्ठीसु तित्थयरबंधाभावादो। बंधद्धाणं बंधवोच्छेदट्ठाणं च सुगमं। एदासिं बंधो सादि-अद्धुवो, धुवबंधित्ताभावादो।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेद-णवुंसयवेदएसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-चदुसंजलण-पुरिसवेद-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १६९ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिउवसमा खवा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १७० ॥

विग्रहगतिमें वर्तमान नारकी असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें वैक्रियिकचतुष्कके बन्धका अभाव है। किन्तु तीर्थंकर प्रकृतिके वे ही तेतीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनमें नपुंसकवेद प्रत्यय देखा जाता है। वैक्रियिकचतुष्कका देवगतिसे संयुक्त और तीर्थंकर प्रकृतिका देव एवं मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है। वैक्रियिकचतुष्कके बन्धके तिर्यंच व मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। तीर्थंकर प्रकृतिके तीन गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, तिर्यग्गतिके असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें तीर्थंकरके बन्धका अभाव है। बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छित्तिस्थान सुगम हैं। इनका बन्ध सादि और अध्रुव होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी नहीं हैं।

वेदमार्गणानुसार स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और नपुंसकवेदियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १६९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक और क्षपक तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ १७० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इत्थिवेदस्स ताव वुच्चदे— एत्थ उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, पुरिसवेदस्स एयंतेणुदयाभावादो सेसाणं च पयडीणं बंधोदयवोच्छेदाभावादो।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं च सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो। पुरिसवेदस्स परोदओ बंधो, इत्थिवेदे उदिण्णे पुरिसवेदस्सुदयाभावादो। सादावेदणीय-चदुसंजलणाणं सोदय-परोदओ बंधो, उदएण परावत्तणपयडित्तादो। जसकित्तीए मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति सोदय-परोदओ, एदेसु पडिवक्खुदयसंभवादो। उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खपयडीए उदयाभावादो। उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति बंधो सोदय-परोदओ, एदेसु णीचागोदुदयसंभवादो। उवरि सोदओ चेव, णीचागोदस्सुदयाभावादो।

पंचणाणावरणीय चउदंसणावरणीय-चउसंजलण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधि-त्तादो। सादावेदणीय-जसकित्तीणं मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडीए बंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खत्तादो। पुरिसवेदुच्चागोदाणं

पहले स्त्रीवेदीके विषयमें कहते हैं— यहां उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, नियमसे वहां पुरुषवेदके उदयका अभाव है, तथा शेष प्रकृतियोंके बन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी हैं। पुरुषवेदका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्त्रीवेदका उदय होनेपर पुरुषवेदके उदयका अभाव है। सातावेदनीय और चार संज्वलनका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उदयकी अपेक्षा ये प्रकृतियां परिवर्तनशील हैं। यशकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय सम्भव है। उपरिम गुणस्थानोंमें उसका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है। उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें नीचगोत्रका उदय सम्भव है। संयतासंयतसे ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नीचगोत्रके उदयका अभाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, चार संज्वलन और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं। सातावेदनीय और यशकीर्तिका मिथ्या-दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है। ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां इनका बन्ध प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है। पुरुषवेद और उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि एवं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो बंधो। कधं णिरंतरो ? ण, पम्म-सुक्कलेस्सिएसु तिरिक्ख-मणुस्सेसु पुरिसवेदुच्चागोदाणं[1] णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्ख-पयडीणं बंधाभावादो।

सव्वगुणट्ठाणाणमोघपच्चएसु पुरिस-णवुंसयवेदेसु अवणिदेसु अवसेसा एत्थ एदासिं पच्चया होंति। णवरि पमत्तसंजदेसु आहार-आहारमिस्सकायजोगपच्चया अवणेदव्वा, इत्थिवेदोदइल्लाणं तदसंभवादो। असंजदसम्मादिट्ठीसु ओरालिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकाय-जोगपच्चया अवणेदव्वा, तत्थ असंजदसम्मादिट्ठीणमपज्जत्तकालाभावादो। सेसं सुगमं।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-चदुसंजलण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठी चउगइ-संजुत्तं। सासणसम्माइट्ठी तिगइसंजुत्तं, णिरयगईए अभावादो। सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मा-दिट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं। उवरिमा देवगइसंजुत्तं अगइसंजुत्तं च बंधंति। सादावेदणीय-पुरिसवेद-जसकित्तीओ मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजद-

---

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि पद्म और शुक्ल लेश्यावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें पुरुषवेद और उच्चगोत्रका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है।

सब गुणस्थानोंके ओघप्रत्ययोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेदको कम करदेनेपर शेष यहां इन प्रकृतियोंके प्रत्यय होते हैं। विशेषता इतनी है कि प्रमत्तसंयतोंमें आहारक और आहारकमिश्र काययोगप्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, स्त्रीवेदके उदय युक्त जीवोंके वे दोनों प्रत्यय सम्भव नहीं हैं। असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, स्त्रीवेदियोंमें असंयत-सम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्तकालका अभाव है। शेष प्ररूपणा सुगम है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, चार संज्वलन और पांच अन्तरायको मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त, तथा सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें नरकगतिके बन्धका अभाव है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। उपरिम स्त्रीवेदी जीव देवगतिसे संयुक्त और गतिसंयोगसे रहित बांधते हैं। सातावेदनीय, पुरुषवेद और यशकीर्तिको मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त; सम्यग्मिथ्यादृष्टि

---

१ अप्रतौ 'पुरिसवेदुच्चागोदाणं पि' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मादिट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तमगइसंजुत्तं च बंधंति । उच्चागोदं सव्वे देव-मणुसगइसंजुत्तमगइसंजुत्तं च बंधंति ।

तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी, णिरयगदीए इत्थिवेदस्सुदयाभावादो । दुगइसंजदासंजदा सामी, देव-णेरइएसु अणुव्वईण-मभावादो । उवरि मणुस्सा चेव, अण्णत्थुवरिमगुणाभावादो । बंधद्धाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णत्थि । पंचणाणावरणीय चउदंसणावरणीय-चउसंजलण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठीसु चउव्विहो बंधो । अण्णत्थ तिविहो, धुवाभावादो । सेसपयडीणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

बेट्ठाणी ओघं ॥ १७१ ॥

बेट्ठाणी[1] मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीसु बंधपाओग्गभावेण अवट्ठिदाणि त्ति वुत्तं होदि । तेसिं परूवणा ओघं होदि ओघतुल्लेत्ति जं वुत्तं होदि । एदमप्पणासुत्तं देसामासियं, ओघादो एदम्हि थोवभेदुवलंभादो । तं भण्णमाणसुत्तत्थेण[2] सह सिस्साणुग्गहट्ठं परूवेमो— थीणगिद्धितिय-

और असंयतसम्यग्दृष्टि देवगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त; तथा उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त और गतिसंयोगसे रहित बांधते हैं । उच्चगोत्रको सब स्त्रीवेदी जीव देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त तथा गतिसंयोगसे रहित बांधते हैं ।

तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नरकगतिमें स्त्रीवेदके उदयका अभाव है । दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं, क्योंकि, देव-नारकियोंमें अणुव्रतियोंका अभाव है । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें उपरिम गुणस्थानोंका अभाव है । बन्धाध्वान सुगम है । बन्धव्युच्छेद है नहीं । पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, चार संज्वलन और पांच अन्तरायोंका मिथ्यादृष्टियोंमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १७१ ॥

द्विस्थानिकका अर्थ मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें बन्धकी योग्यतासे अवस्थित प्रकृतियां है । उनकी प्ररूपणा ओघ है अर्थात् ओघके समान है, यह अभिप्राय है । यह अर्पणासूत्र देशामर्शक है, क्योंकि, ओघसे इसमें थोड़ा भेद पाया जाता है । प्रस्तुत सूत्रके अर्थके साथ शिष्योंके अनुग्रहार्थ उक्त भेदकी प्ररूपणा करते हैं—

१ प्रतिषु ' बेट्ठाणे ' इति पाठः । २ प्रतिषु ' भण्णमाणे सुत्तत्थेण ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि बेट्ठाणियाणि। एदेसु अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा। अण्णपयडीणं[1] सव्वासिं पि पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छेदमुवगओ। कुदो ? तधोवलंभादो।

थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चदुसंठाण-चदुसंघडण-तिरिक्खाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं बंधो सोदय-परोदओ, उभयथा वि बंधाविरोहादो। इत्थिवेदस्स सोदएणेव बंधो, तदुदयमहिकिच्च[2] परूवणापारंभादो। ओघादो एत्थ विसेसो एसो, तत्थ सोदय-परोदएहि बंधोवदेसादो।

थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-तिरिक्खाउआणं बंधो णिरंतरो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो, सत्तमपुढवीणेरइएहिंतो तेउ-वाउकाइएहिंतो च णिप्फिडिदूणित्थिवेदेसुप्पण्णाणं मुहुत्तस्संतो णिरंतरबंधुवलंभादो।

स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, ये द्विस्थानिक प्रकृतियां हैं। इनमें अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं। अन्य सब ही प्रकृतियोंका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छेदको प्राप्त होता है, क्योंकि, वैसा पाया जाता है।

स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यगानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे ही उनके बन्धके विरोधका अभाव है। स्त्रीवेदका स्वोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, उसके उदयका अधिकार करके इस प्ररूपणाका प्रारम्भ हुआ है। ओघसे यहां यह विशेष है, क्योंकि, वहां स्वोदय-परोदयसे बन्धका उपदेश है।

स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क और तिर्यगायुका बन्ध निरन्तर होता है। तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, सप्तम पृथिवीके नारकियोंमेंसे तथा तेजकायिक व वायुकायिक जीवोंमेंसे निकलकर स्त्रीवेदियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्मुहूर्त काल तक निरन्तर बन्ध

---

१ प्रतिषु 'अण्णापयडीणं' इति पाठः।

२ प्रतिषु 'तदुभयमहिकिच्च' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सासणम्मि सांतरो, तत्तो तेसिमुववादाभावादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधो सांतरो, अणियमेणेग-समयबंधुवलंभादो । एसा परूवणा ओघादो थोवेण वि ण विरुज्झदि, समाणत्तुवलंभादो ।

पच्चया ओघपच्चयतुल्ला । णवरि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणं जहाकमेण तेवण्णट्ठेत्तालीसुत्तरपच्चया, पुरिस-णवुंसयवेदपच्चयाणमभावादो । तिरिक्खाउअस्स मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु कमेण पंचास पंचेतालीस पच्चया, ओरालिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकाय-जोग-पुरिस-णवुंसयवेदपच्चयाणमभावादो । तदभावो वि इत्थिवेदोदइल्लाणमपज्जत्तकाले आउअकम्मस्स बंधाभावादो ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोवाणि मिच्छादिट्ठि-सासण-सम्मादिट्ठिणो तिरिक्खगइसंजुत्तं बंधंति । अप्पसत्थविहायगदि-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचा-गोदाणि मिच्छाइट्ठिणो तिगइसंजुत्तं बंधंति, देवगईए बंधाभावादो । सासणसम्माइट्ठिणो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, देव-णिरयगईए सह बंधाभावादो । चउसंठाण-चउसंघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, एदासिं णिरय-देवगईहि सह बंधाभावादो । थीणगिद्धित्तिय-अणंताणु-

....

पाया जाता है । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उस गुणस्थानसे उक्त जीवोंके उत्पादका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, विना नियमके उनका एक समय बन्ध पाया जाता है । यह प्ररूपणा ओघसे थोड़ी भी विरुद्ध नहीं है, क्योंकि, समानता पायी जाती है ।

प्रत्यय ओघप्रत्ययोंके समान हैं । विशेषता इतनी है कि मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंके यथाक्रमसे तिरेपन और अड़तालीस उत्तर प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । तिर्यगायुके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे पचास और पैंतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, कार्मणकाययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । उनका अभाव भी स्त्रीवेदोदय युक्त जीवोंके अपर्याप्तकालमें आयु कर्मके बन्धका अभाव होनेसे है ।

तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि जीव तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं । अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रको मिथ्यादृष्टि जीव तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उनके देवगतिके बन्धका अभाव है । सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति व मनुष्य-गतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उनके देव व नरक गतिके साथ उनका बन्ध नहीं होता । चार संस्थान और चार संहननको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, इनका नरकगति व देवगतिके साथ बन्ध नहीं होता । स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानु-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधिचउक्काणि मिच्छाइट्ठिणो चउगइसंजुत्तं, सासणसम्मादिट्ठिणो तिगइसंजुत्तं बंधंति, णिरयगईए अभावादो ।

सव्वासिं पयडीणं तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी, णिरयगईए इत्थिवेदुदयाभावादो । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं, सुत्तुद्दिट्ठत्तादो । सत्तण्हं धुवपयडीणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो । सासणे दुविहो बंधो, अणाइ-धुवाभावादो । अवसेसाणं सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

णिद्दा पयला य ओघं ॥ १७२ ॥

एदासिं दोण्हं पयडीणं जहा ओघम्मि परूवणा कदा तहा कायव्वा । णवरि पच्चएसु पुरिस-णवुंसयवेदपच्चया अवणेदव्वा । णवरि असंजदसम्मादिट्ठिम्हि ओरालिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकायजोगा[1] च, इत्थिवेदाहियारादो । पमत्तसंजदम्हि पुरिस-णवुंसयवेदेहि सह आहारदुगं च अवणेदव्वं, अप्पसत्थवेदोदइल्लाणमाहारसरीरस्सुदयाभावादो । तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो[2] सामी, णिरयगईए इत्थिवेदोदइल्लाणमभावादो ।

बन्धिचतुष्कको मिथ्यादृष्टि चार गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उनके नरकगतिका बन्ध नहीं होता ।

सब प्रकृतियोंके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नरकगतिमें स्त्रीवेदके उदयका अभाव है । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं, क्योंकि, वे सूत्रमें ही निर्दिष्ट हैं । सात ध्रुवप्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता, क्योंकि, वहां अनादि व ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सर्वत्र सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

निद्रा और प्रचला प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १७२ ॥

इन दो प्रकृतियोंकी जैसे ओघमें प्ररूपणा की गई है वैसे करना चाहिये । विशेष यह है कि प्रत्ययोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । इतनी और भी विशेषता है कि असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग प्रत्ययोंको भी कम करना चाहिये, क्योंकि, स्त्रीवेदका अधिकार है । प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें पुरुष और नपुंसक वेदोंके साथ आहारकद्विकको भी कम करना चाहिये, क्योंकि, अप्रशस्त वेदोदय युक्त जीवोंके आहारकशरीरके उदयका अभाव है । तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नरकगतिमें स्त्रीवेदोदय युक्त जीवोंका अभाव है । केवल इतनी ही ओघसे

१ प्रतिषु ' कायजोगो ' इति पाठः ।

२ काप्रतौ ' सासणसम्माइट्ठीअसंजदसम्मादिट्ठिणो' इति पाठः ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

एत्तिओ चेव विसेसो, णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि। तेण दव्वट्ठियणयं पडुच्च ओघमिदि वुत्तं।

असादावेदणीयमोघं ॥ १७३ ॥

असादवेदणीयमिच्चेदेण पयडिणिद्देसो ण कदो, किंतु असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्ति[1] त्ति छप्पयडिघडिओ असाददंडओ असादवेदणीयमिदि णिद्दिट्ठो। जहा सच्चहामा भामा, भीमसेणो सेणो, बलदेवो देवो त्ति। एदासिं छण्णं परूवणा ओघतुल्ला। णवरि एत्थ वि पच्चयविसेसो सामित्तविसेसो च णायव्वो।

एक्कट्ठाणी ओघं ॥ १७४ ॥

एक्कम्मि मिच्छाइट्ठिगुणट्ठाणे जाओ पयडीओ बंधपाओग्गा होदूण चिट्ठंति तासिमेगट्ठाणि त्ति सण्णा। तिस्से एक्कट्ठाणीए परूवणा ओघतुल्ला। तं जहा — मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा। णवुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि,

विशेषता है, अन्यत्र और कहीं भी विशेषता नहीं है। इसीलिये द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा कर 'ओघके समान है,' ऐसा कहा गया है।

असातावेदनीयकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १७३ ॥

असातावेदनीय इस पदसे प्रकृतिका निर्देश नहीं किया है, किन्तु असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति, इन छह प्रकृतियोंसे सम्बद्ध असातादण्डक 'असातावेदनीय' पदसे निर्दिष्ट किया गया है। जैसे सत्यभामाको 'भामा', भीमसेनको 'सेन' और बलदेवको 'देव' पदसे निर्दिष्ट किया जाता है। इन छह प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है। विशेष इतना है कि यहां भी प्रत्ययभेद और स्वामित्वभेद जानना चाहिये।

एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १७४ ॥

एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें जो प्रकृतियां बन्धयोग्य होकर स्थित हैं उनकी 'एकस्थानिक' संज्ञा है। उन एकस्थानिकोंकी प्ररूपणा ओघके समान है। वह इस प्रकार है— मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं। नपुंसकवेद, नारकायु, नरकगति, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इनके बन्ध और उदयके व्युच्छेदका विचार

१ काप्रतौ 'असुह-जस-अजसकित्ति' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एदासिमेत्थ णियमेण उदयाभावादो । अवसेसाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, बंधे फिट्टे वि उवरिमगुणट्ठाणेसु एदासिमुदयदंसणादो ।

मिच्छत्तस्स सोदओ बंधो । णउंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-णिरयाणुपुव्वि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं परोदओ बंधो, इत्थिवेदोदएण सह एदासिमुदयविरोहादो । एसो एत्थ ओघादो विसेसो, तत्थ सोदय-परोदएणेदासिं बंधोवदेसादो । हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं सोदय-परोदओ बंधो, इत्थिवेदोदएण सह एदासिमुदयस्स विप्पडिसेहाभावादो । मिच्छत्त-णिरयाउआणं णिरंतरो बंधो । अवसेसाणं सांतरो, अणियदेगसमयबंधदंसणादो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-एइंदिय-आदाव-थावराणं तेवण्ण पच्चया, पुरिस-णवुंसयवेदाणमभावादो । णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणमेगूण-वंचास पच्चया, ओघपच्चएसु ओरालियमिस्स-कम्मइय-वेउव्वियदुग-पुरिस-णवुंसयवेदाण-मभावादो । बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं एक्कवंचास पच्चया, ओघपच्चएसु वेउव्वियदुग-पुरिस-णवुंसयवेदपच्चयाणमभावादो । सेसं सुगमं ।

नहीं है, क्योंकि, यहां नियमसे इनके उदयका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, बन्धके नष्ट होनेपर भी उपरिम गुणस्थानोंमें इनका उदय देखा जाता है ।

मिथ्यात्वका स्वोदय बन्ध होता है । नपुंसकवेद, नारकायु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, नारकानुपूर्वी, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्म, इनका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्त्रीवेदके उदयके साथ इनके उदयका विरोध है । यह यहां ओघसे विशेषता है, क्योंकि, वहां स्वोदय-परोदयसे इनके बन्धका उपदेश है । हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासंहननका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्त्रीवेदके उदयके साथ इनका विरोध नहीं है । मिथ्यात्व और नारकायुका निरन्तर बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनका नियम रहित एक समय बन्ध देखा जाता है ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, एकेन्द्रिय, आताप और स्थावर प्रकृतियोंके तिरेपन प्रत्यय हैं, क्योंकि, यहां पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके उनंचास प्रत्यय हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंमें औदारिकमिश्र, कार्मण, वैक्रियिकद्विक, पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण प्रकृतियोंके इक्यावन प्रत्यय हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंमें वैक्रियिकद्विक, पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छत्तं चउगइसंजुत्तं बंधइ। णउंसयवेद-हुंडसंठाणाणि तिगइसंजुत्तं, देवगईए सह बंधाभावादो। णिरयाउ- [णिरयगइ-] णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीओ णिरयगइसंजुत्तं बंधइ। कुदो? साभावियादो। अपज्जत्तासंपत्तसेवट्टसंघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, णिरय-देवगईहि सह बंधाभावादो। अवसेसाओ पयडीओ तिरिक्खगइसंजुत्तं, तत्थ ताणं णियमदंसणादो। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-एइंदियादाव-थावर-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं तिगइमिच्छाइट्ठी सामी, णिरयगईए इत्थिवेदुदयाभावादो। णिरयाउ-णिरयगइ-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-णिरयाणुपुव्वि-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं तिरिक्ख-मणुस्सा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्स चउव्विहो बंधो। सेसाणं सादि-अद्धुओ।

अपच्चक्खाणावरणीयमोघं ॥ १७५ ॥

एत्थ वि पुव्वं व परूवेदव्वं। अहवा अपच्चक्खाणावरणीयपहाणो दंडओ अपच्चक्खाणावरणीयमिदि भण्णइ। जहा णिंबंब-कयंब-जंबु-जंबीरवणमिदि। अपच्चक्खाणचउक्क-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणु-

---

मिथ्यात्वको चारों गतियोंसे संयुक्त बांधता है। नपुंसकवेद और हुण्डसंस्थानको तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है, क्योंकि, देवगतिके साथ उनके बन्धका अभाव है। नारकायु, [नरकगति] और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको नरकगतिसे संयुक्त बांधता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है। अपर्याप्त और असंप्राप्तसृपाटिकासंहननको तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधता है, क्योंकि, नरकगति और देवगतिके साथ इनके बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंको तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधता है, क्योंकि, तिर्यग्गतिके साथ उनके बन्धका नियम देखा जाता है। मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, एकेन्द्रिय, आताप, स्थावर, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासंहननके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नरकगतिमें स्त्रीवेदके उदयका अभाव है। नारकायु, नरकगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, नारकानुपूर्वी, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इन प्रकृतियोंके बन्धके तिर्यंच व मनुष्य स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। मिथ्यात्वका चारों प्रकारका बन्ध होता है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है।

अप्रत्याख्यानावरणीयकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १७५ ॥

यहां भी पूर्वके समान प्ररूपणा करना चाहिये। अथवा अप्रत्याख्यानावरणीय-प्रधान दण्डकको अप्रत्याख्यानावरणीय शब्दसे कहा जाता है। जैसे कि नीम, आम, कदम्ब, जामुन और जम्बीर, इन वृक्षोंकी प्रधानतासे इतर वृक्षोंसे भी युक्त वनोंको नीमवन, आमवन, कदम्बवन, जामुनवन और जम्बीरवन शब्दोंसे कहा जाता है। अप्रत्याख्यान-चतुष्क, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभवज्रनाराचशरीर-संहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, इन अप्रत्याख्यानावरणीयसंज्ञित प्रकृतियोंकी

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

पुव्वीणमपच्चक्खाणावरणीयसण्णिदाणं परूवणा ओघतुल्ला। तं जहा— अपच्चक्खाणचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि चेव तदुभयदंसणादो। मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीए पुव्वं उदओ पच्छा बंधो, सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु तव्वोच्छेददंसणादो। अवसेसाणं पयडीणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, तहोवलंभादो।

सव्वासिं पयडीणं बंधो सव्वत्थ सोदय-परोदओ। णवरि सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइदुग-ओरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं परोदओ बंधो, देवेसुदयाभावादो। अपच्चक्खाणावरणचउक्कस्स बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो। कुदो णिरंतरो? आणदादिदेवेहिंतो इत्थिवेदमणुस्सेसुप्पण्णाणं अंतोमुहुत्तकालं णिरंतरत्तेण तदुभयबंधदंसणादो। उवरि णिरंतरो, देवसम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरबंधुवलंभादो। एवमोरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंगाणं पि वत्तव्वं, सणक्कुमारादिदेवेहिंतो इत्थिवेदेसुप्पण्णाणं णिरंतरबंधुवलंभादो। वज्जरिसहसंघडणस्स मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो सांतरो।

प्ररूपणा ओघके समान है। वह इस प्रकारसे है— अप्रत्याख्यानचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें ही उन दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमशः उनका व्युच्छेद देखा जाता है। शेष प्रकृतियोंका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, वैसा पाया जाता है।

सब प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र स्वोदय-परोदय होता है। विशेष इतना है कि सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्रर्षभसंहननका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, देवोंमें इनका उदयाभाव है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी है। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, आनतादिक देवोंमेंसे स्त्रीवेदी मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्मुहूर्त काल तक निरन्तर रूपसे उन दोनों प्रकृतियोंका बन्ध देखा जाता है।

सासादनसे ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। इसी प्रकार औदारिकशरीर और औदारिकशरीरांगोपांगके भी कहना चाहिये, क्योंकि, सनत्कुमारादिक देवोंमेंसे स्त्रीवेदियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। वज्रर्षभसंहननका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है। उपरिम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो।

अपच्चक्खाणचउक्कस्स सव्वगुणट्ठाणेसु ओघपच्चया चेव। णवरि पुरिस-णवुंसयपच्चया सव्वत्थ अवणेदव्वा। असंजदसम्मादिट्ठिम्हि ओरालिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया च अवणेदव्वा। एवं वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणस्स वि वत्तव्वं। णवरि सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीसु ओरालियकायजोगपच्चओ अवणेदव्वो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु दुरूणोघपच्चया चेव होंति, पुरिस-णवुंसयवेदपच्चयाणमभावादो। सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु चालीस पच्चया, पुरिस-णवुंसयवेदेहि सह ओरालियदुगाभावादो, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाभावादो च[1]। सेसं सुगमं।

अपच्चक्खाणचउक्कं मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, उवरिमा दुगइसंजुत्तं बंधंति। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीओ मणुसगइसंजुत्तं सव्वे बंधंति।

गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है।

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कके सब गुणस्थानोंमें ओघप्रत्यय ही हैं। विशेषता केवल इतनी है कि पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको सर्वत्र कम करना चाहिये। असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको भी कम करना चाहिये। इसी प्रकार वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहननके भी कहना चाहिये। विशेष इतना है कि सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिक काययोग प्रत्यय कम करना चाहिये। मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर और औदारिकशरीरांगोपांगके मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें दो कम ओघप्रत्यय ही हैं, क्योंकि, पुरुष और नपुंसक वेदप्रत्ययोंका अभाव है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, वहां पुरुष और नपुंसक वेदोंके साथ औदारिकद्विकका अभाव है तथा असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका अभाव भी है। शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है।

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कको मिथ्यादृष्टि चार गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त, और उपरिम जीव दो गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको मनुष्यगतिसे संयुक्त सभी स्त्रीवेदी जीव

१ काप्रतौ ' पुरिस णवुंसयवेदपच्चयाणमभावादो। सम्मामिच्छाइट्ठी-असंजदसम्मादिट्ठीसु वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाभावादो च ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवसेसतिण्णिपयडीओ मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तं बंधंति ।

अपच्चक्खाणावरणचउक्कस्स तिगइचदुगुणट्ठाणिणो सामी । अवसेसाणं पयडीणं तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो देवगइसम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो च सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । अपच्चक्खाणचउक्कस्स मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो । अण्णत्थ तिविहो । अवसेसाणं पयडीणं सादि-अद्धुवो ।

पच्चक्खाणावरणीयमोघं॥ १७६ ॥[1]

एत्थ ओघपरूवणं किंचिविसेसाणुविद्धं संभरिय वत्तव्वं ।

हस्स-रदि जाव तित्थयरेत्ति ओघं ॥ १७७ ॥

ओघादो एदेसु[2] सुत्तेसु अवट्ठिदथोवमेयसंदरिसणट्ठं मंदबुद्धिसिस्साणुग्गहट्ठं च पुणरवि परूवेमो — हस्स-रइ-भय-दुगुंछाणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, अपुव्वकरणचरिमसमए

....

बांधते हैं । शेष तीन प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति एवं मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि व असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं ।

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कके तीन गतियोंके चार गुणस्थानवर्ती स्त्रीवेदी जीव स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि तथा देवगतिके सम्यग्मिथ्यादृष्टि व असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका और अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

प्रत्याख्यानावरणीयकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १७६ ॥

यहां कुछ विशेषतासे सम्बद्ध ओघप्ररूपणाको स्मरणकर कहना चाहिये ।

हास्य व रतिसे लेकर तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ १७७ ॥

ओघकी अपेक्षा इन सूत्रोंमें अवस्थित कुछ थोड़ीसी विशेषताको दिखलाने तथा मन्दबुद्धि शिष्यके अनुग्रहके लिये फिर भी प्ररूपणा करते हैं — हास्य, रति, भय और जुगुप्साका बन्ध व उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, अपूर्वकरणके अन्तिम

....

१ अप्रतौ 'पच्चक्खाणावरणी ओघं' इति पाठः । २ प्रतिषु 'देवेसु' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोण्हं[1] वोच्छेदुवलंभादो । सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो सोदय-परोदओ, परोदए वि संते बंधविरोहाभावादो । भय-दुगुंछाणं सव्वगुणट्ठाणेसु णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । हस्स-रदीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधो सांतरो, एत्थ पडिवक्खपयडिबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पच्चया सुगमा, बहुसो परूविदत्तादो । मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं बंधंति । णवरि हस्स-रदीओ तिगइसंजुत्तं, णिरयगईए सह बंधविरोहादो । सव्वपयडीओ सासणो तिगइसंजुत्तं बंधइ, तत्थ णिरयगईए[2] बंधाभावादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजुत्तं, तत्थ णिरय-तिरिक्खगईणं बंधाभावादो । उवरिमा देवगइसंजुत्तं, तत्थ सेसगईणं बंधाभावादो । णवरि अपुव्वकरणे चरिमसत्तमभागे अगइसंजुत्तं बंधंति । तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी, णिरयगईए णिरुद्धित्थिवेदाभावादो । दुगइसंजदासंजदा सामी, देवगईए देसव्वईणमभावादो[3] । उवरिमा मणुस्सा चेव, अण्णत्थ महव्वईणमभावादो । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । भय-दुगुंछाणं

समयमें उनके बन्ध व उदय दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । सब गुणस्थानोंमें उनका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, अन्य प्रकृतियोंके उदयके भी होनेपर इनके बन्धका कोई विरोध नहीं है । भय और जुगुप्साका सब गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं । हास्य और रतिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, उनका बहुत बार प्ररूपण किया जा चुका है । मिथ्यादृष्टि जीव उन्हें चार गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं । विशेष इतना है कि हास्य और रतिको तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, नरकगतिके साथ उनके बन्धका विरोध है । सब प्रकृतियोंको सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है, क्योंकि, इस गुणस्थानमें नरकगतिका बन्ध नहीं होता । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उन गुणस्थानोंमें नरकगति और तिर्यग्गतिके बन्धका अभाव है । उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उपरिम गुणस्थानोंमें शेष गतियोंके बन्धका अभाव है । विशेषता यह है कि अपूर्वकरणके अन्तिम सप्तम भागमें गतिसंयोगसे रहित बांधते हैं । तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नरकगतिमें स्त्रीवेदके उदय सहित जीवोंका अभाव है । दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं, क्योंकि, देवगतिमें देशव्रतियोंका अभाव है । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें महाव्रतियोंका अभाव है । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं ।

---

१ प्रतिषु ' चदुण्हं ' इति पाठः ।　　२ अप्रतौ ' णिरयगईणं ' इति पाठः ।
३ प्रतिषु ' देसव्वगईण- ' इति पाठः ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो । उवरि तिविहो, धुवबंधाभावादो । हस्स-रदीणं सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

मणुस्साउअस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, असंजदसम्मादिट्ठि-अणियट्टीसु जहाकमेण बंधोदयवोच्छेददंसणादो । मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदएण बंधो । असंजदसम्मादिट्ठीसु परोदएणेव । कुदो ? साभावियादो । सव्वत्थ बंधो णिरंतरो, जहण्णबंध-कालस्स वि अंतोमुहुत्तपमाणुवलंभादो । मिच्छादिट्ठिस्स पंचास,सासणस्स पंचेतालीस पच्चया; ओरालिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकायजोग-पुरिस-णवुंसयपच्चयाणमभावादो । असंजदसम्मादिट्ठीसु चालीस पच्चया, ओघपच्चएसु[1] ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-कायजोग-पुरिस-णवुंसयवेदाणमभावादो । सेसं सुगमं । सव्वे वि मणुसगइसंजुत्तं चेव बंधंति, अण्णगईहि सह विरोहादो । तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी । असंजदसम्मादिट्ठिणो देवा चेव सामी, अण्णत्थित्थिवेदोदइल्लाणं सम्मादिट्ठीणं मणुस्साउवस्स बंधाभावादो । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । सव्वत्थ सादि-अद्धुवो बंधो ।

भय और जुगुप्साका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है । हास्य और रतिका सर्वत्र सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

मनुष्यायुका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, असंयत-सम्यग्दृष्टि और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव ही है । सर्वत्र निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उसका जघन्य बन्धकाल भी अन्तर्मुहूर्त प्रमाण पाया जाता है । मिथ्यादृष्टिके पचास और सासादनसम्यग्दृष्टिके पैंतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, वहां औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, कार्मण काययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद, प्रत्ययोंका अभाव है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंमेंसे औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, कार्मण काययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है । सब ही मनुष्यगतिसे संयुक्त ही बांधते हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उसके बन्धका विरोध है । तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि देव ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें स्त्रीवेदोदय युक्त सम्यग्दृष्टियोंके मनुष्यायुके बन्धका अभाव है । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । सर्वत्र सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

१ प्रतिषु ' ओघपच्चयासु ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवाउवस्स पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि, अप्पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु कमेण बंधोदयवोच्छेददंसणादो। सव्वगुणट्ठाणेसु परोदएणेव बंधो, सोदयम्हि बंधस्स अच्चंताभावस्स अवट्ठाणादो। णिरंतरो बंधो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो। मिच्छाइट्ठिस्स एगूणवंचास, सासणस्स चउवेतालीस, असंजदसम्मादिट्ठिस्स चालीसुत्तरपच्चया, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोग-पुरिस-णवुंसयवेदाणमभावादो। उवरि पुरिस-णवुंसयवेदाहारदुवेहि विणा ओघपच्चया चेव वत्तव्वा। सेसं सुगमं। सव्वत्थ देवगइसंजुत्तो बंधो, अण्णगईहि सह बंधविरोहादो। तिरिक्ख-मणुस-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदा सामी, अण्णत्थ ट्ठियाणं तब्बंधविरोहादो। उवरिमा मणुसा चेव, अण्णत्थ महव्वईणमभावादो। बंधद्धाणं सुगमं। अप्पमत्तद्धाए संखेज्जदिभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। कुदो? सुत्ताणुसारिगुरूवदेसादो। सादि-अद्धुवो बंधो।

देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीर-अंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणेसु देवगइ-देव-

देवायुका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अप्रमत्त और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है। सब गुणस्थानोंमें परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, अपने उदयके होनेपर उसके बन्धका अत्यन्ताभाव है। उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके विना उसके बन्धविश्रामका अभाव है। मिथ्यादृष्टिके उनंचास, सासादनसम्यग्दृष्टिके चवालीस और असंयतसम्यग्दृष्टिके चालीस उत्तर प्रत्यय हैं, क्योंकि, यहां वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र, कार्मण काययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है। असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानके ऊपर पुरुषवेद, नपुंसकवेद और आहारकद्विकके विना ओघप्रत्यय ही कहना चाहिये। शेष प्रत्ययप्ररूपण सुगम है। सर्वत्र देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उसके बन्धका विरोध है। तिर्यंच और मनुष्य मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि एवं संयतासंयत स्वामी हैं, क्योंकि, अन्यत्र स्थित जीवोंके उसके बन्धका विरोध है। उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें महाव्रतियोंका अभाव है। बन्धाध्वान सुगम है। अप्रमत्तकालके संख्यातवें भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, ऐसा सूत्रानुसारी गुरुका उपदेश है। सादि व अध्रुव बन्ध होता है।

देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय व निर्माण, इनमेंसे देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि, अपुव्वासंजदसम्माइट्ठीसु देवगइपाओग्गाणुपुव्वीए अपुव्व-सासणेसु कमेण बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण वण्ण-गंध रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-सुस्सर-णिमिणाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, अपुव्व-अणियट्टीसु कमेण बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-सुभगादेज्जाणं पि एवं चेव वत्तव्वं ।

देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं परोदएणेव सव्वत्थ बंधो, सोदएणेदासिं बंधविरोहादो । पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिर-सुभ-णिमिणाणं सोदओ सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो, एत्थेदासिं धुवोदयत्तदंसणादो । समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सव्वत्थ सोदय-परोदओ बंधो, उभयहा वि बंधाविरोहादो[1] । उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो सोदय-परोदओ, विग्गहगदीए केसिंचि अपज्जत्तकाले च उदएण

और वैक्रियिकशरीरांगोपांगका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तथा देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके अपूर्वकरण और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुस्वर और निर्माण, इनका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानोंमें क्रमसे इनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। पंचेन्द्रियजाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, सुभग और आदेयके भी इसी प्रकार कहना चाहिये ।

देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगका परोदयसे ही सर्वत्र बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है। पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, शुभ और निर्माणका सब गुणस्थानोंमें स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये प्रकृतियां ध्रुवोदयी देखी जाती हैं। समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका सर्वत्र स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके बन्धका विरोध नहीं है। उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें और किन्हींके अपर्याप्तकालमें

---

१ प्रतिषु 'बंधविरोहादो' इति पाठः ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

विणा बंधुवलंभादो । उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु सोदएणेव, अपज्जत्तद्धाए तेसिं गुणाणमभावादो । मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सुभगादेज्जाणं सोदय-परोदओ बंधो । उवरि सोदओ चेव, साभावियादो ।

तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिणाणं बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । पंचिंदियजादि-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-अंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो बंधो । कधं णिरंतरो ? ण, असंखेज्जवाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु णिरंतरबंधुवलंभादो । एवं सासणस्स वि वत्तव्वं । णवरि पंचिंदियजादि-परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं बंधो णिरंतरो चेव । सम्मामिच्छाइट्ठिप्पहुडि उवरिमाणं सासणभंगो । णवरि देवगइ-वेउव्वियसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-सुभग-सुस्सरादेज्जाणं णिरंतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । थिर-सुभाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्ख-

---

भी इनका उदयके विना बन्ध पाया जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें स्वोदयसे ही बन्ध होता हैं, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें उन गुणस्थानोंका अभाव है । मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सुभग व आदेयका स्वोदय परोदय बन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात और निर्माणका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं । पंचेन्द्रियजाति, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय, देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका — निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, असंख्यातवर्षायुष्क तिर्यंच और मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इसी प्रकार सासादन गुणस्थानके भी कहना चाहिये । विशेषता केवल यह है कि पंचेन्द्रियजाति, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका बन्ध निरन्तर ही होता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टिसे लेकर उपरिम गुणस्थानोंकी प्ररूपणा सासादनसम्यग्दृष्टिके समान है । विशेष यह है कि देवगति, वैक्रियिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, सुभग, सुस्वर और आदेयका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । स्थिर और शुभका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । ऊपर इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पयडिबंधाभावादो । पच्चया सुगमा, बहुसो परूविदत्तादो । णवरि देवगइ-वेउव्वियदुगाणं वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया पुरिस-णवुंसयवेदेहि सह अवणेदव्वा । सेसं सुगमं ।

देवगइ-वेउव्वियदुगाणि सव्वत्थ देवगइसंजुत्तं बज्झंति । णवरि वेउव्वियदुगं मिच्छाइट्ठी[1] देव-णिरयगइसंजुत्तं बंधंति । समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जणामाओ मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो तिगइसंजुत्तं, णिरयगईए सह बंधाभावादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं । सेसा देवगइसंजुत्तं बंधंति । अवसेसाओ पयडीओ मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणा तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो देवगइ-मणुसगइसंजुत्तमुवरिमा देवगइसंजुत्तं बंधंति ।

देवगइ-वेउव्वियदुगाणं तिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदा सामी । उवरिममणुसा चेव, अण्णत्थ तेसिमभावादो । अवसेसाणं पयडीणं तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठी दुगइसंजदा-

---

वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, उनकी प्ररूपणा बहुत वार की जा चुकी है । विशेषता यह है कि देवगति और वैक्रियिकद्विकके वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको पुरुष और नपुंसक वेदोंके साथ कम करना चाहिये । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है ।

देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विक सर्वत्र देवगतिसे संयुक्त बंधते हैं । विशेषता इतनी है कि वैक्रियिकद्विकको मिथ्यादृष्टि स्त्रीवेदी जीव देव व नरक गतिसे संयुक्त बांधते हैं । समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर और आदेय नामकर्मोंको मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, नरकगतिके साथ इनके बन्धका अभाव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बांधते हैं । शेष गुणस्थानवर्ती देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं । शेष प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवगति एवं मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा उपरिम गुणस्थानवर्ती देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं ।

देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके तिर्यंच व मनुष्य मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत स्वामी हैं । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें उन गुणस्थानोंका अभाव है । शेष प्रकृतियोंके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि; दो गतियोंके

---

१ प्रतिषु ' मिच्छाइट्ठि ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संजदा मणुसगइसंजदा च सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। धुवबंधीणं मिच्छादिट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो। अण्णत्थ तिविहो, धुवबंधाभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगाणं ओघपरूवणमवहारिय वत्तव्वं। तित्थयरस्स वि ओघपरूवणं चेव णादूण वत्तव्वं। णवरि वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइय-कायजोग-पुरिस-णवुंसयवेदा असंजदसम्मादिट्ठिपच्चएसु अवणेदव्वा। अण्णत्थ पुरिस-णवुंसय-पच्चया चेव अवणेदव्वा। तित्थयरबंधस्स मणुसा चेव सामी, अण्णत्थित्थिवेदोदइल्लाणं तित्थयरस्स बंधाभावादो। अपुव्वकरणउवसामएसु तित्थयरस्स बंधो, ण क्खवएसु; इत्थि-वेदोदएण तित्थयरकम्मं बंधमाणाणं खवगसेडिसमारोहणाभावादो।

जहा इत्थिवेदोदइल्लाणं सव्वसुत्ताणि परूविदाणि तहा णवुंसयवेदोदइल्लाणं पि वत्तव्वं। णवरि सव्वत्थ इत्थिवेदम्मि भणिदपच्चएसु इत्थिवेदमवणिय णवुंसयवेदो पक्खिवि-दव्वो। असंजदसम्मादिट्ठिपच्चएसु वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकायजोगपच्चया पक्खिविदव्वा,

....

संयतासंयत; तथा मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांगकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाका निश्चय कर कहना चाहिये। तीर्थंकर प्रकृतिकी भी ओघप्ररूपणाको ही जानकर कहना चाहिये। विशेषता केवल यह है कि वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र, कार्मण काययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको असंयतसम्यग्दृष्टिके प्रत्ययोंमेंसे कम करना चाहिये। तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धके मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें स्त्रीवेदोदय युक्त जीवोंके तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धका अभाव है। अपूर्वकरण उपशामकोंमें तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध होता है, क्षपकोंमें नहीं; क्योंकि, स्त्रीवेदके उदयके साथ तीर्थंकरकर्मको बांधनेवाले जीवोंके क्षपकश्रेणीके आरोहणका अभाव है।

जिस प्रकार स्त्रीवेदोदय युक्त जीवोंकी अपेक्षा सब सूत्रोंकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार नपुंसकवेदोदय युक्त जीवोंके भी कहना चाहिये। विशेषता केवल इतनी है कि सर्वत्र स्त्रीवेदमें कहे हुए प्रत्ययोंमेंसे स्त्रीवेदको कम कर नपुंसकवेदको जोड़ना चाहिये। असंयतसम्यग्दृष्टिके प्रत्ययोंमें वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग प्रत्ययोंको जोड़ना

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

णेरइएसु आउअबंधवसेण सम्मादिट्ठीणमुप्पत्तिदंसणादो। णिरयाउ-णिरयदुग-इत्थिवेदाणं सव्वत्थ[1] पुरिसवेदस्सेव परोदएण बंधो। णवुंसयवेदस्स सोदएण। एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-जादि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं सोदय-परोदओ बंधो, एदेसु वुत्तट्ठाणेसु एदेसिं पडिवक्खट्ठाणेसु च णवुंसयवेदुदयदंसणादो।

तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो। कुदो? तेउ-वाउकाइएसु सत्तमपुढविणेरइएसु च दोसु वि गुणट्ठाणेसु णिरंतरबंधुवलंभादो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सांतर-णिरंतरो मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो। कुदो? आणदादिदेवेहिंतो णवुंसयवेदोदइल्लमणुस्सेसुप्पण्णाणं तित्थयरसंतकम्मेण णेरइएसुप्पण्णमिच्छाइट्ठीणं च णिरंतरबंधुवलंभादो। ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठि-सासण-सम्मादिट्ठीसु सणक्कुमारादिदेव-णेरइए अस्सिदूण णिरंतरो बंधो। अण्णत्थ सांतरो वत्तव्वो, असंखेज्जवासाउएसु णवुंसयवेदुदयाभावादो। तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सियणवुंसयवेदोदइल्लतिरिक्ख-मणुस्समिच्छाइट्ठि-सासणे अस्सिदूण देवगइ-वेउव्वियसरीरदुगाणं णिरंतरो बंधो वत्तव्वो।

चाहिये, क्योंकि, आयुबन्धके वशसे सम्यग्दृष्टियोंकी नारकियोंमें उत्पत्ति देखी जाती है। नारकायु, नरकगतिद्विक और स्त्रीवेदका सर्वत्र पुरुषवेदके समान परोदयसे बन्ध होता है। नपुंसकवेदका स्वोदयसे बन्ध होता है। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इन उक्त स्थानोंमें तथा इनके प्रतिपक्ष स्थानोंमें नपुंसकवेदका उदय देखा जाता है।

तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तेज व वायु कायिक तथा सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि व सासादन-सम्यग्दृष्टि इन दोनों ही गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, आनतादिक देवोंमेंसे नपुंसकवेदोदय युक्त मनुष्योंमें उत्पन्न हुए तथा तीर्थंकर प्रकृतिकी सत्ताके साथ नारकियोंमें उत्पन्न हुए मिथ्यादृष्टियोंके निरन्तर बन्ध पाया जाता है। औदारिकशरीर और औदारिकशरीरांगोपांगका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सनत्कुमारादि देव व नारकियोंका आश्रयकर निरन्तर बन्ध होता है। अन्यत्र सान्तर बन्ध कहना चाहिये, क्योंकि, असंख्यातवर्षायुष्कोंमें नपुंसकवेदके उदयका अभाव है। तेज, पद्म और शुक्ल लेश्यावाले नपुंसकवेदोदय युक्त तिर्यंच व मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका आश्रयकर देवगतिद्विक और वैक्रियिकशरीरद्विकका निरन्तर बन्ध कहना चाहिये।

---

१ प्रतिषु 'सव्व' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवघाद-परघादुस्सास-पत्तेयसरीराणं असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय परोदओ बंधो, णिरयगईए अपज्जत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु वि एदासिं बंधुवलंभादो। तस बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-पंचिंदियजादीणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो सोदय-परोदओ, थावर-सुहुमापज्जत्त-साहारण-विगलिंदिएसु एदासिं बंधुवलंभादो। सव्वपयडीणं बंधस्स णत्थि देवाणं सामित्तं तत्थ णवुंसयवेदुदयाभावादो। एइंदिय-आदाव-थावराणं तिरिक्खगइ-मणुसगइ-मिच्छाइट्ठी चेव सामी, देवा ण होंति; तेसु णवुंसयवेदुदयाभावादो। अण्णो[1] वि जदि भेदो अत्थि सो संभालिय[2] वत्तव्वो।

जधा इत्थिवेदस्स परूवणा कदा तधा पुरिसवेदस्स वि कायव्वा। णवरि ओघपच्चएसु इत्थि-णवुंसयवेदपच्चया चेव सव्वगुणट्ठाणेसु अवणेदव्वा, सेसासेसपच्चयाणं तत्थ संभवादो। इत्थि-णवुंसयवेदाणं बंधो परोदओ, पुरिसवेदस्स सोदओ। उवघाद-परघादुस्सास-पत्तेय-सरीराणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदय-परोदओ बंधो। तित्थयरस्स परूवणा ओघतुल्ला। एवमण्णो वि जदि भेदो अत्थि सो संभालिय वत्तव्वो।

उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, नरकगतिमें अपर्याप्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें भी इनका बन्ध पाया जाता है। त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर और पंचेन्द्रियजातिका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण और विकलेन्द्रियोंमें इनका बन्ध पाया जाता है। सब प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी देव नहीं है, क्योंकि, उनमें नपुंसकवेदके उदयका अभाव है। एकेन्द्रिय, आताप और स्थावरके तिर्यग्गति व मनुष्यगतिक मिथ्यादृष्टि ही स्वामी हैं, देव नहीं हैं; क्योंकि, उनमें नपुंसकवेदके उदयका अभाव है। अन्य भी यदि भेद है तो उसको स्मरणकर कहना चाहिये।

जिस प्रकार स्त्रीवेदकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार पुरुषवेदकी भी करना चाहिये। विशेष इतना है कि ओघप्रत्ययोंमेंसे स्त्रीवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको ही सब गुणस्थानोंमें कम करना चाहिये, क्योंकि, शेष सब प्रत्ययोंकी वहां सम्भावना है। स्त्रीवेद और नपुंसकवेदका बन्ध परोदय होता है। पुरुषवेदका स्वोदय बन्ध होता है। उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। तीर्थंकर प्रकृतिकी प्ररूपणा ओघके समान है। इसी प्रकार अन्य भी यदि भेद है तो उसको स्मरण कर कहना चाहिये।

---

१ अप्रतौ ' एइंदिये अण्णो ' इति पाठः।

२ प्रतिषु ' सा संमरिय '; मप्रतौ ' सा संभालिय ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवगदवेदएसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १७८ ॥

सुगमं ।

अणियट्टिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवेसेसा अबंधा ॥ १७९ ॥

देसामासियसुत्तमेदं, बंधद्धाणं बंधविणट्ठाणं दोण्णं चेव परूवणादो । तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे । तं जधा— एदासिं सोलसण्हं पयडीणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, तहोवलंभादो । (एत्थुवउज्जंती गाहा—

> आगमचक्खू साहू इंदियचक्खू असेसजीवा जे ।
> देवा य ओहिचक्खू केवलचक्खू जिणा सव्वे ॥ २४ ॥)

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइय-जसकित्ति-उच्चागोदाणं सोदओ चेव

अपगतवेदियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १७८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनिवृत्तिकरणसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १७९ ॥

यह सूत्र देशामर्शक है, क्योंकि, वह बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान इन दोनोंका ही प्ररूपण करता है । इसीलिए इससे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— इन सोलह प्रकृतियोंका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, वैसा पाया जाता है । यहां उपयुक्त गाथा—

साधु आगम रूप चक्षुसे संयुक्त, तथा जितने सब जीव हैं वे इन्द्रिय-चक्षुके धारक होते हैं । अवधिज्ञान रूप चक्षुसे सहित देव, तथा केवलज्ञानरूप चक्षुसे युक्त सब जिन होते हैं ॥ २४ ॥

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पांच अन्तराय, यशकीर्ति और उच्च-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधो, एत्थ एदासिं धुवोदयत्तदंसणादो। णिरंतरो बंधो, एत्थ बंधुवरमाभावादो। पच्चया सुगमा, ओघम्मि परूविदत्तादो। अगइसंजुत्तो बंधो, अवगदवेदेसु चदुण्णं[1] गईणं बंधाभावादो। मणुसा चेव सामी, अण्णत्थ खवगुवसामगाणमभावादो। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं तिविहो बंधो, धुवत्ताभावादो। जसकित्ति-उच्चागोदाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ १८० ॥

सुगमं।

अणियट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा ! सजोगिकेवलि-अद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १८१ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा— पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सजोगि-

---

गोत्रका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इन प्रकृतियोंके ध्रुवोदयित्व देखा जाता है। बन्ध इनका निरन्तर होता है, क्योंकि, यहां बन्धविश्रामका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघमें उनकी प्ररूपणा की जा चुकी है। अगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अपगतवेदियोंमें चारों गतियोंके बन्धका अभाव है। मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें क्षपक और उपशामकोंका अभाव है। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है। यशकीर्ति और उच्चगोत्रका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवबन्धी हैं।

सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १८० ॥

यह सूत्र सुगम है।

अनिवृत्तिकरणसे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं। सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १८१ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है— पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सयोगकेवली और अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें क्रमसे

---

१ प्रतिषु 'चदुट्ठाणं' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अजोगिचरिमसमयम्मि बंधोदयवोच्छेददंसणादो । सोदय-परोदओ बंधो, परावत्तण्णुदयत्तादो[1] । णिरंतरो बंधो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । पच्चया सुगमं, ओघम्मि परूविदत्तादो । अगइसंजुत्तो बंधो, अवगदवेदेसु गइचउक्कस्स बंधाभावादो । मणुसा सामी, अण्णत्थ अवगयवेदाणमभावादो । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

कोधसंजलणस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ १८२ ॥

सुगमं ।

अणियट्टी उवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥१८३॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, बंधे वोच्छिण्णे संते उदयाणुवलंभादो । सोदय-परोदओ बंधो, उभयहा वि बंधविरोहाभावादो । णिरंतरो, धुवबंधित्तादो ।

उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, परिवर्तित होकर उसके प्रतिपक्षभूत असाता वेदनीयका उदय पाया जाता है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघमें उनकी प्ररूपणा की जा चुकी है । अगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अपगतवेदियोंमें चारों गतियोंके बन्धका अभाव है । मनुष्य स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें अपगतवेदियोंका अभाव है । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी प्रकृति है ।

संज्वलनक्रोधका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १८२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनिवृत्तिकरणगुणस्थानवर्ती उपशमक व क्षपक बन्धक हैं । बादर अनिवृत्तिकरणकालके संख्यात बहु भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १८३ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— संज्वलनक्रोधका बन्ध और उदय दोनों एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, बन्धके व्युच्छिन्न होनेपर फिर उदय पाया नहीं जाता । स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी बन्ध होनेका विरोध नहीं है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी है । अगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि,

---

१ काप्रतौ ' परावत्तणुदयत्तादो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अगइसंजुत्तो, एत्थ चउगइबंधाभावादो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो । मणुसा चेव सामी, अण्णत्थेदेसिमभावादो । बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि अद्धाणविरोहादो । अधवा अत्थि, पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अवगदवेदाणमणियट्टीणं संखेज्जाणमुवलंभादो अणियट्टिकालं संखेज्जाणि खंडाणि[1] करिय तत्थ बहुखंडेसु अइक्कंतेसु एगखंडावसेसे कोध-संजलणस्स बंधो वोच्छिण्णो । तिविहो बंधो, धुवबंधित्तादो ।

माण-मायासंजलणाणं[2] को बंधो को अबंधो ? ॥ १८४ ॥

सुगमं ।

अणियट्टी उवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए सेसे सेसे संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १८५ ॥

एदासिं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, विणट्ठबंधाणमुदयाणुवलंभादो । सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधुवलंभादो । णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । अवगयपच्चओ, ओघपच्चएहिंतो अविसिट्ठ-

---

यहां चारों गतियोंके बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे यहां कोई भेद नहीं है । मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें अपगतवेदियोंका अभाव है । बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है । अथवा बन्धाध्वान है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर अपगतवेदी अनिवृत्तिकरणोंके संख्यात पाये जानेसे अनिवृत्तिकरणकालके संख्यात खण्ड करके उनमें बहुत खण्डोंके वीत जाने और एक खण्डके शेष रहनेपर संज्वलनक्रोधका बन्ध व्युच्छिन्न होता है । तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी है ।

संज्वलनमान और मायाका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १८४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरणबादरकालके शेष शेष कालमें संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १८५ ॥

इन दोनों प्रकृतियोंका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, बन्धके नष्ट हो जानेपर इनका उदय नहीं पाया जाता । स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी बन्ध पाया जाता है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे

---

१ प्रतिषु ' बंधाणि ' इति पाठः । २ अ-आप्रत्योः ' मायसंजलणाणं ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चयत्तादो। अगइसंजुत्तो, एत्थ चउगइबंधाभावादो। मणुससामिओ[1], अण्णत्थवगदवेदाभावादो। बंधद्धाणवज्जिओ, दव्वट्ठियणयविसयम्मि सव्वसंगहे अद्धाणाणुववत्तीदो[2]। अधवा अद्धाणसमण्णिओ, अवलंबियपज्जवट्ठियणयत्तादो। कोधबंधवोच्छिण्णट्ठाणादो उवरिममद्धाणं संखेज्जखंडाणि काऊण बहुखंडेसु अइक्कंतेसु एयखंडावसेसे माणबंधो वोच्छिज्जदि। पुणो सेसमेयं खंडं संखेज्जाणि खंडाणि करिय तत्थ बहुखंडेसु अइक्कंतेसु एयखंडावसेसे मायबंधो वोच्छिज्जदि। एदं कुदो वगम्मदे ? सेसे सेसे संखेज्जाभागं गंतूणे त्ति जिणवयणादो वगम्मदे। तिविहो, धुवत्ताभावादो।

लोभसंजलणस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ १८६ ॥

सुगमं।

ध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं। प्रत्यय अवगत हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे यहां कोई विशेषता नहीं है। अगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहां चारों गतियोंके बन्धका अभाव है। मनुष्य स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें अपगतवेदियोंका अभाव है। बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयके विषयभूत सर्व संग्रहके होनेपर अध्वान बनता नहीं है। अथवा पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेसे अध्वानसे सहित बन्ध होता है। क्रोधके बन्धव्युच्छित्तिस्थानसे ऊपरके कालके संख्यात खण्ड करके बहुत खण्डोंको बिताकर एक खण्डके शेष रहनेपर मानका बन्ध व्युच्छिन्न होता है। तत्पश्चात् शेष एक खण्डके संख्यात खण्ड करके उनमें बहुत खण्डोंको बिताकर एक खण्डके शेष रहनेपर मायाका बन्ध व्युच्छिन्न होता है।

शंका—यह कहांसे जाना जाता है ?

समाधान—'शेष शेषमें संख्यात बहुभाग जाकर' इस जिनवचनसे उक्त बन्धव्युच्छित्तिक्रम जाना जाता है।

तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है।

संज्वलनलोभका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १८६ ॥

यह सूत्र सुगम है।

---

१ प्रतिषु 'मणुसासामिओ' इति पाठः।　　२ प्रतिषु 'अप्पाणुववत्तीदो' इति पाठः।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

अणियट्टी उवसमा खवा बंधा। अणियट्टिबादरद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १८७ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— बंधो पुव्वमुदओ पच्छा वोच्छिज्जदि, अणियट्टि-सुहुम-सांपराइयचरिमसमयम्मि बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधुवलंभादो। णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो। अवगयपच्चओ, ओघपच्चएहिंतो अविसिट्ठपच्चयत्तादो[1]। अगइ-संजुत्तो, चउगइबंधाभावादो। मणुससामिओ[2], अण्णत्थ खवगुवसामगाणमभावादो। बंधद्धाणं णत्थि, सुत्ते अणुवदिट्ठत्तादो। किमट्ठमणुवदिट्ठं ? दव्वट्ठियावलंबणादो। तिविहो बंधो, धुव-बंधित्तादो।

कसायाणुवादेण कोधकसाईसु पंचणाणावरणीय- [चउदंसणा-वरणीय-सादावेदणीय-] चदुसंजलण-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १८८ ॥

अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक बन्धक हैं। अनिवृत्तिकरणबादरकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १८७ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें क्रमसे बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों ही प्रकारसे बन्ध पाया जाता है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उक्त प्रकृति ध्रुवबन्धी है। ओघप्रत्ययोंसे यहां कोई विशेषता न होनेसे उक्त प्रकृतिके बन्धके प्रत्यय अवगत हैं। अगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहां चारों गतियोंके बन्धका अभाव है। मनुष्य स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें क्षपक व उपशामकोंका अभाव है। बन्धाध्वान है नहीं, क्योंकि, सूत्रमें उसका उपदेश नहीं है।

शंका — सूत्रमें बन्धाध्वानका उपदेश क्यों नहीं किया गया है ?

समाधान—द्रव्यार्थिकनयका अवलम्बन करनेसे सूत्रमें उसका उपदेश नहीं किया गया है।

तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी प्रकृति है।

कषायमार्गणानुसार क्रोधकषायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, [चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय], चार संज्वलन, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १८८ ॥

---

१ प्रतिषु 'अवगयपच्चओव' इति पाठः। २ प्रतिषु 'मणुससामिओ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति उवसमा खवा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १८९ ॥

एदासिं पयडीणं बंधो उदयादो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति परिक्खा णत्थि, उदयवोच्छेदाभावादो तिण्णं कसायाणं णियमेण उदयाभावादो च । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-कोहसंजलण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । सादावेदणीयस्स सव्वत्थ सोदय-परोदओ अद्धुवोदयत्तादो । जसकित्तीए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदो त्ति सोदय-परोदओ बंधो । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो । तिण्णं संजलणाणं परोदएण बंधो, कोहोदयप्पणादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-चउसंजलण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । सादावेदणीयस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो बंधो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । एवं जसकित्तीए वत्तव्वं । उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठि-

---

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके उपशमक और क्षपक तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक कोई नहीं हैं ॥ १८९ ॥

इन प्रकृतियोंका बन्ध उदयसे पूर्व या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, इस प्रकारकी परीक्षा यहां नहीं है, क्योंकि, इनके उदयव्युच्छेदका अभाव है, तथा मानादिक तीन कषायोंका नियमसे यहां उदय भी नहीं है। पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, संज्वलन क्रोध और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी हैं। सातावेदनीयका सर्वत्र स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवोदयी है। यशकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक, तथा उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत तक स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। उपरिम गुणस्थानोंमें इनका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है । तीन संज्वलन कषायोंका परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, यहां क्रोधकी प्रधानता है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, चार संज्वलन और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी हैं। सातावेदनीयका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत गुणस्थान तक सान्तर बन्ध होता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है। इसी प्रकार यशकीर्तिके भी कहना चाहिये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो। कधं णिरंतरो? असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु सुहुलेस्सियसंखेज्जवासाउएसु च णिरतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो।

मिच्छाइट्ठिम्हि तेदालीसुत्तरपच्चया, सासणे अट्ठत्तीस, बारसकसायाणमभावादो। सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु जहाकमेण चोत्तीस-सत्तत्तीसपच्चया, णवकसायपच्चया-भावादो। संजदासंजदेसु एक्कत्तीसपच्चया, छक्कसायाभावादो। पमत्तसंजदेसु एक्कवीस-पच्चया, कसायतियाभावादो। अप्पमत्त-अपुव्वकरणेसु एक्कूणवीसपच्चया, कसायतिया-भावादो। उवरि तेरसआदिं कादूण एगूणादिकमेण पच्चया जाणिय वत्तव्वा। सेसं सुगमं।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-चउसंजलण-पंचंतराइयाणि मिच्छाइट्ठी चउगइ-संजुत्तं, सासणसम्माइट्ठी तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिणो देव-मणुसगइ-संजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तमगइसंजुत्तं च बंधंति। सादावेदणीय-जसकित्तीओ मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणो तिगइसंजुत्तं, णिरयगईए सह बंधाभावादो। उवरि णाणावरणभंगो। उच्चा-

---

उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है। निरन्तर बन्ध कैसे होता है? क्योंकि, असंख्यातवर्षायुष्क तिर्यंच और मनुष्योंमें तथा शुभ लेश्यावाले संख्यातवर्षायुष्कोंमें भी उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है।

मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें तेतालीस और सासादन गुणस्थानमें अड़तीस उत्तर प्रत्यय हैं, क्योंकि, यहां बारह कषायोंका अभाव है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें यथाक्रमसे चौंतीस और सैंतीस उत्तर प्रत्यय हैं, क्योंकि, यहां नौ कषाय प्रत्ययोंका अभाव है। संयतासंयतोंमें इकतीस उत्तर प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनमें छह कषायोंका अभाव है। प्रमत्तसंयतोंमें इक्कीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनमें तीन कषायोंका अभाव है। अप्रमत्त और अपूर्वकरण संयतोंमें उन्नीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, यहां भी तीन कषायोंका अभाव है। ऊपर तेरहको आदि लेकर एक कम दो कम इत्यादि क्रमसे प्रत्ययोंको जानकर कहना चाहिये। शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, चार संज्वलन और पांच अन्तरायको मिथ्यादृष्टि चार गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त, सम्य-ग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त और गतिसंयोगसे रहित बांधते हैं। सातावेदनीय और यशकीर्तिको मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, नरकगतिके साथ इनके बन्धका अभाव है। उपरिम गुणस्थानोंमें ज्ञानावरणके समान प्ररूपणा है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोदं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, अण्णगईहि बंधविरोहादो । उवरिमा देवगइसंजुत्तमणियट्टिणो अगइसंजुत्तं बंधंति ।

चउगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी । दुगइसंजदासंजदा[1] । अवसेसा मणुसा, अण्णत्थ तेसिमणुवलंभादो । बंधद्धाणं सुगमं । बंधविणासो णत्थि, बंधुवलंभादो । धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो । उवरिमगुणेसु तिविहो, धुवत्ताभावादो । अवसेसाणं पयडीणं सादि-अद्धुवो[2], अद्धुवबंधित्तादो ।

बेट्ठाणी ओघं ॥ १९० ॥

थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-इत्थिवेद–तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण–तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि–उज्जोव अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज–णीचागोदाणं बेट्ठाणियसण्णा, दोसु गुणट्ठाणेसु चिट्ठंति त्ति उप्पत्तीदो । एदासिं परूवणा

उच्चगोत्रको मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उसके बन्धका विरोध है । उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त, तथा अनिवृत्तिकरणगुणस्थानवर्ती अगति-संयुक्त बांधते हैं ।

चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं । शेष गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें वे गुणस्थान पाये नहीं जाते । बन्धाध्वान सुगम है । बन्धविनाश है नहीं, क्योंकि, उनका बन्ध पाया जाता है । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १९० ॥

स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इन प्रकृतियोंकी द्विस्थानिक संज्ञा है, क्योंकि, 'जो दो गुणस्थानोंमें रहें वे द्विस्थानिक हैं' ऐसी व्युत्पत्ति है । इनकी प्ररूपणा ओघके समान है, क्योंकि,

---

१ प्रतिषु ' दुगइसंजदा ' इति पाठः । २ प्रतिषु ' सादि ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओघतुल्ला, विसेसाभावादो । तं जहा— अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, सासणम्मि तदुभयाभावदंसणादो । थीणगिद्धितियस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदेसु कमेण बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-उज्जोव-णीचागोदाणमेवं चेव । णवरि संजदासंजदम्मि उदयवोच्छेदो । एवमित्थिवेदस्स वि । णवरि अणियट्टिम्हि तदुच्छेदो । चउसंठाण-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सराणमेवं चेव । णवरि एत्थ उदयवोच्छेदो णत्थि । चउसंघडणाणमेवं चेव । णवरि अप्पमत्तसंजदेसु बिदिय-तदिय-संघडणाणमुदयवोच्छेदो । चउत्थ-पंचमाणं णत्थि उदयवोच्छेदो, उवसंतकसाएसु तदुच्छेद-दंसणादो । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-दुभग-अणादेज्जाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु कमेण बंधोदयवोच्छेददंसणादो ।

अणंताणुबंधिकोधस्स सोदओ बंधो । तिण्हं कसायाणं परोदओ, तेसिमेत्थुदयाभावादो । अवसेसपयडीणं सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधविरोहाभावादो । इत्थिवेद-चउसंठाण-चउ-

---

ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है । वह इस प्रकार है— अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । स्त्यानगृद्धित्रयका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत गुणस्थानोंमें क्रमसे बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, उद्योत और नीचगोत्रकी भी प्ररूपणा इसी प्रकार ही है । विशेषता केवल इतनी है कि संयतासंयत गुणस्थानमें उनका उदयव्युच्छेद होता है । इसी प्रकार स्त्रीवेदकी भी प्ररूपणा है । विशेष इतना है कि अनिवृत्तिकरण गुण-स्थानमें उसके उदयका व्युच्छेद होता है । चार संस्थान, अप्रशस्तविहायोगति और दुस्वरकी प्ररूपणा भी इसी प्रकार ही है । विशेष इतना है कि यहां उनका उदयव्युच्छेद नहीं है । चार संहननोंकी प्ररूपणा भी इसी प्रकार ही है । विशेष इतना है कि अप्रमत्तसंयतोंमें द्वितीय और तृतीय संहननका उदयव्युच्छेद होता है । चतुर्थ और पंचम संहननका उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, उपशान्तकषायोंमें उनके उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । तिर्यग्गति-प्रायोग्यानुपूर्वी, दुर्भग और अनादेयका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है ।

अनन्तानुबन्धिक्रोधका स्वोदय बन्ध होता है । तीन कषायोंका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां उनके उदयका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी उनके बन्धका कोई विरोध नहीं है ।

स्त्रीवेद, चार संस्थान, चार संहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर,

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

संघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-णीचागोदाणं दोसु वि गुणट्ठाणेसु सांतर-णिरंतरो बंधो, तेउ-वाउक्काइएसु सत्तमपुढविणेरइएसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। पच्चया सुगमा।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोवाणि तिरिक्खगइसंजुत्तं बंधंति। इत्थिवेदं तिगइसंजुत्तं, णिरयगईए बंधाभावादो। चउसंठाण-चउसंघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, अण्णगईहि बंधाभावादो। अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि तिगइसंजुत्तं बंधंति, देवगईए बंधाभावादो। सासणो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधइ, तस्सण्णगईहि विरोहादो। चउगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी। उवरि सुगमं, बहुसो परूविदत्तादो।

जाव पच्चक्खाणावरणीयमोघं ॥ १९१ ॥

बेट्ठाणदंडयं परूविय पच्छा जेणेदं सुत्तं परूविदं तेण णिद्दादंडयमादिं कादूणे त्ति अत्थावत्तीदो अवगम्मदे। णिद्दा-असादेगट्ठाण-अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणदंडयाणं परूवणाए

और अनादेयका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम देखा जाता है। तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका दोनों ही गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तेजकायिक व वायुकायिक तथा सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धविश्रामका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं।

तिर्यगायु, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं। स्त्रीवेदको तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, नरकगतिके साथ उसके बन्धका अभाव है। चार संस्थान और चार संहननोंको तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उनके बन्धका अभाव है। अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रको तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, देवगतिके साथ इनके बन्धका अभाव है। सासादनसम्यग्दृष्टि इन्हें तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधता है, क्योंकि, उसके अन्य गतियोंके साथ इनके बन्धका विरोध है। चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। उपरिम प्ररूपणा सुगम है, क्योंकि, वह बहुत वार की जा चुकी है।

प्रत्याख्यानावरणीय तक सब प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १९१ ॥

द्विस्थानदण्डककी प्ररूपणा करके पीछे चूंकि इस सूत्रकी प्ररूपणा की गई है अत एव 'निद्रादण्डकको आदि करके', यह अर्थापत्तिसे जाना जाता है। निद्रा, असातावेदनीय, एकस्थानिक, अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान दण्डकोंकी प्ररूपणा ओघके समान है। उसको

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

ओघभंगो । सो वि चिंतिय एत्थ वत्तव्वो ।

पुरिसवेदे ओघं ॥ १९२ ॥

एसो पुरिसवेदणिद्देसो जेण देसामासियो तेण पुरिसवेददंडय-माणदंडय-लोहदंडयाणं गहणं । जहा एदेसिं[1] दंडयाणमोघम्मि परूवणा कदा तहा एत्थ वि कायव्वा । णवरि पच्चयविसेसो जाणिय वत्तव्वो[2] ।

हस्स-रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ॥ १९३ ॥

हस्स-रदिसुत्तमादिं कादूण जाव तित्थयरसुत्तं ति ताव एदेसिं सुत्ताणमोघपरूवण-मवहारिय परूवेदव्वं ।

माणकसाईसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-तिण्णिसंजलण-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १९४ ॥

सुगमं ।

भी विचार कर यहां कहना चाहिये ।

पुरुषवेदकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १९२ ॥

यह पुरुषवेद पदका निर्देश चूंकि देशामर्शक है, अतः इससे पुरुषवेददण्डक, मानदण्डक और लोभदण्डकका ग्रहण करना चाहिये । जिस प्रकार इन दण्डकोंकी ओघमें प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार यहां भी करना चाहिये । विशेष इतना है कि प्रत्ययभेद जानकर कहना चाहिये ।

हास्य व रतिसे लेकर तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ १९३ ॥

हास्य-रति सूत्रको आदि करके तीर्थंकर सूत्र तक इन सूत्रोंकी ओघप्ररूपणाका निश्चय कर प्ररूपणा करना चाहिये ।

मानकषायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, तीन संज्वलन, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १९४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

---

१ प्रतिषु ' एदासिं ' इति पाठः । २ अ-आप्रत्योः ' जाणिदव्वो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि उवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १९५ ॥

कोधसंजलणमेत्थ एदाहि सह किण्ण परूविदं ? ण, तस्स माणसंजलणबंधादो पुव्वमेव वोच्छिण्णबंधस्स माणादीहि बंधद्धाणं पडि पच्चासत्तीए अभावादो । एदस्स सुत्तस्स परूवणाए कोधभंगो । णवरि माणस्स सोदओ, अण्णेसिं कसायाणं परोदओ बंधो । पच्चएसु माणकसायं मोत्तूण सेसकसाया अवणेदव्वा । सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

बेट्ठाणि जाव पुरिसवेद-कोधसंजलणाणमोघं ॥ १९६ ॥

बेट्ठाणि त्ति वुत्ते बेट्ठाणिय-णिद्दा-असाद[1]-मिच्छत्त-अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणदंडया घेत्तव्वा, देसामासियत्तादो । पुरिसवेद-कोधसंजलणे त्ति वुत्ते तस्स एक्कस्सेव सुत्तस्स गहणं कायव्वं । एदेसिं सुत्ताणमोघपरूवणमवहारिय वत्तव्वं ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरणगुणस्थानवर्ती उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक कोई नहीं हैं ॥ १९५ ॥

शंका—यहां इन प्रकृतियोंके साथ संज्वलन क्रोधकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि संज्वलनमानके बन्धसे उसका बन्ध पूर्वमें ही व्युच्छिन्न हो जाता है, अत एव मानादिकोंके साथ बन्धाध्वानके प्रति उसकी प्रत्यासत्तिका अभाव है । इसी कारण उसकी प्ररूपणा यहां नहीं की गई है ।

इस सूत्रकी प्ररूपणा क्रोधके समान है । विशेष इतना है कि मानका स्वोदय और अन्य कषायोंका परोदय बन्ध होता है । प्रत्ययोंमें मानकषायको छोड़कर शेष कषायोंको कम करना चाहिये । शेष प्ररूपणा जानकर कहना चाहिये ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंको लेकर पुरुषवेद और संज्वलनक्रोध तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ १९६ ॥

' द्विस्थानिक ' ऐसा कहनेपर द्विस्थानिक, निद्रा, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, अप्रत्याख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण दण्डकोंका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, यह देशामर्शक पद है । पुरुषवेद व संज्वलनक्रोध, ऐसा कहनेपर उस एक ही सूत्रका ग्रहण करना चाहिये । इन सूत्रोंकी ओघप्ररूपणाका निश्चय कर व्याख्यान करना चाहिये ।

---

१ प्रतिषु ' सादअसाद ' इति पाठः ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

हस्स-रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ॥ १९७ ॥

सुगममेदं, बहुसो परूविदत्थत्तादो ।

मायकसाईसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-दोण्णिसंजलण-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १९८ ॥

सुगममेदं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १९९ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं ।

बेट्ठाणि जाव माणसंजलणे त्ति ओघं ॥ २०० ॥

बेट्ठाणि-णिद्दासादे[1]गट्ठाण-अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-पुरिस-कोध-माणसुत्ताणमोघपरूवणमवहारिय परूवेदव्वं ।

हास्य व रतिसे लेकर तीर्थंकर तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ १९७ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, इसके अर्थकी बहुत बार प्ररूपणा की जा चुकी है ।

मायाकषायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, दो संज्वलन, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १९८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक कोई नहीं हैं ॥ १९९ ॥

यह भी सूत्र सुगम है ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंको लेकर संज्वलनमान तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ २०० ॥

द्विस्थानिक, निद्रा, असातावेदनीय, एकस्थानिक, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, पुरुषवेद, क्रोध और मान सूत्रोंकी ओघप्ररूपणाका निश्चय कर प्ररूपणा करना चाहिये ।

---

१ प्रतिषु ' सादासादेग- ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हस्स-रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ॥ २०१ ॥

सुगममेदं ।

लोभकसाईसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥२०२॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २०३ ॥

एदं सुगमं ।

सेसं जाव तित्थयरे त्ति ओघं ॥ २०४ ॥

सुगमं ।

अकसाईसु सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥२०५॥

सुगमं ।

हास्य व रतिसे लेकर तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ २०१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

लोभकषायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २०२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक कोई नहीं हैं ॥ २०३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

तीर्थंकर प्रकृति तक शेष प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २०४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अकषायी जीवोंमें सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥२०५॥

यह सूत्र सुगम है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था खीणकसायवीदरागछदुमत्था सजोगिकेवली बंधा । सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २०६ ॥

एदस्स अत्थो । तं जहा — सादावेदणीयस्स[1] पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, सजोगि-अजोगिकेवलीसु कमेण बंधोदयवोच्छेददंसणादो । सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधाविरोहादो[2] । णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । उवसंत-खीणकसाएसु णव जोगपच्चया । सजोगीसु सत्त । अगइसंजुत्तो बंधो । मणुसा सामी । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणि-विभंगणाणीसु पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-अट्ठणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुसाउ-देवाउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-पंचसंठाण-ओरालिय-

उपशान्तकषाय वीतरागछद्मस्थ, क्षीणकषाय वीतरागछद्मस्थ और सयोगकेवली बन्धक हैं । सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २०६ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है — सातावेदनीयका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सयोगकेवली और अयोगकेवली गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । उसका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी उसके बन्धका विरोध नहीं है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिका यहां अभाव है । उपशान्तकषाय और क्षीणकषाय जीवोंमें नौ योग प्रत्यय तथा सयोगी जिनोंमें सात हैं । अगतिसंयुक्त बन्ध होता है । मनुष्य स्वामी हैं । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी है ।

ज्ञानमार्गणाके अनुसार मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी और विभंगज्ञानी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, आठ नोकषाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, देवायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, पांच संस्थान, औदारिक व वैक्रियिक शरीरांगोपांग, पांच

१ अप्रतौ ' सादासादवेदणीयस्स ', आप्रतौ ' सादासादयस्स ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' बंधविरोहादो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेउव्वियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-दोविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २०७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २०८ ॥

एत्थ उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिज्जदि त्ति विचारो णत्थि, एदासिं पयडीणं बंधोदयवोच्छेदाभावादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । देवाउ-देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदओ बंधो,

संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गति, मनुष्यगति व देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच व ऊंच गोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २०७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक कोई नहीं हैं ॥ २०८ ॥

यहां उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, इन प्रकृतियोंके बन्ध व उदयके व्युच्छेदका यहां अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । देवायु, देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एदासिं बंधोदयाणमक्कमेण वुत्तिविरोहादो । पंचदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-अट्ठणोकसाय-तिरिक्ख-मणुसाउ-तिरिक्ख-मणुसगइ-ओरालियसरीर-पंचसंठाण-ओरालियसरीर-अंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्ख-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-दोविहायगइ-पत्तेयसरीर-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णीचागोदाणं सोदय-परोदओ बंधो, दोहिं[1] वि पयारेहि बंधविरोहाभावादो । पंचिंदिय-तस-बादर-पज्जत्ताणं मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठीसु सोदय-परोदओ बंधो। सासणसम्माइट्ठीसु सोदओ चेव, एदासिं पडिवक्खपयडीणं तत्थुदयाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुस-देवाउ-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमइयबंधाणुवलंभादो । सादासाद-पंचणोकसाय-पंचसंठाण-पंचसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-थिराथिर-सुभासुभ-दुभग-दुस्सर[2]-अणादेज्ज-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एग-

प्रकृतियोंके बन्ध व उदयके एक साथ रहनेका विरोध है । पांच दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, आठ नोकषाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, पांच संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, पांच संहनन, तिर्यग्गति व मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, दो विहायोगतियां, प्रत्येकशरीर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और नीचगोत्रका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों ही प्रकारोंसे उनके बन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं है । पंचेन्द्रियजाति, त्रस, बादर और पर्याप्तका मति व श्रुत अज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वहां उदयाभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, मनुष्यायु, देवायु, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इनका एक समयिक बन्ध नहीं पाया जाता । साता व असाता वेदनीय, पांच नोकषाय, पांच संस्थान, पांच संहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और यशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी इनका बन्धविश्राम देखा

१ प्रतिषु ' हि दोहि ' इति पाठः ।　　२ अप्रतौ ' सुस्सर ' इति पाठः ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

समएण वि एदासिं बंधुवरमदंसणादो । पुरिसवेदस्स सांतर-णिरंतरो । कुदो णिरंतरो ? पम्म-सुक्कलेस्सियतिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु पुरिसवेदस्स णिरंतरबंधुवलंभादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सांतर-णिरंतरो बंधो । होदु सांतरो, कुदो णिरंतरो ? ण, सुक्कलेस्सियमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिदेवाणं णिरंतरबंधुवलंभादो । ओरालियसरीरअंगोवंगाणं सांतर-णिरंतरो । कधं णिरंतरो ? ण, णेरइएसु सणक्कुमारादिदेवेसु च णिरंतरबंधुवलंभादो । देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो । कधं णिरंतरो ? ण, असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सियसंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु च णिरंतरबंधुवलंभादो । परघा-

जाता है । पुरुषवेदका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे सम्भव है ?

समाधान—क्योंकि, पद्म और शुक्ल लेश्यावाले तिर्यंच व मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें पुरुषवेदका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका—इनका सान्तर बन्ध भले ही हो, पर निरन्तर बन्ध कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

औदारिकशरीर और औदारिकशरीरांगोपांगका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, नारकियों तथा सनत्कुमारादि देवोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्रका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है । निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? नहीं, क्योंकि, असंख्यात वर्षायुष्क तिर्यंच व मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टियों तथा तेज, पद्म व शुक्ल लेश्यावाले संख्यातवर्षायुष्क तिर्यंच व मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध

१ अप्रतौ ' वासाउअत्थितिरिक्ख ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो सांतर-णिरंतरो । कधं णिरंतरो ? देव-णेरइएसु असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु च णिरंतरबंधुवलंभादो । सासणसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, तत्थ पडिवक्खपयडिबंधाभावादो परघादुस्सासबंधविरोहिअपज्जत्तस्स बंधाभावादो च । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-णीचागोदाणं पि बंधो सांतर-णिरंतरो । कधं णिरंतरो ? ण, तेउ-वाउकाइयमिच्छाइट्ठीसु सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु च णिरंतर-बंधुवलंभादो ।

पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो भेदाभावादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्ख-गइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोवाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बंधो । मणुसाउ-मणुसगइ-मणुसगइ-पाओग्गाणुपुव्वीणं मणुगइसंजुत्तो बंधो । देवाउ- [देवगइ-] देवगइपाओग्गाणु-पुव्वीणं देवगइसंजुत्तो । ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंठाण-पंचसंघडणाणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो, अण्णगईहि बंधविरोहादो । णवरि समचउरससंठाणस्स तिगइ-संजुत्तो, णिरयगईए अभावादो । वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठिम्हि देव-गइ-णिरयगइसंजुत्तो । सासणे देवगइसंजुत्तो । सादावेदणीय-इत्थि-पुरिस-हस्स-रदि-पसत्थविहाय-

पाया जाता है । परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है । निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? क्योंकि, देव-नारकियों और असंख्यातवर्षायुष्क तिर्यंच व मनुष्योंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है, तथा परघात और उच्छ्वासके बन्धके विरोधी अपर्याप्तके भी बन्धका अभाव है । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका भी बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है । निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? नहीं, क्योंकि, तेज व वायु कायिक मिथ्यादृष्टियों तथा सप्तम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे यहां कोई भेद नहीं है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतका तिर्यग्गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । देवायु, [देवगति] और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, पांच संस्थान और पांच संहननका तिर्यंच व मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उनके बन्धका विरोध है । विशेष इतना है कि समचतुरस्रसंस्थानका तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, नरकगतिके साथ उसके बन्धका अभाव है । वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिक-शरीरांगोपांगका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें देवगति व नरकगतिसे संयुक्त, तथा सासादन गुणस्थानमें देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । सातावेदनीय, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, हास्य,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गइ-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं तिगइसंजुत्तो बंधो, णिरयगईए अभावादो। अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं तिगइसंजुत्तो बंधो, देवगईए अभावादो। णवरि सासणे तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो। उच्चागोदस्स देव-मणुसगइसंजुत्तो, अण्णगईहि विरोहादो। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असादावेदणीय-सोलसकसाय-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुह-अजसकित्ति-णिमिण पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउगइसंजुत्तो बंधो। सासणे तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो।

देवाउ-देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं बंधस्स तिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी। अवसेसाणं चउगइया। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति सुत्तुद्दिट्ठत्तादो। धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो। सासणे तिविहो, धुवत्ताभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो। एवमेसा मदि-सुदअण्णाणीणं परूवणा कदा।

....

गति, प्रशस्तविहायोगति, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, और यशकीर्तिका तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, नरकगतिके साथ इनके बन्धका अभाव है। अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, देवगतिके साथ उसके बन्धका अभाव है। विशेषता इतनी है कि सासादन गुणस्थानमें तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। उच्चगोत्रका देवगति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उसके बन्धका विरोध है। पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, असातावेदनीय, सोलह कषाय, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ, अयशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तरायका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है। सासादन गुणस्थानमें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, नरकगतिके साथ इस गुणस्थानमें उनके बन्धका अभाव है।

देवायु, देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके बन्धके तिर्यंच व मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंके बन्धके चारों गतियोंके जीव स्वामी हैं। बन्धाध्वान सुगम है। बन्धव्युच्छेद है नहीं, क्योंकि, वह 'अबन्धक नहीं हैं' इस प्रकार सूत्रोक्त ही है। ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका होता है। सासादन गुणस्थानमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं। इस प्रकार यह मति-श्रुत अज्ञानियोंकी प्ररूपणा की गई है।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

विभंगणाणीणं पि एवं चेव वत्तव्वं, विसेसाभावादो। णवरि उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं सोदओ बंधो, अपज्जत्तकाले विभंगणाणाभावादो। तस-बादर-पज्जत्ताणं मिच्छाइट्ठिम्हि सोदओ बंधो, थावर-सुहुम-अपज्जत्तएसु विभंगण्णाणाभावादो। तिण्णमाणुपुव्वीणं बंधो परोदओ, अपज्जत्तकाले विभंगणाणाभावादो। पच्चएसु[1] ओरालिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेदव्वा, विभंगणाणस्स अपज्जत्तकालेण सह विरोहादो। अण्णो वि जइ अत्थि भेदो[2] सो संभालिय वत्तव्वो।

एक्कट्ठाणी ओघं ॥ २०९ ॥

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-णिरयाणुपुव्वी-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणमेक्कट्ठाणिसण्णा, एक्कम्हि चेव मिच्छाइट्ठिगुणट्ठाणे[3] बंधसरूवेण अवट्ठाणादो। एदासिं परूवणा ओघतुल्ला। णवरि विभंगणाणीसु एइंदिय-बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-

---

विभंगज्ञानियोंके भी इसी प्रकार कहना चाहिये, क्योंकि, मति-श्रुत अज्ञानियोंसे इनके कोई विशेषता नहीं है। भेद केवल इतना है कि उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीर, इनका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें विभंगज्ञानका अभाव है। त्रस, बादर और पर्याप्तका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्तक जीवोंमें विभंगज्ञानका अभाव है। तीन आनुपूर्वी नामकर्मोंका बन्ध परोदय होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें विभंगज्ञानका अभाव है। प्रत्ययोंमें औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, विभंगज्ञानका अपर्याप्तकालके साथ विरोध है। और भी यदि कोई भेद है तो उसको स्मरणकर कहना चाहिये।

एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २०९॥

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, नारकायु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, नारकानुपूर्वी, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इनकी एकस्थानिक संज्ञा है, क्योंकि, एक ही मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें इनका बन्ध स्वरूपसे अवस्थान है। इनकी प्ररूपणा ओघके समान है। विशेषता यह है कि विभंगज्ञानियोंमें एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय

---

१ अ-आप्रत्योः ' पंचसु एसु ', काप्रतौ ' एसु पंचसु ' इति पाठः।

२ अप्रतौ ' इत्थि सेदो ', आ-काप्रत्योः ' इत्थि वेदो ' इति पाठः।

३ प्रतिषु ' मिच्छाइट्ठीसु गुणट्ठाणे ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुहुम-अपज्जत्त-साहारण[1]-णिरयाणुपुव्वीणं परोदओ बंधो, एदेसु विभंगणाणीणमभावादो। सेसं सुगमं।

आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणीसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो? ॥ २१० ॥

एदं[2] सुगमं।

असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा। सुहुमसांपराइयअद्धाए[3] चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २११ ॥

एदासिमुदयादो बंधो पुव्वं वोच्छिण्णो, बंधे वोच्छिण्णे संते वि पच्छा उदयदंसणादो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो। जसकित्तीए असंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदय-परोदओ, पडिवक्खुदयदंसणादो। उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो।

जाति, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण और नारकानुपूर्वीका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनमें विभंगज्ञानी जीवोंका अभाव है। शेष प्ररूपणा सुगम है।

आभिनिबोधिक, श्रुत और अवधि ज्ञानी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है? ॥ २१० ॥

यह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं। सूक्ष्मसाम्परायिककालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २११ ॥

इन प्रकृतियोंका बन्ध उदयसे पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, बन्धके व्युच्छिन्न हो जानेपर भी पीछे इनका उदय देखा जाता है। पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है। यशकीर्तिका असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय देखा जाता है। ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है।

---

१ प्रतिषु ' साहारणा ' इति पाठः। २ प्रतिषु ' सेसं ' इति पाठः।

३ प्रतिषु ' जाव सुहुमसांपराइयअद्धाए ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उच्चागोदस्स असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेसु सोदय-परोदओ, पडिवक्खुदयदंसणादो। उवरि सोदओ चेव।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ बंधुवरमाभावादो। असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो ताव जसकित्तीए बंधो सांतरो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। पच्चया सुगमा। असंजदसम्मादिट्ठीणं देव-मणुसगइसंजुत्तो। उवरिमेसु देवगइसंजुत्तो। चदुगइअसंजदसम्मादिट्ठी, दुगइ-संजदासंजदा सामी। उवरिमा मणुसा चेव। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। धुव-बंधीणं तिविहो बंधो, धुवत्ताभावादो। अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

णिद्दा पयला य ओघं ॥ २१२ ॥

णवरि 'असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि' जाव भणिदव्वं[1]। ओघम्मि 'मिच्छाइट्ठिप्पहुडि' त्ति वुत्तं[2]; एत्थ पुण असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि त्ति वत्तव्वं, सण्णाणस्स हेट्ठिमगुणट्ठाणेसु अभावादो।

उच्चगोत्रका असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय देखा जाता है। ऊपर उसका स्वोदय ही बन्ध होता है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनके बन्धविश्रामका अभाव है। असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक यशकीर्तिका बन्ध सान्तर होता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं। असंयतसम्यग्दृष्टियोंके देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है। उपरिम जीवोंके देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि और दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं। उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं। ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके ध्रुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

निद्रा और प्रचलाकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २१२ ॥

विशेषता केवल यह है कि 'असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर' कहना चाहिये। ओघमें 'मिथ्यादृष्टिसे लेकर' ऐसा कहा गया है, परंतु यहां 'असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर' कहना चाहिये, क्योंकि, अधस्तन गुणस्थानोंमें सम्यग्ज्ञानका अभाव है। इतना ही यहां

१ अ-काप्रत्योः 'भाणिदव्वं' इति पाठः। २ प्रतिषु 'पुव्वं' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एत्तिओ चेव विसेसो, णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि ।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ २१३ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २१४ ॥

सादावेदणीयस्स बंधो उदयादो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, एत्थ बंधोदयाणं वोच्छेदाभावादो । सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो, असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधो सांतरो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । पच्चया सुगमा । असंजदसम्मादिट्ठी देव-मणुसगइसंजुत्तं; उवरिमा देवगइसंजुत्तमगइसंजुत्तं च बंधंति, साहावियादो । चउगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो, दुगइसंजदासंजदा सामी । उवरि मणुसा चेव । बंधद्धाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति सुत्तुद्दिट्ठत्तादो । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

विशेष है, अन्यत्र कहीं भी और कुछ विशेषता नहीं है ।

सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २१३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २१४ ॥

सातावेदनीयका बन्ध उदयसे पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, यहां उसके बन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव है । स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवोदयी है । असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक उसका बन्ध सान्तर होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि जीव देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बांधते हैं; उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त और अगतिसंयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि और दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, वह 'अबन्धक नहीं हैं' इस प्रकार सूत्रमें ही निर्दिष्ट है । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि ,वह अध्रुवबन्धी है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेसमोघं जाव तित्थयरे त्ति । णवरि असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि त्ति भाणिदव्वं ॥ २१५ ॥

एदस्स अत्थो जदि वि सुगमो तो वि सण्णाणपक्खवाएणाक्खित्तचित्तो दुम्मेहजणाणुग्गहट्ठं च पुणरवि परूवेमि — असादावेदणीयस्स पुव्वं बंधो वोच्छिण्णो । उदयवोच्छेदो णत्थि, केवलणाणीसु वि तदुदयदंसणादो । एवमथिरासुहाणं पि वत्तव्वं । अरदि-सोगाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, पमत्तापुव्वेसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । अजसकित्तीए पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिण्णो, पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । असादावेदणीय-अरदि-सोगाणं बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो । अथिरासुहाणं सोदओ, धुवोदयत्तादो । अजसकित्तीए असंजदसम्मादिट्ठिम्हि बंधो सोदय-परोदओ । उवरि परोदओ चेव । एदासिं पयडीणं सव्वासिं पि बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो । पच्चया सुगमा । असंजदसम्मादिट्ठिम्हि सव्वपयडीणं दुगइसंजुत्तो, उवरिमाणं देवगइसंजुत्तो बंधो । चउगइ-असंजदसम्मादिट्ठी दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी । असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि

शेष प्ररूपणा तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान है । विशेषता केवल इतनी है कि ' असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर ' ऐसा कहना चाहिये ॥ २१५ ॥

इस सूत्रका अर्थ यद्यपि सुगम है तो भी सम्यग्ज्ञानके पक्षपातसे आक्षिप्तचित्त अर्थात् आकृष्ट होकर और दुर्बुद्धि जनोंके अनुग्रहार्थ फिरसे भी प्ररूपणा करते हैं — असातावेदनीयका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है । उदयव्युच्छेद उसका नहीं है, क्योंकि, केवलज्ञानियोंमें भी उसका उदय देखा जाता है । इसी प्रकार अस्थिर और अशुभके भी कहना चाहिये । अरति व शोकका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्त और अपूर्वकरण गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । अयशकीर्तिका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्त और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । असातावेदनीय, अरति और शोकका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी हैं । अस्थिर और अशुभका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी हैं । अयशकीर्तिका बन्ध असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदय होता है । ऊपर उसका परोदय ही बन्ध होता है । इन सब ही प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम देखा जाता है । प्रत्यय सुगम हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सब प्रकृतियोंका दो गतियोंसे संयुक्त तथा उपरिम जीवोंके देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके संयतासंयत, और मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं । असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक बन्धाध्वान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधद्धाणं । पमत्तसंजदम्मि बंधवोच्छेदो । एदासिं बंधो सादि-अद्धुवो ।

अपच्चक्खाणावरणचउक्क-मणुसगइ-ओरालियसरीर-अंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायण-सरीरसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीओ एक्कम्हि असंजदसम्मादिट्ठिगुणट्ठाणे बज्झंति त्ति एदासिमेत्थ एगट्ठाणसण्णा । एत्थ अपच्चक्खाणचउक्क-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, असंजदसम्मादिट्ठिं मोत्तूणुवरिं[1] बंधुदयाणुवलंभादो । अवसेसाणं पयडीण-मेत्थ खओवसमियणाणमग्गणाए बंधवोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदो णत्थि, केवलणाणीसु वि उदयदंसणादो । अपच्चक्खाणावरणचउक्कस्स बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो । मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं बंधो परोदओ, सम्मादिट्ठीसु एदासिं सोदएण बंधस्स विरोहादो । णिरंतरो बंधो, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि एगसमएण बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा । णवरि मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणाणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि ओरा-लियकायजोग-ओरालियमिस्सकायजोगपच्चया णत्थि, तिरिक्ख-मणुसअसंजदसम्मादिट्ठीसु एदासिं बंधाभावादो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स देव-मणुसगइसंजुत्तो बंधो । अण्णासिं पयडीणं मणुस-

---

है । प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें बन्धव्युच्छेद होता है । इन प्रकृतियोंका बन्ध सादि और अध्रुव होता है ।

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्क, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, ये प्रकृतियां एक असंयत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें बंधती हैं, अत एव इनकी यहां एकस्थान संज्ञा है । यहां अप्रत्याख्यान-चतुष्क और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानको छोड़कर उपरिम गुणस्थानोंमें इनका बन्ध और उदय नहीं पाया जाता । शेष प्रकृतियोंका यहां क्षायोपशमिक ज्ञानमार्गणामें बन्धव्युच्छेद ही है, उदयव्युच्छेद नहीं है; क्योंकि, केवलज्ञानियोंमें भी उनका उदय देखा जाता है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, वह अध्रुवोदयी है । मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्रर्षभसंहननका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, सम्यग्दृष्टियोंमें इनके स्वोदयसे बन्धका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें एक समयसे बन्धविश्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । विशेषता इतनी है कि मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहननके असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिक और औदारिकमिश्र काययोग प्रत्यय नहीं हैं, क्योंकि, तिर्यंच और मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें इनके बन्धका अभाव है । अप्रत्याख्यान-चतुष्कका देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त, तथा अन्य प्रकृतियोंका मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध

---

१ अप्रतौ ' मोत्तूणुवरिट्ठाणं ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गइसंजुत्तो, अण्णगईहि सह विरोहादो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स चउगइअसंजदसम्माइट्ठी सामी । अवसेसाणं पयडीणं देव-णेरइया सामी । बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि गुणट्ठाणे भूओगुणट्ठाणजणियद्धाणविरोहादो । असंजदसम्मादिट्ठिम्हि बंधो वोच्छिज्जदि । अपच्चक्खाणचउक्कस्स तिविहो बंधो, धुवाभावादो । अवसेसाणं सादि-अद्धुवो ।

पच्चक्खाणावरणचउक्कमेत्थ बेट्ठाणियमसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजददोगुणट्ठाणेसु समं चेव बंधुवलंभादो । बंधोदया समं वोच्छिण्णा, संजदासंजदम्मि तदुभयाभावदंसणादो । सोदय-परोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो[1] । णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । पच्चया सुगमा । असंजदसम्मादिट्ठीसु देव-मणुसगइसंजुत्तो । संजदासंजदेसु देवगइसंजुत्तो । चउगइअसंजदसम्मादिट्ठी दुगइसंजदासंजदा सामी । असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदो त्ति बंधद्धाणं । संजदासंजदम्मि बंधो वोच्छिज्जदि । दोसु वि गुणट्ठाणेसु तिविहो बंधो, धुवाभावादो ।

पुरिसवेद-चउसंजलण-हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं सोदय-परोदओ बंधो । सांतर-णिरंतर-

होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ इनके बन्धका विरोध है । अप्रत्याख्यानचतुष्कके चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके देव व नारकी स्वामी हैं । बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें बहुत गुणस्थान जनित अध्वानका विरोध है । असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है । अप्रत्याख्यानचतुष्कका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उसके ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

प्रत्याख्यानावरणचतुष्क यहां द्विस्थानिक है, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत इन दो गुणस्थानोंमें समान ही बन्ध पाया जाता है । बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, संयतासंयत गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वह ध्रुवोदयी है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी है । प्रत्यय सुगम हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त तथा संयतासंयतोंमें देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि और दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं । असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर संयतासंयत तक बन्धाध्वान है । संयतासंयत गुणस्थानमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है । दोनों ही गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है ।

पुरुषवेद, चार संज्वलन, हास्य, रति, भय और जुगुप्साका स्वोदय-परोदय बन्ध

१ प्रतिषु ' धुवोदयादो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चय-गइसंजोग-सामित्तद्धाण-बंधवियप्पा जाणिय वत्तव्वा[1] ।

मणुसाउअस्स पुव्वावरकालसंबंधिबंधोदयपरिक्खा सुगमा । परोदओ बंधो, मणुस्साउ-बंधोदयाणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि अक्कमेण वुत्तिविरोहादो । णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । बाएत्तालीस पच्चया, ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । मणुसगइसंजुत्तो बंधो । देव-णेरइया सामी । बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि गुणट्ठाणे अद्धाणविरोहादो । असंजदसम्मादिट्ठिम्हि बंधो वोच्छिज्जदि । सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

देवाउअस्स पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि, अप्पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । परोदओ, सोदएण बंधविरोहादो । णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो । पच्चया ओघतुल्ला । देवगइसंजुत्तो बंधो । तिरिक्ख-मणुसअसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदा मणुससंजदा च सामी, अण्णत्थ बंधाणुवलंभादो । असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति बंधद्धाणं । अप्पमत्तसंजदद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो

होता है । सान्तर-निरन्तरता, प्रत्यय, गतिसंयोग, स्वामित्व, अध्वान और बन्धविकल्प, इनको जानकर कहना चाहिये ।

मनुष्यायुके पूर्वापर काल सम्बन्धी बन्ध और उदयके व्युच्छेदकी परीक्षा सुगम है । परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, मनुष्यायुके बन्ध और उदयके असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें एक साथ अस्तित्वका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उसके बन्धविश्रामका अभाव है । ब्यालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका अभाव है । मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । देव व नारकी स्वामी हैं । बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है । असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी है ।

देवायुका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अप्रमत्त और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे उसके बन्धका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके विना उसके बन्धविश्रामका अभाव है । प्रत्यय ओघके समान हैं । देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । तिर्यंच व मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत, तथा मनुष्य संयत स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें उसका बन्ध पाया नहीं जाता । असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक बन्धाध्वान है । अप्रमत्तसंयतकालके संख्यातवें भाग जाकर बन्ध

---

१ प्रतिषु ' वत्तव्वो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वोच्छिज्जदि । सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीर-अंगोवंग-वण्ण-गंध-रस फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणणामाणं वुच्चदे— देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगाणं पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि, अपुव्वासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । अवसेसतेवीसपयडीणं एत्थुदयवोच्छेदो णत्थि, बंधवोच्छेदो चेव; केवलणाणीसु उदयवोच्छेदुवलंभादो ।

देवगइ-वेउव्वियदुगाणं सव्वगुणट्ठाणेसु परोदओ बंधो, एदासिमुदयबंधाणमक्कमेण वुत्तिविरोहादो । पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिर-सुभ-णिमिणाणं सोदओ बंधो । समचउरससंठाण-उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेय-सरीराणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदय-परोदओ बंधो । उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु सोदओ चेव, तेसिमपज्जत्तद्धाए अभावादो । णवरि समचउरससंठाणस्स सव्वगुणट्ठाणेसु सोदय-परोदओ बंधो । पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सव्वगुणट्ठाणेसु सोदय-परोदओ बंधो । सुभग-आदेज्जाणं

व्युच्छिन्न होता है । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी है ।

देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और निर्माण नामकर्मोंकी प्ररूपणा करते हैं— देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमशः उनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । शेष तेईस प्रकृतियोंका यहां उदयव्युच्छेद नहीं है, केवल बन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, केवलज्ञानियोंमें उनका उदयव्युच्छेद पाया जाता है ।

देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका सब गुणस्थानोंमें परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनके उदय और बन्धके एक साथ रहनेका विरोध है । पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, शुभ और निर्माणका स्वोदय बन्ध होता है । समचतुरस्रसंस्थान, उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें उनका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, उनके अपर्याप्तकालका अभाव है । विशेष इतना है कि समचतुरस्रसंस्थानका सब गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका सब गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । सुभग और आदेयका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो ।

थिर-सुभाणमसंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदा त्ति सांतरो बंधो । उवरि णिरंतरो। अवसेसाणं पयडीणं सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो ।

देवगइ-वेउव्वियदुगाणं वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सपच्चया असंजदसम्मादिट्ठिम्मि अवणेदव्वा । सेसपयडीणं पच्चया ओघतुल्ला । देवगइ-वेउव्वियदुगाणं बंधो सव्वगुणट्ठाणेसु देवगइसंजुत्तो । अवसेसाणं पयडीणं[1] बंधो असंजदसम्मादिट्ठिम्हि देव-मणुसगइसंजुत्तो । उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु देवगइसंजुत्तो । देवगइ-वेउव्वियदुगाणं दुगइअसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदा मणुसगइसंजदा सामी । सेसाणं पयडीणं चउगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी । असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणे त्ति बंधद्धाणं । अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । णिमिणस्स तिविहो बंधो[2], धुवाभावादो । अवसेसाणं बंधो सादि-अद्धुवो ।

आहारदुग-तित्थयराणमोघपरूवणमवहारिय भाणिदव्वं ।

असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है ।

स्थिर और शुभका असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सान्तर बन्ध होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सब गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

देवगति और वैक्रियिकद्विकके वैक्रियिक और वैक्रियिकमिश्र काययोगप्रत्ययोंको असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें कम करना चाहिये । शेष प्रकृतियोंके प्रत्यय ओघके समान हैं । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका बन्ध सब गुणस्थानोंमें देवगतिसे संयुक्त होता है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके दो गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि व संयतासंयत, तथा मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके संयतासंयत, तथा मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं । असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरण तक बन्धाध्वान है । अपूर्वकरणकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । निर्माण नामकर्मका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उसका ध्रुव बन्ध नहीं होता । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अध्रुव होता है ।

आहारकद्विक और तीर्थंकर प्रकृतिकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाका निर्णय करके करना चाहिये ।

---

१ अ-काप्रत्योः ' पयडीए ' इति पाठः । २ प्रतिषु ' लद्धो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणपज्जवणाणीसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २१६ ॥

सुगमं ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा । सुहुमसांपराइयसंजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २१७ ॥

एत्थ एदासिं पयडीणं मदिणाणमग्गणाए पमत्तसंजदप्पहुडिगुणट्ठाणेसु जधा परूवणा कदा तधा परूवेदव्वा । णवरि एत्थ सव्वत्थित्थि-णउंसयवेदपच्चया अवणेदव्वा, अप्पसत्थवेदोदइल्लाण मणपज्जवणाणाणुप्पत्तीदो । पमत्तपच्चएसु आहारदुगमवणेदव्वं, मणपज्जवणाणस्स आहारसरीरदुगोदएण सह विरोहादो । पुरिसवेदस्स सोदओ बंधो । एवमण्णो वि विसेसो जदि अत्थि सो संभरिय वत्तव्वो ।

णिद्दा-पयलाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २१८ ॥

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २१६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसंयतसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २१७ ॥

यहां इन प्रकृतियोंकी मतिज्ञानमार्गणामें प्रमत्तसंयतादिक गुणस्थानोंमें जैसे प्ररूपणा की गई है वैसे प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि यहां सर्वत्र स्त्रीवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, अप्रशस्त वेदोदय युक्त जीवोंके मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्ति नहीं होती । प्रमत्तसंयत गुणस्थान सम्बन्धी प्रत्ययोंमें आहारकद्विकको कम करना चाहिये, क्योंकि, मनःपर्ययज्ञानका आहारशरीरद्विकके उदयके साथ विरोध है । पुरुषवेदका स्वोदय बन्ध होता है । इसी प्रकार अन्य भी यदि भेद हैं तो उसको स्मरण कर कहना चाहिये ।

निद्रा और प्रचलाका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २१८ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुगमं ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा । अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २१९ ॥

एदं पि सुगमं, ओघम्मि वुत्तत्थत्तादो ।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ २२० ॥

सुगमं ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीयरायछदुमत्था बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २२१ ॥

सुगममेदं ।

सेसमोघं जाव तित्थयरे त्ति । णवरि पमत्तसंजदप्पहुडि त्ति भाणिदव्वं ॥ २२२ ॥

एदं पि सुगमं ।

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसंयतसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरण-कालके संख्यातवें भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥२१९॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, ओघमें इसका अर्थ कहा जा चुका है ।

सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २२० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसंयतसे लेकर क्षीणकषायवीतराग छद्मस्थ तक बन्धक हैं । । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

शेष प्ररूपणा तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान है । विशेष इतना है कि ' प्रमत्त-संयतसे लेकर ' ऐसा कहना चाहिये ॥ २२२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवलणाणीसु सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥२२३॥

सुगमं ।

सजोगिकेवली बंधा । सजोगिकेवलिअद्धाए[1] चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २२४ ॥

एदस्स बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि, उदओ पच्छा वोच्छिज्जदि; सजोगि-अजोगिचरिमसमएसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो । णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो सच्चवचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो ओरालियकायजोगो ओरालियमिस्सकायजोगो कम्मइयकायजोगो त्ति सत्त एदस्स बंधपच्चया । बंधो अगइसंजुत्तो, एत्थ गइबंधेण विरुद्धबंधादो । मणुसा सामी, अण्णत्थ केवलीणमभावादो । बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि गुणट्ठाणे अद्धाण[2]विरोहादो । अजोगिचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

केवलज्ञानियोंमें सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २२३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सयोगकेवली बन्धक हैं । सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २२४ ॥

इसका बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, उदय पश्चात् व्युच्छिन्न होता है; क्योंकि, सयोगकेवली और अयोगकेवली गुणस्थानोंके अन्तिम समयोंमें क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । बन्ध उसका स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, वह अध्रुवोदयी प्रकृति है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । सत्यमनोयोग, असत्य-मृषामनोयोग, सत्यवचनयोग, असत्य-मृषावचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग, ये सात इसके बन्धप्रत्यय हैं । बन्ध गतिबन्ध रहित होता है, क्योंकि, यहां गतिबन्धसे विरुद्ध बन्ध है । मनुष्य स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें केवलियोंका अभाव है । बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है । अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी है ।

---

१ प्रतिषु ' सजोगकेवली बंधाए ' इति पाठः । २ प्रतिषु ' अत्थाण ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संजमाणुवादेण संजदेसु मणपज्जवणाणिभंगो ॥ २२५ ॥

जधा मणपज्जवणाणमग्गणाए परूवणा कदा तधा एत्थ कायव्वा। णवरि पच्चयादि-विसेसो जाणिय वत्तव्वो। एत्थ विसेसपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि —

णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो? ॥ २२६ ॥

सुगमं।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा। सजोगिकेवलि-अद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २२७ ॥

सुगममेदं।

सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पंचणाणावरणीय-सादावेद-णीय-लोभसंजलण-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो? ॥ २२८ ॥

संयममार्गणानुसार संयत जीवोंमें मनःपर्ययज्ञानियोंके समान प्ररूपणा है ॥ २२५॥

जिस प्रकार मनःपर्ययज्ञानमार्गणामें प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार यहां करना चाहिये। विशेष इतना है कि प्रत्ययादिके भेदको जानकर कहना चाहिये। यहां विशेषता बतलानेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

विशेषता इतनी है कि सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है? ॥२२६॥

यह सूत्र सुगम है।

प्रमत्तसंयतसे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं। सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २२७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

सामायिक-छेदोपस्थापनशुद्धिसंयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय, सातावेदनीय, संज्वलनलोभ, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है? ॥ २२८ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुगमं ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिउवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २२९ ॥

एदासिं पयडीणमेत्थ बंधोदयवोच्छेदाभावादो ' उदयादो किं पुव्वं पच्छा वा बंधो वोच्छिण्णो ' त्ति विचारो णत्थि । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो । सादावेदणीय-लोभसंजलणाणं सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो । सादावेदणीय-जसकित्तीणं पमत्तसंजदम्मि सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडि-बंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, तदभावादो । सेसाणं पयडीणं बंधो सव्वत्थ णिरंतरो, अप्पिद-संजदेसु बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो । एदासिं सव्व-पयडीणं पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणद्धाए छसत्तभागो त्ति बंधो देवगइसंजुत्तो । उवरि अगइसंजुत्तो, तत्थ गईणं बंधाभावादो । मणुसा[1] सामी, अण्णत्थ संजदाभावादो । बंधद्धाणं

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसंयतसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २२९ ॥

यहां इन प्रकृतियोंके बन्ध और उदयका व्युच्छेद न होनेसे ' उदयसे क्या पूर्वमें या पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है ' यह विचार नहीं है। पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनका ध्रुव उदय है । सातावेदनीय और संज्वलनलोभका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं। सातावेदनीय और यशकीर्तिका प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र निरन्तर है, क्योंकि, विवक्षित संयतोंमें इनके बन्धविश्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे यहां कोई भेद नहीं है । इन सब प्रकृतियोंका बन्ध प्रमत्तसंयतसे लेकर अपूर्वकरणकालके छह सप्तम भाग तक देवगतिसे संयुक्त होता है। ऊपर अगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां गतियोंके बन्धका अभाव है। मनुष्य स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें संयतोंका अभाव है।

---

१ प्रतिषु ' मणुसाउत्र ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुगमं, सुत्तुद्दिट्ठत्तादो । बंधवोच्छेदो णत्थि, उवरि त्ति बंधुवलंभादो 'अबंधा णत्थि' त्ति सुत्तादो वा । चोद्दसण्णं धुवबंधीणं बंधो तिविहो, धुवाभावादो । अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

सेसं मणपज्जवणाणिभंगो ॥ २३० ॥

जहा मणपज्जवणाणीसु सेसपयडीणं परूवणा कदा तहा एत्थ वि कायव्वा । को वि विसेसो अत्थि[1], णवुंसयवेदाहारदुगपच्चयाणं तत्थासंताणमेत्थत्थित्तदंसणादो[2] ।

णिद्दा-पयलाणं पुव्वं बंधो वोच्छिण्णो । उदयवोच्छेदो[3] णत्थि, सुहुमसांपराइय-जहाक्खादसंजदेसु वि तदुदयदंसणादो । बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो । णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो । देवगइसंजुत्तो, गत्तंतरस्स[4] बंधाभावादो । मणुसा सामी, अण्णत्थ संजमाभावादो । पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणो

बन्धाध्वान सुगम है, क्योंकि, वह सूत्रमें निर्दिष्ट है । बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, ऊपर भी बन्ध पाया जाता है; अथवा 'अबन्धक नहीं है' इस सूत्रसे भी बन्धव्युच्छेदका अभाव सिद्ध है । चौदह ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध तीन प्रकार होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

शेष प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मनःपर्ययज्ञानियोंके समान है ॥ २३० ॥

जिस प्रकार मनःपर्ययज्ञानियोंमें शेष प्रकृतियोंकी प्ररूपणा की है उसी प्रकार यहां भी करना चाहिये । यहां कुछ विशेषता भी है, क्योंकि, नपुंसकवेद और आहारद्विकके प्रत्यय, जो मनःपर्ययज्ञानियोंमें नहीं थे, यहां देखे जाते हैं ।

निद्रा और प्रचलाका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है । उनका उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिक और यथाख्यातसंयतोंमें भी उनका उदय देखा जाता है । बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी हैं । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवबन्धी हैं । प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे कोई भेद नहीं हैं । देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, संयतोंमें अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है । मनुष्य स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें संयमका अभाव है । प्रमत्तसंयतसे लेकर अपूर्वकरण तक बन्धाध्वान है । अपूर्व-

---

१ अ-आप्रत्योः 'को विसेसो अत्थि णत्थि', काप्रतौ 'को वि विसेसो अत्थि णत्थि' इति पाठः ।

२ प्रतिषु 'तथासंताण' इति पाठः ।

३ काप्रतावत्र 'बंधो सोदय-परोदओ' इत्यधिकः पाठः ।

४ प्रतिषु 'गम्भंतरस्स' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्ति बंधद्धाणं। अपुव्वकरणद्धाए सत्तमभागचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि। कधमेदं णव्वदे? सुत्ताविरुद्धाइरियवयणादो। तिविहो[1] बंधो, धुवाभावादो।

एवं चेव पुरिसवेदस्स वत्तव्वं। णवरि अद्धाणमणियट्टिअद्धाए संखेज्जा भागा त्ति वत्तव्वं। देवगइ-अगइसंजुत्तो। दुविहो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो।

कोधसंजलणस्स लोभसंजलणभंगो। णवरि अद्धाणमणियट्टिअद्धाए संखेज्जा भागा त्ति। एवं माण-मायासंजलणाणं पि वत्तव्वं। णवरि कोधबंधवोच्छिण्णुवरिमद्धाए संखेज्जाभागे गंतूण माणबंधद्धाणं समप्पदि[2]। सेसद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण मायबंधद्धाणं समप्पदि[3] त्ति वत्तव्वं।

हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, अपुव्वकरणद्धाए चरिमसमए तदभावदंसणादो। बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो। हस्स रदीणं बंधो पमत्तम्मि सांतरो।

करणकालके सप्तम भागके अन्तिम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— सूत्रसे अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे वह जाना जाता है।

उनका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है।

इसी प्रकार ही पुरुषवेदके भी कहना चाहिये। विशेषता यह है कि बन्धाध्वान अनिवृत्तिकरणकालका संख्यात बहुभाग है, ऐसा कहना चाहिये। देवगतिसंयुक्त और अगतिसंयुक्त बन्ध होता है। दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी है।

संज्वलनक्रोधकी प्ररूपणा संज्वलनलोभके समान है। विशेष इतना है कि बन्धाध्वान अनिवृत्तिकरणकालका संख्यातबहुभाग है। इसी प्रकार संज्वलन मान और मायाके भी कहना चाहिये। विशेषता यह है कि संज्वलनक्रोधके बन्धके व्युच्छिन्न होनेके उपरिम कालका संख्यात बहुभाग बिताकर मानबन्धाध्वान समाप्त होता है। शेष कालके संख्यात बहुभाग जाकर मायाबन्धाध्वान समाप्त होता है, ऐसा कहना चाहिये।

हास्य, रति, भय और जुगुप्साका बन्ध व उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, अपूर्वकरणकालके अन्तिम समयमें उनका अभाव देखा जाता है। बन्ध उनका स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं। हास्य और रतिका बन्ध प्रमत्त-

---

१ प्रतिषु 'विविहो' इति पाठः।　　२ प्रतिषु 'समप्पदि' इति पाठः।

३ अ-आप्रत्योः 'समप्पदि' इति पाठः।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । भय-दुगुंछाणं सव्वत्थ णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो । देवगइसंजुत्तो अगइसंजुत्तो वि, अपुव्वकरणद्धाए चरिमसत्तमभागे गईए बंधाभावादो । मणुसा सामी । पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणो त्ति बंधद्धाणं । अपुव्वकरणचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि । भय-दुगुंछाणं तिविहो बंधो, धुवबंधित्तादो । सेसाणं सादि-अद्धुवो, तव्विवरीयबंधादो ।

देवाउअस्स पुव्वावरकालेसु बंधोदयवोच्छेदपरिक्खा णत्थि, उदयाभावादो । परोदओ बंधो, साभावियादो । णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा । देवगइसंजुत्तो । मणुसा चेव सामी । पमत्त-अप्पमत्तसंजदा बंधद्धाणं । अप्पमत्तद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

संपहि देवगइसहगयाणं सत्तावीसपयडीणं भण्णमाणे पुव्वावरकालेसु बंधोदयवोच्छेदपरिक्खा जाणिय कायव्वा । देवगइ-वेउव्वियदुगाणं बंधो परोदएण, साभावियादो । समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सराण सोदय-परोदओ, संजदेसु पडिवक्खपयडीणं पि उदय-

संयत गुणस्थानमें सान्तर होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । भय और जुगुप्साका सर्वत्र निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं । प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे कोई विशेषता नहीं है । देवगतिसंयुक्त और अगतिसंयुक्त भी बन्ध होता है, क्योंकि, अपूर्वकरणकालके अन्तिम सप्तम भागमें गतिके बन्धका अभाव हो जाता है । मनुष्य स्वामी हैं । प्रमत्तसंयतसे लेकर अपूर्वकरण तक बन्धाध्वान है । अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है । भय और जुगुप्साका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे उनसे विपरीत (अध्रुव) बन्धवाली हैं ।

देवायुके पूर्वापर कालभावी बन्ध व उदयके व्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहां उसका उदयाभाव है । परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके विना उसके बन्धविश्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । मनुष्य ही स्वामी हैं । प्रमत्त और अप्रमत्त संयत बन्धाध्वान हैं । अप्रमत्तकालके संख्यातवें भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी है ।

अब देवगतिके साथ रहनेवाली [परभविक नामकर्मकी] सत्ताईस प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करते समय पूर्वापर कालोंमें बन्ध व उदयके व्युच्छेदकी परीक्षा जानकर करना चाहिये । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका बन्ध परोदयसे होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, संयतोंमें इनकी

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

दंसणादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सोदओ, धुवोदयत्तादो। थिर-सुभाणं पमत्तसंजदम्मि बंधो सांतरो, पडिवक्खपयडिबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, तदभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो णिरंतरो, एत्थ धुवबंधित्तादो। पच्चया सुगमा। सव्वासिं पयडीणं बंधो देवगइसंजुत्तो। मणुसा सामीओ। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। धुवबंधीणं बंधो तिविहो। अवसेसाणं सादि-अद्धुवो।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्तीणमेगट्ठाणियाणं सांतरबंधीणमोघ-पच्चयाणं देवगइसंजुत्ताणं मणुससामियाणं बंधद्धाणविरहियाणं पमत्तसंजदम्मि वोच्छिण्णबंधाणं बंधेण सादि-अद्धुवाणं बंधो सोदओ परोदओ सोदय-परोदओ[1] वे त्ति जाणिय परूवेदव्वो। आहारदुग तित्थयराणं पि जाणिय वत्तव्वं।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादा-वेदणीय-चदुसंजुलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-देवगइ-पंचिंदिय–

प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका भी उदय देखा जाता है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध स्वोदय होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी हैं। स्थिर और शुभका बन्ध प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें सान्तर होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, यहां वे ध्रुवबन्धी हैं। प्रत्यय सुगम हैं। सब प्रकृतियोंका बन्ध देवगति-संयुक्त होता है। इनके बन्धके स्वामी मनुष्य हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध तीन प्रकारका होता है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अध्रुव होता है।

असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति, इन एकस्थानिक, सान्तर बन्धवाली, ओघ प्रत्ययोंसे युक्त, देवगतिसंयुक्त, मनुष्यस्वामिक, बन्धाध्वानसे रहित, प्रमत्तसंयत गुणस्थानभावी बन्धव्युच्छेदसे सहित, तथा बन्धकी अपेक्षा सादि व अध्रुव प्रकृतियोंका बन्ध स्वोदय, परोदय अथवा स्वोदय-परोदय है; इसको जानकर प्ररूपणा करना चाहिये। आहारद्विक और तीर्थंकर प्रकृतिकी भी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये।

परिहारशुद्धिसंयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक, तैजस

---

१ अ-आप्रत्योः 'सोदयो', काप्रतौ 'सोदओ' इति पाठः।

जादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर–समचउरससंठाण–वेउव्वियसरीर–अंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवाणुपुव्वि-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-सुभग–सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति–णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २३१ ॥

सुगमं ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥२३२॥

उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिज्जदि त्ति एत्थ विचारो णत्थि, एदासिं बंधवोच्छेदाभावादो उदइल्लाणमुदयवोच्छेदाभावादो च । देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियदुग-तित्थयराणं परोदओ बंधो, एदासिं बंधोदयाणमक्कमवुत्तिविरोहादो । णिद्दा-पयला-सादावेदणीय-चदुसंजलण-हस्स–रदि–भय–दुगुंछा–समचउरससंठाण–पसत्थविहायगइ–सुस्सराणं सोदय-परोदओ बंधो, एदासिं पडिवक्खपयडीणं पि उदयदंसणादो । अवसेसाणं पयडीणं सोदओ बंधो, एत्थ एदासिं पयडीणं धुवोदयत्तुवलंभादो ।

....

व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २३१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्त और अप्रमत्त संयत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २३२ ॥

उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार यहां नहीं है, क्योंकि, इनके बन्धव्युच्छेदका अभाव है, तथा उदय युक्त प्रकृतियोंके उदयव्युच्छेदका भी अभाव है । देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकद्विक और तीर्थंकर, इनका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इन प्रकृतियोंके बन्ध और उदयके एक साथ अस्तित्वका विरोध है । निद्रा, प्रचला, सातावेदनीय, चार संज्वलन, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका भी उदय देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इन प्रकृतियोंका ध्रुव उदय पाया जाता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सादावेदणीय-हस्स-रदि-थिर-सुभ-जसकित्तीणं पमत्तसंजदम्मि बंधो सांतरो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो। पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो। णवरि इत्थि-णवुंसयवेदपच्चया णत्थि, अप्पसत्थवेदोदइल्लाणं परिहारसुद्धिसंजमाभावादो। आहारदुगपच्चया वि णत्थि, परिहारसुद्धिसंजमेण आहारदुगोदयविरोहादो तित्थयरपादमूले ट्ठियाणं[1] गयसंदेहाणं आणाकणिट्ठदासंजमबहुलतादि[2]आहारुट्ठवणकारणविरहिदाणमाहारसरीरोवादाणासंभवादो वा।

देवगइसंजुत्तो बंधो, एत्थण्णगइबंधाभावादो। मणुसा सामी, अण्णत्थ संजमाभावादो। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति सुत्तणिद्देसादो। धुवबंधीणं बंधो तिविहो, धुवाभावादो। अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्तिणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २३३ ॥

सातावेदनीय, हास्य, रति, स्थिर, शुभ और यशकीर्तिका प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है। ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके विना उनके बन्धविश्रामका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे कोई भेद नहीं है। विशेष इतना है कि स्त्रीवेद और नपुंसकवेद प्रत्यय नहीं हैं, क्योंकि, अप्रशस्तवेदोदय युक्त जीवोंके परिहारशुद्धिसंयमका अभाव है। आहारकद्विक प्रत्यय भी नहीं है, क्योंकि, परिहारशुद्धिसंयमके साथ आहारकद्विककी उत्पत्तिका विरोध है; अथवा तीर्थंकरके पादमूलमें स्थित, सन्देह रहित, तथा आज्ञाकनिष्ठता अर्थात् आप्तवचनमें सन्देहजनित शिथिलता और असंयमबहुलतादि रूप आहारशरीरकी उत्पत्तिके कारणोंसे रहित परिहार-शुद्धिसंयतोंके आहारकशरीरकी उत्पत्ति असंभव है।

देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहां अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है। मनुष्य स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें संयमका अभाव है। बन्धाध्वान सुगम है। बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि 'अबन्धक नहीं है' ऐसा सूत्रमें कहा गया है। इनमें ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध तीन प्रकारका होता है, क्योंकि, उनके ध्रुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २३३ ॥

---

१ आ-काप्रत्योः 'मूलट्ठियाणं' इति पाठः।

२ अ-आप्रत्योः 'बहुलावादि', 'का-मप्रत्योः बहुलालादि' इति पाठः।

सुगमं ।

पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २३४ ॥

असादावेदणीय-अरदि-सोगाणमेत्थ बंधवोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदो णत्थि; उवरि तदुदयवोच्छेदुवलंभादो । अथिर-असुभाणं पि एवं चेव वत्तव्वं, पमत्त सजोगीसु बंधोदय-वोच्छेददंसणादो । अजसकित्तीए पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि, पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो । अथिर-असुहाणं सोदओ, अजसकित्तीए परोदओ, सेसाणं बंधो सोदय-परोदओ । सांतरो बंधो, एदासिमेगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो । इत्थि-णवुंसयवेदाहार-दुगविरहिदोघपच्चया एत्थ वत्तव्वा । देवगइ [-संजुत्तो] बंधो । मणुसा सामी । बंधद्धाणं णत्थि, एगगुणट्ठाणम्हि[1] तदसंभवादो । पमत्तसंजदचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

देवाउअस्स को बंधो को अबंधो ?॥ २३५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसंयत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २३४ ॥

असातावेदनीय, अरति और शोकका यहां बन्धव्युच्छेद ही है उदयव्युच्छेद नहीं है; क्योंकि, ऊपर उनका उदयव्युच्छेद पाया जाता है । अस्थिर और अशुभके भी इसी प्रकार कहना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्त और सयोगकेवली गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । अयशकीर्तिका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्त और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमशः उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । अस्थिर और अशुभका स्वोदय, अयशकीर्तिका परोदय, तथा शेष प्रकृतियोंका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है । सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इन प्रकृतियोंका एक समयसे भी बन्धविश्राम देखा जाता है । स्त्रीवेद, नपुंसकवेद और आहारकद्विकसे रहित यहां ओघप्रत्यय कहना चाहिये । देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । मनुष्य स्वामी हैं । बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें उसकी सम्भावना नहीं है । प्रमत्तसंयत गुणस्थानके अन्तिम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं ।

देवायुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २३५ ॥

---

१ प्रतिषु ' गुणट्ठाणाणम्हि ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुगमं ।

पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा बंधा । अप्पमत्तसंजदद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥२३६॥

उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, संजदेसु देवाउअस्स उदयाभावादो । परोदओ बंधो, बंधोदयाणमक्कमवुत्तिविरोहादो । णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो । णवरि आहारदुगित्थि-णवुंसयवेदपच्चया णत्थि । देवगइसंजुत्तो, मणुसा सामीओ, अवगयबंधद्धाणो, अप्पमत्तद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण वोच्छिण्णबंधो । सादि-अद्धुवो ।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगणामाणं को बंधो को अबंधो? ॥ २३७ ॥

सुगमं ।

अप्पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥२३८॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं । अप्रमत्तसंयतकालका संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २३६ ॥

उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार यहां नहीं है, क्योंकि, संयत जीवोंमें देवायुके उदयका अभाव है । परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उसके बन्ध और उदयके एक साथ रहनेका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके विना उसके बन्धविश्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे कोई विशेषता नहीं है । विशेष इतना है कि आहारकद्विक, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद प्रत्यय नहीं हैं । देवगति संयुक्त बन्ध होता है । मनुष्य स्वामी हैं । बन्धाध्वान सूत्रसे जाना जाता है । अप्रमत्तकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांग नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २३७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २३८ ॥

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

एदासिं देवाउअभंगो। णवरि बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि गुणट्ठाणे अद्धाणासंभवादो। बंधवोच्छेदो णत्थि, उवरिं पि बंधुवलंभादो।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २३९ ॥

सुगमं।

सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २४० ॥

एदासिं बंधोदयवोच्छेदाभावादो उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति ण परिक्खा कीरदे। सादावेदणीयस्स बंधो सोदय-परोदओ, अणुदए वि बंधविरोहाभावादो। णिरंतरा सव्वपयडीणं बंधो, एत्थ गुणट्ठाणेसु बंधुवरमाभावादो। ण एगसमयमच्छिय मुदसुहुमसांपराइएहि वियहिचारो, सुहुमसांपराइयगुणट्ठाणम्मि त्ति विसेसणादो। ओरालिय-

---

इन दोनों प्रकृतियोंकी प्ररूपणा देवायुके समान है। विशेष इतना है कि बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानकी सम्भावना नहीं है। बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, ऊपर भी बन्ध पाया जाता है।

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २३९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमक और क्षपक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २४० ॥

इन प्रकृतियोंके बन्ध व उदयके व्युच्छेदका अभाव होनेसे उदयसे बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है या पश्चात्, यह परीक्षा यहां नहीं की जाती है। सातावेदनीयका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, उदयके न होनेपर भी उसके बन्धमें कोई विरोध नहीं है। इन सब प्रकृतियोंका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इस गुणस्थानमें बन्धविश्रामका अभाव है। ऐसा माननेपर एक समय रहकर मृत्युको प्राप्त हुए सूक्ष्मसाम्परायिक संयतोंसे व्यभिचार होगा, यह भी नहीं कहा जा सकता है; क्योंकि, 'सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानमें' ऐसा विशेषण दिया गया है। औदारिक काययोग, लोभ कषाय, चार मनोयोग और चार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कायजोग-लोभकसाय-चदुमण-वचिजोगा त्ति दस पच्चया । अगइसंजुत्तो बंधो, एत्थ चउगइ-बंधाभावादो । मणुसा सामी, अण्णत्थ सुहुमसांपराइयाणमभावादो । बंधद्धाणं णत्थि, सुहुम-सांपरायप्पहुडि त्ति सुत्ते अणुवदिट्ठत्तादो । बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति वयणादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो । सेसाणं सादि-अद्धुवो ।

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ २४१ ॥

सुगमं ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था खीणकसायवीयरायछदुमत्था सजोगिकेवली बंधा । सजोगिकेवलि[1]अद्धाए चरिमसमयं गंतूण [बंधो] वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २४२ ॥

सुगममेदं, केवलणाणमग्गणापरूवणाए समाणत्तादो ।

वचनयोग, ये दश प्रत्यय हैं । गतिसंयोगसे रहित बन्ध होता है, क्योंकि, यहां चारों गतियोंके बन्धका अभाव है । मनुष्य स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें सूक्ष्मसाम्परायिक संयतोंका अभाव है । बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, 'सूक्ष्मसाम्परायिक आदि' ऐसा सूत्रमें निर्देश नहीं किया गया है । बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, 'अबंधक नहीं है' ऐसा सूत्रका वचन है । पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय, इनका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

यथाख्यातविहारशुद्धिसंयतोंमें सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २४१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थ, क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ और सयोगकेवली बन्धक हैं । सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर [बन्ध] व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २४२ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, केवलज्ञानमार्गणाकी प्ररूपणासे इसकी समानता है ।

---

१ प्रतिषु 'अजोगिकेवलि' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संजदासंजदेसु पंचणाणावरणीय–छदंसणावरणीय–सादासाद–अट्ठकसाय पुरिसवेद-हस्स-रदि-सोग-भय-दुगुंछ-देवाउ-देवगइ-पंचिंदिय-जादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर–समचउरससंठाण–वेउव्वियसरीर–अंगोवंग-वण्ण-गंध रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर–थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर–आदेज्ज–जसकित्ति–अजसकित्ति–णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २४३ ॥

सुगमं ।

संजदासंजदा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २४४ ॥

उदयादो पुव्वं पच्छा वा बंधो वोच्छिण्णो त्ति एत्थ विचारो णत्थि, बंधवोच्छेदाभावादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुअचउक्क-थिराथिर-सुहासुह-सुभगादेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ

संयतासंयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, आठ कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, शोक, भय, जुगुप्सा, देवायु, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २४३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संयतासंयत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २४४ ॥

इन प्रकृतियोंका बन्ध उदयसे पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार यहां नहीं है, क्योंकि, उनके बन्धव्युच्छेदका अभाव है । पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु आदिक चार, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तरायका स्वोदय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधो, एत्थ धुवोदयत्तुवलंभादो। देवाउ-देवगइ-वेउव्वियसरीर-अंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अजसकित्ति-तित्थयराणं परोदओ बंधो, बंधोदयाणमण्णोण्णविरोहादो। णिद्दा-पयला-सादासाद-अट्ठकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सरुच्चागोदाणं बंधो सोदय-परोदओ, उहयहा वि बंधविरोहाभावादो।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-अट्ठकसाय-पुरिसवेद-भय-दुगुंछा-देवाउ-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्णचउक्क-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुवचउक्क-पसत्थविहायगइ-तसचउक्क-सुभग-सुस्सरादेज्ज-णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं बंधो णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीणं बंधो सांतरो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। पच्चया सुगमा, ओघाणुव्वइपच्चएहिंतो भेदाभावादो। सव्वासिं पयडीणं देवगइसंजुत्तो बंधो, अण्णगईणं बंधाभावादो। दुगइदेसव्वइणो[1] सामी, अण्णत्थ तेसिमभावादो। बंधद्धाणं णत्थि, एक्कगुणट्ठाणे तदसंभवादो। अधवा अत्थि, पज्जवट्ठियणयावलंबणादो।

बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनका ध्रुव उदय पाया जाता है। देवायु, देवगति, वैक्रियिकशरीर व वैक्रियिकशरीरांगोपांग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अयशकीर्ति और तीर्थकरका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनके बन्ध और उदयका परस्परमें विरोध है। निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, आठ कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुस्वर और उच्चगोत्रका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके बन्धका विरोध नहीं है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, आठ कषाय, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, देवायु, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्णादिक चार, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु आदिक चार, प्रशस्तविहायोगति, त्रसादिक चार, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धविश्रामका अभाव है। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनका बन्धविश्राम देखा जाता है। प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, सामान्य अणुव्रतीके प्रत्ययोंसे कोई भेद नहीं है। सब प्रकृतियोंका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके बन्धका वहां अभाव है। दो गतियोंके देशव्रती स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें उनका अभाव है। बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें उसकी सम्भावना नहीं है। अथवा पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करके बन्धाध्वान है।

१ प्रतिषु 'देसव्वगइणो' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति वयणादो। धुवबंधीणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो। सेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

असंजदेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारस-कसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-संठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २४५ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २४६ ॥

बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, 'अबन्धक नहीं हैं' ऐसा सूत्रमें कहा गया है। ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके ध्रुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

असंयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिक व वैक्रियिक अंगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २४५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २४६ ॥

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

एत्थोदइल्लाणं बंधोदयवोच्छेदाभावादो उदयादो बंधो किं पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदओ बंधो, बंधोदयाणं परोप्परविरोहादो । णिद्दा-पयला-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज–जसकित्ति–अजसकित्ति–उच्चागोदाणं बंधो सोदय-परोदओ उहयहा वि बंधुवलंभादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालिय-सरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ, उहयहा वि बंधुवलंभादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु परोदओ, सोदएण सग-बंधस्स तत्थ विरोहदंसणादो । पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्ताणं मिच्छादिट्ठीसु सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव, विगलिंदिय-थावर-सुहुमापज्जत्तएसु सासणादीणमभावादो । उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-

---

यहां उदय युक्त प्रकृतियोंके बन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव होनेसे उदयकी अपेक्षा बन्ध क्या पूर्वमें और या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है । पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनके बन्ध और उदयके परस्पर विरोध है । निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनका बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग और वज्रर्षभसंहननका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वहां दोनों प्रकारसे भी इनका बन्ध पाया जाता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपने उदयके साथ अपने बन्धका वहां विरोध देखा जाता है। पंचेन्द्रिय जाति, त्रस, बादर और पर्याप्तका बन्ध मिथ्यादृष्टियोंमें स्वोदय-परोदय होता है । ऊपर इनका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, विकलेन्द्रिय, स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्तकोंमें सासादनादिक गुणस्थानोंका अभाव है । उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

परोदओ। सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि सोदओ चेव, अपज्जत्तद्धाए तस्साभावादो।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-चउक्क-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो। सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीणं बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमुवलंभादो। देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-समचउरससंठाणाणं बंधो मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो। कधं णिरंतरो? ण, असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुसमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सुहतिलेस्सियसंखेज्जवासाउएसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। पुरिसवेदस्स मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो। कधं णिरंतरो? पम्म-सुक्कलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु पुरिसवेदस्सेव बंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। मणुसगइ-मणुस-

बन्ध होता है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें उनका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें उस गुणस्थानका अभाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम पाया जाता है। देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग और समचतुरस्रसंस्थानका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर होता है।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि असंख्यातवर्षायुष्क तिर्यंच व मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें तथा शुभ तीन लेश्यावाले संख्यातवर्षायुष्कोंमें भी उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। पुरुषवेदका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है?

समाधान—क्योंकि, पद्म और शुक्ल लेश्यावाले तिर्यंच एवं मनुष्योंमें पुरुषवेदका ही बन्ध पाया जाता है।

ऊपर उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो सांतर-णिरंतरो । कधं णिरंतरो ? ण, आणदादिदेवेसु[1] णिरंतरबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खबंधादो । ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठीसु सासणसम्मादिट्ठीसु च सांतर-णिरंतरो बंधो । कधं णिरंतरो ? ण, देव-णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खबंधादो । वज्जरिसहसंघडणस्स मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो । उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खबंधादो । पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सरादेज्जुच्चागोदाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो, असंखेज्जवस्साउएसु णिरंतरबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खबंधादो । पंचिंदियजादि-परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो,

---

अभाव है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि आनतादिक देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां वह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है ।

औदारिकशरीर और औदारिकशरीरांगोपांगका मिथ्यादृष्टियों और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका—इनका निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि देव और नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है । वज्रर्षभसंहननका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर बन्ध होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है । प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, असंख्यातवर्षायुष्कोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है । पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, देव व नारकियोंमें इनका

---

१ प्रतिषु ' देवीसु ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देव-णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खबंधादो ।

पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो । पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादावेदणीय-बारसकसाय-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुह-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउगइसंजुत्तो । सासणे णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु देव-मणुसगइसंजुत्तो । सादावेदणीय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जस-कित्तीणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु दुगइसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणमभावादो । ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइसंजुत्तो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मणुसगइसंजुत्तो । देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं देवगइसंजुत्तो ।

निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां वह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है ।

प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे यहां कोई विशेषता नहीं है । पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, असाता वेदनीय, बारह कषाय, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ, अयशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तरायका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों गतियोंसे संयुक्त, सासादन गुणस्थानमें नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त, तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त होता है । सातावेदनीय, पुरुषवेद, हास्य, रति, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तीन गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, इनके साथ नरकगतिके बन्धका अभाव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नरकगति और तिर्यग्गतिका अभाव है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग और वज्रर्षभसंहननका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उनका बन्ध मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । देवगति और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठीसु दुगइसंजुत्तो, तिरिक्ख-मणुसगईण-मभावादो। सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु देवगइसंजुत्तो। उच्चागोदस्स देव-मणुसगइसंजुत्तो, अण्णत्थ तस्सुदयाभावादो।

चउगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठी सामी। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति वयणादो। धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठीसु चउव्विहो बंधो। सासणादीसु तिविहो, धुवबंधाभावादो। अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

बेट्ठाणी ओघं ॥ २४७ ॥

बेट्ठाणपयडीणं जधा मूलोघम्मि परूवणा कदा तधा कायव्वा, विसेसाभावादो।

एक्कट्ठाणी ओघं ॥ २४८ ॥

सुगममेदं।

मणुस्साउ-देवाउआणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २४९ ॥

देवगतिसे संयुक्त होता है। वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगका बन्ध मिथ्यादृष्टियोंमें दो गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, उनके साथ तिर्यग्गति और मनुष्यगतिके बन्धका अभाव है। सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देवगतिसे संयुक्त उनका बन्ध होता है। उच्चगोत्रका बन्ध देवगति और मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें उसके उदयका अभाव है।

चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। बन्धाध्वान सुगम है। बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, 'अबन्धक नहीं हैं' ऐसा सूत्रमें कहा गया है। ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टियोंमें चारों प्रकारका होता है। सासादनादिकोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २४७ ॥

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा जैसे मूलोघमें की गई है उसी प्रकार करना चाहिये, क्योंकि, मूलोघसे यहां कोई विशेषता नहीं है।

एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २४८ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मनुष्यायु और देवायुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २४९ ॥

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २५० ॥

सुगमं ।

तित्थयरणामस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ २५१ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥२५२॥

सुगमं ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणीणमोघं णेदव्वं जाव तित्थयरे त्ति ॥ २५३ ॥

तिण्णं जाईणमादाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं चक्खुदंसणीसु परोदयत्तुवलंभादो ओघ-

---

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २५० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २५१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २५२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

दर्शनमार्गणानुसार चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान जानना चाहिये ॥ २५३ ॥

शंका—तीन जातियां, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण प्रकृतियोंका चक्षुदर्शनियोंमें चूंकि परोदय बन्ध पाया जाता है, अत एव 'उनकी प्ररूपणा ओघके समान

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

मिदि ण घडदे ? ण, दव्वट्ठियणयमवलंबिय ट्ठिददेसामासियसुत्तेसु विरोहाभावादो । पयडि-बंधद्धाणगयभेदपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो, सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ २५४ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीयरायछदुमत्था बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २५५ ॥

सुगममेदं ।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ॥ २५६ ॥

सुगमं ।

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ २५७ ॥

सुगमं ।

है ' यह घटित नहीं होता ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन कर स्थित देशामर्शक सूत्रोंमें विरोधका अभाव है ।

प्रकृतिबन्धाध्वानगत भेदके प्ररूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

इतनी विशेषता है कि सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥२५४॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २५५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अवधिदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा अवधिज्ञानियोंके समान है ॥ २५६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

केवलदर्शनियोंकी प्ररूपणा केवलज्ञानियोंके समान है ॥ २५७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सियाण-मसंजदभंगो ॥ २५८ ॥

किण्हलेस्साए ताव उच्चदे — पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालिय-वेउव्वियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्णचउक्क-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुअचउक्क-पसत्थविहायगइ-तसचउक्क-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणि किण्हलेस्सियचउगुणट्ठाणजीवेहि बज्झमाणाणि । तत्थुदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति परिक्खाए[1] असंजदभंगो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं बंधो सोदओ, धुवोदयत्तादो । देवगइदुग-वेउव्वियदुगाणं परोदओ, बंधोदयाणं समाणकालउत्तिविरोहादो । णिद्दा-पयला-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-

....

लेश्यामार्गणानुसार कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले जीवोंकी प्ररूपणा असंयतोंके समान है ॥ २५८ ॥

पहले कृष्णलेश्याके आश्रित प्ररूपणा करते हैं— पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिक और वैक्रियिक शरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्णादिक चार, मनुष्यगति और देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु आदिक चार, प्रशस्तविहायोगति, त्रसादिक चार, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, ये प्रकृतियां कृष्णलेश्यावाले चार गुणस्थानवर्ती जीवों द्वारा बध्यमान हैं। उनमें 'उदयसे बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है या पश्चात्' इस प्रकारकी परीक्षा यहां असंयत जीवोंके समान है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका बन्ध स्वोदय होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी हैं। देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनके बन्ध और उदयके समान कालमें रहनेका विरोध है। निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय,

....

१ अप्रतौ ' परिक्खाणं ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जस-कित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधुवलंभादो । मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधुवलंभादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु परोदओ, सोदयबंधाणमेदेसु गुणट्ठाणेसु अक्कमउत्तिविरोहादो । पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्ताणं मिच्छाइट्ठीसु सोदय-परोदओ, एत्थ पडिवक्खपयडीणं पि उदयसंभवादो । उवरि सोदओ चेव, विगलिंदिय-थावर[1]-सुहुम-अपज्जत्तएसु सासणादीणमभावादो । उवघाद-परघादुस्सास-पत्तेयसरीराणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ । असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ, छट्ठपुढवीपच्छायदाणमपज्जत्तकाले असंजदसम्मादिट्ठीणं परोदएण बंधसंभवादो । सम्मामिच्छाइट्ठीसु सोदओ, एदेसिमपज्जत्तदाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-चउक्क-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । सादासाद-

जुगुप्सा, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनका बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्रर्षभसंहननका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वहां दोनों प्रकारसे भी बन्ध पाया जाता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उनका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें उन प्रकृतियोंके अपने बन्ध और उदयके एक साथ रहनेका विरोध है । पंचेन्द्रिय जाति, त्रस, बादर और पर्याप्तका मिथ्यादृष्टियोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका भी उदय सम्भव है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, विकलेन्द्रिय, स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्तकोंमें सासादनादिक गुणस्थानोंका अभाव है । उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, छठी पृथिवीसे पीछे आये हुए असंयतसम्यग्दृष्टियोंके परोदयसे बन्ध सम्भव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंमें स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें अपर्याप्तताका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तरायका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं । साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति,

१ प्रतिषु 'थावरे' इति पाठः ।

हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो, अद्धुवबंधित्तादो। पुरिसवेद-देवगइदुग-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो। उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खबंधादो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो। कधं णिरंतरो? ण, आरणच्चुददेवाणं मणुस्सेसुववण्णाणं सुक्कलेस्साविणासेण किण्हलेसाए परिणदाणमंतोमुहुत्तकालं[1] णिरंतरबंधुवलंभादो। सुक्कलेस्साए[2] ट्ठिदो पम्म-तेउ-काउ-णीललेस्साओ वोलिय कधमक्कमेण किण्हलेस्सापरिणदो होज्ज? ण, सुक्कलेस्सादो कमेणं काउ-णीललेस्सासु परिणमिय पच्छा किण्णलेस्सापज्जाएण परिणमणब्भुवगमादो। ण च मणुसगइ-बंधगद्धा काउ-णीललेस्साकालादो थोवा, तत्तो तस्स बहुत्तुवलंभादो। अथवा मज्झिमसुक्कलेस्सिओ देवो जहा छिण्णाउओ होदूण जहण्णसुक्काइणा अपरिणमिय असुहतिलेस्साए[3] णिवददि

शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं। पुरुषवेद, देवगतिद्विक, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभसंहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर बन्ध होता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां वह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि मनुष्योंमें उत्पन्न हुए आरण-अच्युत देवोंके शुक्लेश्याके विनाशसे कृष्णलेश्यामें परिणत होनेपर अन्तर्मुहूर्त काल तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

शंका—शुक्लेश्यामें स्थित जीव पद्म, तेज, कापोत और नील लेश्याओंको लांघकर कैसे एक साथ कृष्णलेश्यामें परिणत हो सकता है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, शुक्लेश्यासे क्रमशः कापोत और नील लेश्याओंमें परिणमन करके पीछे कृष्णलेश्या पर्यायसे परिणमन स्वीकार किया गया है। और मनुष्यगतिबन्धककाल कापोत और नील लेश्याके कालसे थोड़ा नहीं है, क्योंकि, वह उससे बहुत पाया जाता है। अथवा, मध्यम शुक्ललेश्यावाला देव जिस प्रकार आयुके क्षीण होनेपर जघन्य शुक्ललेश्यादिकसे परिणमन न करके अशुभ तीन लेश्याओंमें गिरता

१ अ-काप्रत्योः '-मंतोमुहुत्तं कालं' इति पाठः। २ अप्रतौ 'सुक्कलेस्साणं' इति पाठः। ३ अप्रतौ 'अपरिणमिद असुहतिलेस्साण' इति पाठः।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

तहा सव्वे देवा मुदयक्खणेण[1] चेव अणियमेण असुहतिलेस्सासु णिवदंति त्ति गहिदे जुज्जदे। अण्णे पुण आइरिया किण्णलेस्साए मणुसगइदुगस्स णिरंतरं बंधं णेच्छंति, मणुसगदिबंधगद्धाए काउलेस्साबंधगद्धाबहुत्तब्भुवगमादो। तं पि कुदो? मुददेवाणं सव्वेसिं पि काउलेस्साए चेव परिणामब्भुवगमादो। उवरि णिरंतरो। ओरालियसरीर-अंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो। कुदो? णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। पंचिंदियजादि-परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठीसु सांतर-णिरंतरो, णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो।

पच्चयाणमोघभंगो। णवरि असंजदसम्माइट्ठिपच्चएसु वेउव्वियमिस्सपच्चओ अवणेदव्वो। ओरालियदुग-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि[2] ओरालियकायजोगित्थि-

---

है, उसी प्रकार सब देव मरणक्षणमें ही नियम रहित अशुभ तीन लेश्याओंमें गिरते हैं, ऐसा ग्रहण करनेपर उपर्युक्त कथन संगत होता है।

अन्य आचार्य कृष्णलेश्यामें मनुष्यगतिद्विकका निरन्तर बन्ध नहीं मानते हैं, क्योंकि, मनुष्यगति बन्धककालसे कापोतलेश्याका बन्धककाल बहुत स्वीकार किया गया है।

शंका — वह भी कैसे ?

समाधान — क्योंकि, सब ही मृत देवोंका कापोतलेश्यामें ही परिणमन स्वीकार किया गया है।

ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है। औदारिकशरीर और औदारिकशरीरांगोपांगका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। पंचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है।

प्रत्ययोंकी प्ररूपणा ओघके समान है। विशेष इतना है कि असंयतसम्यग्दृष्टिके प्रत्ययोंमें वैक्रियिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये। औदारिकद्विक, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें औदारिक-

---

१ अप्रतौ 'देवा मुदयक्खणेण', आ-काप्रत्योः 'देवाणमुदयक्खणेण' इति पाठः।

२ प्रतिषु 'सम्मामिच्छाइट्ठीहि' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरिसवेदपच्चएहि विणा चालीसपच्चया । देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगाणं वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सपच्चया सव्वगुणट्ठाणपच्चएसु सव्वत्थ अवणेदव्वा । ओरालियदुग-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं असंजदसम्मादिट्ठिम्हि चालीस पच्चया, वेउव्वियमिस्स-ओरालिय-ओरालियमिस्स-कम्मइय-इत्थि-पुरिसवेदपच्चयाणमभावादो । वज्जरिसहसंघडणस्स सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि चालीस पच्चया, ओरालियकायजोगित्थि-पुरिसवेदपच्चयाणमभावादो । असंजदसम्माइट्ठिम्हि चालीस पच्चया, ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकायजोगित्थि-पुरिसवेदपच्चयाणमभावादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादावेदणीय-बारसकसाय-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुह-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउगइसंजुत्तो बंधो । सासणे तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो । असंजदसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठीसु दुगइसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणमभावादो । सादावेदणीय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं मिच्छाइट्ठि-सासण-

---

काययोग, स्त्रीवेद और पुरुषवेद प्रत्ययोंके बिना चालीस प्रत्यय हैं । देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगके वैक्रियिक और वैक्रियिकमिश्र प्रत्ययोंको सब गुणस्थानोंके प्रत्ययोंमें सर्वत्र कम करना चाहिये । औदारिकद्विक, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, वहां वैक्रियिकमिश्र, औदारिक, औदारिकमिश्र, कार्मण काययोग, स्त्रीवेद और पुरुषवेद प्रत्ययोंका वहां अभाव है । वज्रर्षभसंहननके सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिककाययोग, स्त्रीवेद और पुरुषवेद प्रत्ययोंका वहां अभाव है । असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उसके चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, कार्मण काययोग, स्त्रीवेद और पुरुषवेद प्रत्ययोंका वहां अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, असाता वेदनीय, बारह कषाय, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ, अयशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तरायका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । सासादन गुणस्थानमें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नरकगतिका अभाव है । असंयतसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नरकगति और तिर्यग्गतिका अभाव है । साता वेदनीय, पुरुषवेद, हास्य, रति, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, स्थिर, शुभ, सुभग,

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

सम्मादिट्ठीसु तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो । सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु दुगइ-संजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणमभावादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो मणुसगइसंजुत्तो । ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं मिच्छाइट्ठि-सासण-सम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीसु मणुसगइसंजुत्तो, अण्णगइबंधाभावादो । देवगइदुगस्स देवगइसंजुत्तो । वेउव्वियदुगस्स मिच्छाइट्ठीसु दुगइ-संजुत्तो, तिरिक्ख-मणुसगईणमभावादो । सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मा-दिट्ठीसु देवगइसंजुत्तो, अण्णगइबंधेण संजोगविरोहादो । उच्चागोदस्स सव्वगुणट्ठाणेसु देवगइ-मणुसगइसंजुत्तो बंधो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुवचउक्क-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइय-उच्चागोदाणं चउगइमिच्छाइट्ठि-सासण-

---

सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नरकगतिका अभाव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नरकगति और तिर्यग्गतिका अभाव है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका सब गुणस्थानोंमें मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग और वज्रर्षभसंहननका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है । देवगतिद्विकका देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । वैक्रियिकद्विकका मिथ्यादृष्टियोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, तिर्यग्गति और मनुष्यगतिके बन्धका अभाव है । सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके बन्धके साथ उसके संयोगका विरोध है । उच्चगोत्रका सब गुणस्थानोंमें देवगति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है ।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वर्ण गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु आदिक चार, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, पांच अन्तराय और उच्चगोत्रके चारों गतियोंके

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मादिट्ठिणो, तिगइसम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी, देवगईए अभावादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो णिरयगइसम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो च सामी । देवगइ-वेउव्वियदुगाणं दुगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो च सामी, णिरय-देवगईणमभावादो ।

बंधद्धाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णत्थि, ' अबंधा णत्थि ' त्ति वयणादो । धुवबंधीणं मिच्छादिट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो। अण्णत्थ तिविहो, धुवाभावादो। अद्धुवबंधीणं सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अणादि-धुवाणमभावादो ।

संपहि दुट्ठाणपयडीणं परूवणा कीरदे— अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, सासणसम्मादिट्ठिम्हि तदुभयवोच्छेदुवलंभादो । एवं तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए वि वत्तव्वं । असंजदसम्मादिट्ठिम्हि वि तदुदओ अत्थि त्ति चे ण, किण्णलेस्साए णिरुद्धाए

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि, तथा तीन गतियोंके सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, यहां देवगतिमें इनके बन्धका अभाव है। मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग और वज्रर्षभसंहननके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि और नरकगतिके सम्यग्मिथ्यादृष्टि व असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके दो गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नरक और देव गतिमें इनके बन्धका अभाव है ।

बन्धाध्वान सुगम है । बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, ' अबन्धक नहीं है ' ऐसा सूत्रमें कहा गया है । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है । अध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका सर्वत्र सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, उनके अनादि और ध्रुव बन्धका अभाव है ।

अब द्विस्थान प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करते हैं — अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । इसी प्रकार तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीके भी कहना चाहिये ।

शंका—असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें भी तो तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका उदय है, फिर उसका उदयव्युच्छेद सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें कैसे सम्भव है ।

समाधान—ऐसा नहीं है, क्योंकि, कृष्णलेश्याका अनुषंग होनेपर उसका वहां उदय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तदुदयासंभवादो । अवसेसाणं पयडीणं उदयवोच्छेदो णत्थि, बंधवोच्छेदो चेव । सव्वासिं पयडीणं बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-तिरिक्खाउआणं बंधो णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। इत्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमुवलंभादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं बंधो सांतर-णिरंतरो । कुदो ? सत्तमपुढवीट्ठिद[1]मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तेउ-वाउकाइयमिच्छाइट्ठीसु च णिरंतरबंधुवलंभादो । पच्चया सुगमा । णवरि तिरिक्खाउअस्स मिच्छाइट्ठिम्हि वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेदव्वा। सासणसम्मादिट्ठिम्हि ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेदव्वा। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं बंधो चउगइसंजुत्तो। इत्थिवेदस्स तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो । चउसंठाण-चउसंघडणाणं दुगइसंजुत्तो, णिरय-देवगईणमभावादो । अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर[2]-अणादेज्ज-णीचागोदाणं मिच्छाइट्ठीसु तिगइसंजुत्तो, देवगईए

असम्भव है ।

शेष प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद नहीं है, केवल बन्धव्युच्छेद ही है। सब प्रकृतियोंका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी हैं । स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क और तिर्यगायुका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धविश्रामका अभाव है। स्त्रीवेद, चार संस्थान, चार संहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर और अनादेयका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम पाया जाता है। तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि सप्तम पृथिवीमें स्थित मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि नारकियोंमें तथा तेज व वायु कायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंमें भी उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि तिर्यगायुके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध चारों गतियोंसे संयुक्त होता है। स्त्रीवेदका बन्ध तीन गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, उसके साथ नरकगतिके बन्धका अभाव है। चार संस्थान और चार संहननका बन्ध दो गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, उनके साथ नरकगति और देवगतिके बन्धका अभाव है। अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका मिथ्यादृष्टियोंमें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, देवगतिका वहां अभाव है।

---

१ अ-आप्रत्योः ' पुढवीविट्ठिद ' इति पाठः । २ अप्रतौ ' सुस्सर ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभावादो । सासणे दुगइसंजुत्तो, णिरय-देवगईणमभावादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी उज्जोवाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो, साभावियादो । थीणगिद्धितियादीणं पयडीणं बंधस्स चउग्गइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी, अविरोहादो । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो । सासणे दुविहो, अणाइ-धुवबंधाभावादो । अवसेसाणं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

एगट्ठाणपयडीणं परूवणा कीरदे— मिच्छत्तेइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-णिरयाणुपुव्वी-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, मिच्छाइट्ठिम्हि चेव तदुभयवोच्छेदुवलंभादो । अवसेसाणं पयडीणं उदयवोच्छेदो णत्थि, बंधवोच्छेदो चेव । मिच्छत्तस्स बंधो सोदओ । णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदओ, सोदएण बंधविरोहादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधो सोदय-परोदओ, उभयहा वि अविरुद्धबंधादो । मिच्छत्त-णिरयाउआणं बंधो णिरंतरो । अवसेसाणं सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो । पच्चया सुगमा । णवरि णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयाणुपुव्वीणं वेउव्विय-

....

सासादनमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नरकगति और देवगतिका अभाव है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतका तिर्यग्गतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । स्त्यानगृद्धित्रय आदि प्रकृतियोंके बन्धके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, इसमें कोई विरोध नहीं है । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अनादि और ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि और अध्रुव होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

एकस्थान प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करते हैं— मिथ्यात्व, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, नारकानुपूर्वी आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीरका बन्ध व उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही उन दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । शेष प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद नहीं है, केवल बन्धव्युच्छेद ही है । मिथ्यात्वका बन्ध स्वोदय होता है । नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपने उदयके साथ इनके बन्धका विरोध है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी उनके बन्धमें कोई विरोध नहीं है । मिथ्यात्व और नारकायुका बन्ध निरन्तर होता है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्रामका देखा जाता है । प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि नारकायु,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया णत्थि, अपज्जत्तकाले एदासिं बंधाभावादो। एइंदिय-आदाव-थावराणं वेउव्वियकायजोगपच्चओ अवणेयव्वो। बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सपच्चया अवणेदव्वा, देव-णेरइएसु एदासिं बंधाभावादो। मिच्छत्तस्स चउगइसंजुत्तो। णवुंसयवेद-हुंडसंठाणाणं तिगइसंजुत्तो, देवगदीए अभावादो। असंपत्तसेवट्टसंघडण-अपज्जत्ताणं दुगइसंजुत्तो, णिरय-देवगईणमभावादो। णिरयाउ-णिरयदुगाणं णिरयगइसंजुत्तो। अवसेसाणं पयडीणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बंधो। णिरयाउ-णिरयदुग-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं तिरिक्ख-मणुसा सामी। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं चउगइमिच्छाइट्ठी सामी। एइंदिय-आदाव-थावराणं तिगइमिच्छाइट्ठी सामी। बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि अद्धाणविरोहादो। बंधवोच्छेदो सुगमो। मिच्छत्तस्स बंधो चउव्विहो। अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

मणुसाउअस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो सोदय-परोदओ। असंजदसम्मादिट्ठीसु परोदओ। सव्वत्थ णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। पच्चया ओघसिद्धा।

नरकगति और नारकानुपूर्वीके वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्यय नहीं हैं, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें इनके बन्धका अभाव है। एकेन्द्रिय, आताप और स्थावरके वैक्रियिककाययोग प्रत्यय कम करना चाहिये। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण शरीरके वैक्रियिक और वैक्रियिकमिश्र प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, देव और नारकियोंमें इनके बन्धका अभाव है।

मिथ्यात्वका बन्ध चारों गतियोंसे संयुक्त होता है। नपुंसकवेद और हुण्डसंस्थानका बन्ध तीन गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, इनके साथ देवगतिके बन्धका अभाव है। असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन और अपर्याप्तका बन्ध दो गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, इनके साथ नरक और देव गतिके बन्धका अभाव है। नारकायु और नरकद्विकका बन्ध नरकगतिसे संयुक्त होता है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध तिर्यग्गतिसे संयुक्त होता है। नारकायु, नरकद्विक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण प्रकृतियोंके तिर्यंच और मनुष्य स्वामी हैं। मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासंहननके स्वामी चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि जीव हैं। एकेन्द्रिय, आताप और स्थावर प्रकृतियोंके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं। बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है। बन्धव्युच्छेद सुगम है। मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

मनुष्यायुका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय होता है। असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें उसका परोदय बन्ध होता है। सर्वत्र निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उसके बन्धविश्रामका अभाव है। प्रत्यय ओघसे सिद्ध हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णवरि मिच्छाइट्ठिम्हि वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया, सासणे वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि ओरालियदुग-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-इत्थि-पुरिसवेदपच्चया अवणेदव्वा; असुहतिलेस्सासु मणुसाउअं बंधमाणाणं देवासंजदसम्मादिट्ठीणमणुवलंभादो । ण च देवेसु पज्जत्तएसु असुहतिलेस्साओ अत्थि, भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसिएसु अपज्जत्तयदेवेसु चेव तासिमुवलंभादो । ण च देवा णेरइया वा पज्जत्तणामकम्मोदयतिरिक्ख-मणुसा अपज्जत्तयदा संता आउअं बंधंति, तिरिक्ख-मणुसअपज्जत्ते मोत्तूण अण्णत्थ तब्बंधाणुवलंभादो । मणुसगइसंजुत्तो । तिगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो णिरयगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो च सामी । बंधद्धाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णत्थि, किण्हलेस्साए वट्टमाणसंजदासंजदाणमणुवलंभादो । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

देवाउअस्स सव्वत्थ बंधो परोदओ, बंधोदएसु उदयबंधाणमच्चंताभावावट्ठाणादो । णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो । सव्वेसिं पि वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया सग-सगोघपच्चएहिंतो अवणेयव्वा । देवगइसंजुत्तो । तिरिक्ख-मणुसा

विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको, सासादन गुणस्थानमें वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको, तथा असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकद्विक, वैक्रियिकमिश्र, कार्मण, स्त्रीवेद और पुरुषवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये; क्योंकि, अशुभ तीन लेश्याओंमें मनुष्यायुको बांधनेवाले देव असंयतसम्यग्दृष्टि पाये नहीं जाते । और देव पर्याप्तकोंमें अशुभ तीन लेश्यायें होती नहीं हैं, क्योंकि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी अपर्याप्तक देवोंमें ही वे पाई जाती हैं । तथा देव, नारकी अथवा पर्याप्त नामकर्मोदय युक्त तिर्यंच व मनुष्य अपर्याप्त होकर आयुको बांधते नहीं हैं, क्योंकि, तिर्यंच और मनुष्य अपर्याप्तोंको छोड़कर अन्यत्र उसका बन्ध पाया नहीं जाता । मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि तथा नरकगतिके असंयत सम्यग्दृष्टि भी स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, कृष्णलेश्यामें वर्तमान संयतासंयत पाये नहीं जाते । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी है ।

देवायुका सर्वत्र परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, बन्ध और उदयके होनेपर क्रमसे उसके उदय और बन्धका अत्यन्ताभाव अवस्थित है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके विना उसके बन्धविश्रामका अभाव है । सभी जीवोंके वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको अपने अपने ओघप्रत्ययोंमेंसे कम करना चाहिये । देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । तिर्यंच और मनुष्य ही स्वामी हैं । बन्धाध्वान

---

१ अ-आप्रत्योः ' असुहा ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चेव सामी । बंधद्धाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णत्थि, उवरिम्हि बंधुवलंभादो । सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

तित्थयरस्स बंधो परोदओ, बंधे उदयविरोहादो। णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। ओघपच्चएसु वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेदव्वा । देवगइसंजुत्तो, किण्ण-लेस्सियणेरइएसु तित्थयरबंधाभावेण मणुसगइसंजुत्तत्ताभावादो । सामी मणुसा चेव, अण्णत्था-संभवाओ । बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे अद्धाणविरोहादो । बंधवोच्छेदो णत्थि, उवरिं पि बंधदंसणादो । सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

एवं चेव णीललेस्साए परूवेदव्वं । णवरि तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सासणसम्माइट्ठिम्हि सांतरो बंधो, सत्तमपुढवीसासणसम्माइट्ठिणो मोत्तूणण्णत्थेदासिं सासणेसु णिरंतरबंधाणुवलंभादो । ण च सत्तमपुढवीणीललेस्सिया सासणसम्माइट्ठिणो अत्थि, तत्थ किण्णलेस्सं मोत्तूणण्णलेस्साभावादो । कधं मिच्छाइट्ठीणं णीललेस्साए णिरंतरो बंधो ? ण,

---

सुगम है । बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, ऊपर बन्ध पाया जाता है । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी है ।

तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध परोदय होता है, क्योंकि, बन्धके होनेपर उसके उदयका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उसके बन्धविश्रामका अभाव है । ओघप्रत्ययोंमें वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, कृष्णलेश्यावाले नारकियोंमें तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धका अभाव होनेसे मनुष्यगतिके संयोगका अभाव है । स्वामी मनुष्य ही हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंके कृष्णलेश्या युक्त जीवोंमें उसके बन्धकी सम्भावना नहीं है । बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है । बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, ऊपर भी बन्ध देखा जाता है । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी है ।

इसी प्रकार ही नील लेश्यामें प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सप्तम पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंको छोड़कर अन्यत्र इनका सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध पाया नहीं जाता । और सप्तम पृथिवीमें नीललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि हैं नहीं, क्योंकि, वहां कृष्णलेश्याको छोड़कर अन्य लेश्याओंका अभाव है ।

शंका—नीललेश्यामें मिथ्यादृष्टियोंके उनका निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

---

१ अ-आप्रत्योः ' अण्णद्धा- ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेउ-वाउकाइएसु णीललेस्सिएसु तिरिक्खगइदुग-णीचागोदाणं णिरंतरबंधुवलंभादो। तदियपुढवीए णीललेस्साए वि संभवादो तित्थयरबंधस्स मणुस्सा इव णेरइया वि सामिणो होंति त्ति किण्ण परूविज्जदे ? तत्थ हेट्ठिमइंदए णीललेस्सासहिए[1] तित्थयरसंतकम्मियमिच्छाइट्ठीणमुववादाभावादो। कुदो ? तत्थ तिस्से पुढवीए उक्कस्साउदंसणादो। ण च उक्कस्साउएसु तित्थयरसंतकम्मियमिच्छाइट्ठीणमुववादो अत्थि, तहोवएसाभावादो। तित्थयरसंतकम्मियमिच्छाइट्ठीणं णेरइएसुववज्जमाणाणं सम्माइट्ठीणं व काउलेस्सं मोत्तूण अण्णलेस्साभावादो वा ण णील-किण्हलेस्साए तित्थयरसंतकम्मिया अत्थि।

एवं काउलेस्साए वि वत्तव्वं। णवरि तित्थयरस्स मणुसा इव णेरइया वि सामिणो। मणुस-देवगइसंजुत्तो बंधो। ओघपच्चएसु एक्को वि पच्चओ णावणेयव्वो, वेउव्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणं भावादो। ओरालियदुग-मणुसगइदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं असंजदसम्मादिट्ठिम्हि वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया णावणेयव्वा। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए

समाधान — नहीं, क्योंकि तेज व वायु कायिक नीललेश्यावाले जीवोंमें तिर्यग्गतिद्विक और नीचगोत्रका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

शंका — तृतीय पृथिवीमें नीललेश्याकी भी सम्भावना होनेसे तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धके मनुष्योंके समान नारकी भी स्वामी होते हैं, ऐसा क्यों नहीं कहते ?

समाधान — ऐसा नहीं है, क्योंकि, वहां नीललेश्या युक्त अधस्तन इन्द्रकमें तीर्थंकरप्रकृतिके सत्त्ववाले मिथ्यादृष्टियोंकी उत्पत्तिका अभाव है। इसका कारण यह है कि वहां उस पृथिवीकी उत्कृष्ट आयु देखी जाती है। और उत्कृष्ट आयुवाले जीवोंमें तीर्थंकरसंतकर्मिक मिथ्यादृष्टियोंका उत्पाद है नहीं, क्योंकि, वैसा उपदेश नहीं है। अथवा नारकियोंमें उत्पन्न होनेवाले तीर्थंकरसन्तकर्मिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सम्यग्दृष्टियोंके समान कापोत लेश्याको छोड़कर अन्य लेश्याओंका अभाव होनेसे नील और कृष्ण लेश्यामें तीर्थंकरकी सत्तावाले जीव नहीं होते।

इसी प्रकार कापोतलेश्यामें भी कहना चाहिये। विशेषता इतनी है कि तीर्थंकर प्रकृतिके मनुष्योंके समान नारकी भी स्वामी हैं। मनुष्य और देव गतिसे संयुक्त बन्ध होता है। ओघप्रत्ययोंमेंसे एक भी प्रत्यय कम नहीं करना चाहिये, क्योंकि, वैक्रियिकद्विक, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका यहां सद्भाव है। औदारिकद्विक, मनुष्यगतिद्विक और वज्रर्षभसंहननके असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको कम नहीं करना चाहिये। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय

१ प्रतिषु ' हेट्ठिमइंदिए णीललेस्सासहए ' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधो पुव्वमुदओ पच्छा वोच्छिज्जदि, सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुव-लंभादो। अण्णो वि जइ भेदो अत्थि सो वि चिंतिय वत्तव्वो।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादावेदणीय-चउसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २५९ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २६० ॥

देवगइ-वेउव्वियदुगाणं पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि। अवसेसाणं पयडीण-

....

व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। अन्य भी यदि भेद है तो उसे भी विचारकर कहना चाहिये।

तेज और पद्म लेश्यावाले जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता-वेदनीय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २५९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २६० ॥

देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति परिक्खा णत्थि, एत्थ बंधोदयवोच्छेदाभावादो। पंचणाणावरणीय–चउदंसणावरणीय–पंचिंदियजादि-तेजा–कम्मइयसरीर–वण्ण–गंध-रस-फास–अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिर-सुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो। णिद्दा पयला-सादावेदणीय-चदुसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-समचउरससंठाण-पसत्थ-विहायगइ-सुस्सराणं सव्वगुणट्ठाणेसु सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। देवगइ-देवगइ-पाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं बंधो परोदओ, सोदएण बंधविरोहादो। उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं सोदय-परोदओ, अपज्जत्तकाले उदयाभावादो। सेसेसु बंधो सोदओ, तेसिमपज्जत्तद्धाए अभावादो। सुभग-आदेज्ज-जसकित्तीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति बंधो सोदय-परोदओ। उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो। उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति बंधो सोदय-परोदओ। उवरि सोदओ, पडिवक्खुदयाभावादो।

पंचणाणावरणीय–छदंसणावरणीय–चदुसंजलण-भय-दुगुंछ-देवगइ-वेउव्वियदुग-तेजा–

है। शेष प्रकृतियोंके उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहां उनके बन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, शुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी हैं। निद्रा, प्रचला, साता-वेदनीय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका सब गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी हैं। देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिक-शरीरांगोपांगका बन्ध परोदय होता है, क्योंकि, अपने उदयके साथ इनके बन्धका विरोध है। उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका बन्ध मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंके स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें इनके उदयका अभाव है। शेष गुणस्थानोंमें स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उनके अपर्याप्त-कालका अभाव है। सुभग, आदेय और यशकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है। उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत तक स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, चार संज्वलन, भय, जुगुप्सा, देवगति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं बंधो णिरंतरो, एत्थ धुवबंधित्तादो। सादावेदणीय-हस्स-रदि-थिर-सुह-जसकित्तीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदा त्ति बंधो सांतरो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्ख-पयडीणं बंधाभावादो। पंचिंदियजादि-तसणामाणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो सांतर-णिरंतरो, तिरिक्खेसु सणक्कुमारादिदेवेसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। पुरिसवेदस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो।

पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो। णवरि देवगइ-वेउव्वियदुगाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्स-वेउव्वियदुग-कम्मइयकायजोगपच्चया अवणेयव्वा, देव-णेरइएसु अपज्जत्ततिरिक्ख-मणुसेसु च एदासिं बंधाभावादो। सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि वेउव्वियकायजोगपच्चओ, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि वेउव्वियदुगपच्चओ अवणेदव्वो। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीसु सव्वपयडीणं पि ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो, तिरिक्ख-मणुस-

---

वैक्रियिकद्विक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच अन्तरायका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवबन्धी हैं। सातावेदनीय, हास्य, रति, स्थिर, शुभ और यशकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयतों तक सान्तर बन्ध होता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। पंचेन्द्रिय-जाति और त्रस नामकर्मका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तिर्यंचों और सनत्कुमारादि देवोंमें उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। पुरुषवेदका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उसका बन्धविश्राम पाया जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है।

प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे कोई विशेषता नहीं है। भेद इतना है कि देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक और कार्मण काययोग प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, देव-नारकियों तथा अपर्याप्त तिर्यंच व मनुष्योंमें भी इनके बन्धका अभाव है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें वैक्रियिक काययोग प्रत्यय तथा असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें वैक्रियिक और वैक्रियिकमिश्र प्रत्ययोंको कम करना चाहिये। मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सभी प्रकृतियोंके औदारिकमिश्र प्रत्यय कम करना चाहिये,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणमपज्जत्तकाले सुहलेस्साणमभावादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादावेदणीय-चउसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-पंचिंदिय-तेजा-कम्मइय-समचउरससंठाण-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुअचउक्क-पसत्थ-विहायगदि-थिर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो । सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु दुगइसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणमभावादो । उवरिमेसु देवगइसंजुत्तो, तत्थण्णगईणं बंधाभावादो । देवगइ-वेउव्वियदुगाणं देवगइसंजुत्तो, अण्णगईहि बंधविरोहादो । उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु देव-मणुसगइसंजुत्तो । उवरि देवगइसंजुत्तो बंधो ।

सव्वासिं पयडीणं तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी, णिरएसु तेउलेस्सादिसुहलेस्साभावादो । दुगइसंजदासंजदा, मणुसगइसंजदा

....

क्योंकि, तिर्यंच व मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्तकालमें शुभ लेश्याओंका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वर्णादिक चार, अगुरुलघु आदिक चार, प्रशस्तविहायोगति, स्थिर, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तरायका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नरकगतिका अभाव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नरकगति और तिर्यग्गतिका अभाव है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवगति संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ इनके बन्धका विरोध है । उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । ऊपर देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है ।

सब प्रकृतियोंके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नारकियोंमें तेजोलेश्यादि शुभ लेश्याओंका अभाव है । दो गतियोंके संयतासंयत और मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

सामी । णवरि वेउव्वियचउक्कस्स तिरिक्ख-मणुसगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी । बंधद्धाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति वयणादो । धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो । अण्णत्थ तिविहो, धुवाभावादो । अवसेसाणं पयडीणं सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

वेट्ठाणी ओघं ॥ २६१ ॥

तं जहा — अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा[1], सासणसम्मादिट्ठिम्हि दोण्णं वोच्छेदुवलंभादो । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए पुणो उदओ चेव णत्थि, तेउलेस्साहियारादो । सेसाणं पयडीणं बंधवोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदाभावादो । थीणगिद्धित्तिय-अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणं सोदय-परोदओ । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुग-चउसंठाण[2]-चउसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं दोसु वि गुणट्ठाणेसु बंधो

विशेषता इतनी है कि वैक्रियिकचतुष्कके तिर्यंच और मनुष्य गतिके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत; तथा मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, 'अबन्धक नहीं हैं' ऐसा सूत्रमें निर्दिष्ट है । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सर्वत्र सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६१ ॥

वह इस प्रकार है—अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । परन्तु तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका यहां उदय ही नहीं है, क्योंकि, तेजोलेश्याका अधिकार है । शेष प्रकृतियोंका केवल बन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, उनके उदयव्युच्छेदका अभाव है । स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क और स्त्रीवेदका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । तिर्यगायु, तिर्यग्गतिद्विक, चार संस्थान, चार संहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका दोनों ही गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय

१ प्रतिषु 'वोच्छिण्णो' इति पाठः ।

२ अ-आप्रत्योः '-गइदुगसंठाण-चउसंघडण', काप्रतौ 'गइदुगसंठाणचउसंठाण-चउसंघडण' इति पाठः ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

सोदय-परोदओ। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-तिरिक्खाउआणं बंधो णिरंतरो। सेसाणं सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमुवलंभादो। सव्वपयडीणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु चउवण्णेगूणवंचास पच्चया, ओरालियमिस्सपच्चयाभावादो। णवरि तिरिक्खाउअस्स ओरालिय-दुग-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-णवुंसयवेदपच्चया अवणेदव्वा, पज्जत्तदेवे मोत्तूण अण्णत्थ बंधाभावादो। तिरिक्खगइदुगुज्जोव-चउसंठाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं ओरालियदुग-णवुंसयवेदपच्चया अवणेयव्वा, तिरिक्ख-मणुस्से मोत्तूण देवाणमेदासिं पज्जत्तापज्जत्तावत्थासु बंधुवलंभादो।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुज्जोवाणं बंधो तिरिक्खगइसंजुत्तो। चउसंठाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं दुगइसंजुत्तो, णिरय-देवगईणमभावादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणं बंधो तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुज्जोव-चउसंठाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं बंधस्स देवा चेव सामी, सुहतिलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु एदासिं

बन्ध होता है। स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क और तिर्यगायुका बन्ध निरन्तर होता है। शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम पाया जाता है। सब प्रकृतियोंके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे चौवन और उनंचास प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिकमिश्र प्रत्ययका यहां अभाव है। विशेष इतना है कि तिर्यगायुके औदारिकद्विक, वैक्रियिकमिश्र व कार्मण काययोग और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, पर्याप्त देवोंको छोड़कर अन्यत्र उसके बन्धका अभाव है। तिर्यग्गतिद्विक, उद्योत, चार संस्थान, चार संहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रके औदारिकद्विक एवं नपुंसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, तिर्यंच और मनुष्योंको छोड़कर देवोंके पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थामें इनका बन्ध पाया जाता है।

तिर्यगायु, तिर्यग्गतिद्विक और उद्योतका बन्ध तिर्यग्गतिसे संयुक्त होता है। चार संस्थान, चार संहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका बन्ध दो गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, नरक और देव गतिके साथ इनके बन्धका अभाव है। स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क और स्त्रीवेदका बन्ध तीन गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, यहां नरकगतिके बन्धका अभाव है। तिर्यगायु, तिर्यग्गतिद्विक, उद्योत, चार संस्थान, चार संहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रके बन्धके देव ही स्वामी हैं, क्योंकि, शुभ तीन लेश्यावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें इनके

---

१ अ-आप्रत्योः 'चउवण्णेगूण' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधाभावादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणं तिगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी, णिरयगईए सुहतिलेस्साभावादो। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। सासणे[1] दुविहो, अणाइ-धुवाभावादो। सेसाणं पयडीणं बंधो सव्वत्थ सादि-अद्धुवो।

असादावेदणीयमोघं ॥ २६२ ॥

देसामासियसुत्तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे। तं जहा— अजसकित्तीए पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि, पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिरासुहाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, तहोवलंभादो। अथिर-असुहाणं बंधो सोदओ, धुवोदयत्तादो। अजसकित्तीए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति सोदय-परोदओ। उवरि सोदओ चेव। असादावेदणीय-अरदि-सोगाणं सोदय-परोदओ, सव्वत्थ अद्धुवोदयत्तादो। सांतरो बंधो, सव्वासिमेदासिमेगसमएण वि सव्वगुणट्ठाणेसु बंधुवरमुवलंभादो। पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो। णवरि मिच्छाइट्ठि-

---

बन्धका अभाव है। स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क और स्त्रीवेदके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नरकगतिमें शुभ तीन लेश्याओंका अभाव है। बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छित्तिस्थान सुगम हैं। ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अनादि और ध्रुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र सादि व अध्रुव होता है।

असातावेदनीयकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६२ ॥

इस देशामर्शक सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— अयशकीर्तिका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्त और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर और अशुभका पूर्वमें बन्ध व पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, वैसा पाया जाता है। अस्थिर और अशुभका बन्ध स्वोदय होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी हैं। अयशकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है। असातावेदनीय, अरति और शोकका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये सर्वत्र अध्रुवोदयी हैं। सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इन सबका एक समयसे भी सब गुणस्थानोंमें बन्धविश्राम पाया जाता है। प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे यहां कोई भेद नहीं है। विशेषता

---

१ प्रतिषु 'सासणो' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो। तिगइसंजुत्तो बंधो मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु। सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु दुगइसंजुत्तो। उवरि देवगइसंजुत्तो। तिगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो, दुगइसंजदासंजदा, मणुसगइसंजदा च सामी। मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति अद्धाणं। बंधवोच्छेदट्ठाणं सुगमं। सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-एइंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावरणामाणं को बंधो को अबंधो ?॥ २६३ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा॥ २६४ ॥

मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा। णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-एइंदिय-आदाव-थावरणामाणं बंधवोच्छेदो चेव, उदयाभावादो। मिच्छत्तस्स सोदएण बंधो, उदयाभावे बंधाणुवलंभादो। णउंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-एइंदिय-आदाव-थावराणं

इतनी है कि मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिकमिश्र प्रत्यय कम करना चाहिये। मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उनका बन्ध तीन गतियोंसे संयुक्त होता है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है। ऊपर उनका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है। तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि; दो गतियोंके संयतासंयत, तथा मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं। मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक बन्धाध्वान है। बन्धव्युच्छेदस्थान सुगम है। सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, एकेन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, आताप और स्थावर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २६३ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं॥ २६४ ॥

मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं। नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, एकेन्द्रिय, आताप और स्थावर नामकर्मका केवल बन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, यहां इनके उदयका अभाव है। मिथ्यात्वका स्वोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, उदयके अभावमें उसका बन्ध पाया नहीं जाता। नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, एकेन्द्रिय, आताप और स्थावरका बन्ध परोदय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधो परोदओ, एदासिं देवेसु उदयाभावादो । मिच्छत्तबंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । अण्णपयडीणं सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमुवलंभादो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो । णवरि ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो, तत्थ सुहलेस्साए अभावादो । णउंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-एइंदिय-आदाव-थावराणं ओरालियदुग-कम्मइय-णवुंसयवेदपच्चया अवणेयव्वा । मिच्छत्तबंधो तिगइसंजुत्तो । णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्ट-संघडणाणं दुगइसंजुत्तो, देवगईए अभावादो । एइंदिय-आदाव-थावराणं तिरिक्खगइसंजुत्तो । मिच्छत्तबंधस्स तिगइमिच्छाइट्ठिणो सामी । अवसेसाणं पयडीणं देवा चेव सामी । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । मिच्छत्तस्स बंधो चउव्विहो, धुवबंधित्तादो । सेसाणं सादि-अद्धुवो अद्धुवबंधित्तादो ।

अपच्चक्खाणावरणीयमोघं ॥ २६५ ॥

एदं देसामासियसुत्तं । तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे— अपच्चक्खाणावरणीयस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि तदुभयवोच्छेदुवलंभादो । अवसेसाणं बंधवोच्छेदो चेव । अपच्चक्खाणचउक्कस्स बंधो सोदय-परोदओ । मणुसगइदुगोरालियदुग-

---

होता है, क्योंकि, इनका देवोंके उदयाभाव है । मिथ्यात्वका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी है । अन्य प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम पाया जाता है । प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे कोई भेद नहीं है । विशेष इतना है कि यहां औदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये, क्योंकि, उसमें शुभ लेश्याका अभाव है । नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, एकेन्द्रिय, आताप और स्थावरके औदारिकद्विक, कार्मण और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । मिथ्यात्वका बन्ध तीन गतियोंसे संयुक्त होता है । नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्त-सृपाटिकासंहननका दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, इनके साथ देवगतिके बन्धका अभाव है । एकेन्द्रिय, आताप और स्थावरका तिर्यग्गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । मिथ्यात्वके बन्धके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके देव ही स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं । मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

अप्रत्याख्यानावरणीयकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६५ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, इसीलिये इससे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं— अप्रत्याख्यानावरणीयका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । शेष प्रकृतियोंका बन्धव्युच्छेद ही है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है ।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

वज्जरिसहवइरणारायणसंघडणाणं बंधो परोदओ, सुहलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु एदासिं बंधाभावादो। अपच्चक्खाणचउक्क-ओरालियसरीराणं बंधो णिरंतरो। बंधो मणुसगइदुगस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो। उवरि णिरंतरो। एवं वज्जरिसहसंघडणस्स वि वत्तव्वं। ओरालियसरीरअंगोवंगस्स बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि सांतरो। उवरि णिरंतरो, एइंदियबंधाभावादो। पच्चया सुगमा। णवरि अपच्चक्खाणचउक्कस्स दोसु गुणट्ठाणेसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो। मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं ओरालियदुग-णवुंसयवेदपच्चया तिसु गुणट्ठाणेसु अवणेयव्वा। सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि दो चेव अवणेयव्वा[1], ओरालियमिस्सपच्चयस्स पुव्वमेवाभावादो। अपच्चक्खाणचउक्कस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिगइसंजुत्तो बंधो। उवरि दुगइसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणमभावादो। मणुसगइदुगस्स मणुसगइसंजुत्तो। ओरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजुत्तमुवरि मणुसगइसंजुत्तमण्णगइबंधाभावादो। अपच्चक्खाणचउक्कस्स तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी। अवसेसाणं पयडीणं देवा सामी। बंधद्धाणं

मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्रर्षभवज्रनाराचसंहननका बन्ध परोदय होता है, क्योंकि, शुभ लेश्यावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें इनके बन्धका अभाव है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्क और औदारिकशरीरका बन्ध निरन्तर होता है। मनुष्यगतिद्विकका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर होता है। ऊपर उसका निरन्तर बन्ध होता है। इसी प्रकार वज्रर्षभसंहननके भी कहना चाहिये। औदारिकशरीरांगोपांगका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर होता है। ऊपर निरन्तर होता है, क्योंकि, वहां एकेन्द्रियके बन्धका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं। विशेष इतना है कि अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कके दो गुणस्थानोंमें औदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये। मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्रर्षभसंहननके औदारिकद्विक और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको तीन गुणस्थानोंमें कम करना चाहिये। सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें दो प्रत्ययोंको ही कम करना चाहिये, क्योंकि, औदारिकमिश्र प्रत्ययका पहले ही अभाव हो चुका है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है। ऊपर दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नरकगति और तिर्यग्गतिका अभाव है। मनुष्यगतिद्विकका मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है। औदारिकद्विक और वज्रर्षभसंहननका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त तथा ऊपर मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंके देव स्वामी हैं।

---

१ प्रतिषु ' अवणेयव्वो ' इति पाठः।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्मि बंधो चउव्विहो । अण्णत्थ तिविहो, धुवाभावादो । सेसाणं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

पच्चक्खाणचउक्कमोघं ॥ २६६ ॥

बंधोदया समं वोच्छिण्णा, संजदासंजदम्मि तेसिं दोण्णमक्कमेण वोच्छेदुवलंभादो । सोदय-परोदओ, दोहि वि पयारेहि बंधाविरोहादो[१] । णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा, अपच्चक्खाणपच्चयतुल्लत्तादो । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो तिगइ-संजुत्तो । सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु दुगइसंजुत्तो । उवरि देवगइसंजुत्तो । तिगइ-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी । दुगइसंजदासंजदा सामी । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो । उवरि तिविहो, धुवाभावादो ।

मणुस्साउअस्स ओघभंगो ॥ २६७ ॥

बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं। ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

प्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६६ ॥

प्रत्याख्यानावरणचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, संयतासंयत गुणस्थानमें दोनोंका एक साथ व्युच्छेद पाया जाता है। स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों भी प्रकारोंसे उसके बन्धमें कोई विरोध नहीं है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उसके बन्धविश्रामका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, वे अप्रत्याख्यानावरणके प्रत्ययोंके समान हैं। मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है। ऊपर देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं। मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। ऊपर तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है।

मनुष्यायुकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६७ ॥

---

१ प्रतिषु 'बंधविरोहादो' इति पाठः ।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

तं जहा— बंधो परोदओ, तेउलेस्साए सव्वगुणट्ठाणेसु सोदएण बंधविरोहादो। णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो। पच्चया सुगमा, ओघाविसेसादो। णवरि तिसु वि गुणट्ठाणेसु ओरालियदुग-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-णउंसयवेदपच्चया अवणेयव्वा। मणुसगइसंजुत्तो। देवा चेव सामी। मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठि त्ति बंधद्धाणं। बंधवोच्छेदो सुगमो। बंधो सादि-अद्धुवो।

देवाउअस्स ओघभंगो ॥ २६८ ॥

एदेण सुत्तेणेदस्सत्थपरूवणा कीरदे। तं जहा— बंधो परोदओ, सोदएण बंधविरोहादो। णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो। पच्चया ओघतुल्ला। णवरि ओघे वि वेउव्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेयव्वा। बंधो देवगइसंजुत्तो। तिरिक्ख-मणुससामीओ। बंधद्धाणं सुगमं। अप्पमत्तद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधवोच्छेदो। सादि-अद्धुवो बंधो।

आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंगणामाणं को बंधो को अबंधो? अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २६९ ॥

वह इस प्रकार है— बन्ध उसका परोदय होता है, क्योंकि, तेजोलेश्यामें सब गुणस्थानोंमें स्वोदयसे उसके बन्धका विरोध है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके विना उसके बन्धविश्रामका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, उनमें ओघसे कोई भेद नहीं है। विशेष इतना है कि तीनों ही गुणस्थानोंमें औदारिकद्विक, वैक्रियिकमिश्र, कार्मण और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये। मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है। देव ही स्वामी हैं। मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि, यह बन्धाध्वान है। बन्धव्युच्छेद सुगम है। सादि व अध्रुव बन्ध होता है।

देवायुकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६८ ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— बन्ध उसका परोदय होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इसके बन्धका विरोध है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके विना उसके बन्धविश्रामका अभाव है। प्रत्यय ओघके समान हैं। विशेषता इतनी है कि ओघमें भी वैक्रियिकद्विक, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये। देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है। तिर्यंच और मनुष्य स्वामी हैं। बन्धाध्वान सुगम है। अप्रमत्तकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्धव्युच्छेद होता है। सादि व अध्रुव बन्ध होता है।

आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांग नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है? अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २६९ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुगममेदं । कुदो ? अप्पमत्तसंजदा चेव बंधआ[1], उवरि तेउलेस्साए अभावादो ।

तित्थयरणामाणं को बंधो को अबंधो ? असंजदसम्माइट्ठी जाव अप्पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २७० ॥

सुगमं । णवरि देव-मणुससामीओ बंधो । एवं तेउलेस्साए एसा[2] परूवणा कदा । जहा तेउलेस्साए परूवणा कदा तहा पम्मलेस्साए वि कायव्वा । णवरि पुरिसवेदस्स जम्हि सांतरो बंधो परूविदो तम्हि सांतर-णिरंतरो त्ति वत्तव्वो, पम्मलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु पुरिसवेदं मोत्तूण अण्णवेदस्स बंधाभावादो । जासिं पयडीणं बंधस्स देवा चेव सामी तासिमित्थिवेदपच्चओ अवणेयव्वो, देवेसु पम्मलेस्साए इत्थिवेदाणुवलंभादो । पंचिंदिय-तसपयडीणं बंधो णिरंतरो त्ति वत्तव्वो, तेउलेस्साए एदासिं बंधस्स सांतर-णिरंतरत्तुवलंभादो । ओरालियसरीरअंगोवंगस्स बंधो परोदओ । णिरंतरो, पम्मलेस्साए अंगोवंगेण विणा बंधाभावादो । पम्मलेस्साए पयडिबंधगयभेदपरूवणट्ठमाह--

यह सूत्र सुगम है । कारण कि अप्रमत्तसंयत ही बन्धक हैं, क्योंकि, इससे ऊपरके गुणस्थानोंमें तेजोलेश्याका अभाव है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २७० ॥

यह सूत्र सुगम है । विशेष इतना है कि इसके बन्धके स्वामी देव व मनुष्य हैं । इस प्रकार तेजोलेश्याका आश्रयकर यह प्ररूपणा की गई है । जिस प्रकार तेजोलेश्यामें प्ररूपणा की है उसी प्रकार पद्मलेश्यामें भी करना चाहिये । विशेषता यह है कि पुरुष-वेदका जहां सान्तर बन्ध कहा गया है वहां 'सान्तर-निरन्तर' ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि, पद्मलेश्या युक्त तिर्यंच व मनुष्योंमें पुरुषवेदको छोड़कर अन्य वेदके बन्धका अभाव है । जिन प्रकृतियोंके बन्धके देव ही स्वामी हैं उनके स्त्रीवेद प्रत्ययको कम करना चाहिये, क्योंकि, देवोंमें पद्मलेश्यामें स्त्रीवेद नहीं पाया जाता । पंचेन्द्रिय जाति और त्रस प्रकृतियोंका बन्ध निरन्तर होता है, ऐसा कहना चाहिये; क्योंकि, तेजोलेश्यामें इनके बन्धके सान्तर-निरन्तरता पाई जाती है । औदारिकशरीरांगोपांगका बन्ध परोदयसे होता है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, पद्मलेश्यामें अंगोपांगके विना बन्धका अभाव है । पद्मलेश्यामें प्रकृतिबन्धगत भेदके प्ररूपणार्थ आगेका सूत्र कहते हैं—

१ प्रतिषु 'बंधओ' इति पाठः । २ प्रतिषु 'तेउलेस्साएसा' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पम्मलेस्सिएसु मिच्छत्तदंडओ णेरइयभंगो ॥ २७१ ॥

एइंदिय-आदाव-थावराणं बंधाभावादो । एत्तिओ चेव भेदो, अण्णो णत्थि । जदि अत्थि सो चिंतिय वत्तव्वो ।

सुक्कलेस्सिएसु जाव तित्थयरे त्ति ओघभंगो ॥ २७२ ॥

एदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सुहुमसांपराइय-खीणकसाएसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । जसकित्ति-उच्चागोदाणं पि एवं चेव वत्तव्वं । णवरि उदयवोच्छेदो एत्थ णत्थि, अजोगिम्हि उदयवोच्छेददंसणादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति जसकित्तीए सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव बंधो, पडिवक्खुदयाभावादो । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदो त्ति उच्चागोदबंधो सोदय-परोदओ। उवरि सोदओ चेव, णीचागोदुदयाभावादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । जसकित्तीए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि

....

पद्मलेश्यावाले जीवोंमें मिथ्यात्वदण्डककी प्ररूपणा नारकियोंके समान है ॥२७१॥

क्योंकि, उनके एकेन्द्रिय, आताप और स्थावरके बन्धका अभाव है । केवल इतना ही भेद है, और कुछ भेद नहीं है । यदि कुछ भेद है तो उसे विचारकर कहना चाहिये ।

शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ २७२ ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं— पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिक और क्षीणकषाय गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। यशकीर्ति और उच्चगोत्रके भी इसी प्रकार कहना चाहिये। विशेष इतना है कि उनका उदयव्युच्छेद यहां नहीं है, क्योंकि, अयोगकेवली गुणस्थानमें उनका उदय व्युच्छेद देखा जाता है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी हैं । मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक यशकीर्तिका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत तक उच्चगोत्रका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नीचगोत्रके उदयका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अंतरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं । यशकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु उच्चागोदस्स बंधो सांतर-णिरंतरो, सुक्कलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो। पच्चया सुगमा। णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिपच्चएसु[1] ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो, तिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणमपज्जत्तकाले सुहतिलेस्साणमभावादो। मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधो देव-मणुसगइसंजुत्तो। उवरि देवगइसंजुत्तो चेव, अण्णगइबंधाभावादो। तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो। सासणादीसु तिविहो, धुवबंधाभावादो। सेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

एगट्ठाण-बेट्ठाणपयडीओ ठविय उवरिमाओ ताव परूवेमो — णिद्दा-पयलाणं पुव्वं बंधो

सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी वहां उसका बन्धविश्राम देखा जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है। मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उच्चगोत्रका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, शुक्ललेश्यावाले तिर्यंच और मनुष्योंमें उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है। प्रत्यय सुगम हैं। विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानके प्रत्ययोंमेंसे औदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये, क्योंकि, तिर्यंच और मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्तकालमें शुभ तीन लेश्याओंका अभाव है।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है। ऊपर देवगति संयुक्त ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है। तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि; दो गतियोंके संयतासंयत, तथा मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं। ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चार प्रकारका बन्ध होता है। सासादनादिक गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां उनके ध्रुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

एकस्थानिक और द्विस्थानिक प्रकृतियोंको छोड़कर उपरिम प्रकृतिओंकी प्ररूपणा

---

१ अप्रतौ '-सासणसम्मादिट्ठीसु पच्चएसु' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, अपुव्व-खीणकसाएसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो । णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । पच्चया सुगमा । णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु देव-मणुसगइसंजुत्तो । उवरि देवगइसंजुत्तो । तिगइ-मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी । बंधद्धाणं सुगमं । अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जदिभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि ।

असादावेदणीयस्स पुव्वं बंधो वोच्छिण्णो । उदयवोच्छेदो णत्थि । अरदि-सोगाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, पमत्तापुव्वेसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । अथिर-असुभाणं बंधवोच्छेदो चेव, सुक्कलेस्सिएसु सव्वत्थुदयदंसणादो । अजसकित्तीए पुव्वमुदयस्स पच्छा बंधस्स वोच्छेदो, पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । असादावेदणीय-अरदि-सोगाणं बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो । अथिर-असुहाणं सोदओ चेव, धुवोदयत्तादो । अजसकित्तीए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति सोदय-

---

करते हैं— निद्रा और प्रचलाका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और क्षीणकषाय गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी हैं। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं । प्रत्यय सुगम हैं। विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये। मिथ्यादृष्टि, सासादन-सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । ऊपर देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि; दो गतियोंके संयतासंयत, तथा मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं। बन्धाध्वान सुगम है । अपूर्वकरणकालके संख्यातवें भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है ।

असातावेदनीयका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है। उदयव्युच्छेद नहीं है। अरति और शोकका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्त और अपूर्व-करण गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। अस्थिर और अशुभका बन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें सर्वत्र उनका उदय देखा जाता है। अयशकीर्तिके पूर्वमें उदयका और पश्चात् बन्धका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, प्रमत्त और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है ।

असातावेदनीय, अरति और शोकका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी हैं । अस्थिर और अशुभका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी हैं। अयशकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक स्वोदय-परोदय बन्ध होता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परोदओ। उवरि परोदओ चेव, जसकित्तीए णियमेणुदयदंसणादो। छण्णं पि पयडीणं बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो। पच्चया ओघतुल्ला। णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो। मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु छण्णं पयडीणं बंधो देव-मणुसगइसंजुत्तो। उवरि देवगइसंजुत्तो। तिगइअसंजदा दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। बंधो छण्णं पि सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

अपच्चक्खाणावरणीयस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि दोण्णं वोच्छेदुवलंभादो। सेसाणं बंधवोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदाणुवलंभादो। अपच्चक्खाणचउक्कस्स सोदय-परोदएण वि बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। अवसेसाणं बंधो परोदओ, सुक्कलेस्साए सव्वगुणट्ठाणेसु सोदएणेदासिं बंधविरोहादो। अपच्चक्खाणचउक्क-मणुसगइदुगोरालियदुगाणं बंधो णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। वज्जरिसहसंघडणस्स मिच्छादिट्ठि-सासण-सम्मादिट्ठीसु बंधो सांतरो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। पच्चया सुगमा।

है। ऊपर परोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नियमसे यशकीर्तिका उदय देखा जाता है। छहों प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम देखा जाता है। प्रत्यय ओघके समान हैं। विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये। मिथ्यादृष्टि, सासादन-सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें छहों प्रकृतियोंका बन्ध देव और मनुष्य गतिसे संयुक्त होता है। ऊपर देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। तीन गतियोंके असंयत, दो गतियोंके संयतासंयत, और मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं। छहों प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

अप्रत्याख्यानावरणीयका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध-व्युच्छेद ही है, क्योंकि, उनका उदयव्युच्छेद नहीं पाया जाता। अप्रत्याख्यानचतुष्कका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवोदयी है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध परोदय होता है, क्योंकि, शुक्ललेश्यामें सब गुणस्थानोंमें स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्क, मनुष्यगतिद्विक और औदारिकद्विकका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धविश्रामका अभाव है। वज्रर्षभसंहननका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है। ऊपर उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो । मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणमोरालियदुगित्थि-णवुंसयवेदपच्चया अवणेयव्वा, देवेसु एदासिमभावादो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स दुगइसंजुत्तो बंधो । अवसेसाणं मणुसगइसंजुत्तो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स तिगइजीवा सामी । अवसेसाणं पयडीणं देवा सामी । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । अपच्चक्खाणचउक्कस्स मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो । उवरि तिविहो, धुवाभावादो । अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

पच्चक्खाणावरणीयस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, संजदासंजदम्मि तदुहयवोच्छेद-दंसणादो । बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो । णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा । णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो, तिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु अपज्जत्तकाले सुहलेस्साणमभावादो । असंजदेसु बंधो देव-मणुसगइसंजुत्तो, संजदासंजदेसु देवगइसंजुत्तो । तिगइअसंजदगुणट्ठाणाणि, दुगइ-संजदासंजदा च सामी । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो ।

विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये । मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्रर्षभसंहननके औदारिकद्विक, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, देवोंमें यहां इन प्रत्ययोंका अभाव है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । शेष प्रत्ययोंका मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कके तीन गतियोंके जीव स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके देव स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । ऊपर तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

प्रत्याख्यानावरणीयका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, संयतासंयत गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है । स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवोदयी प्रकृति है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उसके बन्धविश्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिकमिश्र प्रत्यय कम करना चाहिये, क्योंकि, तिर्यंच और मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें अपर्याप्तकालमें शुभ लेश्याओंका अभाव है । असंयतोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । संयतासंयतोंमें देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । तीन गतियोंके असंयत गुणस्थान और दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । ऊपर तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवरि तिविहो, धुवाभावादो ।

पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, अणियट्टिम्मि तदुहयवोच्छेद-दंसणादो । सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधुवलंभादो । कोधसंजलणस्स बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । पुरिसवेदस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो, सुक्कलेस्सिय-तिरिक्ख-मणुस्सेसु पुरिसवेदं मोत्तूणण्णवेदाणं बंधाभावादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडि-बंधाभावादो । पच्चया सुगमा । णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो । चदुसु असंजदगुणट्ठाणेसु दुगइसंजुत्तो, उवरि देवगइसंजुत्तो बंधो अगइसंजुत्तो वा । तिगइअसंजदगुणट्ठाणाणि दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी । बंधद्धाणं सुगमं । अणियट्टिअद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । कोधसंजलणस्स मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो । उवरि तिविहो, धुवाभावादो । पुरिसवेदस्स सादि-अद्धुवो, अद्धुव-बंधित्तादो ।

माण-माया-लोहसंजलणाणं कोहसंजलणभंगो । णवरि बंधवोच्छेदपदेसो जाणिय वत्तव्वो ।

वहां ध्रुव बन्धका अभाव है ।

पुरुषवेद और संज्वलनक्रोधका बन्ध व उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है । स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे ही बन्ध पाया जाता है । संज्वलन-क्रोधका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी है । पुरुषवेदका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, शुक्ल-लेश्यावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें पुरुषवेदको छोड़कर अन्य वेदोंके बन्धका अभाव है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिकमिश्र प्रत्यय कम करना चाहिये । चार असंयत गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त और ऊपर देवगतिसे संयुक्त अथवा अगतिसंयुक्त बन्ध होता है । तीन गतियोंके असंयत गुणस्थान, दो गतियोंके संयतासंयत, और मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । अनिवृत्तिकरणकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । संज्वलनक्रोधका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । ऊपर तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है । पुरुषवेदका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी है ।

संज्वलन मान, माया और लोभकी प्ररूपणा संज्वलनक्रोधके समान है । विशेषता इतनी है कि बन्धव्युच्छेदस्थानको जानकर कहना चाहिये ।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, अपुव्वकरणचरिमसमए तदुहय-वोच्छेददंसणादो । बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो। मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति हस्स-रदीणं बंधो सांतरो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । भय-दुगुंछाणं णिरंतरो, धुवबंधित्तादो। पच्चया सुगमा। णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्स-पच्चओ अवणेयव्वो । मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु मणुस-देवगइसंजुत्तो। उवरि देवगइसंजुत्तो अगइसंजुत्तो च। तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । भय-दुगुंछाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो। उवरि तिविहो, धुवाभावादो । हस्स-रदीणं सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

मणुसाउअस्स बंधवोच्छेदो चेव, सुक्कलेस्साए उदयवोच्छेदाणुवलंभादो। परोदओ बंधो, सुक्कलेस्साए सव्वत्थ सोदएण बंधविरोहादो। णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा । णवरि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु ओरालियदुग-

....

हास्य, रति, भय और जुगुप्साका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें उन दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है। बन्ध उनका स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी हैं। मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक हास्य व रतिका सान्तर बन्ध होता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। भय और जुगुप्साका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं। प्रत्यय सुगम हैं। विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये । मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें मनुष्य और देव गतिसे संयुक्त बन्ध होता है। ऊपर देवगतिसंयुक्त और अगतिसंयुक्त बन्ध होता है। तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके संयतासंयत, तथा मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं । भय और जुगुप्साका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं। ऊपर तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुवबन्धका अभाव है। हास्य और रतिका सर्वत्र सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

मनुष्यायुका केवल बन्धव्युच्छेद ही होता है, क्योंकि, शुक्ललेश्यामें उसका उदय-व्युच्छेद नहीं पाया जाता। परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, शुक्ललेश्यामें सर्वत्र स्वोदयसे उसके बन्धका विरोध है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके विना उसके बन्ध-विश्रामका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं। विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-इत्थि-णउंसयवेदपच्चया अवणेदव्वा । मणुसगइसंजुत्तो । देवा सामी । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो त्ति बंधद्धाणं । बंधवोच्छिण्णट्ठाणं सुगमं । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

देवाउअस्स पुव्वमुदयस्स पच्छा बंधस्स वोच्छेदो, अप्पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । परोदओ बंधो, सोदएण बंधविरोहादो । णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा । णवरि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मा-दिट्ठीसु वेउव्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेयव्वा । देवगइसंजुत्तो बंधो । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति तिरिक्ख-मणुसा सामी । उवरि मणुसा चेव । बंधद्धाणं सुगमं । अप्पमत्तद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

देवगइ-वेउव्वियदुगाणं पुव्वमुदयस्स पच्छा बंधस्स वोच्छेदो, अपुव्वासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधवोच्छेदो चेव, सुक्कलेस्साए उदयवोच्छेदाणुव-लंभादो । देवगइ-वेउव्वियदुगाणं परोदओ बंधो, सोदएण बंधविरोहादो । पंचिंदियजादि-तेजा-

---

और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिकद्विक, वैक्रियिकमिश्र, कार्मण काययोग, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है । देव स्वामी हैं । मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान बन्धाध्वान है । बन्धव्युच्छेदस्थान सुगम है । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी है ।

देवायुके पूर्वमें उदयका और पश्चात् बन्धका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, अप्रमत्त और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे उसके बन्धका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके विना उसके बन्धविश्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें वैक्रियिकद्विक, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत तक तिर्यंच व मनुष्य स्वामी हैं । ऊपर मनुष्य ही स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । अप्रमत्तकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी है ।

देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके पूर्वमें उदयका और पश्चात् बन्धका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण व असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमशः उनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । शेष प्रकृतियोंका केवल बन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, शुक्ललेश्यामें उनका उदयव्युच्छेद नहीं पाया जाता । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका परोदय बन्ध

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिर-सुह-णिमिणाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो। समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधाविरोहादो। उवघाद-परघादुस्सास-पत्तेयसरीराणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधो सोदय-परोदओ। अण्णत्थ सोदओ चेव, अपज्जत्तद्धाभावादो। णवरि पमत्तसंजदेसु परघादुस्सासाणं सोदय-परोदओ। सुभगादेज्जाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति बंधो सोदय-परोदओ। उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो। देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-रस-गंध-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिणणामाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधित्तुवलंभादो। समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीसु सांतर-णिरंतरो। होदु णाम सुक्कलेस्सिय-तिरिक्ख-मणुस्सेसु देवगइसंजुत्तं बंधमाणेसु णिरंतरो बंधो, ण सांतरो? ण, देवेसु सुक्कलेस्सिएसु

होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है। पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, शुभ और निर्माणका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवोदयी हैं। समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे ही इनके बन्धमें कोई विरोध नहीं है। उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। अन्य गुणस्थानोंमें स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अपर्याप्तकालका अभाव है। विशेषता इतनी है कि प्रमत्तसंयतोंमें परघात और उच्छ्वासका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। सुभग और आदेयका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है।

देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, रस, गन्ध, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर और निर्माण नामकर्मोंका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनमें ध्रुवबन्धीपना पाया जाता है। समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर और आदेयका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका—इन प्रकृतियोंको देवगतिसे संयुक्त बांधनेवाले शुक्ललेश्यावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध भले ही हो, परन्तु सान्तर बन्ध होना सम्भव नहीं है?

समाधान—ऐसा नहीं है, क्योंकि, शुक्ललेश्यावाले देवोंमें उनका सान्तर बन्ध

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

सांतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। थिर-सुभाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो।

पच्चया सुगमा। देवगइ-वेउव्वियदुगाणं बंधो देवगइसंजुत्तो। सेसाणं पयडीणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु देव-मणुसगइसंजुत्तो। उवरि देवगइसंजुत्तो। देवगइ-वेउव्वियदुगाणं दुगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी। अवसेसाणं पयडीणं बंधस्स तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी। बंधद्धाणं सुगमं। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुलहुव-उवघाद-णिमिणाणं[1] मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो। उवरि तिविहो, धुवबंधित्तादो। सेसाणं पयडीणं सादि-अद्धुवो बंधो।

आहारदुगस्स ओघभंगो। तित्थयरस्स वि ओघभंगो। दुगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो मणुस-

पाया जाता है।

ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। स्थिर और शुभका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सान्तर बन्ध होता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है।

प्रत्यय सुगम हैं। देवगति और वैक्रियिकद्विकका बन्ध देवगतिसंयुक्त होता है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त होता है। ऊपर देवगतिसे संयुक्त होता है।

देवगति और वैक्रियिकद्विकके दो गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि व संयतासंयत; तथा मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंके बन्धके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि; दो गतियोंके संयतासंयत, तथा मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं। बन्धाध्वान सुगम है। अपूर्वकरणकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है।

तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात और निर्माणका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। ऊपर तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है।

आहारकद्विककी प्ररूपणा ओघके समान है। तीर्थंकर प्रकृतिकी भी प्ररूपणा ओघके समान है। विशेषता इतनी है कि उसके दो गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि और

१ प्रतिषु '-णिमिणस्स' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गइसंजदासंजदप्पहुडिओ च[1] सामी ।

णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स मणजोगिभंगो ॥ २७३ ॥

ओघादो को एत्थ विसेसो? ण, ओघम्मि अबंधगाणमुवलंभादो। एत्थ पुण ते णत्थि, अजोगीसु लेस्साभावादो। का लेस्सा णाम? जीव-कम्माणं संसिलेसणयरी[2], मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगा[3] त्ति भणिदं होदि। सेसं जसकित्तिभंगो।

बेट्ठाणि-एक्कट्ठाणीणं णवगेवज्जविमाणवासियदेवाणं भंगो ॥ २७४ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स अत्थो उच्चदे। तं जहा— थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचा-

---

मनुष्यगतिके संयतासंयतादिक स्वामी हैं।

परन्तु विशेष इतना है कि सातावेदनीयकी प्ररूपणा मनोयोगियोंके समान है ॥२७३॥

शंका—ओघसे यहां क्या भेद है?

समाधान—नहीं, क्योंकि ओघमें सातावेदनीयके अबन्धक पाये जाते हैं। किन्तु यहां वे नहीं हैं, कारण कि अयोगी जीवोंमें लेश्याका अभाव है।

शंका—लेश्या किसे कहते हैं?

समाधान—जो जीव व कर्मका सम्बन्ध कराती है वह लेश्या कहलाती है। अभिप्राय यह कि मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योग, ये लेश्या हैं।

शेष विवरण यशकीर्ति के समान है।

द्विस्थानिक और एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा नौ ग्रैवेयक विमानवासी देवोंके समान है ॥ २७४ ॥

इस देशामर्शक सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है— स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, चार संस्थान, चार संहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग,

---

१ आप्रतौ '-संजदासंजदप्पहुडिसंजदाओ च' इति पाठः।

२ अ-आप्रत्योः 'संकिलिस्सणयरि', काप्रतौ 'संकिलिस्सणेरइय' इति पाठः।

३ अप्रतौ 'कसायाजोगा' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोदाणि बेट्ठाणपयडीओ। एत्थ अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा। सेसाणं पयडीणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, तहोवलंभादो। एदासिं सव्वासिं पयडीणं पि बंधो परोदओ। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो। इत्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमुवलंभादो। पच्चया सुगमा। णवरि ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो। इत्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं ओरालियदुगित्थि-णउंसयवेदपच्चया अवणेयव्वा, सुक्कलेस्साए एदासिं[1] बंधाभावादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं देव-मणुसगइसंजुत्तो। सेसाणं मणुसगइ-संजुत्तो, देवगईए सह बंधविरोहादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं तिगइजीवा सामी। सेसाणं पयडीणं बंधस्स देवा सामी। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। सासणे दुविहो, अणाइ-धुवाभावादो। सेसाणं पयडीणं

दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, ये द्विस्थानिक प्रकृतियां हैं। इनमें अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं। शेष प्रकृतियोंका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, वैसा पाया जाता है। इन सब ही प्रकृतियोंका बन्ध परोदय होता है। स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी हैं। स्त्रीवेदका, चार संस्थान, चार संहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी इनका बन्धविश्राम पाया जाता है। प्रत्यय सुगम हैं। विशेष इतना है कि औदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये। स्त्रीवेद, चार संस्थान, चार संहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रके औदारिकद्विक, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, शुक्ललेश्यामें इन प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका देव व मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। शेष प्रकृतियोंका मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, देवगतिके साथ उनके बन्धका विरोध है। स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कके तीन गतियोंके जीव स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंके बन्धके देव स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छित्तिस्थान सुगम हैं। ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अनादि और ध्रुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है,

१ अ-काप्रत्योः 'सुक्कलेस्साए तिगइमणुस्सेसा एदासिं', आप्रतौ 'सुक्कलेस्साए तिगइमणुस्सस्स एदासिं' इति पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणि एगट्ठाणपयडीओ । एत्थ मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, मिच्छाइट्ठिम्हि चेव तदुहयदंसणादो । णउंसयवेद-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, तहोवलंभादो । हुंडसंठाणस्स बंधवोच्छेदो चेव, सुक्कलेस्साए उदयवोच्छेदाभावादो । मिच्छत्तस्स बंधो सोदओ । सेसाणं तिण्णं पि परोदओ । मिच्छत्तस्स णिरंतरो । सेसाणं सांतरो । मिच्छत्तस्स दुगइसंजुत्तो । सेसाणं मणुसगइसंजुत्तो । मिच्छत्तस्स तिगइया सामी । सेसाणं देवा । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । मिच्छत्तस्स चउव्विहो बंधो । सेसाणं सादि-अद्धुवो ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धियाणमोघं ॥ २७५ ॥

णत्थि एत्थ ओघपरूवणादो को वि विसेसो, तेण ओघमिदि जुज्जदे ।

क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, ये एकस्थान प्रकृतियां हैं । इनमें मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही वे दोनों देखे जाते हैं । नपुंसकवेद और असंप्राप्त-सृपाटिकासंहननका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, वैसा पाया जाता है । हुण्डसंस्थानका बन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, शुक्ललेश्यामें उसके उदयव्युच्छेदका अभाव है । मिथ्यात्वका बन्ध स्वोदय होता है । शेष तीनों प्रकृतियोंका परोदय बन्ध होता है । मिथ्यात्वका निरन्तर और शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है । मिथ्यात्वका दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । मिथ्यात्वके बन्धके तीन गतियोंके जीव स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके देव स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं । मिथ्यात्वका चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

भव्यमार्गणानुसार भव्यसिद्धिक जीवोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २७५ ॥

चूंकि यहां ओघप्ररूपणासे कोई भेद नहीं है अत एव ' ओघके समान है ' ऐसा कहना योग्य है ।

१ अ-काप्रत्योः ' तदुदय- ' इति पाठः ।

अभवसिद्धिएसु पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-चदुआउ-चदुगइ-पंचजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-चत्तारिआणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-बादर-थावर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २७६ ॥

सुगमं ।

सव्वे एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २७७ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स अत्थपरूवणा कीरदे — एदासु पयडीसु एत्थ ण कासिं पि बंधोदयवोच्छेदो अत्थि, उवलंभमाणाणं वोच्छेदविरोहादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-

....

अभव्यसिद्धिक जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, चार आयु, चार गतियां, पांच जातियां, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, छह संस्थान, औदारिक व वैक्रियिक अंगोपांग, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, चार आनुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, बादर, स्थावर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच व ऊंच गोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २७६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

ये सभी बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २७७ ॥

इस देशामर्शक सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते हैं — इन प्रकृतियोंमें यहां किन्हींके भी बन्ध और उदयका व्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, विद्यमान होनेसे उन दोनोंके व्युच्छेदका विरोध है । पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, तैजस व कार्मण शरीर,

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

मिच्छत्त-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो। पंचदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्ख-मणुस्साउ-तिरिक्ख-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालियसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरंगोवंग-छसंघडण-तिरिक्ख-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णीचुच्चागोदाणं सोदय-परोदओ बंधो। देवाउ-णिरयाउ-देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीरंगोवंगाणं परोदओ बंधो, सोदएण बंधविरोहादो।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-चत्तारिआउ-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। सादासाद-इत्थि-णउंसयवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-णिरयगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-पंचसंठाण-छसंघडण-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदव-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो।

वर्णादिक चार, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है। पांच दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिकशरीर, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, तिर्यग्गति व मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और नीच व ऊंच गोत्रका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। देवायु, नारकायु, देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, नरकगति नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और वैक्रियिकशरीरांगोपांगका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है।

पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, चार आयु, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविश्रामका अभाव है। साता व असाता वेदनीय, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, पांच संस्थान, छह संहनन, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी इनका बन्धविश्राम देखा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरिसवेदस्स बंधो सांतर-णिरंतरो । कुदो ? पम्म-सुक्कलेस्सिएसु णिरंतरबंधुवलंभादो । देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्वियसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो । कुदो ? असंखेज्जवासाउअ-सुहतिलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु च णिरंतरबंधुवलंभादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं बंधो सांतर-णिरंतरो । कुदो ? आणदादिदेवेसु णिरंतरबंधुवलंभादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं बंधो सांतर-णिरंतरो । कुदो ? तेउ-वाउकाइएसु सत्तमपुढवीणेरइएसु च णिरंतरबंधुवलंभादो । ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंगाणं सांतर-णिरंतरो, सणक्कुमारादि-देव-णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो ।

सव्वकम्माणं पंचवंचास पच्चया । णवरि तिरिक्ख-मणुस्साउआणं तेवंचास पच्चया, वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । देव-णिरयाउआणं एक्कवंचास पच्चया, वेउव्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगाणमेक्कवंचास पच्चया, वेउव्विय-

....

जाता है । पुरुषवेदका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, पद्म और शुक्ल लेश्यावाले जीवोंमें उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्रका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, असंख्यातवर्षायुष्क और शुभ तीन लेश्यावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, आनतादिक देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तेज व वायु कायिक जीवोंमें तथा सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । औदारिकशरीर और औदारिकशरीरांगोपांगका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सनत्कुमारादि देव व नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

सब कर्मोंके पचवन प्रत्यय हैं । विशेष इतना है कि तिर्यगायु और मनुष्यायुके तिरेपन प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका अभाव है । देवायु और नारकायुके इक्यावन प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैक्रियिकद्विक, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका अभाव है । देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, नरकगति, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगके इक्यावन प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैक्रियिकद्विक,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुगोरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं तेवंचास पच्चया, वेउव्वियदुगाभावादो ।

सादावेदणीय-इत्थि-पुरिसवेद-हस्स-रदि-पसत्थविहायगइ-समचउरससंठाण-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं तिगइसंजुत्तो बंधो, णिरयगईए अभावादो । णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं णिरयगइसंजुत्तो । देवाउ-देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं देवगइसंजुत्तो । मणुसाउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मणुसगइसंजुत्तो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणं चदुजादि-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो । वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं देव-णिरयगइसंजुत्तो । ओरालिय-सरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-चउसंठाण-छसंघडण-अपज्जत्तणामकम्माणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो बंधो । हुंडसंठाण-अप्पसत्थविहायगइ-अथिर-असुह-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं तिगइसंजुत्तो, देवगईए अभावादो । उच्चागोदस्स दुगइसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणमभावादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधो चउगइसंजुत्तो ।

देवाउ-णिरयाउ-देवगइ-णिरयगइ-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-वेउव्वियस्सरीर-

---

औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका अभाव है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणके तिरेपन प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके वैक्रियिकद्विकका अभाव है ।

सातावेदनीय, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, हास्य, रति, प्रशस्तविहायोगति, समचतुरस्र-संस्थान, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिका तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, इनके साथ नरकगतिके बन्धका अभाव है । नारकायु, नरकगति और नरकगति-प्रायोग्यानुपूर्वीका नरकगतिसंयुक्त बन्ध होता है । देवायु, देवगति और देवगतिप्रायोग्यानु-पूर्वीका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानु-पूर्वीका मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति व तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी तथा चार जातियां, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणका तिर्यग्गतिसंयुक्त बन्ध होता है । वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगका देव एवं नरक गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, चार संस्थान, छह संहनन और अपर्याप्त नामकर्मोंका तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । हुण्डसंस्थान, अप्रशस्तविहायोगति, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, इनके साथ देवगतिके बन्धका अभाव है । उच्चगोत्रका दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, उसके साथ नरकगति और तिर्यग्गतिका बन्ध नहीं होता । शेष प्रकृतियोंका बन्ध चारों गतियोंसे संयुक्त होता है ।

देवायु, नारकायु, देवगति, नरकगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंगोवंग-णिरयगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणं बंधस्स तिरिक्ख-मणुसा सामी। एइंदियजादि-आदाव-थावराणं तिगइमिच्छाइट्ठी सामी, णेरइयाणमभावादो। अवसेसाणं पयडीणं चउगइमिच्छाइट्ठी सामी, तेसिं तब्बंधविरोहाभावादो।

बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि गुणट्ठाणे अद्धाणविरोहादो। बंधवोच्छेदो वि णत्थि, एत्थ उत्तासेसपयडीणं बंधुवलंभादो। बज्झमाणपयडीसु धुवबंधीणमणादिओ धुवो बंधो। अवसेसाणं सादि-अद्धुवो।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीसु खइयसम्माइट्ठीसु आभिणिबोहिय-णाणिभंगो ॥ २७८ ॥

जहा आभिणिबोहियणाणपरूवणा कदा तधा णिरवसेसा कायव्वा, विसेसाभावादो। णवरि खइयसम्माइट्ठिसंजदासंजदेसु उच्चागोदस्स सोदओ णिरंतरो बंधो, तिरिक्खेसु खइय-सम्माइट्ठीसु संजदासंजदाणमणुवलंभादो। मणुसाउअं बंधमाणाणमित्थिवेदपच्चओ णत्थि, देव-णेरइएसु इत्थिवेदखइयसम्माइट्ठीणमभावादो। एत्तिओ चेव विसेसो। अण्णो जदि अत्थि सो

वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, नरकगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर, इनके बन्धके तिर्यंच व मनुष्य स्वामी हैं। एकेन्द्रिय जाति, आताप और स्थावरके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नारकियोंके इनका बन्ध नहीं होता। शेष प्रकृतियोंके बन्धके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, उनके इन प्रकृतियोंके बन्धका कोई विरोध नहीं है।

बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है। बन्धव्युच्छेद भी नहीं है, क्योंकि, यहां सूत्रोक्त सब प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है। बध्यमान प्रकृतियोंमें ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका अनादि व ध्रुव बन्ध होता है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है।

सम्यक्त्वमार्गणानुसार सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें आभिनिबोधिक-ज्ञानियोंके समान प्ररूपणा है ॥ २७८ ॥

जिस प्रकार आभिनिबोधिकज्ञानी जीवोंकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार पूर्णरूपसे यहां भी करना चाहिये, क्योंकि, उनसे यहां कोई भेद नहीं है। विशेष इतना है कि क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंमें उच्चगोत्रका स्वोदय एवं निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तिर्यंच क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें संयतासंयत जीव पाये नहीं जाते। मनुष्यायुको बांधनेवाले जीवोंके स्त्रीवेद प्रत्यय नहीं है, क्योंकि, देव व नारकियोंमें स्त्रीवेदी क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंका अभाव है। इतनी ही यहां विशेषता है। अन्य कोई यदि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिंतिय वत्तव्वो। पयडिबंधगयभेदपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ २७९ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा। सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २८० ॥

एदं पि सुगमं, बहुसो उत्तत्थत्तादो[1] ।

वेदयसम्मादिट्ठीसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादावेदणीय-चउसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछ-देवगदि-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-

---

विशेषता है तो उसे विचारकर कहना चाहिये। प्रकृतिबन्धगत भेदके प्ररूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

विशेष यह कि सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥२७९॥

यह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं। सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २८० ॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, इसका अर्थ बहुत वार कहा जा चुका है।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर,

---

१ प्रतिषु 'बत्तद्धादो' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २८१ ॥

एत्थ अक्खसंचारं काऊण पण्णारस पण्णभंगा उप्पाएयव्वा । सेसं सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २८२ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स परूवणा कीरदे— देवगइ-वेउव्वियदुगाणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदओ वोच्छिण्णो पुव्वमेव । बंधवोच्छेदो णत्थि, उवरिम्हि बंधुवलंभादो । तित्थयरस्स णत्थि उदयवोच्छेदो, एदेसु उदयाभावादो । बंधवोच्छेदो वि णत्थि, उवलंभमाणत्तादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधोदयाणं दोण्णं पि वोच्छेदाभावादो उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति ण परिक्खा कीरदे ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध रस-फास-अगुरुवलहुव-तस-बादर-पज्जत्त-थिर-सुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवो-

---

पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २८१ ॥

यहां अक्षसंचार करके चौदह गुणस्थान और सिद्धोंके आश्रयसे एक संयोगी पन्द्रह प्रश्नभंगोंको उत्पन्न करना चाहिये । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २८२ ॥

इस देशामर्शक सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं—देवगति और वैक्रियिकद्विकका उदय असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें पूर्वमें ही व्युच्छिन्न हो जाता है । बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, ऊपर बन्ध पाया जाता है । तीर्थंकर प्रकृतिका उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टियोंमें उसके उदयका अभाव है । उसके बन्धका व्युच्छेद भी नहीं है, क्योंकि, वह पाया जाता है । शेष प्रकृतियोंके बन्ध और उदय दोनोंके भी व्युच्छेदका अभाव होनेसे 'उदयकी अपेक्षा बन्ध पूर्वमें अथवा पश्चात् व्युच्छिन्न होता है' यह परीक्षा नहीं की जाती है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, शुभ, निर्माण और पांच

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दयत्तादो । णिद्दा-पयला-सादावेदणीय-चउसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछ-समचउरस-संठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सोदय-परोदओ बंधो, दोहि वि पयोरेहि बंधुवलंभादो । देवगइ-वेउव्वियदुग-तित्थयराणं परोदओ बंधो, सोदएण बंधविरोहादो । उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं असंजदसम्मादिट्ठिम्हि बंधो सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव, तत्थ अपज्जत्तद्धाए अभावादो । णवरि पमत्तसंजदम्मि परघादुस्सासाणं सोदय-परोदओ । सुभगादेज्ज-जसकित्तीणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि बंधो सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो । उच्चागोदस्स असंजदसम्मादिट्ठीसु संजदासंजदेसु बंधो सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-चदुसंजलण-पुरिसवेद-भय-दुगुंछ-देवगइ-पंचिंदिय-जादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं बंधो णिरंतरो,

---

अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवोदयी हैं । निद्रा, प्रचला, सातावेदनीय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों भी प्रकारोंसे उनका बन्ध पाया जाता है । देवगतिद्विक, वैक्रियिकद्विक और तीर्थकरका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है । उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अपर्याप्तकालका अभाव है । विशेषता इतनी है कि प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें परघात और उच्छ्वासका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । सुभग, आदेय और यशकीर्तिका असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । उच्चगोत्रका असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगसमएण बंधुवरमाभावादो । सादावेदणीय-हस्स-रदि-थिर-सुभ-जसकित्तीणं असंजदसम्मादिट्ठि-प्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधो सांतरो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो ।

पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो । देवगइ-वेउव्वियदुगाणं देवगइ-संजुत्तो । सेसाणं पयडीणं असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधो दुगइसंजुत्तो । उवरिमेसु देवगइसंजुत्तो । देवगइ-वेउव्वियदुगाणं तिरिक्ख-मणुसअसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदा सामी । तित्थयरस्स तिगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो सामी, तिरिक्खगईए अभावादो । उवरिमा मणुसा चेव, तेसिमण्णत्थाभावादो । सेसाणं पयडीणं चउगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइ-संजदा च सामी । बंधद्धाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति वयणादो । धुवबंधीणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो । सेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-जसकित्तिणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २८३ ॥

एत्थ पण्णभंगा जाणिय वत्तव्वा ।

एक समयसे इनके बन्धविश्रामका अभाव है । सातावेदनीय, हास्य, रति, स्थिर, शुभ और यशकीर्तिका असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सान्तर बन्ध होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे कोई विशेषता नहीं है । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके तिर्यंच व मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि एवं संयतासंयत स्वामी हैं । तीर्थंकर प्रकृतिके तीन गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, तिर्यग्गतिमें उसके बन्धका अभाव है । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, उनका अन्य गतियोंमें अभाव है । शेष प्रकृतियोंके चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके संयतासंयत और मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, 'अबन्धक नहीं हैं' ऐसा सूत्रमें निर्दिष्ट है । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्त्ति नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २८३ ॥

यहां प्रश्नभंगोंको जानकर कहना चाहिये ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २८४ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— अरदि-सोग-असादावेदणीय-अथिर-असुभाणं बंधवोच्छेदो चेव । उदयवोच्छेदो णत्थि, उवरिम्हि उदयस्सुवलंभादो । अजसकित्तीए पुव्वमुदयस्स पच्छा बंधस्स वोच्छेदो, पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । असादावेदणीय-अरदि-सोगाणं बंधो सोदय-परोदओ, दोहि वि पयारेहि बंधुवलंभादो । अथिर-असुहाणं सोदओ चेव, धुवोदयत्तादो । अजसकित्तीए असंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदय-परोदओ । उवरि परोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो । एदासिं छण्हं पयडीणं बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो ।

पच्चया सुगमा, बहुसो उत्तत्तादो[1] । देव-मणुसगइसंजुत्तो चेव, अण्णगइबंधाभावादो । चउगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी । बंधद्धाणं बंध-वोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । सव्वासिं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २८४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—अरति, शोक, असातावेदनीय, अस्थिर और अशुभका बन्धव्युच्छेद ही है । उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, ऊपर उनका उदय पाया जाता है । अयशकीर्तिके पूर्वमें उदयका और पश्चात् बन्धका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, प्रमत्तसंयत और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । असातावेदनीय, अरति और शोकका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों ही प्रकारोंसे बन्ध पाया जाता है । अस्थिर और अशुभका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी हैं । अयशकीर्तिका असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । ऊपर परोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । इन छह प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम देखा जाता है ।

प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, बहुत वार कहे जा चुके हैं । देव और मनुष्य गतिसे संयुक्त ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहां अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है । चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके संयतासंयत, और मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छित्तिस्थान सुगम हैं । सब प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

१ प्रतिषु ' उत्तत्थादो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपच्चक्खाणावरणीयकोह-माण-माया-लोह-मणुस्साउ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुसाणुपुव्वीणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २८५ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २८६ ॥

अपच्चक्खाणावरणचउक्क-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि तदुहयवोच्छेदुवलंभादो । मणुसगइ-मणुसाउ-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं बंधवोच्छेदो चेव, उवरिं पि[1] उदयदंसणादो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स बंधो सोदय-परोदओ । सेसाणं परोदओ चेव, सोदएण बंधविरोहादो । दसण्णं पयडीणं बंधो णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स चालीस पच्चया । मणुसाउअस्स बादालीस, ओरालियदुग-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । सेसाणं चोदालीस,

---

अप्रत्याख्यानावरणीय क्रोध, मान, माया, लोभ, मनुष्यायु, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन और मनुष्यानुपूर्वी नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २८५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २८६ ॥

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्क और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध व उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । मनुष्यगति, मनुष्यायु, औदारिकशरीरांगोपांग और वज्रर्षभसंहननका केवल बन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, ऊपर भी उनका उदय देखा जाता है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है । शेष प्रकृतियोंका परोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है । दशों प्रकृतियोंका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धविश्रामका अभाव है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कके चालीस प्रत्यय हैं । मनुष्यायुके ब्यालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिकद्विक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका अभाव है । शेष प्रकृतियोंके चवालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके औदा-

---

१ प्रतिषु ' व ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओरालियदुगाभावादो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स देव-मणुसगइसंजुत्तो । सेसाणं मणुसगइसंजुत्तो, साभावियादो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स चउगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो सामी । सेसाणं देव-णेरइया । बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि अद्धाणविरोहादो । बंधवोच्छिण्णट्ठाणं सुगमं । अपच्च-क्खाणचउक्कस्स तिविहो बंधो, धुवाभावादो । सेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

पच्चक्खाणावरणीयकोह-माण-माया-लोभाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २८७ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २८८ ॥

एदासिं संजदासंजदम्हि अक्कमेण वोच्छिण्णबंधोदयाणं, सोदय-परोदएहि णिरंतर-बंधीणं, असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेसु जहाकमेण छादाल-सत्तत्तीसपच्चयाणं, देव-मणुसगइ-संजुत्तबंधाणं, चउगइ-दुगइअसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदसामीयाणं, असंजदसम्मादिट्ठि-संजदा-

---

रिकद्विकका अभाव है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । अप्रत्या-ख्यानावरणचतुष्कके चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके देव व नारकी स्वामी हैं । बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है । बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

प्रत्याख्यानावरणीय क्रोध, मान, माया और लोभका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २८७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २८८ ॥

इन चार प्रकृतियोंका बन्ध और उदय दोनों एक साथ संयतासंयत गुणस्थानमें व्युच्छिन्न होते हैं । स्वोदय-परोदय सहित निरन्तर बन्ध होता है । असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें छयालीस और संयतासंयत गुणस्थानमें सैंतीस प्रत्यय हैं । देव और मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि और दो गतियोंके संयता-संयत स्वामी हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत बन्धाध्वान हैं । संयतासंयत गुण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संजदद्धाणाणं, संजदासंजदम्मि वोच्छिण्णबंधाणं, धुवेण[1] विणा तिविहबंधुवगयाणं परूवणा सुगमा ।

देवाउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ २८९ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा बंधा । अप्पमत्तद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २९० ॥

एदस्स अत्थो उच्चदे । तं जहा — पुव्वमुदओ पच्छा [बंधो] वोच्छिज्जदि, अप्पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । परोदओ, णिरंतरो, असंजदसम्मादिट्ठीसु वेउव्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइय-पच्चयाणमभावादो बादालीसपच्चओ, उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु ओघपच्चओ[2], देवगइसंजुत्तो, दुगइअसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-मणुसगइसंजदसामीओ, असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदद्धाणो, अप्पमत्तद्धाए संखेज्जेसु भागेसु पत्तविलओ, सादि-अद्धुवो, देवाउअस्स बंधो त्ति अवगंतव्वो ।

स्थानमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ध्रुव बन्धके बिना शेष तीन प्रकारका बन्ध होता है । इस प्रकार इनकी प्ररूपणा सुगम है ।

देवायुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २८९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक बन्धक हैं । अप्रमत्तसंयतकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २९० ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है — देवायुका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अप्रमत्त और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । परोदय और निरन्तर बन्ध होता है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें वैक्रियिकद्विक, औदारिकमिश्र और कार्मण काययोग प्रत्ययोंका अभाव होनेसे ब्यालीस प्रत्यय हैं । उपरिम गुणस्थानोंमें ओघके समान प्रत्यय हैं । देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । दो गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि व संयतासंयत, तथा मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत बन्धाध्वान हैं । अप्रमत्तकालके संख्यात बहुभागोंके वीतनेपर बन्धव्युच्छेद होता है । सादि व अध्रुव बन्ध होता है । इस प्रकार देवायुके बन्धकी प्ररूपणा जानना चाहिये ।

---

१ प्रतिषु ' दुवेण ' इति पाठः । २ अप्रतौ ' -पच्चएहु ' इति पाठः ।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २९१ ॥

सुगमं ।

अप्पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २९२ ॥

एदस्स अत्थो सुगमो ।

उवसमसम्मादिट्ठीसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २९३ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा बंधा । सुहुमसांपराइयउवसमद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २९४ ॥

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं बंधवोच्छेदो

आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांग नामकर्मोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २९१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २९२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, ऊंचगोत्र और पांच अन्तरायका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २९३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमक तक बन्धक हैं । सूक्ष्मसाम्परायिकउपशमककालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २९४ ॥

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्त-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चेव । उदयवोच्छेदो णत्थि, खीणकसायादिसु वि एदासिं पयडीणं उदयदंसणादो । तेण उदयवोच्छेदादो बंधवोच्छेदो पुव्वं पच्छा वा होदि त्ति विचारो णत्थि, संतासंताणं सण्णियासविरोहादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो । जसकित्तीए असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो । उच्चागोदस्स असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेसु सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । जसकित्तीए असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधो सांतरो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पच्चया सुगमा । णवरि असंजदसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ, पमत्तसंजदेसु आहारदुगपच्चओ णत्थि । असंजदसम्मादिट्ठीसु एदासिं पयडीणं बंधो देव-मणुसगइसंजुत्तो । उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु देवगइसंजुत्तो अगइसंजुत्तो वा । चउगइअसंजदसम्मादिट्ठी दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा सामीओ । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । धुवबंधीणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो । अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

रायका बन्धव्युच्छेद ही है । उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, क्षीणकषायादिक गुणस्थानोंमें भी इन प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । इसी कारण उदयव्युच्छेदसे बन्धव्युच्छेद पूर्वमें या पश्चात् होता है, यह विचार नहीं है; क्योंकि, सत् और असत्की तुलनाका विरोध है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है । यशकीर्तिका असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । उच्चगोत्रका असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदयाभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं । यशकीर्तिका असंतयसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सान्तर बन्ध होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ऊपर प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिकमिश्र प्रत्यय और प्रमत्तसंयतोंमें आहारकद्विक प्रत्यय नहीं हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें इन प्रकृतियोंका बन्ध देव व मनुष्य गतिसंयुक्त होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवगतिसंयुक्त या अगतिसंयुक्त बन्ध होता है । चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके संयतासंयत, और मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिद्दा-पयलाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २९५ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा । अपुव्वकरणउवसमद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २९६ ॥

एदासिं बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि । उदयवोच्छेदो णत्थि, खीणकसाएसु वि उदय-दंसणादो । सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो । णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । असंजदसम्मादिट्ठीसु पंचेतालीस पच्चया, ओरालियमिस्सपच्चयाभावादो । पमत्तसंजदम्हि बावीस[1] पच्चया, आहारदुगाभावादो । सेसगुणट्ठाणेसु ओघपच्चओ, विसेसाभावादो । असंजदसम्मादिट्ठिम्हि देव-मणुसगइसंजुत्तो, उवरिमेसु देवगइसंजुत्तो, चउगइअसंजदसम्मादिट्ठि-दुगइसंजदासंजद-

निद्रा और प्रचलाका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? २९५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरण उपशम-कालका संख्यातवां भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २९६ ॥

इनका बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है । उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, क्षीणकषाय जीवोंमें भी उनका उदय देखा जाता है । स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवोदयी हैं । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवबन्धी हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें पैंतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिकमिश्र प्रत्ययका वहां अभाव है । प्रमत्तसंयत गुण-स्थानमें बाईस प्रत्यय हैं, क्योंकि, वहां आहारकद्विकका अभाव है । शेष गुणस्थानोंमें ओघ-प्रत्ययोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, ओघसे वहां कोई विशेषता नहीं है । असंयत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त तथा उपरिम गुणस्थानोंमें देवगति-संयुक्त होता है । चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके संयतासंयत, और मनुष्य-

१ अप्रतौ 'पमत्तसंजदा द्दि बावीस', आप्रतौ 'पमत्तसंजद० बावीस', काप्रतौ पमत्तसंजदा बावीस' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणुसगइसंजदसामीओ, अवगयबंधद्धाणो, अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जदिमे भागे गयविणासो, धुवबंधित्तादो तिविहाणो णिद्दा-पयलाणं बंधो ।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ॥ २९७ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीयरागछदुमत्था बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २९८ ॥

बंधवोच्छेदं मोत्तूण उदयवोच्छेदाभावादो, सोदय-परोदयबंधादो, असंजदप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरं बंधिदूणुवरि णिरंतरबंधित्तादो, ओघपच्चएहिंतो असंजदसम्मादिट्ठि-पमत्तसंजदे मोत्तूण अण्णत्थ समाणपच्चयत्तादो, असंजदसम्मादिट्ठि-पमत्तसंजदेसु ओरालिय-मिस्साहारदुगाभावादो, असंजदसम्मादिट्ठीसु दुगइसंजुत्तादो उवरि देवगइसंजुत्तबंधादो, चउगइअसंजदसम्मादिट्ठि-दुगइसंजदासंजद-मणुसगइसंजदसामिबंधादो, बंधेण सादि-अद्धुवत्तादो सुगममेदं ।

गतिके संयत स्वामी हैं । बन्धाध्वान ज्ञात ही है । अपूर्वकरणकालका संख्यातवां भाग बीतनेपर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ध्रुवबन्धी होनेसे निद्रा व प्रचलाका तीन प्रकार बन्ध होता है ।

सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २९७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थ तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं है ॥ २९८ ॥

सातावेदनीयके बन्धव्युच्छेदको छोड़कर उदयव्युच्छेदका अभाव होनेसे, स्वोदय-परोदय बन्ध होनेसे, असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सान्तर बंधकर ऊपर निरन्तरबन्धी होनेसे, असंयतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयतोंको छोड़कर अन्यत्र ओघके समान प्रत्यय युक्त होनेसे, असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिकमिश्र और प्रमत्तसंयतोंमें आहारद्विकका अभाव होनेसे, असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें दो गतियोंसे संयुक्त तथा ऊपर देवगतिसंयुक्त बन्ध होनेसे; चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके संयतासंयत, और मनुष्यगतिके संयत स्वामी होनेसे; तथा बन्धसे सादि व अध्रुव होनेसे यह सूत्र सुगम है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्तिणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २९९ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३०० ॥

सुगममेदं, मदिणाणमग्गणाए परूविदत्थत्तादो ।

अपच्चक्खाणावरणीयमोहिणाणिभंगो ॥ ३०१ ॥

अपच्चक्खाणचउक्क-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसह-संघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं एत्थ गहणं कायव्वं, देसामासियत्तादो । सेसं सुगमं । णवरि ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो । कधं वेउव्वियमिस्स-कम्मइयाणमुवलंभो[1] ? उवसमसम्मत्तेण उवसमसेडिं चडिय कालं काऊण देवेसुप्पण्णाणं तदुवलंभादो ।

असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति नामकर्मोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २९९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ३०० ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, मतिज्ञान मार्गणामें इसके अर्थकी प्ररूपणा की जा चुकी है ।

अप्रत्याख्यानावरणीयकी प्ररूपणा अवधिज्ञानियोंके समान है ॥ ३०१ ॥

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्क, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका यहां ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, यह सूत्र देशामर्शक है । शेष प्ररूपणा सुगम है । विशेष इतना है कि औदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये ।

शंका—वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग यहां कैसे पाये जाते हैं ?

समाधान—उपशमसम्यक्त्वके साथ उपशमश्रेणि चढ़कर और मरकर देवोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके वे दोनों प्रत्यय पाये जाते हैं ।

---

१ प्रतिषु '-मुवलंभादो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णवरि आउवं णत्थि ॥ ३०२ ॥

कुदो ? सम्मामिच्छाइट्ठिस्सेव सव्वुवसमसम्माइट्ठीणमाउअस्स बंधाभावादो ।

पच्चक्खाणावरणचउक्कस्स को बंधो को अबंधो ? ३०३ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदा [बंधा]। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३०४ ॥

एदं पि सुगमं, सुदणाणपरूवणापरूविदत्थत्तादो ।

पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ३०५ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा बंधा। अणियट्टिउवसमद्धाए सेसे संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि ! एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३०६ ॥

विशेष इतना है कि उनके आयु कर्मका बन्ध नहीं है ॥ ३०२ ॥

क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टिके समान ही सर्व उपशामसम्यग्दृष्टियोंके आयुके बन्धका अभाव है ।

प्रत्याख्यानावरणचतुष्कका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ३०३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत [बन्धक] हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ३०४ ॥

यह भी सूत्र सुगम है, क्योंकि, इसके अर्थकी प्ररूपणा श्रुतज्ञानप्ररूपणामें की जा चुकी है ।

पुरुषवेद और संज्वलन क्रोधका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ३०५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरण-उपशमककालके शेषमें संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ३०६ ॥

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

सुगममेदं ।

माण-मायसंजलणाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ३०७ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा बंधा। अणियट्टिउवसमद्धाए सेसे सेसे संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३०८ ॥

एदं पि सुगमं, बहुसो परूविदत्तादो ।

लोभसंजलणस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ३०९ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा बंधा । अणियट्टिउवसमद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३१० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संज्वलन मान और मायाका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ३०७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरण-उपशमकालके शेष शेषमें संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ३०८ ॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, बहुत वार इसकी प्ररूपणा की जाचुकी है ।

संज्वलन लोभका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ३०९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरण-उपशमकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ३१० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एदं पि सुगमं ।

हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ३११ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा । अपुव्वकरणुवसमद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३१२ ॥

एदं पि सुगमं ।

देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-संठाण-वेउव्वियअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-तित्थयरणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ३१३ ॥

सुगमं ।

यह सूत्र भी सुगम है ।

हास्य, रति, भय और जुगुप्साका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है? ॥ ३११ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरण उपशम-कालके अन्तिम समयको प्राप्त होकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ३१२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण और तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ३१३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा। अपुव्वकरणुवसमद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३१४ ॥

एदं पि सुगमं, बहुसो कयपरूवणादो।

आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंगाणं को बंधो को अबंधो? ॥ ३१५ ॥

सुगमं।

अप्पमत्तापुव्वकरणउवसमा बंधा। अपुव्वकरणुवसमद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३१६ ॥

एदं पि सुगमं।

सासणसम्मादिट्ठी मदिणाणिभंगो ॥ ३१७ ॥

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरण उपशमक तक बन्धक हैं। अपूर्वकरण उपशमकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं। ३१४॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, बहुत बार इसकी प्ररूपणा की जा चुकी है।

आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांगका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है? ॥ ३१५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

अप्रमत्त और अपूर्वकरण उपशमक बन्धक हैं। अपूर्वकरण उपशमकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ३१६ ॥

यह सूत्र भी सुगम है।

सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानियोंके समान है ॥ ३१७ ॥

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-अट्ठणोकसाय-तिरिक्ख-मणुस-देवाउ-तिरिक्ख-मणुस-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-पंच-संठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग-पंचसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्ख-मणुस-देवगइपाओ-ग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-दोविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेय-सरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ सासणसम्मादिट्ठीहि बज्झमाणियाओ । एदासिमुदयादो बंधो पुव्वं पच्छा [वा] वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, एत्थ एदासिं बंधोदयवोच्छेदाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । देवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाणं परोदओ बंधो, सोदएण बंधविरोहादो । अव-सेसाणं पयडीणं बंधो सोदय-परोदओ, उहयहा वि बंधुवलंभादो ।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुस-देवाउ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-

---

पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, आठ नोकषाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, देवायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, पांच संस्थान, औदारिक व वैक्रियिक अंगोपांग, पांच संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगति-प्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच व ऊंच गोत्र और पांच अन्तराय, ये प्रकृतियां सासादनसम्यग्दृष्टि जीवों द्वारा बध्यमान हैं। इनका बन्ध उदयसे पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है; क्योंकि, यहां इनके बन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी हैं । देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध स्वोदय-परोदयसे होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे भी उनका बन्ध पाया जाता है ।

पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, मनुष्यायु, देवायु, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरु-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाणुवलंभादो। सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोगित्थिवेद-मज्झिमचउसंठाण-पंचसंघडण-उज्जोव-दोविहायगइ-थिराथिर-सुहासुह-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो। पुरिसवेदस्स बंधो सांतर-णिरंतरो, पम्म-सुक्कलेस्सिएसु तिरिक्ख-मणुस्सेसु णिरंतरबंधुवलंभादो। देवगइ-वेउव्वियदुग-समचउरससंठाण-सुभग-सुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणं बंधो सांतर-णिरंतरो, असंखेज्जवासाउएसु सुहतिलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। मणुसगइदुगस्स बंधो सांतर-णिरंतरो, आणदादिदेवेसु णिरंतरबंधुवलंभादो। तिरिक्खगइदुग-णीचागोदाणं बंधो सांतर-णिरंतरो, सत्तमपुढवीणेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। ओरालियसरीरदुगस्स वि सांतर-णिरंतरो बंधो, देव-णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो।

देवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाणं छादालीस पच्चया, वेउव्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयाणमभावादो। मणुस-तिरिक्खाउआणं सत्तेतालीस पच्चया, ओरालिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो। अवसेसाणं पयडीणं पंचास पच्चया, पंचमिच्छत्तपच्चयाणमभावादो।

लघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम नहीं पाया जाता। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्त्रीवेद, मध्यम चार संस्थान, पांच संहनन, उद्योत, दो विहायोगतियां, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी इनका बन्धविश्राम देखा जाता है। पुरुषवेदका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, पद्म और शुक्ल लेश्यावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। देवगतिद्विक, वैक्रियिकद्विक, समचतुरस्रसंस्थान, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्रका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, असंख्यातवर्षायुष्क और शुभ तीन लेश्यावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। मनुष्यगतिद्विकका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, आनतादिक देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। तिर्यग्गतिद्विक और नीचगोत्रका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। औदारिकशरीरद्विकका भी सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, देव व नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके छयालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैक्रियिकद्विक, औदारिकमिश्र और कार्मण काययोग प्रत्ययोंका अभाव है। मनुष्यायु और तिर्यगायुके सैंतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका अभाव है। शेष प्रकृतियोंके पचास प्रत्यय हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टियोंके पांच मिथ्यात्व प्रत्ययोंका अभाव है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाणं बंधो देवगइसंजुत्तो । मणुसाउ-मणुसगइदुगाणं मणुसगइसंजुत्तो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुज्जोवाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो । ओरालियसरीर-मज्झिमचउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो बंधो । उच्चागोदस्स देव-मणुसगइसंजुत्तो बंधो, तिरिक्खेसुच्चागोदाभावादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधो तिगइसंजुत्तो, णिरयगइबंधाभावादो । देवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाणं तिरिक्ख-मणुसा सामी । सेसाणं पयडीणं बंधस्स सामी चउगइ-सासणा । बंधद्धाणं बंधवोच्छेदो च णत्थि । छादालीसधुवबंधपयडीणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो । अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदभंगो ॥ ३१८ ॥

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइ-देवगइ-

देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका बन्ध देवगति संयुक्त होता है। मनुष्यायु और मनुष्यगतिद्विकका बन्ध मनुष्यगति संयुक्त होता है। तिर्यगायु, तिर्यग्गतिद्विक और उद्योतका बन्ध तिर्यग्गति संयुक्त होता है। औदारिकशरीर, मध्यम चार संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, पांच संहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। उच्चगोत्रका देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, तिर्यंचोंमें उच्चगोत्रका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध तीन गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टियोंके नरकगतिके बन्धका अभाव है।

देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके तिर्यंच व मनुष्य स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी चारों गतियोंके सासादनसम्यग्दृष्टि हैं। बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छेद नहीं है। छ्यालीस ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके ध्रुवबन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा असंयत जीवोंके समान है ॥ ३१८ ॥

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिक व वैक्रियिक अंगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगति व देवगति प्रायोग्यानु-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेय-सरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइय-पयडीओ सम्मामिच्छाइट्ठीहि बज्झमाणियाओ । उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा [वा] वोच्छिण्णो त्ति एसो विचारो णत्थि, पयडीणमेत्थ बंधोदयवोच्छेदाणुवलंभादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो । णिद्दा-पयला-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं बंधो सोदय-परोदओ, उहयहा वि बंधुवलंभादो । मणुसगइ-देवगइ-वेउव्वियसरीर-ओरालिय-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदओ बंधो, सोदएण बंधविरोहादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-पुरिसवेद-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगो-

---

पूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियां सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों द्वारा बध्यमान हैं। उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार यहां नहीं है; क्योंकि, यहां उक्त प्रकृतियोंके बन्ध और उदयका व्युच्छेद नहीं पाया जाता है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवोदयी हैं। निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्त-विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे भी इनका बन्ध पाया जाता है। मनुष्यगति, देवगति, वैक्रियिकशरीर, औदारिक व वैक्रियिक शरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर,

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

वंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुअ-उव-घाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधदंसणादो । सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरम-दंसणादो ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसह-संघडणाणं बादालीस पच्चया, ओरालियकायजोगाभावादो । देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवगाणं पि बादालीस पच्चया, वेउव्वियकायजोगा-भावादो । अवसेसाणं तेदालीस पच्चया, पंचमिच्छत्ताणुबंधिचउक्कोरालिय-वेउव्विय-मिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं बंधो मणुसगइसंजुत्तो । देवगइ-वेउव्वियदुगाणं देवगइसंजुत्तो । सेससव्वपयडीणं देव-मणुसगइसंजुत्तो । मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं देव-णेरइया सामी । देवगइ-वेउव्वियदुगाणं तिरिक्ख-मणुसा सामी । सेसाणं पयडीणं बंधस्स सामी

....

समचतुरस्रसंस्थान, औदारिक व वैक्रियिक शरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनका ध्रुवबन्ध देखा जाता है। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी इनका बन्धविश्राम देखा जाता है।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिक शरीर, औदारिकशरीरांगो-पांग और वज्रर्षभसंहननके ब्यालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिककाययोगका अभाव है। देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिक-शरीरांगोपांगके भी ब्यालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, यहां वैक्रियिककाययोगका अभाव है। शेष प्रकृतियोंके तेतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, पांच मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, औदारिक-मिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका मिश्रगुणस्थानमें अभाव है।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्रर्षभसंहननका बन्ध मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है। देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका बन्ध देवगति संयुक्त होता है। शेष सब प्रकृ-तियोंका बन्ध देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त होता है। मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक व वज्र-र्षभसंहननके देव व नारकी स्वामी हैं। देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके तिर्यंच व मनुष्य स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी चारों गतियोंके सम्यग्मिथ्यादृष्टि हैं। बन्धाध्वान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउगइसम्मामिच्छाइट्ठिणो । बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि अद्धाणविरोहादो । बंधवोच्छेदो वि णत्थि, एत्थ सव्वासिं बंधुवलंभादो[1] । धुवबंधिपयडीणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो । सेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

मिच्छाइट्ठीणमभवसिद्धियभंगो ॥ ३१९ ॥

सुगममेदं सुत्तं, विसेसाभावादो । णवरि धुवबंधिपयडीणं चउव्विहो बंधो, सादि-सांतर-बंधुवलंभादो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु जाव तित्थयरे त्ति ओघभंगो ॥ ३२० ॥

एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं परोदयत्तुव-लंभादो पंचिंदियजादि-तस-बादराणं सोदयबंधुवलंभादो णेदं सुत्तं जुज्जदे ? ण, देसामासिय-

---

नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है। बन्धव्युच्छेद भी नहीं है, क्योंकि, यहां सब प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है। ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवबन्धका यहां अभाव है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

मिथ्यादृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा अभव्यसिद्धिक जीवोंके समान है ॥ ३१९ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, यहां कोई विशेषता नहीं है। भेद इतना है कि ध्रुव-बन्धी प्रकृतियोंका यहां चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, सादि व सान्तर अर्थात् अध्रुव बन्ध पाया जाता है।

संज्ञिमार्गणानुसार संज्ञी जीवोंमें तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ ३२० ॥

शंका—चूंकि यहां एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण प्रकृतियोंका बन्ध परोदयसे और पंचेन्द्रिय जाति, त्रस व बादरका बन्ध स्वोदयसे पाया जाता है, अतएव यह सूत्र युक्त नहीं है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, देशामर्शक सूत्रोंमें इस प्रकारकी

---

१ प्रतिषु अतोऽग्रे ' एगूणचालीसपच्चया ' इत्यधिकः पाठः समुपलभ्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुत्तेसु एवंविहभेदाविरोहादो । पयडिबंधद्धाणणिबंधणभेदपदुप्पायणट्ठमाह—

णवरि विसेसो[1] सादावेदणीयस्स चक्खुदंसणिभंगो ॥ ३२१ ॥

सुगममेदं ।

असण्णीसु अभवसिद्धियभंगो ॥ ३२२ ॥

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-चउ-आउ-चउगइ-पंचजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-चउआणुपुव्वी-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदाउज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ असण्णीहि बज्झमाणियाओ । उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति परिक्खा णत्थि, एत्थेदासिं बंधोदयवोच्छेदाभावादो ।

विशेषता विरोधसे रहित है ।

प्रकृतियोंके बन्धाध्वाननिमित्तक भेदके प्ररूपणार्थ सूत्र कहते हैं—

परन्तु विशेषता इतनी है कि सातावेदनीयकी प्ररूपणा चक्षुदर्शनी जीवोंके समान है ॥ ३२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंज्ञी जीवोंमें बन्धोदयव्युच्छेदादिकी प्ररूपणा अभव्यसिद्धिक जीवोंके समान है ॥ ३२२ ॥

पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, चार आयु, चार गतियां, पांच जातियां, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, छह संस्थान, औदारिक व वैक्रियिक शरीरांगोपांग, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, चार आनुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच व ऊंच गोत्र और पांच अन्तराय, ये प्रकृतियां असंज्ञी जीवोंके द्वारा बध्यमान हैं । उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह परीक्षा यहां नहीं है; क्योंकि, यहां इन प्रकृतियोंके बन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव है ।

---

१ प्रतिषु ' विसेसा ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-मिच्छत्त-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-णीचागोद-पंचंतराइय-तिरिक्खगईणं बंधो सोदओ। णिरय-देवाउ-णिरय-देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-णिरय-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोद-मणुसाउ-मणुसगइदुगाणं परोदओ बंधो । पंचदंसणावरणीय-सादासाद-सोलस-कसाय-णवणोकसाय-पंचजादि-ओरालियसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-तिरिक्खाणुपुव्वी-आदाउज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज- [अणादेज्ज-] जसकित्ति-अजसकित्तीणं बंधो सोदय-परोदओ, उहयहा वि बंधविरोहाभावादो। उवघाद-परघाद-उस्सासाणं पि सोदय-परोदओ, अपज्जत्तकाले उदएण विणा वि बंधुवलंभादो।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछ-चउआउ-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। सादासाद-सत्तणोकसाय-णिरय-मणुस-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्वियसरीर-छसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-णिरय-मणुस-देवाणुपुव्वी-पर-

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण, नीचगोत्र, पांच अन्तराय और तिर्यग्गतिका बन्ध स्वोदय होता है। नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, नरकगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी, उच्चगोत्र, मनुष्यायु और मनुष्यगतिद्विकका परोदय बन्ध होता है। पांच दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, पांच जातियां, औदारिकशरीर, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, तिर्यगानुपूर्वी, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, [अनादेय], यशकीर्ति और अयशकीर्तिका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे भी इनके बन्धका कोई विरोध नहीं है। उपघात, परघात और उच्छ्वासका भी स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें उदयके विना भी इनका बन्ध पाया जाता है।

पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, चार आयु, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविश्रामका अभाव है। साता व असाता वेदनीय, सात नोकषाय, नरकगति, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, वैक्रियिकशरीर, छह संस्थान, औदारिक व वैक्रियिक शरीरांगोपांग,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घादुस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं सांतरो बंधो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-णीचागोदाणं बंधो सांतर-णिरंतरो, तेउ-वाउकाइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो।

असण्णीसु पणदालीस पच्चया सव्वपयडीणं, वेउव्वियदुग-चउविहमण-तिविहवचिजोगमाणसासंजमाभावादो। णवरि णिरय-देवाउअ-णिरय-देवगइ-णिरयगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं तेदालीस पच्चया, ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो। मणुस्स-तिरिक्खाउआणं चोदालीस पच्चया, कम्मइयपच्चयाभावादो। सादावेदणीय-इत्थि-पुरिसवेद-हस्स-रदि-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं बंधो तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो। णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं णिरयगइसंजुत्तो। मणुसाउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मणुसगइसंजुत्तो। देवाउ-देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं देवगइसंजुत्तो। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-

---

छह संहनन, नारकानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, देवानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम देखा जाता है। तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर और नीचगोत्रका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, तेज व वायुकायिक जीवोंमें इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

असंज्ञी जीवोंमें सब प्रकृतियोंके पैंतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके वैक्रियिकद्विक, चार प्रकारका मन, अनुभय वचनयोगके विना तीन प्रकारका वचन योग और मन जनित असंयम प्रत्ययोंका अभाव है। विशेषता यह है कि नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति, नरकगति व देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगके तेतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका अभाव है। मनुष्यायु और तिर्यगायुके चवालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, कार्मण प्रत्ययका अभाव है।

सातावेदनीय, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, हास्य, रति, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिका बन्ध तीन गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, इनके साथ नरकगतिके बन्धका अभाव है। नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध नरकगतिसंयुक्त होता है। मनुष्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है। देवायु, देवगति और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है। तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानु-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणसरीराणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बंधो । वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं देव णिरयगइसंजुत्तो । ओरालियसरीरअंगोवंग-मज्झिमचउसंठाण-छसंघडण-अपज्जत्ताणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो बंधो । णउंसयवेद-हुंडसंठाण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं तिगइसंजुत्तो बंधो, देवगईए अभावादो । उच्चागोदस्स दुगइसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणं अभावादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधो चउगइसंजुत्तो ।

तिरिक्खा चेव सामी, अण्णत्थासण्णीणमभावादो । बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि अद्धाणविरोहादो । बंधवोच्छेदो वि णत्थि, बंधुवलंभादो । सत्तेतालीसधुवबंधिपयडीणं चउव्विहो बंधो । सेसाणं सादि-अद्धुवो, पडिवक्खबंधाणुवलंभादो[१] ।

आहाराणुवादेण आहारएसु ओघं ॥ ३२३ ॥

एदस्स सुत्तस्स जधा ओघम्मि परूवणा कदा तधा कायव्वा । णवरि सव्वत्थ कम्मइयपच्चओ अवणेयव्वो । चदुण्णमाणुपुव्वीणं बंधो परोदओ । उवघादस्स सोदओ ।

पूर्वी, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणशरीरका तिर्यग्गतिसंयुक्त बन्ध होता है । वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगका देव व नरक गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशरीरांगोपांग, मध्यम चार संस्थान, छह संहनन और अपर्याप्तका तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका तीन गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, इनके साथ देवगतिके बन्धका अभाव है। उच्चगोत्रका दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, उसके साथ नरक और तिर्यग्गतिका बन्ध नहीं होता । शेष प्रकृतियोंका बन्ध चारों गतियोंसे संयुक्त होता है ।

तिर्यंच जीव ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें असंज्ञी जीवोंका अभाव है । बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है । बन्धव्युच्छेद भी नहीं है, क्योंकि, बन्ध पाया जाता है । सैंतालीस ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, इनके प्रतिपक्ष अर्थात् अनादि व ध्रुव बन्ध नहीं पाये जाते हैं ।

आहारमार्गणानुसार आहारक जीवोंमें ओघके समान प्ररूपणा है ॥ ३२३ ॥

इस सूत्रकी जैसे ओघमें प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार यहां भी करना चाहिये। विशेषता केवल इतनी है कि सर्वत्र कार्मण प्रत्ययको कम करना चाहिये । चार आनुपूर्वियोंका बन्ध परोदय होता है । उपघातका स्वोदय बन्ध होता है ।

---

१ प्रतिषु ' पडिवक्खबंधुवलंभादो ' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणाहारएसु कम्मइयभंगो ॥ ३२४ ॥

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादावेदणीय-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-[अरदि-]सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ तीहि गुणट्ठाणेहि बज्झमाणियाओ । एदासिमुदयपुव्वावरकालसंबंधिबंधवोच्छेदपरीक्खा णत्थि, सव्वासिमेत्थ बंधोदयदंसणादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । ओरालियसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-सुस्सराणं परोदओ बंधो, सोदएण एत्थ बंधविरोहादो । णिद्दा-पयला-असादावेदणीय-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-सुभग-आदेज्ज-जस-

....

अनाहारक जीवोंमें कार्मणकाययोगियोंके समान प्ररूपणा है ॥ ३२४ ॥

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, [अरति], शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियां तीन [मिथ्यादृष्टि, सासादन, अविरतसम्यग्दृष्टि] गुणस्थानों द्वारा बध्यमान हैं । इन प्रकृतियोंके उदयव्युच्छेदके पूर्वापर कालसम्बन्धी बन्धव्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, सब प्रकृतियोंका यहां बन्ध और उदय देखा जाता है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी हैं । औदारिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, प्रत्येकशरीर और सुस्वरका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे यहां इनके बन्धका विरोध है । निद्रा, प्रचला, असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका स्वोदय-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं सोदय-परोदओ, उहयहा वि बंधविरोहाभावादो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं बंधो मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ । असंजद-सम्मादिट्ठीसु परोदओ चेव, सोदएण बंधविरोहादो । पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्ताणं मिच्छाइट्ठीसु बंधो सोदय-परोदओ, पडिवक्खुदयदंसणादो । सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-छद्दंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछ-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । असादावेदणीय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो । पुरिसवेदस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो । असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्ख-पयडिबंधाभावादो । एवं समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणं पि वत्तव्वं । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो णिरंतरो, आणदादिदेवेसुप्पज्जिय विग्गहगईए वट्टमाणेसु णिरंतरबंधुवलंभादो ।

....

परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके बन्धका विरोध नहीं है । मनुष्य-गति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुण-स्थानोंमें स्वोदय-परोदय होता है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें परोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है । पंचेन्द्रिय जाति, त्रस, बादर और पर्याप्तका बन्ध मिथ्यादृष्टियोंमें स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, यहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उनका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी हैं । असातावेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है । पुरुषवेदका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सान्तर होता है । असंयतसम्य-ग्दृष्टियोंमें उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । इसी प्रकार समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभसंहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्रके भी कहना चाहिये । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, आनतादिक देवोंमें उत्पन्न होकर विग्रहगतिमें वर्तमान जीवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पंचिंदियजादि-ओरालियसरीर-अंगोवंग-परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो, सणक्कुमारादिदेव-णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो । विग्गहगदीए कधं णिरंतरदा ? ण, सत्तिं पडुच्च णिरंतरत्तुवदेसादो । सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । एवमोरालियसरीरस्स वि वत्तव्वं ।

मिच्छाइट्ठिस्स तेदालीस, सासणस्स अट्ठत्तीस, असंजदसम्मादिट्ठिस्स तेत्तीस पच्चया । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं बंधो मणुसगइसंजुत्तो । ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो । असंजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइसंजुत्तो । एवं वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणस्स वि वत्तव्वं । उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु मणुसगइसंजुत्तो, असंजदसम्मादिट्ठीसु देव-मणुसगइसंजुत्तो । सेसाणं पयडीणं बंधो मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो, एदेसिमपज्जत्तकाले देव-णिरयगईणं बंधाभावादो । असंजदसम्मादिट्ठीसु देव-

---

असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। पंचेन्द्रिय जाति, औदारिकशरीरांगोपांग, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सनत्कुमारादि देव और नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

शंका—विग्रहगतिमें बन्धकी निरन्तरता कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, शक्तिकी अपेक्षा उसकी निरन्तरताका उपदेश है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनके प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। इसी प्रकार औदारिकशरीरके भी कहना चाहिये ।

मिथ्यादृष्टिके तेतालीस, सासादनसम्यग्दृष्टिके अड़तीस, और असंयतसम्यग्दृष्टिके तेतीस प्रत्यय हैं। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध मनुष्यगतिसंयुक्त होता है। औदारिकशरीर और औदारिकशरीरांगोपांगका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है। इसी प्रकार वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहननके भी कहना चाहिये। उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें मनुष्यगतिसंयुक्त, तथा असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है, क्योंकि, इनके अपर्याप्तकालमें देव व नरक गतिके बन्धका अभाव है । असंयतसम्य-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणुसगइसंजुत्तो, तत्थण्णगईणं बंधाभावादो ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंगाणं चउगइ-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठी सामी, देव-णिरयगइअसंजदसम्मादिट्ठी सामी । एवं वज्ज-रिसहसंघडणस्स वि वत्तव्वं । सेसाणं पयडीणं चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजद-सम्मादिट्ठिणो सामी । बंधद्धाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो च सुगमो । धुवबंधीणं बंधो मिच्छाइट्ठीसु चउव्विहो, सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु तिविहो । सेसाणं पयडीणं सव्वत्थ सादि-अद्धुवो ।

थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंघडण-चउसंठाण-तिरिक्ख-गइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं दुट्ठाण-पयडीणं वुच्चदे — अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा । दुभगाणादेज्ज-णीचागोद-तिरिक्खदुगाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि । अवसेसाणं पयडीणं बंधवोच्छेदो चेव, एत्थुदयविरोहादो । अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेद-तिरिक्खगइदुग-दुभगाणा-देज्ज-णीचागोदाणं बंधो सोदय-परोदओ, उहयहा वि बंधविरोहाभावादो । सेसाणं परोदओ

ग्दृष्टियोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है ।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर और औदारिकशरीरांगो-पांगके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि, तथा देवगति व नरक-गतिके असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । इसी प्रकार वज्रर्षभसंहननके भी कहना चाहिये । शेष प्रकृतियोंके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । बन्धव्युच्छेद भी सुगम है । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टियोंमें चारों प्रकारका होता है । सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्य-ग्दृष्टियोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सर्वत्र सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, तिर्यग्गति, चार संहनन, चार संस्थान, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इन द्विस्थान प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करते हैं — अनन्तानुबन्धिचतुष्क और स्त्रीवेदका बन्ध व उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं । दुर्भग, अनादेय, नीचगोत्र और तिर्यग्गतिद्विकका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है । शेष प्रकृतियोंका केवल बन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, यहां उनके उदयका विरोध है । अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, तिर्यग्गतिद्विक, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके बन्धका विरोध नहीं है । शेष प्रकृतियोंका परोदय बन्ध

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

बंधो, एत्थुदयाभावादो । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं णिरंतरो बंधो, अणेगसमयबंधसत्तिसंजुत्तत्तादो[1] । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-णीचागोदाणं मिच्छाइट्ठीसु सांतर-णिरंतरो, तेउ-वाउकाइएसु विग्गहं काऊणुप्पण्णाणं तदो[2] विग्गहगईए गयाणं सत्तमपुढवीदो विग्गहं काऊण णिग्गयाणं च णिरंतरबंधुवलंभादो । सासणम्मि सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमसत्तिदंसणादो । सेसाणं पयडीणं बंधो सव्वत्थ सांतरो, साभावियादो । पच्चया सुगमा । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो । चउसंठाण-चउसंघडणाणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो । इत्थिवेदस्स दुगइसंजुत्तो, देव-णिरयगईणमभावादो । अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि सासणे दुगइसंजुत्तो, देव-णिरय-गईणमभावादो । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छाइट्ठिम्हि सासणे[3] दुगइसंजुत्तो, णिरय-देवगईणमभावादो । चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी । बंधद्धाणं बंध-वोच्छेदट्ठाणं च सुगमं । धुवबंधीणं बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो । सासणे तिविहो,

होता है, क्योंकि, यहां उनका उदयाभाव है । स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये अनेक समयरूप बन्धशक्तिसे संयुक्त हैं । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका मिथ्यादृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमें विग्रह करके उत्पन्न हुए, उनमेंसे विग्रहगतिमें गये हुए, तथा सप्तम पृथिवीसे विग्रह करके निकले हुए जीवोंके उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । सासादन गुणस्थानमें उनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी बन्धविश्रामशक्ति देखी जाती है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र सान्तर होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतका तिर्यग्गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । चार संस्थान और चार संहननका तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । स्त्रीवेदका दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहां उक्त दो गुणस्थानोंमें देव व नरक गतिके बन्धका अभाव है । अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका बन्ध मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें दो गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, देव व नरक गतिके बन्धका अभाव है । स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, नरक व देव गतिके बन्धका अभाव है । चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । बन्धाध्वान व बन्धव्युच्छेदस्थान सुगम हैं । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका होता है । सासादन गुणस्थानमें तीन प्रकारका बन्ध

१ प्रतिषु 'संजुत्तादो' इति पाठः । २ प्रतिषु 'तरो' इति पाठः ।

३ आप्रतौ 'मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो सासणे' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धुवाभावादो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-चउजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणमेगट्ठाणाणं वुच्चदे— उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति [विचारो] मिच्छत्त-चउजादि-थावर-सुहुम-अपज्जत्ताणं णत्थि, अक्कमेण बंधोदयवोच्छेदद्दंसणादो । णउंसयवेदस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेद-दंसणादो । हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-साहारणसरीराणं बंधवोच्छेदो चेव, उदय-वोच्छेदो णत्थि, अभावस्स भावपुरंगमत्तदंसणादो । ण च एदासिं पयडीणं विग्गहगदीए उदओ अत्थि, अणुवलंभादो । मिच्छत्तस्स बंधो सोदएण, णउंसयवेद-चउजादि-थावर-सुहुम-अपज्जत्ताणं सोदय-परोदएण, हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-साहारणाणं परोदएण । मिच्छत्तस्स बंधो णिरंतरो । सेसाणं सांतरो, णियमाभावादो । पच्चया सुगमा । मिच्छत्त-णउंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-अपज्जत्ताणं बंधो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो । चउ-जादि-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो । मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं चउगईमिच्छाइट्ठी सामी । एइंदिय-आदाव-थावराणं तिगइमिच्छाइट्ठी

होता है, क्योंकि, वहां ध्रुवबन्धका अभाव है ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, चार जातियां, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर, इन एकस्थान प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करते हैं— उदयसे बन्ध पूर्व या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है यह विचार मिथ्यात्व, चार जातियां, स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्त प्रकृतियोंके नहीं है, क्योंकि, इनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद एक साथ देखा जाता है । नपुंसकवेदका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उसका उदयव्युच्छेद देखा जाता है । हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, आताप और साधारणशरीरका केवल बन्धव्युच्छेद ही है, उदयव्युच्छेद नहीं है; क्योंकि, अभाव भावपूर्वक देखा जाता है । और इन प्रकृतियोंका विग्रहगतिमें उदय है नहीं, क्योंकि, वहां वह पाया नहीं जाता । मिथ्यात्वका बन्ध स्वोदयसे; नपुंसकवेद, चार जातियां, स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्तका स्वोदय-परोदयसे; तथा हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, आताप और साधारणशरीरका परोदयसे बन्ध होता है । मिथ्यात्वका बन्ध निरन्तर होता है । शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनके बन्धका नियम नहीं है । प्रत्यय सुगम हैं । मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन और अपर्याप्तका बन्ध तिर्यग्गति व मनुष्य-गतिसे संयुक्त होता है । चार जातियां, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणका तिर्यग्गति-संयुक्त बन्ध होता है । मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिका-संहननके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं । एकेन्द्रिय, आताप और स्थावरके तीन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामी, णिरयगईए अभावादो । बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं तिरिक्ख-मणुसा सामी, देव-णेरइएसु एदासिं बंधाभावादो । बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि अद्धाणविरोहादो । बंधवोच्छेदट्ठाणं सुगमं । मिच्छत्तबंधो चउव्विहो । सेसाणं सादि-अद्धुवो ।

सादावेदणीयस्स अणाहारीसु बंधवोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदाभावादो । सव्वत्थ बंधो सोदय-परोदओ । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सांतरो, पडिवक्ख-पयडिबंधुवलंभादो । सजोगिम्हि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पच्चया सुगमा । णवरि सजोगिम्हि कम्मइयकायजोगपच्चओ एक्को चेव, अण्णेसिमसंभवादो । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो । असंजदसम्मादिट्ठीसु देव-मणुसगइसंजुत्तो । सजोगीसु अगइसंजुत्तो । चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइ-केवलिणो च सामी । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । सादि-अद्धुवो बंधो, साभावियादो ।

देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी–तित्थयरणामाण–

गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नरकगतिमें इनके बन्धका अभाव है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणके तिर्यंच और मनुष्य स्वामी हैं, क्योंकि, देव व नारकियोंमें इनके बन्धका अभाव है । बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है । बन्धव्युच्छेदस्थान सुगम है । मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

सातावेदनीयका अनाहारी जीवोंमें केवल बन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, वहां उसके उदयव्युच्छेदका अभाव है । सर्वत्र उसका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतिका बन्ध पाया जाता है । सयोगकेवली गुणस्थानमें उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि सयोगकेवली गुणस्थानमें केवल एक कार्मण काययोग प्रत्यय ही है, क्योंकि, अन्य प्रत्ययोंकी वहां सम्भावना नहीं है । मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें देवगति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । सयोगकेवली जीवोंमें गतिसंयोगसे रहित बन्ध होता है । चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि, तथा मनुष्यगतिके केवली स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छित्तिस्थान सुगम हैं । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

मसंजदसम्मादिट्ठिणो बज्झमाणाणं पयडीणं उच्चदे — एदासिं परोदएण बंधो । कुदो, साहावियादो । णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमसत्तीए अभावादो । पच्चया सुगमा । णवरि देवगइचउक्कस्स णउंसयपच्चओ णत्थि । तित्थयरस्स देव-मणुसगइसंजुत्तो । तित्थयरस्स तिरिक्खगईए विणा तिगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो सामी । सेसाणं तिरिक्ख-मणुसा सामी । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

एवं बंधसामित्तविचओ समत्तो ।

तीर्थंकर नामकर्म, इन असंयतसम्यग्दृष्टि जीवों द्वारा बध्यमान प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करते हैं— इनका परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविश्रामशक्तिका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । विशेषता इतनी है कि देवगतिचतुष्कके नपुंसकवेद प्रत्यय नहीं है । तीर्थंकर प्रकृतिका देव और मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । तीर्थंकर प्रकृतिके तिर्यग्गतिके विना तीन गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके तिर्यंच व मनुष्य स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छिन्न-स्थान सुगम हैं । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं ।

इस प्रकार बन्धस्वामित्वविचय समाप्त हुआ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१
बंधसामित्तविचय-सुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	जो सो बंधसामित्तविचओ णाम तस्स इमो दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य ।	१
२	ओघेण बंधसामित्तविचयस्स चोद्दसजीवसमासाणि णादव्वाणि भवंति ।	४
३	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा अणियट्टिबादरसांपराइयपइट्ठउवसमा खवा सुहुमसांपराइयपइट्ठउवसमा खवा उवसंतकसायवीयरागछदुमत्था खीणकसायवीयरायछदुमत्था सजोगिकेवली अजोगिकेवली ।	४
४	एदेसिं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं पयडिबंधवोच्छेदो कादव्वो भवदि ।	५
५	पंचण्णं णाणावरणीयाणं चदुण्हं दंसणावरणीयाणं जसकित्ति-उच्चागोद—पंचण्हमंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	७
६	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु उवसमा खवा बंधा । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	१३
७	णिद्दाणिद्दा–पयलापयला–थीणगिद्धि-अणंताणुबंधि–कोह–माण–माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण—तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगदि-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज–णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ?	२०
८	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	२१
९	णिद्दा-पयलाणं को बंधो को अबंधो ?	२५
१०	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्ठसुद्धिसंजदेसु उवसमा खवा बंधा । अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	२६
११	सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ?	२८
१२	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति बंधा । सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	२९
१३	असादावेदणीय–अरदि–सोग—	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	अथिर–असुह–अजसकित्ति–णामाणं को बंधो को अबंधो ?	४०
१४	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	४१
१५	मिच्छत्त–णवुंसयवेद–णिरयाउ–णिरयगइ–एइंदिय–बेइंदिय–तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडण––णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वि आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारण-सरीरणामाणं को बंधो को अबंधो ?	४२
१६	मिच्छाइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	४३
१७	अपच्चक्खाणावरणीय–कोध–माण-माया-लोभ मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसंघडण–मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि–णामाणं को बंधो को अबंधो ?	४६
१८	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
१९	पच्चक्खाणावरणीयकोध-माण-माया-लोभाणं को बंधो को अबंधो ?	५०
२०	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
२१	पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं को बंधो को अबंधो ?	५२
२२	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपइट्ठउवसमा खवा बंधा। अणियट्टिबादरद्धाए सेसे संखेज्जाभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	५२
२३	माण-मायसंजलणाणं को बंधो को अबंधो ?	५५
२४	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठउवसमा खवा बंधा। अणियट्टिबादरद्धाए सेसे सेसे संखेज्जाभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	५६
२५	लोभसंजलणस्स को बंधो को अबंधो ?	५८
२६	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठउव–समा खवा बंधा। अणियट्टिबादरद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
२७	हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं को बंधो को अबंधो ?	५९
२८	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा अवसेसा अबंधा।	६०
२९	मणुस्साउअस्स को बंधो को अबंधो ?	६१
३०	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	६२

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
३१	देवाउअस्स को बंधो को अबंधो ?	६४
३२	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा बंधा। अप्पमत्तसंजदद्धाए संखेज्जदिभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
३३	देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा कम्मइयसरीर-समचउरस-संठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइ-पाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थ-विहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणणामाणं को बंधो को अबंधो ?	६६
३४	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्व-करणपइट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
३५	आहारसरीर-आहारसरीरअंगो-वंगणामाणं को बंधो को अबंधो ?	७१
३६	अप्पमत्तसंजदा अपुव्वकरण-पइट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
३७	तित्थयरणामस्स को बंधो को अबंधो ?	७२
३८	असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	७३
३९	कदिहि कारणेहि जीवा तित्थयर-णामगोदं कम्मं बंधंति ?	७६
४०	तत्थ इमेहि सोलसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोदकम्मं बंधंति ?	७८
४१	दंसणविसुज्झदाए विणयसंपण्ण-दाए सीलव्वदेसु णिरदिचारदाए आवासएसु अपरिहीणदाए खण-लवपडिबुज्झणदाए लद्धिसंवेग-संपण्णदाए जधाथामे तधा तवे साहूणं पासुअपरिचागदाए साहूणं समाहिसंधारणाए साहूणं वेज्जावच्चजोगजुत्तदाए अरहंत-भत्तीए बहुसुदभत्तीए पवयण-भत्तीए पवयणवच्छलदाए पव-यणप्पभावणदाए अभिक्खणं अभिक्खणं णाणोवजोगजुत्तदाए इच्चेदेहि सोलसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोदं कम्मं बंधंति।	७९
४२	जस्स इणं तित्थयरणामगोद-कम्मस्स उदएण सदेवासुरमाणु-सस्स लोगस्स अच्चणिज्जा पूज-णिज्जा वंदणिज्जा णमंसणिज्जा णेदारा धम्मतित्थयरा जिणा केवलिणो हवंति।	९१
४३	आदेसेण गदियाणुवादेण णिरय-गदीए णेरइएसु पंचणाणावरण-छदंसणावरण-सादासाद-बारस-कसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुस-गदि-पंचिंदियजादि-ओरालिय-	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-संठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुलहुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद—पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	९३
४४	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	,,
४५	णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धिअणंताणुबंधिकोध-माण—माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण—तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज—णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ?	९८
४६	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
४७	मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडण——णामाणं को बंधो को अबंधो ?	१०१
४८	मिच्छाइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
४९	मणुस्साउअस्स को बंधो को अबंधो ?	१०२
५०	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	१०३
५१	तित्थयरणामकम्मस्स को बंधो को अबंधो ?	,,
५२	असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
५३	एवं तिसु उवरिमासु पुढवीसु णेयव्वं ।	१०४
५४	चउत्थीए पंचमीए छट्ठीए पुढवीए एवं चेव णेदव्वं । णवरि विसेसो, तित्थयरं णत्थि ।	१०५
५५	सत्तमाए पुढवीए णेरइया पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगंछा-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-संठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर- [सुहा-] सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	१०५
५६	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	१०६
५७	णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण—माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंठाण—चउसंघडण—	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ?	१०९
५८	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
५९	मिच्छत्त-णवुंसयवेद-तिरिक्खाउ-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-णामाणं को बंधो को अबंधो ?	१११
६०	मिच्छाइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
६१	मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदाणं को बंधो को अबंधो ?	,,
६२	सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	११२
६३	तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-अट्ठकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-[थिरा-] थिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	११२
६४	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	११३
६५	णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-मणुसाउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थ-विहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ?	११९
६६	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
६७	मिच्छत्त-णवुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं को बंधो को अबंधो ?	१२३
६८	मिच्छाइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
६९	अपच्चक्खाणकोध-माण-माया-लोभाणं को बंधो को अबंधो ?	१२५
७०	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
७१	देवाउअस्स को बंधो को अबंधो?	१२६
७२	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
७३	पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता पंचणाणावरणिय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुगलहुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदाउज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग- [दुभग-] सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो?	१२७
७४	सव्वे एदे बंधा, अबंधा णत्थि।	,,
७५	मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु ओघं णेयव्वं जाव तित्थयरे त्ति। णवरि विसेसो, बेट्ठाणे अपच्चक्खाणावरणीयं जधा पंचिंदियतिरिक्खभंगो।	१३०
७६	मणुसअपज्जत्ताणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो।	१३४
७७	देवगदीए देवेसु पंचणाणावरणीय-छद्दंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसाणुपुव्वि-अगुरुअलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो?	१३७
७८	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि।	१३८
७९	णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो?	१४१
८०	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
८१	मिच्छत्त-णवुंसयवेद-एइंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्ट-संघडण-आदाव-थावरणामाणं को बंधो को अबंधो?	१४३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
८२	मिच्छाइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	१४३
८३	मणुस्साउअस्स को बंधो को अबंधो ?	१४४
८४	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
८५	तित्थयरणामकम्मस्स को बंधो को अबंधो ?	१४५
८६	असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
८७	भवणवासिय–वाणवेंतर–जोदिसियदेवाणं देवभंगो । णवरि विसेसो तित्थयरं णत्थि ।	१४६
८८	सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवाणं देवभंगो ।	१४७
८९	सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवाणं पढमाए पुढवीए णेरइयाणं भंगो ।	१४८
९०	आणद जाव णवगेवज्जविमाण-वासियदेवेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय—सादासाद—बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स—रदि-भय-दुगुंछा मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग–वज्जरिसह–संघडण वण्ण–गंध-रस- फास—मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद–उस्सास–पसत्थविहायगइ-तस—बादर—पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर—सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण–उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	१४९
९१	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजद-सम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	,,
९२	णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीण—गिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण—माया-लोभ-इत्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग दुस्सर-अणादेज्ज- णीचा–गोदाणं को बंधो को अबंधो ?	१५२
९३	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
९४	मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण–असंपत्तसेवट्टसंघडणणामाणं को बंधो को अबंधो ?	१५३
९५	मिच्छाइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
९६	मणुस्साउअस्स को बंधो को अबंधो ?	१५४
९७	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
९८	तित्थयरणामकम्मस्स को बंधो को अबंधो ?	,,
९९	असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	१५५
१००	अणुदिस जाव सव्वट्ठसिद्धि-विमाणवासियदेवेसु पंचणाणा-वरणीय-छदंसणावरणीय-सादा-साद–बारसकसाय–पुरिसवेद—	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुस्साउ-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	१५५
१०१	असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। अबंधा णत्थि।	१५६
१०२	इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिंदिय-अपज्जत्ताणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो।	१५८
१०३	पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	१७०
१०४	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु उवसमा खवा बंधा। सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	१७२
१०५	णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ?	१७४
१०६	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
१०७	णिद्दा-पयलाणं को बंधो को अबंधो ?	१७७
१०८	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्ठसुद्धिसंजदेसु उवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणसंजदद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
१०९	सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ?	,,
११०	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा। सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	१७८
१११	असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्ति-णामाणं को बंधो को अबंधो ?	,,
११२	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	१७९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
११३	मिच्छत्त-णवुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-णिरयाणुपुव्वी-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त--साहारणसरीरणामाणं को बंधो को अबंधो ?	१८०
११४	मिच्छाइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
११५	अपच्चक्खाणावरणीयकोध—माण-माया-लोभ-मणुसगइ—ओरालियसरीर—ओरालिय—सरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं को बंधो को अबंधो ?	१८२
११६	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	१८३
११७	पच्चक्खाणावरणकोध-माण—माया-लोभाणं को बंधो को अबंधो ?	१८४
११८	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
११९	पुरिसवेद कोधसंजलणाणं को बंधो को अबंधो ?	,,
१२०	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठउवसमा खवा बंधा। अणियट्टिबादरद्धाए सेसे संखेज्जाभागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
१२१	माण-मायासंजलणाणं को बंधो को अबंधो ?	१८५
१२२	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा खवा बंधा। अणियट्टिबादरद्धाए सेसे सेसे संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
१२३	लोभसंजलणस्स को बंधो को अबंधो ?	,,
१२४	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा खवा बंधा। अणियट्टिबादरद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
१२५	हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं को बंधो को अबंधो ?	१८६
१२६	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा अवसेसा अबंधा।	,,
१२७	मणुस्साउअस्स को बंधो को अबंधो ?	,,
१२८	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
१२९	देवाउअस्स को बंधो को अबंधो ?	१८७
१३०	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा बंधा। अप्पमत्तद्धाए संखे-	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	ज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	१८७
१३१	देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-संठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइ-पाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-णामाणं को बंधो को अबंधो ?	,,
१३२	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा । अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	१८८
१३३	आहारसरीर-आहारअंगोवंग-णामाणं को बंधो को अबंधो ?	१९१
१३४	अप्पमत्तसंजदा अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा । अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
१३५	तित्थयरणामाए को बंधो को अबंधो ?	,,
१३६	असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा । अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे-भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१३७	कायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-वणप्फदिकाइय-णिगोदजीव-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तापज्जत्ताणं च पंचिंदियतिरिक्ख-अपज्जत्तभंगो ।	१९२
१३८	तेउकाइय-वाउकाइय-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्ताणं सो चेव भंगो । णवरि विसेसो मणुस्साउ-मणुसगइ-मणुसगइ-पाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदं णत्थि ।	१९९
१३९	तसकाइय-तसकाइयपज्जत्ताणमोघं णेदव्वं जाव तित्थयरे त्ति ।	२००
१४०	जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-कायजोगीसु ओघं णेयव्वं जाव तित्थयरे त्ति ।	२०१
१४१	सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	२०२
१४२	ओरालियकायजोगीणं मणुसगइभंगो ।	२०३
१४३	णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स मणजोगिभंगो ।	२०५
१४४	ओरालियमिस्सकायजोगीसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादावेदणीय-बारस-कसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वण्ण-गंध-	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	२०५
१४५	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	२०६
१४६	णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ?	२०९
१४७	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
१४८	सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ?	२१२
१४९	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि।	,,
१५०	मिच्छत्त-णउंसयवेद-तिरिक्खाउ-मणुसाउ-चदुजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं को बंधो को अबंधो ?	२१३
१५१	मिच्छाइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
१५२	देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-तित्थयरणामाणं को बंधो को अबंधो ?	२१४
१५३	असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	२१५
१५४	वेउव्वियकायजोगीणं देवगईए भंगो।	,,
१५५	वेउव्वियमिस्सकायजोगीणं देवगइभंगो।	२२२
१५६	णवरि विसेसो वेट्ठाणियासु तिरिक्खाउअं णत्थि मणुस्साउअं णत्थि।	२२९
१५७	आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगीसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-चदुसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-देवाउ-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	बंधो को अबंधो ?	२२९
१५८	पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	२३०
१५९	कम्मइयकायजोगीसु पंचणाणावरणीय--छदंसणावरणीय—असादावेदणीय-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि—सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ—पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर—समचउरस—संठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद—परघादुसास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह—सुभग—सुस्सर-आदेज्ज—जसकित्ति—अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	२३२
१६०	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
१६१	णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण—तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि—उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ—दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ?	२३७
१६२	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
१६३	सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ?	२३८
१६४	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	२३९
१६५	मिच्छत्त-णवुंसयवेद-चउजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्तसाहारणसरीरणामाणं को बंधो को अबंधो ?	,,
१६६	मिच्छाइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	२४०
१६७	देवगइ-वेउव्वियसरीर—वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइ—पाओग्गाणुपुव्वि—तित्थयर—णामाणं को बंधो को अबंधो ?	२४१
१६८	असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
१६९	वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेद-णवुंसयवेदएसु पंचणाणावरणीय--चउदंसणावरणीय—सादावेदणीय--चदुसंजलण—पुरिसवेद-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	२४२
१७०	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिउवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	,,
१७१	बेट्ठाणी ओघं ।	२४५
१७२	णिद्दा पयला य ओघं ।	२४८
१७३	असादावेदणीयमोघं ।	२४९
१७४	एकट्ठाणी ओघं ।	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१७५	अपच्चक्खाणावरणीयमोघं ।	२५१
१७६	पच्चक्खाणावरणीयमोघं ।	२५४
१७७	हस्स-रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ।	,,
१७८	अवगदवेदएसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जस—कित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	२६४
१७९	अणियट्टिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
१८०	सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ?	२६५
१८१	अणियट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा । सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
१८२	कोधसंजलणस्स को बंधो को अबंधो ?	२६६
१८३	अणियट्टी उवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
१८४	माण-मायासंजलणाणं को बंधो को अबंधो ?	२६७
१८५	अणियट्टी उवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए सेसे सेसे संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
१८६	लोभसंजलणस्स को बंधो को अबंधो ?	२६८
१८७	अणियट्टी उवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	२६९
१८८	कसायाणुवादेण कोधकसाईसु पंचणाणावरणीय-[चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-]चदुसंजलण-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	,,
१८९	मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति उवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	२७०
१९०	सेसाणि ओघं ।	२७२
१९१	जाव पच्चक्खाणावरणीयमोघं ।	२७४
१९२	पुरिसवेदे ओघं ।	२७५
१९३	हस्स-रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ।	,,
१९४	माणकसाईसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय सादा-वेदणीय-तिण्णिसंजलण—जस-कित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	,,
१९५	मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	२७६
१९६	सेसाणि जाव पुरिसवेद-कोधसंजलणाणमोघं ।	,,
१९७	हस्स-रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ।	२७७
१९८	मायकसाईसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादा-वेदणीय-दोण्णिसंजलण—जस—	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	किंत्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	२७७
१९९	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	,,
२००	बेट्ठाणि जाव माणसंजलणे त्ति ओघं ।	,,
२०१	हस्स-रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ।	२७८
२०२	लोभकसाईसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	,,
२०३	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	,,
२०४	सेसं जाव तित्थयरे त्ति ओघं ।	,,
२०५	अकसाईसु सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ?	,,
२०६	उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था खीणकसायवीदरागछदुमत्था सजोगिकेवली बंधा । सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	२७९
२०७	णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणि-विभंगणाणीसु—पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-अट्ठणोकसाय—तिरिक्खाउ-मणुसाउ-देवाउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-पंचसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-दोविहायगइ—तस—बादर-पज्जत्त—पत्तेयसरीर—थिराथिर-सुहासुह—सुभग—दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद—पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	२८०
२०८	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	,,
२०९	एक्कट्ठाणी ओघं ।	२८५
२१०	आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणीसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	२८६
२११	असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा । सुहुमसांपराइयअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।	,,
२१२	णिद्दा-पयला य ओघं ।	२८७
२१३	सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ?	२८८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
२१४	असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि।	२८८
२१५	सेसमोघं जाव तित्थयरे त्ति। णवरि असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि त्ति भाणिदव्वं।	२८९
२१६	मणपज्जवणाणीसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो?	२९५
२१७	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा। सुहुमसांपराइयसंजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
२१८	णिद्दा-पयलाणं को बंधो को अबंधो?	,,
२१९	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	२९६
२२०	सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो?	,,
२२१	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीयरायछदुमत्था बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि।	,,
२२२	सेसमोघं जाव तित्थयरे त्ति। णवरि पमत्तसंजदप्पहुडि त्ति भाणिदव्वं।	,,
२२३	केवलणाणीसु सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो?	२९७
२२४	सजोगिकेवली बंधा। सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	२९७
२२५	संजमाणुवादेण संजदेसु मणपज्जवणाणिभंगो।	२९८
२२६	णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो?	,,
२२७	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा। सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
२२८	सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पंचणाणावरणीय-सादावेदणीय-लोभसंजलण-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो?	,,
२२९	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिउवसमा खवा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि।	२९९
२३०	सेसं मणपज्जवणाणिभंगो।	३००
२३१	परिहारसुद्धिसंजदेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादावेदणीय-चदुसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवाणुपुव्वि-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थ-विहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-सुभग-	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो?	३०३
२३२	पमत्त-अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि।	३०४
२३३	असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्ति-णामाणं को बंधो को अबंधो?	३०५
२३४	पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	३०६
२३५	देवाउअस्स को बंधो को अबंधो?	,,
२३६	पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा बंधा। अप्पमत्तसंजदद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	३०७
२३७	आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगणामाणं को बंधो को अबंधो?	,,
२३८	अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
२३९	सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो?	३०८
२४०	सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि।	,,
२४१	जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो?	३०९
२४२	उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था खीणकसायवीयरायछदुमत्था सजोगिकेवली बंधा। सजोगकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण [बंधो] वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	३०९
२४३	संजदासंजदेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-अट्ठकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-सोग-भय-दुगंछ-देवाउ-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो?	३१०
२४४	संजदासंजदा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि।	,,
२४५	असंजदेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइ-देवगइ-	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	पाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद—उस्सास—पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	३१२
२४६	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	,,
२४७	बेट्ठाणी ओघं ।	३१७
२४८	एक्कट्ठाणी ओघं ।	,,
२४९	मणुस्साउ-देवाउआणं को बंधो को अबंधो ?	,,
२५०	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	३१८
२५१	तित्थयरणामस्स को बंधो को अबंधो ?	,,
२५२	असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
२५३	दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिणमोघं णेदव्वं जाव तित्थयरे त्ति ।	,,
२५४	णवरि विसेसो, सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ?	३१९
२५५	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीयरायछदुमत्था बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	,,
२५६	ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ।	,,
२५७	केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ।	,,
२५८	लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सियाणमसंजदभंगो ।	३२०
२५९	तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु—पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय—सादावेदणीय-चउसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्विय—सरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस—फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त—पत्तेयसरीर—थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	३३३
२६०	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ।	,,
२६१	बेट्ठाणी ओघं।	३३७
२६२	असादावेदणीयमोघं।	३३९
२६३	मिच्छत्त-णवुंसयवेद-एइंदिय-जादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्ट-संघडण-आदाव-थावरणामाणं को बंधो को अबंधो ?	३४०
२६४	मिच्छाइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
२६५	अपच्चक्खाणावरणीयमोघं।	३४१
२६६	पच्चक्खाणचउक्कमोघं।	३४३
२६७	मणुस्साउअस्स ओघभंगो।	,,
२६८	देवाउअस्स ओघभंगो।	३४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
२६९	आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंगणामाणं को बंधो को अबंधो? अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	३४४
२७०	तित्थयरणामाणं को बंधो को अबंधो? असंजदसम्माइट्ठी जाव अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	३४५
२७१	पम्मलेस्सिएसु मिच्छत्तदंडओ णेरइयभंगो।	३४६
२७२	सुक्कलेस्सिएसु जाव तित्थयरे त्ति ओघभंगो।	,,
२७३	णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स मणजोगिभंगो।	३५६
२७४	बेट्ठाणि-एक्कट्ठाणीणं णवगेवज्जविमाणवासियदेवाणं भंगो।	,,
२७५	भवियाणुवादेण भवसिद्धियाणमोघं।	३५८
२७६	अभवसिद्धिएसु पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-चदुआउ-चदुगइ-पंचजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-चत्तारिआणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-बादर-थावर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो?	३५९
२७७	सव्वे एदे बंधा, अबंधा णत्थि।	,,
२७८	सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीसु खइयसम्माइट्ठीसु आभिणिबोहियणाणिभंगो।	३६३
२७९	णवरि सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो?	३६४
२८०	असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा। सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
२८१	वेदयसम्मादिट्ठीसु पंचणाणावरणीय छदंसणावरणीय-सादावेदणीय-चदुसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछ-देवगदि-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो?	,,
२८२	असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि।	३६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
२८३	असादावेदणीय-अरदि-सोग— अथिर-असुह—अजसकित्ति— णामाणं को बंधो को अबंधो ?	३६७
२८४	असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	३६८
२८५	अपच्चक्खाणावरणीयकोह— माण—माया-लोह मणुस्साउ-मणुसगइ—ओरालियसरीर—ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण—मणुसाणुपुव्वी—णामाणं को बंधो को अबंधो ?	३६९
२८६	असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
२८७	पच्चक्खाणावरणीयकोह-माण-माया-लोभाणं को बंधो को अबंधो ?	३७०
२८८	असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
२८९	देवाउअस्स को बंधो को अबंधो ?	३७१
२९०	असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा बंधा। अप्पमत्तद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
२९१	आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगणामाणं को बंधो को अबंधो ?	३७२
२९२	अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
२९३	उवसमसम्मादिट्ठीसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय—जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?	३७२
२९४	असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा बंधा। सुहुमसांपराइयउवसमद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
२९५	णिद्दा-पयलाणं को बंधो को अबंधो ?	३७४
२९६	असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा। अपुव्वकरणउवसमद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
२९७	सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ?	३७५
२९८	असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीयरागछदुमत्था बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि।	,,
२९९	असादावेदणीय—अरदि—सोग—अथिर—असुह—अजसकित्ति—णामाणं को बंधो को अबंधो ?	३७६
३००	असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
३०१	अपच्चक्खाणावरणीयमोदि— णाणिभंगो।	,,
३०२	णवरि आउअं णत्थि।	३७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
३०३	पच्चक्खाणावरणचउक्कस्स को बंधो को अबंधो ?	३७७
३०४	असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदा [बंधा]। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
३०५	पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं को बंधो को अबंधो ?	,,
३०६	असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा बंधा। अणियट्टिउवसमद्धाए सेसे संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
३०७	माण-मायसंजलणाणं को बंधो को अबंधो ?	३७८
३०८	असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा बंधा। अणियट्टिउवसमद्धाए सेसे सेसे संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
३०९	लोभसंजलणस्स को बंधो को अबंधो ?	,,
३१०	असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा बंधा। अणियट्टिउवसमद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
३११	हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं को बंधो को अबंधो ?	३७९
३१२	असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा। अपुव्वकरणुवसमद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
३१३	देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर समचउरससंठाण-वेउव्वियअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-तित्थयरणामाणं को बंधो को अबंधो ?	३७९
३१४	असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा। अपुव्वकरणुवसमद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	३८०
३१५	आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंगाणं को बंधो को अबंधो ?	,,
३१६	अप्पमत्तापुव्वकरणउवसमा बंधा। अपुव्वकरणुवसमद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा।	,,
३१७	सासणसम्मादिट्ठी मदि-अण्णाणिभंगो।	,,
३१८	सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदभंगो।	३८३
३१९	मिच्छाइट्ठीणमभवसिद्धियभंगो।	३८६
३२०	सण्णियाणुवादेण सण्णीसु जाव तित्थयरे त्ति ओघभंगो।	,,
३२१	णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स चक्खुदंसणिभंगो।	३८७
३२२	असण्णीसु अभवसिद्धियभंगो।	,,
३२३	आहाराणुवादेण आहारएसु ओघं।	३९०
३२४	अणाहारएसु कम्मइयभंगो।	३९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२ अवतरण-गाथा-सूची

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहां	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहां
१६	अगुरुअलहु-उवघादं	१७		२२	पणवण्णा इर वण्णा	२५	
२४	आगमचक्खू साहू	२६	प्र. सा. ३-३४	९	पण्णरस कसाया विणु	१२	
१७	इत्थि-णउंसयवेदा	१८		१८	पंचासुहसंघडणा	१८	
२१	उवरिल्लपंचए पुण	२४	गो. क. ७८८	१०	पुव्वुत्तवसेसाओ	१३	
२०	चदुपच्चइगो बंधो	,,	,, ७८७	१	बंधेण य संजोगो	३	
१५	णाणंतरायदसयं	१७		३	बंधोदय पुव्वं वा	८	
१२	णाणंतरायदंसण	१५		५	,, ,,	,,	
११	तित्थयर-णिरय-देवाउअ	१४		२	बंधो बंधविही पुण	,,	
२३	दस अट्ठारस दसयं	२८	गो. क. ७९२	८	मिच्छत्त-भय-दुगुंछा	१२	
६	दस चदुरिगि सत्तारस	११	,, २६३	१३	सत्तावीसेदाओ	१५	
७	देवाउ-देवचउक्काहार	,,		१४	सत्तेताल धुवाओ	१६	
४	पच्चयसामित्तविही	८		१९	सांतरणिरंतरेण य	१९	

३ न्यायोक्तियां

क्रम संख्या	न्याय	पृष्ठ
१	'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति जाणावणट्ठमोघेणे त्ति उत्तं।	४
२	'यदस्ति न तद् द्वयमतिलंघ्य वर्त्तत' इति दो वि णए अविलंबिऊण ट्ठिदणेगमणयस्स भावाभावव्ववहार-विरोहाभावादो।	६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४ ग्रन्थोल्लेख

१ कसायपाहुड

कसायपाहुडसुत्तेणेदं सुत्तं विरुज्झदि त्ति उत्ते सच्चं विरुज्झइ किंतु......। ५६

२ चूर्णिसूत्र

चुण्णिसुत्तकत्ताराणमुवएसेण पचण्णं पयडीणमुदयवोच्छेदो, चदुजादि-थावराणं सासणसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदब्भुवगमादो। ९

३ महाकर्मप्रकृतिप्राभृत

मिच्छत्त-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं दसण्हं पयडीणं मिच्छाइट्ठिस्स चरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदो। एसो महाकम्मपयडिपाहुडउवएसो। ९

४ व्याकरणसूत्र

'एए छच्च सामणा' त्ति सुत्तेण आदिवुड्ढीए कयअकारत्तादो। ९०

५ सूत्र पुस्तक

अप्पमत्तद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु देवाउअस्स बंधो वोच्छिज्जदि त्ति केसु वि सुत्तपोत्थएसु उवलब्भइ। ६५

५ पारिभाषिक शब्दसूची

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अ		अज्ञानमिथ्यात्व	२०
		अतिचार	८२
अगतिसंयुक्त	८	अध्वान	८, ३१
अगुरुलघु	१०	अध्रुव	८
अचक्षुदर्शनी	३१८	अनन्तानुबन्धी	९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	पृष्ठ
अनर्पित	६
अनादिक	८
अनादेय	९
अनाहारक	३९१
अनिवृत्तिकरण	४
अनुभाग बन्ध	२
अनेकान्त	१४५
अन्तर	६३
अन्तरकरण	५३
अन्तराय	१०
अपगतवेद	२६५, २६६
अपर्याप्त	९
अपूर्वकरण	४
अप्कायिक	१९२
अप्रत्यय	८
अप्रत्याख्यानावरणदण्डक	२५१, २७४
अप्रमत्तसंयत	४
अभव्यसिद्धिक	३५९
अभिधेय	१
अभीक्ष्ण-अभीक्ष्णज्ञानोपयोगयुक्तता	७९, ९१
अयशःकीर्ति	९
अयोगिकेवली	४
अरति	१०
अरहन्त	८९
अरहन्तभक्ति	७९, ८९
अर्चना	९२
अर्थापत्ति	२७४
अर्धनाराचसंहनन	१०
अर्पणासूत्र	१९२, १९९, २००
अर्पित	५
अवधि	२६४
अवधिज्ञानी	२८६
अवधिदर्शनी	३१९
अव्वोगाढमूलप्रकृतिबंध	२
अशुभ	१०

शब्द	पृष्ठ
अष्टस्थानिक	२०५
असंख्यातवर्षायुष्क	११६
असंज्ञी	३८७
असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन	१०
असंयत	३१२
असंयतसम्यग्दृष्टि	४
असंयम	२, १९
असंयम प्रत्यय	२५
असातादण्डक	२४९, २७४
अस्थिर	१०
आ	
आचार्य	७२, ७३
आताप	९, २००
आदेय	११
आदेश	९३
आनुपूर्वी	९
आभिनिबोधिकज्ञानी	२८६
आभ्यन्तर तप	८६
आवश्यक	८४
आवश्यकापरिहीनता	७९, ८३
आहारक	३९०
आहारककाययोगी	२२९
आहारकमिश्रकाययोगी	”
आहारकशरीरद्विक	९
इ	
इन्द्रियासंयम	२१
उ	
उच्चगोत्र	११
उच्छ्वास	१०
उत्तरप्रकृतिबन्ध	२
उत्तर प्रत्यय	२०
उद्योत	९, २००
उपघात	१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	पृष्ठ
उपशमक	२६५
उपशमसम्यग्दृष्टि	३७२
उपशान्तकषाय	४
उपसंहार	५७
ए	
एक-एक-मूलप्रकृतिबन्ध	२
एकस्थानदण्डक	२७४
एकस्थानिक	२४९
एकान्तमिथ्यात्व	२०
एकेन्द्रिय	९
ऐ	
ऐन्द्रध्वज	९२
औ	
औदारिककाययोगी	२०३
औदारिकमिश्रकाययोगी	२०५
औदारिकशरीर	१०
औदारिकशरीरांगोपांग	,,
क	
कल्पवृक्ष	९२
कषाय	२, १९
कषायप्रत्यय	२१, २५
कापोतलेश्या	३२०, ३३२
कार्मणकाययोगी	२३२
कार्मणशरीर	१०
कीलितसंहनन	,,
कृति	२
कृष्णलेश्या	३२०
केवल	२६४
केवलज्ञानी	२९६
केवलदर्शनी	३१९
क्षण-लवप्रतिबोधनता	७९, ८५
क्षपक	२६५
क्षायिकसम्यग्दृष्टि	३६३
क्षीणकषाय	४
ग	
गतिसंयुक्त	८
गंध	१०
च	
चक्षुदर्शनी	३१८
चतुरिन्द्रिय	९
चारित्रविनय	८०, ८१
चूर्णिसूत्र	९
ज	
जीवसमास	४
जीवस्थान	५
जुगुप्सा	१०
ज्ञानविनय	८०
ज्ञानावरणीय	१०
ज्योतिषी	१४६
त	
तिर्यगायु	९
तिर्यग्गति	,,
तिर्यंच	१९२
तीर्थ	९२
तीर्थंकर	११, ७२, ७३
तीर्थंकरनामगोत्रकर्म	७६, ७८
तीर्थंकरसन्तकर्मिक	३३२
तेज	२००
तेजकायिक	१९२
तेजोलेश्या	३३३
तैजसशरीर	१०
त्रस	११
त्रीन्द्रिय	९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	पृष्ठ
द	
दर्शनविनय	८०
दर्शनविशुद्धता	७९
दर्शनावरणीय	१०
दुर्भग	९
दुस्वर	१०
देवगति	९
देवायु	,,
देशव्रती	२५५, ३११
द्रव्यश्रुत	९१
द्रव्यार्थिकनय	३
द्विस्थानदण्डक	२७४
द्विस्थानी	२४५, २७२
द्वीन्द्रिय	९
ध	
धर्म	९२
ध्रुव	८
ध्रुवबन्ध	१७
ध्रुवबन्धप्रकृति	,,
ध्रुवबन्धी	,,
न	
नपुंसकवेद	१०
नमंसन	९२
नरकगति	९
नारकायु	,,
नाराचसंहनन	१०
निगोदजीव	१९२
निद्रा	१०
निद्रादण्डक	२७४
निद्रानिद्रा	९
निरतिचारता	८२
निरन्तर	८
निरन्तरबन्ध	१७
निरन्तरबन्धप्रकृति	१७
निर्माण	१०
नीचगोत्र	९
नीललेश्या	३२०, ३३१
नैगमनय	६
प	
पद्मलेश्या	३३३, ३४५
परघात	१०
परिहारशुद्धिसंयत	३०३
परोदय	७
पर्याप्त	११
पर्याय	५, ६
पर्यायार्थिकनय	३, ७८
पंचेन्द्रियजाति	११
पंचेन्द्रियतिर्यंच	११२
पंचेन्द्रियतिर्यंचअपर्याप्त	१२७
पंचेन्द्रियतिर्यंचपर्याप्त	११२
पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिमती	,,
पुरुषवेद	१०
पुरुषवेददण्डक	२७५
पृथिवीकायिक	१९२
प्रकृतिबन्ध	२, ७
प्रकृतिबन्धव्युच्छेद	५
प्रकृतिसमुत्कीर्तना	७
प्रकृतिस्थानबन्ध	२
प्रचला	१०
प्रचलाप्रचला	९
प्रतिक्रमण	८३, ८४
प्रत्यक्षज्ञानी	५७
प्रत्ययविधि	८
प्रत्याख्यान	८३, ८५
प्रत्याख्यानदण्डक	२७४
प्रत्याख्यानावरण	९
प्रत्यासत्ति	६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	पृष्ठ
प्रत्येकशरीर	१०
प्रदेशबन्ध	२
प्रमत्तसंयत	४
प्रमोक्ष	३
प्रयोजन	१
प्रवचन	७२, ७३, ९०
प्रवचनप्रभावना	७९, ९१
प्रवचनभक्ति	७९, ९०
प्रवचनवत्सलता	,,
प्राण्यसंयम	२१
प्रासुकपरित्यागता	७९, ८७
ब	
बन्ध	२, ३, ८
बन्धक	२
बन्धन	,,
बन्धनीय	,,
बन्धविधान	,,
बन्धविधि	८
बन्धव्युच्छेद	५
बन्धस्वामित्वविचय	३
बन्धाध्वान	८
बहुश्रुत	७२, ७३, ८९
बहुश्रुतभक्ति	७९, ८९
बादर	११
बाह्यतप	८६
भ	
भय	१०
भवनवासी	१४६
भव्यसिद्धिक	३५८
भंग	१७१
भावश्रुत	९१
भुजगारबन्ध	२

शब्द	पृष्ठ
म	
मतिअज्ञानी	२७९
मनःपर्ययज्ञानी	२९५
मनुष्यअपर्याप्त	१३०
मनुष्यगति	११
मनुष्यनी	१३०
मनुष्यपर्याप्त	,,
मनुष्यायु	११
महाकर्मप्रकृतिप्राभृत	९
महामह	९२
महाव्रती	२५५, २५६
मानदण्डक	२७५
मार्गणास्थान	८
मिथ्यात्व	२, ९, १९
मिथ्यादृष्टि	४, ३८६
मूलप्रकृतिबन्ध	२
मूलप्रत्यय	२०
य	
यथाख्यातसंयत	३०९
यथाशक्तितप	७९, ८६
यशकीर्ति	११
योग	२, २०
योगप्रत्यय	२१
र	
रति	१०
रस	,,
ल	
लब्धि	८६
लब्धिसंवेगसम्पन्नता	७९, ८६
लेश्या	३५६
लोभदण्डक	२७५

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

शब्द	पृष्ठ
वज्रनाराचसंहनन	१०
वज्रवृषभनाराचसंहनन	”
वनस्पतिकायिक	१९२
वन्दना	८३, ८४, ९२
वर्गणा	२
वर्ण	१०
वानव्यन्तर	१४६
वायुकायिक	१९२
विग्रहगति	१६०
विनय	८०
विनयसम्पन्नता	७९, ८०
विपरीतमिथ्यात्व	२०
विभंगज्ञानी	२७९
विरति	८२
विहायोगति	१०
वेदकसम्यक्त्व	”
वेदकसम्यग्दृष्टि	३६४
वेदना	२
वेदनीय	११
वैक्रियिककाययोगी	२१५, २२२
वैक्रियिकशरीर	९
वैक्रियिकशरीरांगोपांग	”
वैनयिकमिथ्यात्व	२०
वैयावृत्य	८८
वैयावृत्ययोगयुक्तता	७९, ८८
व्यभिचार	३०८
व्युत्सर्ग	८३, ८५
व्रत	८३
श	
शील	८२
शीलव्रतेषु निरतिचारता	७९, ८२
शुक्ललेश्या	३४६
शुभ	१०
शोक	”

शब्द	पृष्ठ
श्रुतअज्ञानी	२७९
श्रुतकेवली	५७
श्रुतज्ञानी	२८६
स	
समता	८३, ८४
समाधि	८८
सम्बन्ध	१, २
सम्यग्दृष्टि	३६३
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	४, ३८३
सयोगकेवली	४
सर्वतोभद्र	९२
संख्यातवर्षायुष्क	११६
संज्ञी	३८६
संज्वलन	१०
संयत	२९८
संयतासंयत	४, ३१०
संवेग	८६
संस्थान	१०
सादिक	८
साधारण	९
साधु	८७, २६४
साधुसमाधि	७९, ८८
सान्तर	७
सान्तर-निरन्तर	८
सान्तरबन्धप्रकृति	१७
सामायिकछेदोपस्थापनशुद्धिसंयत	२९८
सासादनसम्यग्दृष्टि	४, ३८०
सांशयिकमिथ्यात्व	२०
सुभग	११
सुस्वर	१०
सूक्ष्म	९
सूक्ष्मसाम्परायिक	४
सूक्ष्मसाम्परायिकसंयत	३०८
सूत्र	५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
स्तव	८३, ८४	स्वप्रत्यय	८
स्त्यानगृद्धि	९	स्वामित्व	,,
स्त्रीवेद	१०	स्वोदय	७
स्थावर	९	स्वोदय-परोदय	,,
स्थितिबन्ध	२		
स्थिर	१०	**ह**	
स्पर्श	,,	हास्य	१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन साहित्य उद्धारक फंड

तथा कारंजा जैन ग्रंथमालाओंमें

प्रो. हीरालाल जैन द्वारा आधुनिक ढंगसे सुसम्पादित होकर प्रकाशित

जैन साहित्यके अनुपम ग्रंथ

प्रत्येक ग्रंथ सुविस्तृत भूमिका, पाठभेद, टिप्पण व अनुक्रमणिकाओं आदिसे खूब सुगम और उपयोगी बनाया गया है।

१ **षट्खंडागम**—[धवलसिद्धान्त] हिन्दी अनुवाद सहित—

पुस्तक १, जीवस्थान–सत्प्ररूपणा, पुस्तकाकार व शास्त्राकार			(अप्राप्य)
पुस्तक २,	"	पुस्तकाकार १०), शास्त्राकार	(अप्राप्य)
पुस्तक ३-७ (प्रत्येक भाग)	"	१०),	" १२)
पुस्तक ८, बन्ध-स्वामित्व-विचय	"	१०),	" १२)

यह भगवान् महावीर स्वामीकी द्वादशांग वाणीसे सीधा संबन्ध रखनेवाला, अत्यन्त प्राचीन, जैन सिद्धान्तका खूब गहन और विस्तृत विवेचन करनेवाला सर्वोपरि प्रमाण ग्रंथ है। श्रुतपंचमीकी पूजा इसी ग्रंथकी रचनाके उपलक्ष्यमें प्रचलित हुई।

२ **यशोधरचरित**—पुष्पदंतकृत अपभ्रंश काव्य... ... ... ६)

इसमें यशोधर महाराजका अत्यंत रोचक वर्णन सुन्दर काव्यके रूपमें किया गया है। इसका सम्पादन डा. पी. एल. वैद्य द्वारा हुआ है।

३ **नागकुमारचरित**—पुष्पदंतकृत अपभ्रंश काव्य... ... ... ६)

इसमें नागकुमारके सुन्दर और शिक्षापूर्ण जीवनचरित्र द्वारा श्रुतपंचमी विधानकी महिमा बतलाई गई है। यह काव्य अत्यन्त उत्कृष्ट और रोचक है।

४ **करकंडुचरित**—मुनि कनकामरकृत अपभ्रंश काव्य... ... ... ६)

इसमें करकंडु महाराजका चरित्र वर्णन किया गया है, जिससे जिनपूजाका माहात्म्य प्रगट होता है। इससे धाराशिवकी जैन गुफाओं तथा दक्षिणके शिलाहार राजवंशके इतिहास पर भी अच्छा प्रकाश पड़ता है।

५ **श्रावकधर्मदोहा**—हिन्दी अनुवाद सहित... ... ... २॥)

इसमें श्रावकोंके व्रतों व शीलोंका बड़ा ही सुन्दर उपदेश पाया जाता है। इसकी रचना दोहा छंदमें हुई है। प्रत्येक दोहा काव्यकलापूर्ण और मनन करने योग्य है।

६ **पाहुडदोहा**—हिन्दी अनुवाद सहित... ... ... २॥)

इसमें दोहा छंदोंद्वारा अध्यात्मरसकी अनुपम गंगा बहाई गई है जो अवगाहन करने योग्य है।

प्रकाशक-श्रीमन्त सेठ शितावराय लक्ष्मीचन्द, जैन साहित्य उद्धारक फंड, जूनी बजाजी, अमरावती.

मुद्रक-टी. एम्. पाटील, मॅनेजर, सरस्वती प्रेस, अमरावती.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org